राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, गुजराती, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

•

प्रधान संपादक

पुरातत्त्वाचार्य, पद्मश्री, जिन विजय मुनि

[ऑनरेरी मेंबर ऑफ जर्मन ओरीएन्टल सोसाइटी जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य – भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य सभा, अहमदाबाद; विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर, पंजाब; निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरी डायरेक्टर) – भारतीय विद्याभवन बंबई; प्रधान संपादक – गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर ग्रन्थावली; भारतीय विद्या ग्रन्थावली; सिंघी जैन ग्रन्थमाला; जैन साहित्यसंशोधक ग्रन्थावली।–इत्यादि, इत्यादि ।

•

— ग्रन्थांक ४४ —

ठक्कुर फेरू विरचित

रत्नपरीक्षादि-सप्त-ग्रन्थसंग्रह

•

प्रकाशक

राजस्थानराज्याज्ञानुसार

संचालक – राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

विक्रमाब्द २०१७ / राष्ट्रीय शकाब्द १८८३ } राज्यनियमानुसार सर्वाधिकार सुरक्षित { खिस्ताब्द १९६१

मुद्रक – लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी निर्णयसागर प्रेस २६–२८ कोलभाट स्ट्रीट बंबई २.

प्रकाशक – गोपाल नारायण बहुरा उपसंचालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर.

ठक्कुर फेरू विरचित

रत्नपरीक्षादि - सप्त - ग्रन्थसंग्रह

•

समुपलब्ध-प्राचीनतम-पुस्तकानुसार

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि द्वारा

संशोधित एवं सुपरिष्कृत

•

सामग्री-संपादनकर्ता

अगरचन्द तथा भंवरलाल नाहटा

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(डायरेक्टर, राजस्थान ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टीट्यूट)

जोधपुर (राजस्थान)

•

विक्रमाब्द २०१७
राष्ट्रीय शकाब्द १८८२

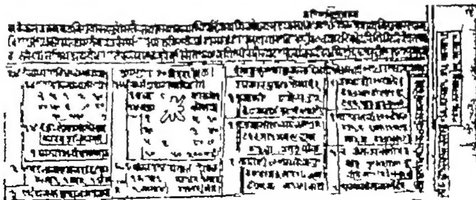
- प्रथमावृत्ति -

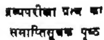
ख्रिस्ताब्द
१९६१

विषयानुक्रम



द्रव्यपरीक्षा ग्रन्थ का मध्य का एक पृष्ठ





द्रव्यपरीक्षा ग्रन्थ का समाप्तिसूचक पृष्ठ

वस्तुसार ग्रन्थ का आदि पृष्ठ

धातूत्पत्ति ग्रन्थ का अन्तिम पृष्ठ

प्रधान सपादकीय किंचित् प्रासंगिक

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के ४४ वें ग्रन्थांक रूप में, ठक्कुर फेरू रचित ७ ग्रन्थों का यह एकत्र संग्रह प्रकट किया जा रहा है।

ठक्कुर फेरू के इन ग्रन्थों की लिखी हुई प्राचीन पोथी का पता लगाने का श्रेय श्री अगर चन्दजी और भंवर लालजी नाहटा को है। इन साहित्यशोधी बन्धुओं की लगन से, कलकत्ते के एक कोने में पड़े हुए जैन ग्रन्थों के पिटारे में से, इस मूल्यवान निधि को प्रकाश में लाने का अभिनन्दनीय यश प्राप्त किया है।

ठक्कुर फेरू के ये प्रबन्धात्मक ग्रन्थ कैसे मिले और इन को प्रकाश में लाने का कैसा प्रयत्न किया — इस विषय में नाहटा बन्धुओं ने, अपने प्रस्तावनात्मक वक्तव्य में यथेष्ट लिखा है। इस से पहले भी इन्हों ने, कुछ पत्रों में लेख प्रकट करा कर इस विषय पर काफी प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है।

इस संग्रह की प्राचीन पोथी जब इन के देखने में आई, तो इन की शोधक बुद्धि ने तत्काल उस का विशिष्ट महत्त्व पिछान लिया और तुरन्त उस पोथी पर से अपने हाथ से नकल उतार कर मेरे पास देखने के लिये भेज दिया। मैं ने भी ग्रन्थ के 'द्रव्य परीक्षा' नामक प्रबन्ध में वर्णित सर्वथा अज्ञात विषय की उपलब्धि देख कर, इस को सुप्रसिद्ध सिंघी जैन ग्रन्थमाला द्वारा प्रकट कर देने की अपनी इच्छा नाहटा बन्धुओं को व्यक्त की और उस मूल प्राचीन लिखित पोथी को मेरे पास भेज देने को लिखा। पर उस समय कलकत्ते में सांप्रदायिक मार पीट की तूफान वाली हुल्लड़ चल मच रही थी इस लिये तुरन्त वह प्रति मेरे पास न आ सकी। प्रतिका प्रत्यक्ष अवलोकन किये बिना किसी ग्रन्थ को छाप देन के लिये मेरी रुचि सतुष्ट नहीं रहती, इस लिये मैं उस की प्रतीक्षा करता रहा। बाद में, मेरा स्वयं जब कलकत्ता जाना हुआ तो मैं उस प्रति को देखने में समर्थ हुआ और नाहटा बन्धुओं के सौजन्य से वह प्रति कुछ समयके लिये मुझे मिल गई। बंबई आ कर मैं ने उस पर से अपने निरीक्षण में प्रतिलिपि करवाई और उसे प्रेस में छपवाने की व्यवस्था की।

बाद में बंबई छोड़ कर मेरा अधिक रहना राजस्थान में होने लगा और मैं मेरे तत्त्वावधान में प्रस्थापित और सचालित राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर (अब, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान) के संगठन और संचालन के कार्य में अधिक व्यस्त रहने लगा, तो इस का प्रकाशन स्थगित सा हो गया।

पर इस ग्रन्थ को, इस रूप में, प्रकट करने कराने की अभिलाषा नाहटा बन्धुओं को बहुत ही उत्कट रही और मुझ भी वे बहुत प्रेरणा करते रहे। तब मैं ने इसे राजस्थान

पुरातन ग्रन्थमाला द्वारा प्रकट करने की व्यवस्था की और उसी के फल स्वरूप, आज यह ग्रन्थ प्रकाश में आ रहा है। नाहटा बन्धुओं का जो सतत आग्रह न रहता तो मैं इसे प्रकट करने में शायद ही समर्थ होता। अत इस के संपादन के श्रेयोभागी ये बन्धु हैं।

इस संग्रह की प्रेस कॉपी से ले कर ग्रन्थ को वर्तमान रूप देने तक के प्रुफ वगैरह सब मुझे ही देखने पड़े और भाषा एवं अर्थानुसन्धान की दृष्टि से इस के संशोधन में मुझे बहुत श्रम उठाना पड़ा। इस लिये ग्रन्थ के प्रकाशित होने में अपेक्षा से भी बहुत अधिक समय व्यतीत हुआ।

ठक्कुर फेरू ने अपनी ये सब रचनाएं प्राकृत भाषा में लिखी हैं। पर इस की यह प्राकृत भाषा, शिष्ट और व्याकरण बद्ध न हो कर, एक प्रकार की प्राकृत-अपभ्रंश की चलती शैली वाली भाषा है जिसे हम न शुद्ध प्राकृत कह सकते हैं, न शुद्ध अपभ्रंश ही कह सकते हैं। फेरू के इन ग्रन्थों के जो विषय हैं वे लोकव्यवहार की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी और अभ्यसनीय हैं। इस लिये उस ने अपनी रचना के लिये प्राकृत भाषा की बहुत ही सरल शैली का उपयोग करना पसंद किया। उस का लक्ष्य अपने मात्र को–विषय के अर्थ को अभिव्यक्त करना रहा है, इस लिये व्याकरण के कड़ नियमों का अनुसरण करने के लिये वह प्रयत्नवान् नहीं दिखाई देता। अपनी रचना के लिये प्राकृत का प्रसिद्ध गाथा छन्द उस ने पसन्द किया है और वह छन्द के नियम का ठीक पालन करने की दृष्टि से, कहीं ह्रस्व को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व रखता है, और कहीं कहीं द्वित्व अक्षर को एकाक्षर के रूप में तो कहीं एकाक्षर को द्वित्व के रूप में भी प्रथित कर देता है। छन्द का भग न हो इस विचार से वह शब्दों का निर्विभक्तिक रूप तक रख देता है। ग्रन्थकार की इस शैली का ठीक अभ्यसन करते करते हमें इस का संशोधन करना पड़ा है। इस लिये हमारा समय भी इस में बहुत व्यतीत हुआ।

फेरू के इन ग्रन्थों में से 'वस्तुसार' और 'रत्नपरीक्षा' तथा 'धातूत्पत्ति' के कुछ हिस्से के सिवा, और ग्रन्थों की अन्य कोई प्रति उपलब्ध नहीं हुई, अत उस एकमात्र प्रति के आधार पर ही सब पाठनिर्णय करना पड़ा। साथ में प्रति के लेखक की अशुद्धियों ने भी कुछ परिश्रम बढ़ा दिया। प्रति का लिखने वाला न संस्कृत जानता है न प्राकृत। उस ने कहीं कहीं अपनी भाषा में जो वाक्य लिखे हैं उन पर से उस के भाषाज्ञान का परिचय मिल जाता है।

हम ने इस के संशोधन में केवल उतना ही प्रयत्न किया है जिस से अर्थबोध ठीक हो सके, और व्याकरण के नियम के निकट शब्द का रूप रह सके। द्रव्यपरीक्षा, रत्नपरीक्षा और धातूत्पत्ति ये तीन प्रबन्ध लौकिक शब्दों के ऊपर आधारित हैं और इन में के अनेक शब्द ऐसे हैं जो सर्वथा अपरिचित से लगते हैं। इन शब्दों का ठीक स्वरूप जानने का कोई अन्य साधन नहीं। अत उन की स्थिति जैसी लिखित प्रति में है वैसी ही रखनी आवश्यक रही।

'वस्तुसार' एक प्रसिद्ध रचना है। इसका मुद्रण भी पहले हो चुका है और फिर इस की अन्य प्रतियां भी उपलब्ध होती हैं। अत उन के आधार पर यह प्रबन्ध तो प्राय ठीक शुद्ध किया जा सका है। इस के तो विशिष्ट पाठ भेद भी दे दिये हैं।

फेरू के इन ग्रन्थों में सब से अधिक महत्त्व का ग्रन्थ 'द्रव्यपरीक्षा' है। इस प्रबन्ध में, उस ने अपने समय में भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों और प्रान्तों में प्रचलित, सिक्कों की जो जानकारी लिखी है वह सर्वथा अपूर्व है। इस विषय पर प्रकाश डालने वाली और कोई ऐसी प्राचीन साहित्यिक कृति अभी तक ज्ञात नहीं है। इस ग्रन्थ पर तो भारत के मध्यकालीन सिक्कों के परिज्ञाता ऐसे किसी विशिष्ट विद्वान् को, एक अध्ययन पूर्ण एवं प्रमाणभूत ग्रन्थ लिखना आवश्यक है। इस का संपादन कार्य प्रारंभ करते समय हमारा उत्साह था, कि हम इस विषय में यथाशक्य जानकारी एवं साधनसामग्री प्राप्त करके, इस के साथ छोटा-बड़ा भी वैसा कोई निबन्ध लिखेंगे, पर समयाभाव के कारण हम वैसा निबन्ध लिखने में असमर्थ रहे। हम आशा करते हैं कि अब इस ग्रन्थ का यह मूल स्वरूप प्रकट हो जाने पर, कोई सुयोग्य निष्णात्विद्ध विद्वान् वैसा प्रयत्न करने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

फेरू के 'रत्नपरीक्षा' ग्रन्थ के विषय में तो प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. मोती चन्दजी ने एक अच्छा परिचयात्मक निबन्ध लिख देने की कृपा की है, जो इसके साथ दिया गया है। इसके लिये हम डॉक्टर साहब के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करते हैं।

'गणितसार' और 'ज्योतिषसार' ये रचनाएं प्राथमिक अभ्यासियों के अध्ययन की दृष्टि से अच्छी उपयोगी हैं। गणितसार में तो ठक्कुर फेरू ने अपने समय में दिल्ली के आसपास के प्रदेश में व्यवहृत अनेक देश्य शब्दों और स्थानिक पदार्थों का भी उल्लेख किया है जिन पर विशेष प्रकाश डाला जा सकता है।

फेरू के इस ग्रन्थ संग्रह की जो उक्त प्राचीन प्रति उपलब्ध हुई है वह, जैसा कि उसके लिपि कर्ता ने दो तीन स्थानों पर निर्देश किया है, वि स १४०३ और १४०४ वर्ष के बीच में लिखी गई है। वास्तव में यह पोथी उक्त संवत् के फाल्गुण और चैत के महिने के बीच में, डेढ़-दो महिने के अन्दर ही लिखी गई है। ठक्कुर फेरू ने द्रव्य परीक्षा' की रचना संवत् १३७५ में दिल्ली में अल्लाउद्दीन बादशाह के राज्य काल में की थी। अत रचना समय के बाद २५–३० वर्ष के भीतर ही यह पोथी लिखी गई थी जिस से इस की प्राचीनता स्वत सिद्ध है।

इस प्रति की कुल पत्रसंख्या ६० है और उन में निम्न तालिका के अनुसार फेरू की इस संग्रह वाली सातों रचनाएं लिखी गई हैं।

१	पत्रांक	१ से १८	तक में	ज्योतिषसार
२	,,	१९ से २७ A	,,	द्रव्यपरीक्षा
३	,,	२८ से ३५	,,	वास्तुसार
४	,,	३६ से ४१ A	,,	रत्नपरीक्षा
५	,,	४१ A से ४३ A	,,	धातूत्पत्ति
६	,,	४३ B से ४४	,,	युगप्रधान चतुष्पदी
७	,,	४५ से ६०	,,	गणितसार

हम ने इस संग्रह में प्रतिलिपित ग्रन्थक्रम का अनुसरण न करते हुए, प्रथम रत्नपरीक्षा, द्रव्यपरीक्षा और धातूत्पत्ति नामक इन ३ रचनाओं को एक साथ रखा है, और फिर ज्योतिषसार, गणितसार एवं वास्तुसार इन ३ रचनाओं को एक साथ रख कर, अन्त में 'युग प्रधान चतुष्पदी' रचना को दे दिया है। इस से विषय का विभाजन ठीक संगत हो गया है।

इसके साथ मूल प्राचीन प्रति जो कलकत्ते के जैन भंडार में प्राप्त हुई उसके कुछ पन्नोंके ब्लाक भी बना कर दिये जा रहे हैं जिस से पाठकों को प्रति की प्रतिकृति का दर्शन हो सके।

ज्योतिष, गणित, वास्तुशास्त्र, रत्नशास्त्र और मुद्राविषयक विज्ञान पर, इस प्रकार की विशिष्ट ग्रन्थ-रचना करने वाला ठक्कुर फेरू, सचमुच अपने समय का एक बहुत ही बहुश्रुत विद्वान् और अनुभवी शास्त्रज्ञ था। उसकी ये कृतियां हमारे प्राचीन साहित्य की बहुमूल्य निधि हैं और इस प्रकार **राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान** द्वारा इन का प्रकाशित होना सर्वथा समादरणीय होगा।

चैत्र शुक्ल १३ वि. सं. २०१७
दिनांक–३१ मार्च १९६१
भारतीय विद्या भवन बंबई

– मुनि जिनविजय

ठक्कुर फेरू और उनके ग्रन्थों के विषय में

प्रास्ताविक कथन

(लेखक—अगरचन्द, भंवरलाल नाहटा)

कन्नाणा निवासी ठक्कुर फेरू का नाम यों तो उन की सुप्रसिद्ध कृति 'वास्तुसार प्रकरण' के कारण सब विदित था, परन्तु उन के बहुमुखी प्रतिभासंपन्न एवं महान् ग्रंथकार होने का अब तक पता नहीं था। १५ वर्ष पूर्व, कलकत्ते की श्रीमणि जीवन जैन लायब्रेरी की सूची में 'सारा कौमुदी गणित ज्योतिष' नाम से उल्लिखित फेरू ग्रंथावली की प्रति देखने पर ठक्कुर फेरू की कई नई कृतियाँ ज्ञात हुईं। इस प्रति की प्राप्ति से केवल हमने ही नहीं, पर जिस किसीने सुना परम आनंद प्राप्त किया। इन ग्रंथों की उपलब्धि से ठक्कुर फेरू की गणना, भारतीय साहित्य में, एक अनूठा स्थान प्राप्त करने वाले विद्वानों में की जा सकती है।

ठक्कुर फेरू विक्रम की चौदहवीं शती के राजमान्य जैन गृहस्थों में प्रमुख व्यक्ति थे। इन्होंने अपनी कृतियों में जो परिचय दिया है उससे विदित होता है कि ये कन्नाणा निवासी श्रीमाल वंश के धांधिया (धंधकुल) गोत्रीय श्रेष्ठि कालिय या कलश के पुत्र ठक्कुर चंद के सुपुत्र थे। इनकी सब प्रथम रचना 'युगप्रधान चतुष्पदिका' है जो संवत् १३४७ में वाचनाचार्य राजशेखर के समीप, अपने निवासस्थान कन्नाणा में बनी थी। इन्होंने अपनी कृतियों के अंत में "परम जैन" और अपने आप को "जिणंद पय भत्तो" लिख कर अपना कट्टर जैनत्व सूचित किया है। इन्होंने 'रत्नपरीक्षा' में अपने पुत्र का नाम हेमपाल लिखा है, जिसके लिये इस ग्रंथ की रचना की है। इनके भाई का नाम अज्ञात है परन्तु भ्राता और पुत्र के लिए 'द्रव्यपरीक्षा' नामक विशिष्ट ग्रंथ की रचना की थी।

दिल्लीपति सुरत्राण अल्लाउद्दीन खिलजी के राज्याधिकारी या मंत्रिमंडल में होने के कारण, पीछे से इनका निवास स्थान अधिकतर दिल्ली हो गया था। इन्होंने 'द्रव्यपरीक्षा' दिल्ली की टंकसाल के अनुभव से तथा 'रत्नपरीक्षा' ग्रंथ सम्राट् के रत्नागार के प्रत्यक्ष अनुभव से एवं 'गणितसार' में भी दी हुई तत्कालीन राजनैतिक गणित प्रश्नावली आदि से, यह फलित होता है कि ये अवश्य शाही दरबार में उच्च पदासीन व्यक्ति थे। संवत् १३८० में दिल्ली से श्रीमाल सेठ रयपति ने महातीर्थ शत्रुंजय का संघ निकाला था, जिसमें ठक्कुर फेरू भी सम्मिलित हुए थे[2]।

१–पं. भगवानदासजी जैन ने जयपुर से "वास्तुसार" (गुजराती अनुवाद सहित संस्करण) के साथ "रत्नपरीक्षा" और "धातोत्पत्ति" का अपूर्ण अंश भी प्रकाशित किया है।

२–देखें हमारी "दादा जिन कुशल सूरि" पुस्तक।

ठक्कुर फेरू की "युगप्रधान चतुष्पदिका" के अतिरिक्त सभी कृतियाँ प्राकृत में हैं। भाषा बड़ी सरल, प्रवाही और अपभ्रंश या तत्कालीन लोकभाषा के प्रभाव से प्रभावित है। ग्रन्थोक्त कतिपय वृत्तान्त तत्कालीन भारतीय संस्कृति एवं भाषा पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। इनकी कृतियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१ युगप्रधान चतुष्पदिका—यह कृति तत्कालीन लोकभाषा अपभ्रंश में २८ चौपाई व एक छप्पय में रची गई है। इसमें भगवान महावीर से लगा कर खरतरगच्छ के युगप्रधान आचार्यों की परंपरा की नामावली निबद्ध है। आचार्य श्री वर्द्धमान सूरि के पट्टधर श्री जिनेश्वर सूरिजी से यह गच्छ खरतर नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके परवर्ती आचार्यों के संबन्ध में कतिपय संक्षिप्त ऐतिहासिक वृत्तान्तों का भी निर्देश किया गया है। जैसे—

१ श्री जिनेश्वर सूरिजी ने अणहिलपुर में दुर्लभराज के समक्ष ८४ आचार्यों को जीत कर वसति मार्ग प्रकाशित किया।

२ श्री जिनचंद्र सूरिजी ने उपदेश द्वारा नृपति को रंजित किया एवं 'संवेग रंगशाला नामक ग्रंथ की रचना की।

३ श्री अभयदेव सूरिजी ने ९ अंगों पर टीकाएँ बनाईं एवं स्तंभन पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रकट की।

४ श्री जिनवल्लभ सूरिजी ने नंदी, न्हवण, रथ, प्रतिष्ठा, युवतियों के ताला रास आदि कार्य रात्रि में किये जाने निषिद्ध किये।

५. श्री जिनदत्त सूरिजी ने उज्जैन में ध्यान-बल से योगिनी चक्र को प्रतिबोध दिया। शासन देवता ने इन्हें 'युग प्रधान' पद धारक घोषित किया।

६ श्री जिनचंद्र सूरिजी बड़े रूपवान थे। इन्होंने बहुत से श्रावकों को प्रतिबोध दिया।

७ श्री जिनपति सूरिजी ने अजमेर के नृपति (पृथ्वीराज) की सभा में पद्मप्रभ को पराजित कर जयपत्र प्राप्त किया।

८ श्री जिनेश्वर सूरिजी ने अनेक स्थानों में जिनालय एवं तदुपरि ध्वज, दण्ड, कलश, तोरणादि स्थापित किये एवं १२१ साधु दीक्षित किये।

इनके पट्टधर श्री जिनप्रबोध सूरि के पट्टधर श्री जिनचंद्र सूरिजी के समय में कन्नाणा में वाचनाचार्य राजशेखर गणि के समीप, संवत् १३४७ के माघ मास में, इस चतुष्पदी की रचना हुई। इसकी एक प्रति हमें जैसलमेर के भंडार का अवलोकन करते हुए प्राप्त हुई थी जिसकी नकल हमारे पास विद्यमान है और उससे आवश्यक पाठान्तर भी लिये गये हैं।

२ रत्नपरीक्षा—यह ग्रंथ १३२* प्राकृत गाथाओं में है। संवत् १३७२ में दिल्ली में सम्राट् अलाउद्दीन के शासनमें सपुत्र हेमपाल के लिये प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। पूर्व कवि अगस्त्य और बुद्ध भट्ट के ग्रंथों के अतिरिक्त शाही रत्नकोश की अनुभूति द्वारा अभिमयित विषय का सुन्दर प्रतिपादन किया है।

३ वास्तुसार—शिल्प स्थापत्य के विषय में प्रस्तुत ग्रंथ प्रामाणिक माना जाता है। पं. भगवानदासजी ने हिन्दी और गुजराती अनुवाद सह जयपुर से प्रकाशित भी कर दिया है। प्रस्तुत प्रति संवत् १४०४ की लिखित है और मुद्रित संस्करण से पाठ भेद का प्राचुर्य है। इसकी रचना संवत् १३७२ विजया दशमी को कन्नाणापुर में हुई।

४ ज्योतिषसार—यह ग्रंथ संवत् १३७२ में २४२ प्राकृत गाथाओं में रचित है, जिसकी श्लोक संख्या, ग्रंथ कुंडलिका सह ४७४ होती है। इसमें ज्योतिष जैसे वैज्ञानिक विषय को बड़ी कुशलता के साथ निरूपण किया है।

५ गणितसार कौमुदी—यह ग्रंथ कुल ३११ गाथाओं में है। गणित जैसे शुष्क और बुद्धि प्रधान विषय का निरूपण करते हुए ग्रन्थकार ने अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया है। इस ग्रंथ के परिशीलन से तत्कालीन वस्तुओं के भाव, तौल, नाप इत्यादि सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थिति का अच्छा ज्ञान हो जाता है। वस्त्रों के नाम, उनके हिसाब, पत्थर, लकड़ी, सोना, चाँदी, धान्य, घृत, तैलादि के हिसाबों के साथ साथ क्षेत्रों का माप, धान्योत्पत्ति, राजकीय कर, मुक्ता इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला गया है। इसके कतिपय प्रश्न देश्य भाषा के छप्पयों में भी है, जो भाषाकीय अध्ययन की दृष्टि से भी अपना वैशिष्ट्य रखते हैं।

६ धातोत्पत्ति—प्राकृत की ५७ गाथाओं में पीतल, तांबा, सीसा प्रभृति धातुओं के उत्पत्ति विधानादि के साथ साथ हिंगुल, सिंदुर, दक्षिणावर्त्त संख, कपूर, अगर, चंदन, कस्तूरी आदि वस्तुओं का भी विवरण दिया है, जो कवि के बहुज्ञ होने का सूचक है।

७ द्रव्यपरीक्षा—प्रस्तुत ग्रंथ कवि की समस्त रचनाओं में अद्वितीय है। भारतीय साहित्य में पुराने सिक्कों के संबन्ध में स्वतंत्र रचना शायद यही एक ग्रंथ उपलब्ध है

* पं. भगवानदासजी के प्रकाशित वास्तुसार (गुजराती अनुवादसहित) के अंत में रत्नपरीक्षा (गा. २१ से १२७) छपी है। उनके बीच की ९१ से ११९ तक की गाथाएं पातोत्पत्ति की है। पाठभेद भी काफी है। उक्त ग्रन्थानुसार रत्नपरीक्षा ११ गाथाओं का होता है। पर वास्तव में इसमें बीच की बहुत सी गाथाएं छूट गई हैं।

जिसमें मुद्राओं के मूल उपादान, धातुओं की चासनी, धातुशोधन प्रणालिका, भिन्न भिन्न मुद्राओं (सेकड़ों रकम की) के नाम, टकसालस्थान, आकार प्रकार, तौल, माप, धातु के मिश्रण, राजाओं के नाम ठाम आदि सभी विषयों पर १४९ गाथाओं में, प्राचीन काल से ले कर तत्कालीन समय तक की प्राप्त सभी मुद्राओं पर विशिष्ट विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत प्रति जिसके कुल ६० पत्र हैं, संवत् १४०३–१४०४ में लिखी हुई सुन्दर सुवाच्य और अच्छी स्थिति में है। किसी सा० मालदेव के पुत्र पुरिसड ने अपने लिए लिखी है। प्रति के हांसिये पर "पत्तनीय प्र" लिखा हुआ है जिससे मालूम होता है कि यह प्रति मूलमें पाटण के ज्ञानभंडार की रही होगी।। फेरू ग्रंथावली की प्रस्तुत प्रति से "प्रेसकापी" भंवरलालने स्वयं अपने हाथ से करके पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजयजी को भेजी, जिसे देख कर इन्होंने उस समय सिंघी जैन ग्रन्थमाला द्वारा इसे तुरन्त प्रकाशित करने की इच्छा व्यक्त की। साथ में आपने मूल प्रति को भी देखना चाहा। पर कलकत्ते की तत्कालीन सांप्रदायिक विषम परिस्थिति वश, वह तब उन्हें नहीं भेजी जा सकी। बादमें जब मुनिश्री कलकत्ता पधारे तब प्रस्तुत प्रति को बंबई ले गये। श्रद्धेय मुनिजी जैसे विद्वान के तत्त्वावधान में यह ग्रंथ शीघ्र प्रकाशित हो ऐसी हमारी उत्कट इच्छा थी, पर सिंघी जैन ग्रन्थमाला के अनेकानेक ग्रन्थों के संपादन कार्य में मुनिजी अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण इसके प्रकाशन कार्य में विलंब होता रहा।

पर अब यह ग्रन्थ, इस रूप में राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला द्वारा प्रकाशित हो रहा है, जो इस विषय के जिज्ञासुओं को परम आनन्द दायक होगा।

प्रस्तुत संग्रह में ठक्कुर फेरू के 'रत्नपरीक्षा' ग्रन्थ के परिचय रूप में, सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ मोती चन्दजी ने, हमारी प्रार्थना पर, एक विस्तृत निबन्ध लिख दिया है, जो इसमें मुद्रित हो रहा है। हम इसके लिये डॉ साहब के प्रति अपना हार्दिक कृतज्ञ भाव प्रकट करना चाहते हैं।

अन्त में हम आचार्य श्री जिनविजयजी के प्रति अपना विनम्र और सादर आभार भाव प्रदर्शित करना चाहते हैं कि इन्हों ने, बहुत परिश्रम के साथ, इस ग्रन्थ का यह सुन्दर प्रकाशन, राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला के एक सुन्दर रत्न के रूप में प्रकट कर, हमारे चिराभिलषित मनोरथ को सफल बनाया।

अगरचन्द तथा भंवरलाल नाहटा

ठक्कुर फेरूकृत रत्नपरीक्षाका परिचय

लेखक—डॉ मोतीचन्द्र, एम् ए, पीएच् डी
(क्युरेटर प्रिन्स ऑफ वेल्स मुजियम, बंबई)

अमरकोश (२।१।२—४) में पृथ्वी के अट्ठतीस नामों में वसुधा, वसुमती और रत्नगर्भा नाम आए हैं जिससे इस देश के रत्नों के व्यापार की ओर ध्यान जाता है। प्लिनी ने (नेचुरल हिस्ट्री ३७।७६) भी भारत के इस व्यापार की ओर इशारा किया है। इसमें जरा भी संदेह नहीं कि १८ वीं सदी पर्यंत जब तक कि, ब्राजिल की रत्नों की खानें नहीं खुली थीं, भारत संसार भर के रत्नों का एक प्रधान बाजार था। रत्नों की खरीद बिक्री के बहुत दिनों के अनुभव से भारतीय जौहरियोंने रत्नपरीक्षा शास्त्र का सृजन किया। जिसमें रत्नों के खरीद, बेच, नाम, जाति, आकार, घनत्व, रंग, गुण, दोष, कीमत तथा उत्पत्तिस्थानों का सांगोपांग विवेचन किया गया। बाद में जब नकली रत्न बनने लगे तब उन्हें असली रत्नों से बिलग करने के तरीके भी बतलाए गए। अंत में रत्नों और नक्षत्रों के सम्बन्ध और उनके शुभ और अशुभ प्रभावों की ओर भी पाठकों का ध्यान दिलाया गया।

रत्नपरीक्षा का शायद सबसे पहला उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र (२।१०।२६) में हुआ है। इस प्रकरणमें अनेक तरह के रत्न, उनके प्राप्तिस्थान तथा गुण और दोष की विवेचना है। कामसूत्र की चौसठ कलाओं की तालिका में (कामसूत्र, १।३।१६) रूप्य-रत्न-परीक्षा और मणिरागाकर ज्ञान विशेष कलाएँ मानी गई हैं। जयमंगला टीका के अनुसार रूप्य-रत्न-परीक्षा के अन्तर्गत सिक्कों तथा रत्न, हीरा, मोती इत्यादि के गुण दोषों की पहचान व्यापार के लिए होती थी। मणिरागाकर ज्ञान की कला में गहनों के जड़ने के लिए स्फटिक रंगने और रत्नों के आकरों का ज्ञान आ जाता था। दिव्यावदान (पृ० ३) में भी इस बात का उल्लेख है कि व्यापारी को आठ परीक्षाओं में, जिनमें रत्नपरीक्षा भी एक है, निष्णात होना आवश्यक था। पर इस रत्नपरीक्षा ने किस युग में एक शास्त्र का रूप ग्रहण किया इसका ठीक ठीक पता नहीं चलता। कौटिल्य के कोश-प्रवेश्य रत्नपरीक्षा प्रकरण से तो ऐसा मालूम पड़ता है कि मौर्य युग में भी किसी न किसी रूप में रत्नपरीक्षा शास्त्र का वैज्ञानिक रूप स्थिर हो चुका था। रोम और भारत के बीच में ईसा की आरंभिक सदियों में जो व्यापार चलता था उसमें रत्नों का भी एक विशेष स्थान था। इसलिए यह अनुमान करना शायद गलत न होगा कि भारतीय व्यापारियों को, रत्नों का अच्छा ज्ञान रहा होगा

और किसी न किसी रूप में रत्नपरीक्षा शास्त्र की स्थापना हो चुकी होगी। जो भी हो, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं कि ईसा की पांचवीं सदी के पहले रत्नपरीक्षा का सृजन हो चुका था।

यह समझ लेना भूल होगा कि रत्न-परीक्षा शास्त्र केवल जौहरियों की शिक्षा के लिए ही बना था। इसमें शक नहीं कि, जैसा दिव्यावदान में कहा गया है, व्यापारियों के पुत्र पूर्ण और सुप्रिय (दिव्यावदान, पृ० २६, २९,) को और और विषयों के साथ साथ रत्नपरीक्षा भी पढ़ना पड़ता था। हमें इस बात का पता है कि प्राचीन भारत में राजा और रईस रत्नों के पारखी होते थे। यह आवश्यक भी था क्यों कि व्यापारियों के सिवा वे ही रत्न खरीदते थे और संग्रह करते थे। जैसा कि हमें साहित्य से पता चलता है, काव्यकारों को भी इस रत्नशास्त्र का ज्ञान होता था और वे बहुधा रत्नों का उपयोग रूपकों और उपमाओं में करते थे, गो कि रत्न सम्बन्धी उनके अलंकार कभी कभी अतिरंजित होकर वास्तविकता से बहुत दूर जा पहुँचते थे। जैसा कि हमें मृच्छकटिक के चौथे अंक से पता चलता है, कि जब विदूषक वसंतसेना के महल में घुसा तो उसने छट्ठे परकोटे के आंगन के दालानों में कारीगरों को आपस में वैडूर्य, मोती, मूंगा, पुखराज, नीलम, कर्केतन, मानिक और पन्ने के सम्बन्ध में बातचीत करते देखा। मानिक सोने से जड़े (बध्यन्ते) जा रहे थे, सोने के गहने गढ़े जा रहे थे, शंख काटे जा रहे थे, और काटने के लिए मूंगे सान पर चढ़ाए जा रहे थे। उपर्युक्त विवरण से इस बात का पता चल जाता है कि शूद्रक को रत्नपरीक्षा का अच्छा ज्ञान रहा होगा। कलाविलास के आठवें सर्ग में सोनारों के वर्णन से भी इस बात का पता चलता है कि क्षेमेन्द्र को उनकी कला और रत्नशास्त्र का अच्छा परिचय था।

रत्नपरीक्षा शास्त्र का जितना ही मान था, उतना ही वह शास्त्र कठिन माना जाता था। इसीलिए एक कुशल रत्नपरीक्षक का समाज में काफी आदर होता था। रत्नपरीक्षा के ग्रंथ उसका नाम बड़े आदर से लेते हैं। अगस्तिमत[1] (६७-६८) के अनुसार गुणवान मंडलिक जिस देश में होता है, वह धन्य है। मांडलिक को उसे बुलाकर आसन देकर तथा गंध माल्यादि से सत्कार करना चाहिए। बुद्धभट्ट (१४-१५) के अनुसार रत्नपरीक्षकों को शास्त्रज्ञ एवं कुशल होना चाहिए। इसी-लिये उन्हें रत्नों के मूल्य और मात्रा के जानकार कहा गया है। देश काल के अनुसार मूल्य न आंकने वाले तथा शास्त्र से अनभिज्ञ जौहरियों की विद्वान कदर नहीं करते। ठक्कुर फेरू (१ ६-१०७) का भाव भी कुछ ऐसा ही है। उसके अनुसार मंडलिक

---

1 देखिए, लेपिदेर इंदियें, ल्वी फिनो, पारी १८९६। मैंने इस भूमिका को लिखने में श्री फिनो के ग्रंथ से सहायता ली है जिसका मैं आभार मानता हूँ। श्री फिनो ने अपने इस महत्वपूर्ण ग्रंथ में उपलब्ध रत्न शास्त्रों को एक जगह इकट्ठा कर दिया है।

को शास्त्र, अर्थशास्त्र, अनुभवी, देश, काल और भाव का ज्ञाता और रत्नों के स्वरूप का जानकार होना आवश्यक था। हीनांग, नीच जाति, लक्षण रहित और बदनाम व्यक्ति जानकार और मान्य होने पर भी असली जौहरी कभी नहीं हो सकता। अगस्तिमत (६५) ने भी यही भाव प्रकट किए हैं।

अगस्तिमत (५४–६६) के अनुसार चतुर जौहरी को मंडलिन् कहा गया है। यह नाम शायद इसलिए पड़ा कि जौहरी अपना काम करते समय मंडल में बैठता था। यह भी संभव है कि यहां मंडल से मंडली यानी समूह का मतलब हो। अगस्ति मत (६१–६६) के अनुसार जौहरी रत्नों का मूल्य आंकता था। उसे देश में मिलनेवाले आठ खानों तथा विदेशी और द्वीपों से आए हुए रत्नों का ज्ञान होता था। उसे रत्नों की जाति, राग रंग, वर्ति, तौल, गुण, आकर, दोष, भाव (छाया) और मूल्य का पता होता था। वह आकर (पूर्वी मध्यभारत), पूर्वदेश, कश्मीर, मध्यदेश, सिंहल तथा सिंधु नदी की माटी में रत्न खरीदता था तथा रत्न बेचने और खरीदने वाले के बीच मध्यस्थ का काम करता था। अगस्तिमत (७२) के अनुसार वह रत्न विक्रेता से हाथ मिलाकर अंगुलियों के इशारे से उसे रत्न के मूल्य का पता दे देता था। उसी के एक क्षेपक (११–२३) के अनुसार १, २, ३, ४ संख्याओं का क्रमशः तर्जनी से दूसरी अंगुलियों को पकड़ने से बोध होता था। अंगूठे सहित चारों अंगुलियां पकड़ने से ५ की संख्या प्रकट होती थी। कनिष्ठा आदि के तलस्पर्श से क्रमशः ६, ७, ८ और ९ की संख्याओं का बोध होता था, तथा तर्जनी से १० का। फिर नखों के छूने से क्रमशः ११, १२, १३, १४ और १५ का बोध होता था। इसके बाद हथेली छूने पर कनिष्ठादि से १६ से १९ तक की संख्याओं का बोध होता था। तर्जनी आदि का दो, तीन, चार और पांच बार छूने से २० से ५० तक की संख्याओं का बोध होता था। कनिष्ठा आदि के तलों को ६ बार तक छूने से ६० से ९० तक अंकों की ओर इशारा हो जाता था तथा आधी तर्जनी पकड़ने से १००, आधी मध्यमा पकड़ने से १०००, आधी अनामिका पकड़ने से अयुत, आधी कनिष्ठिका से १०००००, अंगूठे से प्रयुत, कलाई से करोड़। मुगल काल में तथा अब भी अंगुलियों की सांकेतिक भाषा से जौहरी अपना व्यापार चलाते हैं।

प्राचीन साहित्य में भी बहुधा जौहरियों के सम्बन्ध में उल्लेख मिलते हैं। दिव्यावदान (पृ० ३) में कहा गया है कि किसी रत्न की कीमत आंकने के लिए जौहरी बुलाये जाते थे। अगर वे रत्न की ठीक ठीक कीमत नहीं आंक सकते थे तो उसका मूल्य वे एक करोड़ कह देते थे। बृहत्कथाश्लोकसंग्रह (१८, ३६६) से पता चलता है कि सानुदास ने पांड्य मथुरा में पहुंच कर वहां का जौहरी बाजार देखा और वहां एक क्रेता और विक्रेता को, एक जौहरी से एक रत्नालंकार का मूल्य आंकने को कहते

सुना। सानुदास को उस गहने की ओर ताकते हुए देखकर उन्होंने समझा कि शायद यह मिगाहदार था। उससे पूछने पर उसने गहने की कीमत एक करोड़ बता कर कह दिया कि बेचने और खरीदनेवाले की मर्जी से सौदा पट सकता था। वे दोनों एक दूसरे जौहरी के पास पहुंचे जिसने कहा कि गहने की कीमत सारा संसार था पर नासमझ के लिए उसका मोल एक छदाम था। सानुदास की जानकारी से प्रसन्न होकर राजा ने उसे अपना रत्नपरीक्षक नियुक्त कर दिया।

प्राचीन साहित्य में अनेक ऐसे उल्लेख आए हैं जिनसे पता चलता है कि रत्नों के व्यापार के लिए भारतीय जौहरी देश और विदेश की बराबर यात्रा करते थे। दिव्यावदान (पृ० २२९–२३०) की एक कहानी में बतलाया गया है कि रत्नों के व्यापारी मोती, वैडूर्य, शंख, मूंगा, चांदी, सोना, अकीक, जमुनिया, और दक्षिणावर्त शंख के व्यापार के लिए समुद्र यात्रा करते थे। निर्यामक प्रायः उन्हें सिंहल द्वीप में बनने वाले नकली रत्नों से होशियार कर देता था तथा उन्हें आदेश दे देता था कि वे खूब समझ कर माल खरीदें। ज्ञाताधर्म कथा (१७) और उत्तराध्ययन सूत्रकी टीका (११।७१) से भी रत्नों के इस व्यापार की ओर संकेत मिलता है। उत्तराध्ययन टीका में एक ईरानी व्यापारी की कहानी दी गई है जो ईरान से इस देश में सोना, चांदी, रत्न और मूंगा छिपा कर लाना चाहता था। आवश्यक चूर्णि (पृ० ४४२) में रत्नव्यापार के लिए एक बनिए का पारसकूल जाने का उल्लेख है। महाभारत (२।२७।२५–२६) के अनुसार दक्षिण समुद्र से इस देश में रत्न और मूंगे आते थे। ईसा की प्रारंभिक सदियों में तो भारत से रोम को हीरे, सार्ड, ओनिक्स, अकीक, सार्डोनिक्स, बाबागोरी, क्राइसाप्रेस, जहर मुहरा, रक्तमणि, हेलियोट्राप, ओपल, कसौटी पत्थर, लहसुनियां, एवेंचुरिन, जमुनिया, स्फटिक, बिल्लौर, कुरंड, नीलम, मानिक लाल, आवनूस, गार्नेट, तुरमुली, मोती इत्यादि पहुंचते थे (मोतीचन्द्र, सार्थवाह, पृ० १२८–१२९)

—§२§—

प्राचीन रत्नपरीक्षा का क्या रूप रहा होगा यह तो ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता, पर उस सम्बन्ध के जो ग्रंथ मिले हैं उनका विवरण नीचे दिया जाता है।

१ अर्थशास्त्र—कौटिल्य ने कोश-प्रवेश्य रत्नपरीक्षा (अर्थशास्त्र, २–१०–२९) में रत्नपरीक्षा के सम्बन्ध की कुछ जानकारियां दी हैं। कोश में अधिकारी व्यक्तियों के समाह से ही रत्न खरीदे जाते थे। पहले प्रकरण में मोती के उत्पत्ति स्थान, गुण, दोष तथा आकार इत्यादि का वर्णन है। इसके बाद मणि, सौगंधिक, वैडूर्य, पुष्पराग, इन्द्रनील, नंदक, स्रवन्मध्य, सूर्यकान्त, विमलक, सस्यक, अंजनमूल, पित्तक, सुलभक, लोहितक, अमृतांशुक, ज्योतिरसक, मैलेयक, अहिच्छत्रक, कूर्प, प्रतिकूर्प, सुगन्धिकूर्प,

क्षीरपक, मुक्तिपूर्णक, सिलाप्रवालक, मूलक, पुलकपुष्पक तथा हीरा और मूगा के नाम आए हैं। इनमें से बहुत से रत्नों की ठीक ठीक पहचान भी नहीं हो सकती क्योंकि बाद के रत्नशास्त्र उनका उल्लेख तक नहीं करते।

२ रत्नपरीक्षा—बुद्धभट्ट की रत्नपरीक्षा का समय निश्चित करने के पहले वराह-मिहिर की बृहत् संहिता के ८० से ८३ अध्यायों की जानकारी जरूरी है। इन अध्यायों में हीरा, मोती और मानिक के वर्णन हैं। पन्ने का वर्णन तो केवल एक श्लोक में है। बुद्धभट्ट की रत्नपरीक्षा और बृहत्संहिता के रत्नप्रकरण की छानबीन करके श्री फिनो (वही पृ० ७ से) इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि दोनों की रत्नों की तालिकाओं तथा हीरे और मोती का भाव लगाने की विधि इत्यादि में बड़ी समानता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दोनों ग्रंथों ने समान रूप से किसी प्राचीन रत्नशास्त्र से अपना मसाला लिया। गरुड़ पुराण ने भी बुद्धभट्ट का नाम हटाकर ६८ से ७० अध्यायों में रत्नपरीक्षा ग्रहण कर लिया। बहुत संभव है कि शायद बुद्धभट्ट का समय ७–८ वीं सदी या इसके पहले भी हो सकता है।

३ अगस्तिमत—अगस्तिमत और रत्नपरीक्षा का विषय एक होते हुए भी दोनों में इतना भेद है कि दोनों एक ही अनुश्रुति की बहुत दिनोंसे अलग हुई शाखा जान पड़ते हैं। श्री फिनो (पृ० ११) के अनुसार अगस्तिमत का समय बुद्धभट्ट के बाद यानी छठी सदी के बाद माना जाना चाहिए। शायद उसका लेखक दक्षिण का रहनेवाला जान पड़ता है। संभव है कि अगस्तिमत का आधार कोई ऐसा रत्नशास्त्र रहा हो जिसकी ख्याति दक्षिण में बहुत दिनों तक थी। ग्रंथ के अनेक उल्लेखों से ऐसा पता चलता है, कि रत्नशास्त्र के प्राचीन सिद्धान्तों को निबाहते हुए भी ग्रंथकार ने अपने अनुभवों का उल्लेख किया है। दुर्भाग्यवश ग्रंथकार के व्याकरण और शैली में निष्णात न होने से उसके भाव समझने में बड़ी कठिनाई पड़ती है।

४ नवरत्नपरीक्षा—नवरत्नपरीक्षा के दो संस्करण मिलते हैं। छोटे संस्करण में सोम भूभुज् का नाम तीन जगह मिलता है जिसके आधार पर यह माना जा सकता है कि इसके रचयिता कल्याणी का पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर (११२८–११३८, ई) था। इस कथन की सचाई इस बात से भी सिद्ध होती है कि मानसोल्लास के कोशा-ध्यायमें (मानसोल्लास, भा० १, पृ० ६४ से) जो रत्नों का वर्णन है, वह सिवाय कुछ छोटे मोटे पाठभेदों के नवरत्नपरीक्षा जैसा ही है। नवरत्नपरीक्षा का दूसरा संस्करण बीकानेर और तंजोरकी हस्तलिखित प्रतियों में मिलता है। इसमें धातुगद, मुद्राप्रकार और कृत्रिम रत्नप्रकार प्रकरण अधिक हैं। संभव है कि स्मृतिसारोद्धार के लेखक नारायण पंडित ने इन प्रकरणों को अपनी ओर से जोड़ दिया हो।

सुना। सानुदास को उस गहने की ओर ताकते हुए देखकर उन्होंने समझा कि शायद यह निगाहदार था। उससे पूछने पर उसने गहने की कीमत एक करोड़ बता कर कह दिया कि बेचने और खरीदनेवाले की मर्जी से सौदा पट सकता था। वे दोनों एक दूसरे जौहरी के पास पहुंचे जिसने कहा कि गहने की कीमत सारा संसार था पर नासमझ के लिए उसका मोल एक छदाम था। सानुदास की जानकारी से प्रसन्न होकर राजा ने उसे अपना रत्नपरीक्षक नियुक्त कर दिया।

प्राचीन साहित्य में अनेक ऐसे उल्लेख आए हैं जिनसे पता चलता है कि रत्नों के व्यापार के लिए भारतीय जौहरी देश और विदेश की बराबर यात्रा करते थे। दिव्यावदान (पृ० २२९–२३०) की एक कहानी में बतलाया गया है कि रत्नों के व्यापारी मोती, वैदूर्य, शंख, मूंगा, चांदी, सोना, अकीक, लहसुनिया, और दक्षिणावर्त शंख के व्यापार के लिए समुद्र यात्रा करते थे। निर्यामक प्रायः उन्हें सिंहल द्वीप में बनने वाले नकली रत्नों से होशियार कर देता था तथा उन्हें आदेश दे देता था कि वे खूब समझ कर माल खरीदें। ज्ञाताधर्म कथा (१७) और उत्तराध्ययन सूत्रकी टीका (३६।७१) से भी रत्नों के इस व्यापार की ओर संकेत मिलता है। उत्तराध्ययन टीका में एक ईरानी व्यापारी की कहानी दी गई है जो ईरान से इस देश में सोना, चांदी, रत्न और मूंगा छिपा कर लाना चाहता था। आवश्यक चूर्णि (पृ० ३४२) में रत्नव्यापार के लिए एक वणिए का पारसकूल जाने का उल्लेख है। महाभारत (२।२७।२५–२६) के अनुसार दक्षिण समुद्र से इस देश में रत्न और मूंगे आते थे। ईसा की प्रारंभिक सदियों में तो भारत से रोम को हीरे, सार्ड, कोर्नेलिअन, अकीक, सार्डोनिक्स, आनिक्स, क्राइसप्रेस, जहर मुहरा, रक्तमणि, हेल्यिोट्राप, ब्लोडिस्टन, कसौटी पत्थर, लहसुनिया, एक्वामरीन, लहसुनिया, स्फटिक, बिल्लौर, कोरंड, नीलम, मानिक लाल, लाजवर्द, गार्नेट, तुरमुली, मोती इत्यादि पहुंचते थे (मोतीचन्द्र, सार्थवाह, पृ० १२८–१२९)

–:२:–

प्राचीन रत्नपरीक्षा का क्या रूप रहा होगा यह तो ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता, पर इस सम्बन्ध के जो ग्रंथ मिले हैं उनका विवरण नीचे दिया जाता है।

१ अर्थशास्त्र—कौटिल्य ने कोश-प्रवेश्य रत्नपरीक्षा (अर्थशास्त्र, २–१०–२९) में रत्नपरीक्षा के सम्बन्ध की कुछ जानकारियां दी हैं। कोश में अधिकारी व्यक्तियों के सलाह से ही रत्न खरीदे जाते थे। पहले प्रकरण में मोती के उत्पत्ति स्थान, गुण, दोष तथा आकार इत्यादि का वर्णन है। इसके बाद मणि, सौगंधिक, वैदूर्य, पुष्पराग, इन्द्रनील, नंदक, स्रवन्मध्य, सूर्यकान्त, विमलक, सस्यक, अंजनमूल, पित्तक, सुलभक, लोहितक, अमृतांशुक, ज्योतीरसक, मैलेयक, अहिच्छत्रक, कूर्प, पूतिकूर्प, सुगन्धिकूर्प,

क्षीरपक, मुक्तिपूर्णक, सिलाप्रवालक, चूलक, पुष्पपुष्पक तथा हीरा और मूगा के नाम आए हैं। इनमें से बहुत से रत्नों की ठीक ठीक पहचान भी नहीं हो सकती क्यों कि बाद के रत्नशास्त्र उनका उल्लेख तक नहीं करते।

२ रत्नपरीक्षा—बुद्धभट्ट की रत्नपरीक्षा का समय निश्चित करने के पहले वराहमिहिर की बृहत् संहिता के ८० से ८३ अध्यायों की जानकारी जरूरी है। इन अध्यायों में हीरा, मोती और मानिक के वर्णन हैं। पन्ने का वर्णन तो केवल एक श्लोक में है। बुद्धभट्ट की रत्नपरीक्षा और बृहत्संहिता के रत्नप्रकरण की छानबीन करके श्री फिनो (वही पृ० ७ से) इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि दोनों की रत्नों की तालिकाओं तथा हीरे और मोती का भाव लगाने की विधि इत्यादि में बड़ी समानता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दोनों ग्रंथों ने समान रूप से किसी प्राचीन रत्नशास्त्र से अपना मसाला लिया। गरुड़ पुराण ने भी बुद्धभट्ट का नाम हटाकर ६८ से ७० अध्यायों में रत्नपरीक्षा ग्रहण कर लिया। बहुत संभव है कि शायद बुद्धभट्ट का समय ७–८ वीं सदी या इसके पहले भी हो सकता है।

३ अगस्तिमत—अगस्तिमत और रत्नपरीक्षा का विषय एक होते हुए भी दोनों में इतना भेद है कि दोनों एक ही अनुश्रुति की बहुत दिनोंसे अलग हुई शाखा जान पड़ते हैं। श्री फिनो (पृ० ११) के अनुसार अगस्तिमत का समय बुद्धभट्ट के बाद यानी छठी सदी के बाद माना जाना चाहिए। शायद उसका लेखक दक्षिण का रहनेवाला जान पड़ता है। संभव है कि अगस्तिमत का आधार कोई ऐसा रत्नशास्त्र रहा हो जिसकी ख्याति दक्षिण में बहुत दिनों तक थी। ग्रंथ के अनेक उल्लेखों से ऐसा पता चलता है, कि रत्नशास्त्र के प्राचीन सिद्धान्तों को निबाहते हुए भी ग्रंथकार ने अपने अनुभवों का उल्लेख किया है। अभाग्यवश ग्रंथकार के व्याकरण और शैली में निष्णात न होने से उसके भाव समझने में बड़ी कठिनाई पड़ती है।

४ नवरत्नपरीक्षा—नवरत्नपरीक्षा के दो संस्करण मिलते हैं। छोटे संस्करण में सोम भूभुज् का नाम तीन जगह मिलता है जिसके आधार पर यह माना जा सकता है कि इसके रचयिता कल्याणी का पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर (११२८–११३८ ई०) था। इस कथन की सचाई इस बात से भी सिद्ध होती है कि मानसोल्लास के कोशाध्यायमें (मानसोल्लास, भा० १, पृ० ६४ से) जो रत्नों का वर्णन है, वह सिवाय कुछ छोटे मोटे पाठभेदों के नवरत्नपरीक्षा जैसा ही है। नवरत्नपरीक्षा का दूसरा संस्करण बीकानेर और तंजोरकी हस्तलिखित प्रतियों में मिलता है। इसमें धातुवाद, मुद्रा और कृत्रिम रत्नप्रकार प्रकरण अधिक हैं। संभव है कि स्मृतिसारोद्धार के कर्त्ता नारायण पंडित ने इन प्रकरणों को अपनी ओर से जोड़ दिया हो।

५ अगस्तीय रत्नपरीक्षा—अगस्तीय रत्नपरीक्षा वास्तव में अगस्ति मत का सार है। पर विस्तार में कहीं कहीं नई बातें आ गई हैं। अभाग्यवश इसका पाठ बहुत भ्रष्ट और अशुद्ध है।

उपर्युक्त ग्रंथों के सिवाय रत्नसंग्रह, अथवा रत्नसमुच्चय, अथवा समस्तरत्नपरीक्षा २२ श्लोकों का एक छोटा सा ग्रंथ है। लघुरत्नपरीक्षा में भी २० श्लोक हैं, जिनमें रत्नों के गुण दोषों का विवरण है। मणिमाहात्म्य में शिव पार्वती संवाद के रूप में कुछ उपरत्नों की महिमा गाई गई है।

६ फेरू रचित रत्नपरीक्षा—ठक्कुर फेरूर चित रत्नपरीक्षा का कई कारणों से विशेष महत्त्व है। पहली बात तो यह है कि यह रत्नपरीक्षा प्राकृत में है। ठक्कुर फेरू के पहले भी शायद प्राकृत में रत्नपरीक्षा पर कोई ग्रंथ रहा हो, पर उसका अभी तक पता नहीं। दूसरी बात यह है कि ग्रंथकार श्रीमाल जाति में उत्पन्न ठक्कुर चंद के पुत्र ठक्कुर फेरू का सुल्तान अलाउद्दीन खिल्जी (१२९६–१३१६) के खजाने और टकसाल से निकटतर सम्बन्ध था। उसका स्वयं कहना है कि उसने बृहस्पति, अगस्त्य और बुद्धभट्ट की रत्नपरीक्षाओं का अध्ययन करके और एक जौहरी की निगाह से अलाउद्दीन के खजाने में रत्नों को देख कर, अपने ग्रंथ की रचना की (१–५)। उसके इस कथन से यह बात साफ मालूम पड़ जाती है कि कम से कम ईसा की १३ वीं सदी के अंत में बुद्धभट्ट की रत्नपरीक्षा, वराहमिहिर के रत्नों पर के अध्याय और अगस्तिमत, रत्नशास्त्र पर अधिकारी ग्रंथ माने जाते थे और उनका उपयोग उस युग के जौहरी बराबर करते रहते थे। जैसा हम आगे चल कर देखेंगे, ठक्कुर फेरू ने रत्नपरीक्षा की प्राचीन परम्परा की रक्षा करते हुए भी तत्कालीन मूल्य, नाप, तोल तथा रत्नों के अनेक नए स्रोतों का उल्लेख किया है जिनका पता हमें फारसी इतिहासकारों से भी नहीं चलता।

—:१:—

प्राचीन रत्नशास्त्रों में खानों से निकले रत्नों के सिवाय मोती और मूंगा भी शामिल है जो वास्तव में पत्थर नहीं कहे जा सकते। साधारणतः जवाहरात के लिए रत्न और मणि और कभी कभी उपल शब्द का व्यवहार किया गया है। संस्कृत साहित्य में रत्न शब्द का व्यवहार कीमती वस्तु और कीमती जवाहरात के लिए हुआ है। वराहमिहिर (बृ० सं० ८०।२) के अनुसार रत्न शब्द का व्यवहार हाथी, घोड़ा, स्त्री इत्यादि के लिए गुणपरक है, रत्नपरीक्षा में इसका व्यवहार केवल कंचनादि रत्नों के लिए हुआ है। मणि शब्द का व्यवहार कीमती रत्नों के लिए हुआ है, पर बहुधा यह शब्द मनिया, गुरिया अथवा मनके लिए भी आया है।

वेदों में रत्न शब्द का प्रयोग कीमती वस्तु और खजानों के अर्थ में हुआ है। ऋग्वेद में तीन जगह (फिनो, पृ० १५) सप्त रत्नों का उल्लेख है। मणि का अर्थ ऋग्वेद में ताबीज की तरह पहननेवाले रत्नों से है (ऋग्वेद, १।३।८, अ० वे० १।२९२, २।११ इत्यादि) मणि तागे में पिरोकर गले में पहनी जाती थी (वाजसनेयी सं० ३०।७, तैत्तिरीयसं ३।४।३।१) इसमें भी संदेह नहीं कि वैदिक आर्यों को मोती का भी ज्ञान था। मोती (कृशन) का उपयोग शृंगार के लिए होता था (ऋग्वेद, २।३५।४, १०।६८।१, अथर्ववेद ४।१०।१–३)

सुव्यवस्थित रत्नशास्त्रों के अनुसार नव रत्नों में पांच महारत्न और चार उपरत्न हैं। वज्र, मुक्ता, माणिक्य, नील और मरकत महारत्न हैं। गोमेद, पुष्पराग, वैदूर्य (लहसनिया) और प्रवाल उपरत्न हैं। मानिक और नीलम के कई भेद गिनाए गए हैं। वराहमिहिर (८२।१) तथा बुद्धभट्ट (११४) के अनुसार मानिक के चार भेद यथा—पद्मराग, सौगंधि, कुरुविंद और स्फटिक हैं। अगस्तिमत (१७३) के अनुसार मानिक के तीन भेद हैं, यथा—पद्मराग, सौगंधिक, कुरुविंद। नवरत्नपरीक्षा (१०९–११०) में इनके सिवाय नीलगंधि भी आ गया है। अगस्तीय रत्नपरीक्षा में (४६ से) मानिक का एक नाम मांसपिंड भी है। ठक्कुर फेरू के अनुसार (५६) मानिक के साधारण नाम माणिक्य और चुन्नी है, अब भी मानिक के ये ही दो नाम सर्वसाधारण में प्रचलित हैं। मानिक के निम्नलिखित भेद गिनाए गए हैं—पद्मराय (पद्मराग), सौगंधिय (सौगंधिक), नीलगंध, कुरुविन्द और जामुनिय।

रत्नपरीक्षाओं में नीलम के तीन भेद गिनाए गए हैं—नील साधारण नीलम के लिए व्यवहृत हुआ है तथा इन्द्रनील और महानील उसकी कीमती किस्में थीं। ठक्कुर फेरू ने (८१) नीलम की केवल एक किस्म महिंदनील (महेन्द्रनील) बतलाया है।

प्राचीन रत्नपरीक्षाओं में पन्ने के मरकत और तार्क्ष्य नाम आए हैं। पर ठक्कुर फेरू (७२) ने पन्ने के निम्नलिखित भेद दिए हैं—गरुडोद्गार, कीडउठी, वासउती, मूगउनी, और धूलिमराई।

उपर्युक्त नव रत्नों की तालिका प्रायः सब रत्नशास्त्रों में आती है पर अगस्तिमत (३२५–२९) में स्फटिक और भ्रम जोड़कर उनकी संख्या ग्यारह कर दी गई है। बुद्धभट्ट ने उस तालिका में पांच निम्नलिखित रत्न जोड़ दिए हैं—यथा शेष (onyx) कर्केतन (thrysobenyl) भीष्म, पुलक (garnet) रुधिराक्ष (carnelial) शेष भर ही फारसी जज़ रूपान्तर है। यह पत्थर भारत और यमन से आता था। इसके बहुत से रंग होते हैं जिनमें सफेद और काला प्रधान है। भारत में इस पत्थर का पहनना अशुभ

माना जाता था। भीष्म कोई सफेद रंग का पत्थर होता था। मुसम्मा (२१२–७९) के अनुसार कत्थयक पिलाहट लिए हुए अकरंग का पत्थर होता था जो पुष्टिरुपतरु के अनुसार स्फटिक का एक भेद मात्र था। सोमलक नीलमायल सफेद पत्थर था और कुछ कर्केतन के किस्म का मीठा पत्थर था।

वराहमिहिर की रत्नों की तालिका में बाईस नाम गिनाए गए हैं पर एक ही रत्न की अनेक किस्में देखते हुए उनकी संख्या कम कर दी जा सकती है। जैसे शशिकान्त स्फटिक का ही एक भेद है, *महानील और इन्द्रनील नीलम हैं*, *तथा सौगंधिक* और पद्मराग मानिक के ही भेद हैं। इस तरह रत्नों की संख्या घट कर उन्नीस हो जाती है यथा स्फटिक के सहित दस रत्न, कर्केतन, पुलक, रुधिराक्ष तथा विमलक, राजमणि, शंख, ब्रह्ममणि, ज्योतिरस और सस्यक। ज्योतिरस और सस्यक का उल्लेख अर्थशास्त्र (२।११।२९) में भी हुआ है। शंख से शायद यहां दक्षिणावर्त शंख का अनुमान किया जा सकता है। ज्योतिरस शायद जेस्पर या हेलियोट्रोप था।

उपर्युक्त रत्नों के सिवाय, फिरोजा (पेरोज, पीरोज) लाजवर्द और लसुन यानी लहसुनिया या वैडूर्य के नाम भी आए हैं। रत्नसंग्रह। (१९) में मसारगर्भ (रूप-मुसारगर्भ, मुसल्गर्भ, मुसारगल्व; पालि—मसारगल्ल, मुसारगल्ल) को दूध पानी अलग करने वाला, श्यामरंग का, चमकीला तथा दुष्ट दोषों का अपहर्ता कहा गया है। शब्द कल्पद्रुम ने इसे इन्द्रनीलमणि कहा है जो ठीक नहीं। महाभारत (२।४७।१४) में भगदत्त द्वारा युधिष्ठिर को अश्मसार का बना पात्र देने का उल्लेख है जिसकी पहचान शायद मसारगर्भ से की जा सकती है। मसारगर्भ की पहचान चीनी इन-मे-यू यानी यमुनियां से की जाती है, पर अश्मसार यशब भी हो सकता है। क्यों कि आसाम का पड़ोसी बर्मा यशब के लिए प्रसिद्ध है।

ठक्कुर फेरुकृत रत्नपरीक्षा (१४–१५) में नवरत्न यथा पद्मराग, मुक्ता, विद्रुम, मरकत, पुखराज, हीरा, इन्द्रनील, गोमेद और वैडूर्य गिनाए हैं। इनके सिवाय लहसुनिया (९२–९३) फलह (स्फटिक, ९५–९६) कर्केतन (९८) भीसम (भीष्म, ९९) नाम आए हैं। ठक्कुर फेरू ने लाल, अकीक और फिरोजा को पारसी रत्न बतलाया है (१०१), इस तरह ठक्कुर फेरू के अनुसार रत्नों की संख्या सोलह बैठती है।

पर वर्णरत्नाकर के रचयिता ज्योतिरीश्वर ठक्कुर (आरंभिक १४ वीं सदी) के समय में *लगता है कि १८ रत्न और ३२ उपरत्न माने जाते थे* (*वर्णरत्नाकर, पृ० २१, ७१ श्री सुनीतिकुमार चेटर्जी द्वारा संपादित, कलकत्ता १९४०*)। रत्नों की तालिका में गोमेद, गरुडोद्गार, मरकत, मुक्ता, भीसवंड, पद्मराग, हीरा, रेणुम, मरासेस, सौगं-

धिक चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त, प्रवाल, राजावर्त, कषाय और इन्द्रनील के नाम आए हैं। इस तालिका में रत्नपरीक्षा के महारत्नों में गोमेद, मरकत, मुक्ता, हीरा, पद्मराग, इन्द्रनील, प्रवाल और सूर्यकान्त हैं। मांसखंड, सौगंधिक, (शायद चुन्नी), तो पद्मराग या मानिक के ही भेद हैं। इसी तरह चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त और कषाय स्फटिक के भेद हैं। मारसेस जिसका सम्बन्ध शेप (onyx) से हो सकता है, तथा लाजवर्द की गणना रत्नों में किस प्रकार की गई यह कहना सम्भव नहीं।

उपमणियों की तालिका वर्णरत्नाकर में दो जगह आई है [पृ० २१, ४१] इनमें [१] कूर्म, [२] महाकूर्म, [३] अहिछत्र, [४] स्यावग (स) ष, [५] व्योमराग, [६] कीटपक्ष, [७] कुरू [कूर्म] पिंद, [८] सुषमा (ना) ल, [९] हरि (री) तसार, [१०] जीविउ (जीवित), [११] यवयाति (यवजाति), [१२] शिवि (खी) निक, [१३] वंशपत्र, [१४] धू (धू) लिमरकत, [१५] मस्सांग, [१६] जंबुकान्त, [१७] स्फटिक, [१८] कर्केतर, [१९] पारिपात्र, [२०] नन्दक, [२१] अच (ञ्ज) नक, [२२] लोहितक, [२३] शैलेयक, [२४] शुक्तिचूर्ण, [२५] पुलक, [२६] तुत्थ (त्थ) क, [२७] शुकग्रीव [२८] गुरुद् (त्) पक्ष, [२९] पीतराग, [३०] वर्णरस (सर), [३१] कर्पूरक, [३२] काच।

उपमणियों की उपर्युक्त तालिका में कुछ मणियों पर ध्यान दिलाना आवश्यक है। इसमें कूर्म और महाकूर्म तो मणियों की श्रेणी में नहीं आते। कछुए की खपड़ियों का व्यापार बहुत पुराना है और इसका उल्लेख पेरिप्लस में अनेक बार हुआ है (शाफ, पेरिप्लस आफ दि एरीथ्रियन सी, पृ० १३ इत्यादि) अहिछत्रक का उल्लेख हमारा ध्यान कौटिल्य (२।११।२९) के आहिच्छत्रक रत्न की ओर ले जाता है। धूलिमरकत से यहां शायद पन्ने के चूड से मतलब है और इस तरह यह ठक्कुर फेरू की चूलिमराई भी शायद यह हो। मस्सांग से यहां शायद मौम्म से मतलब है। जंबुकान्त से शायद जमुनियां का मतलब है। अंजन, पुलक, नंदक और शुक्तिचूर्णक के नाम भी अर्थशास्त्र में आए हैं। कर्केतर से यहां कर्केतन का तथा लोहितक से लोहितांक का मतलब है। तुत्थक से हमारा ध्यान कौटिल्य के तुत्थोद्गत चांदी की ओर खींच जाता है (१२।१४।२२)। काच से काच मणि की ओर इशारा है।

सन् १४२१ में लिखित पृथ्वीचन्द्र चरित्र (प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह पृ० ९५, बड़ोदा, १९२०) में रत्नों और उपरत्नों की निम्न लिखित तालिका दी गई है— पद्मराग, पुष्पराग (पुखराज) माणिक, सींघलिया, गरुडोद्गार, मणि, मरकत, कर्केतन वज्र, वैडूर्य, चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त जलकान्त, शिवकान्त चन्द्रप्रभ सागर प्रभ, प्रभनाथ, अशोक, वीतशोक, अपराजित, गंगोदक, मसारगल्ल, हंसगर्भ, पुलिक, सौगंधिक, सुभग,

सौभाग्यकर, विषहर, भूतिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, अंजन, ज्योतिरस, धूमरुचि, शूलमणि, अंजुकालि, देवानन्द, रिष्टरत्न, कीटपक्ष, कसाउला, धूसराइ, गोमूत्र, गोमेद, लसणीया, नीला, तृणधर, रसगाढ़, वज्रधार, पट्टोण, फणी, चापकी, फिरोजा, प्रवाल, मौक्तिक।

उपर्युक्त तालिका के अध्ययन से इस बात का पता चलता है कि ग्रंथकार ने उसमें रत्नों और उपरत्नों के सिवाय उनके भेद, गुण, दोष इत्यादि की भी गिनती कर ली है। जैसे पद्मराग, माणिक्य, सौंघलिया और सौगंधिक मानिक के भेद हैं। मरकत के भेद में ही गरुडोद्गार, मणि, मरकत, धूसराइ और कीटपक्ष आ जाते हैं। स्फटिक के भेदों में चन्द्रकांत, जलकांत, शिवकांत, चन्द्रप्रभ, साकरप्रभ, प्रभानाथ, गंगोदक, हंसगर्भ, कसाउला (कषाय) आ जाते हैं। पुखराज, कर्केतन, वज्र, वैडूर्य, अशोक, वीतशोक, पुलक, अंजन, ज्योतिरस, अंजुकालि, मसारगल्ल, रिष्टरत्न, गोमूत्र, गोमेद, लहसनिया, नीला, फिरोजा, मोती, मूंगा अलग अलग रत्न या उपरत्न हैं। अपराजित, सुभग, सौभाग्यकर, विषहर, भूतिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, देवानन्द, तृणधर, रत्नों के गुण से सम्बन्ध रखते हैं। वज्रधार, पट्टोम, फणी और चापकी रत्नों की बनावट से सम्बन्धित हैं।

यहां बौद्ध और जैन शास्त्रों में आई रत्नों की तालिकाओं की ओर भी ध्यान दिला देना आवश्यक मालूम होता है। चुल्लवग्ग (९।१।३) में मुत्ता, मणि, वेळुरिय, शंख, शिला, पवाल, रजत, जातरूप, लोहितंक और मसारगल्ल के नाम आए हैं। मिलिन्द प्रश्न (पृ० ११८) में इंदनील, महानील, जोतिरस, वेळुरिय, उम्मापुप्फ, सिरिस पुप्फ, मनोहर, सुरियकंत, चंदकंत, वज्र, कज्जोपमक, फुस्सराग, लोहितंक और मसारगल्ल के नाम आए हैं। सुखावती व्यूह (५९) में वैडूर्य, स्फटिक, सुवर्ण, रूप, अश्मगर्भ, लोहितिका और मुसारगल्ल नाम आए हैं। दिव्यावदान में रत्नों की दो तालिकाएं हैं। एक में (पृ० ५१) मुक्ता, वैडूर्य, शंख, शिला, प्रवालक, रजत, जातरूप, अश्मगर्भ, मुसारगल्ल, लोहितिका और दक्षिणावर्त के नाम हैं, और दूसरीमें (पृ० ६७) पुष्पराग, पद्मराग, वज्र, वैडूर्य, मुसारगल्ल, लोहितिका, दक्षिणावर्त शंख, शिला और प्रवाल के नाम हैं। जैन प्रज्ञापना सूत्र (भगवान दास हर्षचन्द्र द्वारा अनूदित १, पृ० ७७, ७८) में वइर, अग (अंजण), पवाल गोमेज्ज, रुयक, अंक, फलिह, लोहियक्ख मरगय, मसारगल्ल, भुयमोयग, इंदनील, हंसगब्भ, पुलक, सोगंधिय, चन्द्रप्रभ, वैडूर्य, जलकांत और सूर्यकांत के नाम आए हैं। चुल्लवग्ग की तालिका में शिला से शायद स्फटिक से मतलब है। मिलिंद प्रश्न की तालिका में उम्मापुप्फ से शायद जमुनिया का; सिरीपुप्फ से (अ० शा० २।११।२९) शायद किसी तरह के वैडूर्य का बोध होता है। कज्जोपमक से शायद चिन्तामणि रत्न की ओर इशारा है जो सब काम पूरा करता था। वराहमिहिर का (बृ० सं० ८०।५।) ब्रह्ममणि भी शायद चिन्तामणि ही हो। सुखावती व्यूह के अश्मगर्भ से शायद पन्ने का मतलब हो (अमरकोश २।९।९२)।

प्रज्ञापनासूत्र में भुयगमोचक से शायद बाहर मुहरे का और हंसगर्भ से किसी तरह के स्फटिक का बोध होता है।

अर्थशास्त्र (२।११।२९) में जैसा हम पहले देख आए हैं, अनेक रत्नों के उल्लेख हैं। इनमें मोती, हीरा पद्मराग, वैडूर्य, पुष्पराग, गोमेदक, नीलम, चन्द्रकान्त और सूर्यकान्त इत्यादि रत्नों की श्रेणीमें आ जाते हैं। कौट, मौलेयक और पारसमुद्रक से मणियों के उत्पत्ति स्थान का बोध होता है। कूट पर्वत का तो पता नहीं पर मौलेयक रत्न का नाम शायद बलूचिस्तान में कालावन में बहनेवाली मूलानदी से पड़ा हो (मोतीचन्द्र जे० यू० पी० एच० एस० १७ भा० १, पृ० ६३)

लगता है कि प्राचीन साहित्य में रत्नों की तालिका देने की कुछ रीति सी चल गई थी। तमिल के सुप्रसिद्ध काव्य (शिलप्पदिकारम् में भी एक जगह रत्नों का उल्लेख आया है (शिलप्पदिकारम् १४।१८०–२०० श्री दीक्षितारद्वारा अंग्रेजी अनुवाद, मद्रास १९३९) मदुरे में घूमता घामता कोवलन जौहरी बाजार में पहुँचा। वहां उसने चार वर्ण के निर्दोष हीरे, मरकत, पद्मराग, माणिक्य, नीलबिंदु, स्फटिक, पुष्पराग, गोमेदक और मोती देखे।

— ३ :—

प्राय रत्नशास्त्रों में (अगस्तिमत ४, ६३; बुद्धभट्ट ११ का पाठभेद) रत्नों की परख आठ तरह से, यथा–(१) उत्पत्ति (२) आकर (३) वर्ण अथवा छाया (४) जाति (५) गुण–दोष (६) फल (७) मूल्य और (८) विजाति (नकल) के आधार पर, की गई है। इस का विस्तार नीचे दिया जाता है।

(१) उत्पत्ति—यहां उत्पत्ति से रत्नों की वास्तविक अथवा पारलौकिक उत्पत्ति से तात्पर्य है। रत्नों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्राय: सब शास्त्रों का मत है कि वे एक वज्राहत असुर से पैदा हुए। बुद्धभट्ट (२ १२) के अनुसार एक पराक्रमी त्रिलोक विजेता दानव राज बलि था। एक समय उसने इन्द्र को जीत लिया। खुली लड़ाई में उससे पार न पा सकने के कारण देवताओं ने उससे यज्ञ में बलि-पशु बनने का वर मांगा। उसके एवमस्तु कहने पर सौत्रामणि यज्ञ में देवताओं ने उसे खंभ से बांध दिया। उसकी विशुद्ध जाति और कर्म से उसके शरीर के सारे अवयव रत्नों में परिणत हो गए। ऐसा होने पर देव और नागों में यह सिद्ध रत्नों के लिए छीनाझपटी होने लगी। इस छीनाझपटी में समुद्र, नदी, पर्वत, वन इत्यादि में रत्न गिर कर आकर रूप में परिवर्तित हो गए। इन रत्नों से राक्षस, विष, सर्प और व्याधियों से तथा पापलग्न में जन्म तथा दुर्दिन से रक्षा होती है। अगस्तिमत (१–९) में भी कहानी का यही रूप है। केवल फरक इतना है कि यज्ञ में असुर के सिर पर इन्द्र ने वज्र मारा और वज्राहत सिर से ही रत्नों की सृष्टि हुई। उसके सिर से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, नाभि से

वैश्य और पैरों से शूद्र रत्नों की उत्पत्ति हुई। नवरत्न परीक्षा (८ से) में दैत्य का नाम वज्र दिया गया है। वज्रासुर को हराने के लिए इन्द्र ने उससे उसके शरीरदान का वर मांगा। ब्राह्मण वेषधारी इन्द्र की प्रार्थना स्वीकार कर लेने पर यह जान कर कि उसका शरीर अभेद्य है, इन्द्र ने उसके मस्तक पर वज्र से प्रहार किया। उसके शरीर से तरह तरह के रत्न निकले। देव, नाग, सिद्ध, यक्ष, राक्षस और किन्नरोंने तो यह रत्न आज ग्रहण कर लिया, बाकी रत्न पृथ्वी पर फैल गए।

ठक्कुर फेरू (६–१९) की रत्नोत्पत्ति सम्बन्धी अनुश्रुति का रूप भी बुद्धभट्ट वाली अनुश्रुति जैसा ही है। एक दिन असुर बलि इन्द्रलोक को जीतने गया। वहां देवताओं ने उससे यज्ञ-पशु बनने की प्रार्थना की जिसे उसने स्वीकार कर लिया। उसकी हड्डियों से हीरे, दांतों से मोती, लहू से माणिक, पित्त से पन्ना, आंखों से नीलम, हद् रस से वैडूर्य, मज्जा से कर्केतन, नसों से लहसुनिया, मेद से स्फटिक, मांस से मूंगा, चमड़े से पुखराज तथा वीर्य से भीष्म पैदा हुए। असुर बल के शरीर से निकले रत्नों में से सूर्य ने पद्मराग, चन्द्र ने मोती, मंगल ने मूंगा, बुद्ध ने पन्ना, बृहस्पति ने पुखराज, शुक्र ने हीरा, शनि ने नीलम, राहु ने गोमेद और केतुने वैडूर्य ग्रहण कर लिए और इसीलिए इन रत्नों को धारण करने वाले उपर्युक्त ग्रहों से पीड़ा नहीं पाते। चोखे रत्न ऋद्धिदायक और सदोष रत्न दरिद्रता देने वाले होते हैं।

पर रत्नों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में उपर्युक्त मत ही प्रचलित नहीं था, इसका निराकरण वराहमिहिर (८०।३) ने कर दिया है। उनके अनुसार एक मत से रत्न दैत्यबल से उत्पन्न हुए, दूसरों का कहना है कि दधीचि से। कुछ इस मत के हैं कि उनकी उत्पत्ति पत्थरों के स्वाभाववैचित्र्य से है। ठक्कुर फेरू (१२) के अनुसार भी कुछ लोग ऐसे थे जिनका मत था कि रत्न पृथ्वी के विकार हैं। जैसे सोना, चांदी, तांबा आदि धातु हैं वैसे ही रत्न भी।

एक दूसरे विश्वास के अनुसार मनुष्य, सर्प तथा मेंढक के सर में मणि होती थी (अगस्तिमत, ६३–६७) वराहमिहिर, (८५–५) के अनुसार सर्पमणि गहरे नीले रंग की और बड़ी चमकदार होती थी।

(२) आकर–रत्नों की खान को आकर कहा गया है। वराहमिहिर (८०–१७) के अनुसार नदी, खान और छिटफुट मिलने की जगह आकर है। बुद्धभट्ट (१०) ने आकरों में समुद्र, नदी, पर्वत और जंगल गिनाए हैं।

(३) वर्ण, छाया–प्राचीन ग्रंथों में रत्नों के रंग को छाया कहा गया है। पर बाद के शास्त्रों में वर्ण के लिए छाया शब्द का व्यवहार हुआ है। बहुधा शास्त्रकार रत्नों की छाया की उपमा जानी पहचानी वस्तुओं से देते हैं।

(४) जाति—रत्नशास्त्रों में इस शब्द का तीन अर्थों में प्रयोग हुआ है। यथा असली रत्न, रत्न की किस्म और जाति। अंतिम विश्वास के अनुसार रत्नों में भी जातिभेद होता था। यह विश्वास शायद पहिले पहल हीरे तक ही सीमित था। इसके अनुसार ब्राह्मण को सफेद हीरा, क्षत्रिय को लाल, वैश्य को पीला और शूद्र को काला हीरा पहनने का विधान था। बाद में यह विश्वास और रत्नों के सम्बन्ध में भी प्रचलित हो गया[1]।

(५) गुण, दोष—रत्नों के सम्बन्ध में इन शब्दों का प्रयोग उनकी सुन्दरता और चमत्कार लेकर हुआ है। पहिले अर्थ में ये रत्न के गुण और दोष परक हैं। दूसरे अर्थ में ये रत्न के बुरे और भले प्रभाव के द्योतक हैं।

रत्नों के गुण निम्नलिखित हैं—महत्ता (भारीपन) गुरुत्व, गौरव (वजन) काठिन्य, स्निग्धता, राग-रंग, आब (अर्चिस्, द्युति कांति, प्रभाव) और स्वच्छता।

(६) फल—सभी रत्नों के फल की विवेचना की गई है। अच्छे रत्न स्वास्थ्य, दीर्घजीवन, धन और गौरव देने वाले, सर्प, जंगली जानवर, पानी, आग, बिजली, चोर, बिमारी इत्यादि से मुक्ति देनेवाले तथा मैत्री कायम रखने वाले माने गए हैं। उसी तरह खराब रत्न दुख देनेवाले माने गए हैं।

यह ध्यान देने योग्य बात है, कि रत्नों के बीमारी अच्छा करने के गुणों का रत्न शास्त्रों में उल्लेख नहीं है। रत्नों के फलों की जांच पड़ताल से यह भी पता चलता है कि उनके लिखने में बिमारी कसरत को अधिक प्रश्रय दिया गया है। पर इसमें संदेह नहीं कि शास्त्रकारों ने रत्न-फल के सम्बन्ध में लोकविश्वासों की भी चर्चा कर दी है। हीरे का गर्भनाशक फल और पन्ने का सर्पविष को हरना इसी कोटि के विश्वास हैं।

(७) रत्नों के मूल्य—उनके तौल और प्रमाण पर आश्रित होते थे। प्राचीन ग्रंथों में रत्नों का मूल्य रूपकों और कार्षापणों में निर्धारित किया गया है। यह पता नहीं चलता कि रत्नों का मूल्य सोना अथवा चांदी के सिक्कों में निर्धारित होता था पर कार्षापणके उल्लेख से इनका दाम चांदीके सिक्के ही में मालूम पड़ता है। अगस्तिमत के एक क्षेपक (१२) से पता चलता है कि गोमेद और मूंगे का दाम चांदी के सिक्कों में होता था, तथा वैडूर्य और माणिक का सोने के सिक्कों में। ठक्कुरफेरु (१३७) ने बड़े हीरे, मोती, माणिक और पन्ने का मूल्य स्वर्णटंकोंमें बतलाया है। आधे मासे से चार मासे तक के लाल, लहसुनिया, इन्द्रनील और फिरोजा के दाम भी स्वर्णमुद्राओं में होते थे (१२१ १२३) एक टांक में १० से १०० तक चन्ने वाले

---

[1] जहां यह बात उल्लेखनीय है कि दिव्य शरीर का रत्नों में परिणत होजाने का विश्वास वैदिक है (जे आर एस १८९४ पृ ५५८-५९) ईरानियों का भी कुछ ऐसा ही विश्वास था (जे आर एस १८९५, पृ २ २-२ ३)

मोतियों का दाम रूप्य टंकों में होता था (१२४ १२६)। उसी तरह एक रत्ती में १ से २ धान चढ़ने वाले हीरे का मूल्य भी चांदी के टकों में कहा गया है (१२७,२८)। गोमेद, स्फटिक, भीष्म, कर्केतन, पुखराज, वैदूर्य-इन सबके मूल्य भी द्रम्म में होते थे (१३०)।

मानसोल्लास (१, ४५७-४६४) में रत्न तोलने की तुला का सुंदर वर्णन है। उसके तुलापात्र कांसे के बने होते थे। उनमें चार छेद होते थे। जिनसे डोरियां पिरोई जाती थीं। कांसे की डांडी १२ अंगुल की होती थी। जिसके दोनों बगल मुद्रिकाएँ होती थीं। डांडी के ठीक बीचोबीच पांच अंगुल का कांटा होता था। जिसका एक अंगुल छेद में फसा दिया जाता था। कांटे के दोनों ओर तोरण की आकृति बनाई जाती थी। जिसके सिर पर कुंडली होती थी। उसी में डोरी लगती थी। तराजू साधने के लिए एक कलंज तौल का माल एक पलड़े में और पानी दूसरे पलड़े में भरा जाता था। जब कांटा तोरण के ठीक बीच में बैठ जाता था तो तराजू सध गई मानी जाती थी।

(८) विजाति-इस शब्द से कृत्रिम रत्नों का तथा कीमती रत्नों की तरह दिखने-वाले उपरत्नों से अभिप्राय है। ऐसे नकली रत्न भारत और सिंहल में बहुतायत से बनते थे। नवरत्न परीक्षा (१७४-१८१) के अनुसार सम भाग जले शंख और सिंदूर को सद्य प्रसूता गाय के दूध में सान कर फिर उसे दूध से बांध कर बांस में भर कर, मिट्टी के बरतन में चावल के साथ पका कर फिर उसे निकाल कर धीमी आंच पर रख देते थे, फिर उसे तेल में बोरते थे। इससे बांस के भीतर नकली मूंगा बन जाता था। इन्द्रनील बनाने के लिए एक कुप्पे में एक पल नील का चूर्ण और दो पल शंख का चूर्ण मिलाकर खूब हिलाते थे। फिर पूर्वोक्त विधि से नकली इन्द्रनील बना लेते थे। नकली मरकत बनाने के लिए मंजीठ, ईंगुर और नील सममाग में लेकर उसे शीशे की कुप्पी में खूब मिलाते थे। फिर उनके रवे अलग करके उन्हें आग में पकाया जाता था। माणिक शंख के चूर्ण और ईंगुर के मेल से उपर्युक्त विधि से बनता था।

— ४ —

इस प्रकरण में रत्न-परीक्षाओं के आधार पर उनमें आए रत्नों के उपर्युक्त आठ विशेषताओं की जांच पड़ताल करके यह बतलाने का प्रयत्न किया गया है कि ठक्कुर फेरु ने अपनी रत्नपरीक्षा में कहां तक प्राचीनता का उपयोग किया है और कहां उसने रत्न सम्बन्धी अपने अनुभवों का।

हीरा-हीरा रत्नों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उसकी विशेषता यह है कि वह सब रत्नों को काट सकता है उसे कोई रत्न नहीं काट सकता। प्राय सब शास्त्रों के अनुसार हीरे की उत्पत्ति असुरराज की हड्डियों से [redacted]। उसका नाम वज्र इसलिए पड़ा कि इन्द्र से वज्राहत होने पर ही वह निकला।

प्रधान रत्नशास्त्र हीरेकी खानें आठ या दस मानते हैं। पर कौटिल्य (अनुवाद, पृ० ७८) में हीरे की खानों के कुछ दूसरे ही नाम हैं। यथा, सभाराष्ट्रक (विदर्भ या बरार में) मध्यम राष्ट्रक (कोसल यानी दक्षिण कोसल में) काश्मक (शायद अश्मक) [हैदराबाद की गोल्कुंडा की खान] इन्द्रवानक (कलिंग, ओडिसा) की तो पहचान टीकाकारों ने की है। काश्मक की पहचान टीकाकार ने बनारसी हीरे से की है। जिससे बनारस का हीरे तराशोंका अड्डा होने की ओर संकेत हो सकता है। श्रीकटनक हीरा वेदोत्कट पर्वत में मिलता था। श्रीकटनक का ठीक पता नहीं चलता पर शायद इससे, धनकटक (धरणीकोट) जो प्राचीन अमरावती का नाम था, बोध होता है। अगर यह पहचान ठीक है तो यहां कृष्णानदी की घाटी में मिलनेवाले हीरों की ओर संकेत हो सकता है। मणिमन्तक हीरा मणिमत् अथवा मणिमंत पर्वत के पास पाया जाता था। इस मणिमत् पर्वत की पहचान श्रीपार्जिटर ने (मार्कण्डेय पुराण, पृ० १७०) में कश्मीर के दक्षिण की पहाड़ियों से की है। यहां अब हीरा मिलनेका पता नहीं चलता। रत्नशास्त्रों में दी गई हीरे की खानों का पता निम्नलिखित तालिका से चल जाएगा—

बुद्धभट्ट	वराहमिहिर	अगस्तिमत	मानसोल्लास	अगस्तीय रत्नपरीक्षा	रत्न-संग्रह	ठक्कुर फेरू
सुराष्ट्र				....	..	हेमंत
हिमालय				....	..	हिमवंतः
मातंग		मंग	मातग	मगध	मातंग	..
पौंड्र						पंडुर (पौंड्र)
कोशल					..	
वेण्यातट	वेणातट	वेणु	वैरागर	+	आरव	वेणु
सूर्पार			सोपार	+		सोपारक

यहां यह निश्चित कर लेना कठिन है कि उपर्युक्त यंत्र में कितने भौगोलिक नाम वास्तविकता लिए हुए हैं और कितने काल्पनिक हैं। पर इसमें संदेह नहीं की यंत्र में खानों और बाजारों के नाम मिल गए हैं। यह भी संभव है कि बहुत सी प्राचीन खानें समाप्त हो गई हों और उनकी खुदाई बहुत प्राचीन काल में बंद कर दी गई हो। सुराष्ट्र यानी आधुनिक सौराष्ट्र में हीरे की किसी खान का पता नहीं चलता पर यह संभव है कि यहां से रत्न बाहर भेजे जाते हों। यहां एक उल्लेखनीय बात यह है कि प्राचीन साहित्य में जैसे महानिद्देस और वसुदेवहिण्डी में सुराष्ट्र एक बंदर का नाम भी आया है जो शायद सोमनाथ पट्टन हो। यही बात सूर्पारक यानी बम्बई के पास सोपारा बंदरगाह के बारे में भी कही जा सकती है। आर्यशूर की जातकमाला में तो इस बन्दर में रत्नों लाए जाने का उल्लेख भी है। हिमालय में हीरे का होना तो उस अनुश्रुति का द्योतक है जिसके अनुसार मेरु, हिमालय और समुद्र रत्नों के आकर माने गए हैं। यह बात

ठीक है कि शिमला के पास कुछ हीरे मिले थे पर हिमालय में हीरे की खान होने का पता नहीं चलता। मातंग से यहाँ किस प्रदेश से तात्पर्य है इसका भी ठीक पता नहीं चलता। श्री फिनो (पृ० २६) चालुक्यराज मंगलीश के एक लेख के आधार पर मातंगों का निवास स्थान गोलकुंडा का प्रदेश स्थिर करते हैं। हरिषेण (बृहत्कथाकोश ७५।१–३) के अनुसार मातंग पांड्य देश तथा उसके उत्तर में पर्वत की संधि पर रहते थे। शायद यहाँ सेलम जिले के चौवेरे पर्वत श्रेणी से मतलब है, पर यहाँ हीरे का पता नहीं चला है। पौण्ड्र देश से मालदह, कोसी के पूर्व पुर्निया जिले का कुछ भाग तथा दीनाजपुर और राजशाही जिले के कुछ भाग का बोध होता है। तथा पौण्ड्रवर्धन से बोगरा जिले के महास्थान से मतलब है। शायद कलिंग के हीरे से कड़पा, बेल्लारी, कर्नूल, कृष्णा, गोदावरी इत्यादि के तथा संभलपुर के पास ब्राह्मणी, संक, तथा दक्षिणी कोयल नदियों से मिलने वाले हीरे से है। जहांगीर युग की खोखरा की हीरे की खान भी इस बात की पुष्टि करती है। जहांगीर ने स्वयं अपने राज्य के दसवें वर्ष के विवरण (तुजुक, अंग्रेजी अनुवाद, भा० १, ३१६) में इस बात का उल्लेख किया है कि बिहार के सूबेदार इब्राहीम खाँने खोखरा को फतह करके वहां के हीरे की खान पर कब्जा कर लिया। हीरे वहां की एक नदी से निकलते थे। इसमें संदेह नहीं कि कोसल से यहां दक्षिण कोसल से मतलब है। जिसकी पहचान आधुनिक महाकोसल से है। शायद वैरागर और वेनातट या वेणु के हीरे कौसल ही के अन्तर्गत आ जाते हैं। वेणा नदी जो आज कल की वेन गंगा है चांदा जिले से होकर बहती है और उसी पर स्थित वैरागढ़ में हीरे मिलते हैं। मानसोल्लास के वैरागर (सं० वज्राकर) की पहचान इसी वैरागढ़ से ठीक उतर जाती है। शायद यही स्थान चीनी यात्रियोंका कोस्सल और टाल्मी का कौसल रहा हो। अगस्तीय रत्नपरीक्षा में आए मगध से भी शायद छोटा नागपुर की खानों का बोध होता है।

रत्नशास्त्रों में हीरे के अनेक रंग बताए गए हैं। इनके अनुसार सुराष्ट्र का हीरा लाल, हिमालय का तमेड़ा, मातंग का पीला, पुंड्र का भूरा, कलिंगका सुनहरा, कोसल का सिरीस के फूल के रंगवाला वेणा, का चन्द्र की तरह सफेद, तथा सुपारा का सफेद होता था। ठक्कुर फेरू (२२) ने हीरे का रंग तमेड़ा, सफेद नीला, मटमैला, हरताल की तरह पीला, तथा सिरीस के फूल जैसा बतलाया है। ये रंग खान-परक थे। हीरे के वर्णों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है। सफेद हीरा ब्राह्मण, श्याम क्षत्रिय, पीला वैश्य और काला शूद्र पहनने का अधिकारी था। पर राजा को चारों वर्ण के हीरे पहनने का अधिकार था। पर बाद के लेखकों ने सफेद, लाल, पीले और काले हीरे को ही क्रमशः ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जाति में बांट दिया है। ठक्कुर फेरू (२६) भी इसी मतके हैं। उनकी राय में सफेद चोखा हीरा मालवी अर्थात मालवे का कहलाता था।

जिनके घरों में निर्दोष हीरे होते हैं उनकी मित्र, अकाल मृत्यु और शत्रुभय से रक्षा होती है। लाल और पीले हीरे पहनने से राजा को विजयश्री हाथ लगती थी। पुरुष झपलपाते हीरे में भूत, प्रेत, वृक्ष, मंदिर, इन्द्रधनुष इत्यादि देख सकते थे (१०)।

हीरे का प्रारंभिक रूप अठपहला होता था और हीरे के इसी आकार को रत्नशास्त्रों में सबसे अच्छा माना है। प्राचीन रत्नशास्त्रों के अनुसार अच्छे हीरे में छः या आठ कोण, बारह धाराएं, आठ दल, पार्श्व या अंग कहे गए हैं। हीरे की चोटी को कोटि, तल को विभाजित करने वाली रेखा को धार, चोटी की उठान को उत्तुंग, तथा नुकीली विभाजक रेखाओं को तीक्ष्ण कहते थे। तौल में कम, स्वच्छ, शुद्ध और निर्मल और भास्कर — ये हीरे के गुण माने गए हैं। ठक्कुर फेरू (२४) ने हीरे के आठ गुण कहे हैं — सम फलक, उच्च कोणी, तीक्ष्ण धारा, पानी (वारितक), अमल, उज्ज्वल, अदोष और लघुतोल।

रत्नशास्त्रों में हीरे के अनेक दोष भी उल्लिखित हैं। जिनमें टूटी चोटी या पहल, एक की जगह दो कोण, दल हीनता, वर्तुलता, दलहीनता, चपटापन, लंबोदरपन, मारीपन, धुम्धुलापना, और कान्तिहीनता मुख्य हैं। ठक्कुर फेरू (२५) ने नौ दोष यथा — काकपद, बिंदुर (छींटा) रेखा, मैलापन, चिपट, एक धंगता, वर्तुलता, जोका आकार, तथा हीन अथवा अधिक कोण बतलाया है। उसके अनुसार (११ १२) असम चोटी तीखी धारा पुत्रार्थी स्त्रियों के लिए लाभकर थी। पर इसके विपरीत चिपटा, मलिन और त्रिकोना हीरा रमणियों को इसलिए सुख कर होता था कि पुत्ररत्नों की जननी होनेसे वे अपने को प्रथम रत्न मानतीं थीं, भला फिर उनका सदोष रत्न क्या कर सकता था।

हीरे का मूल्य प्राचीन रत्नशास्त्रों में तौल के आधार पर निश्चित किया जाता था। इस सम्बन्ध में दो मत थे एक बुद्धभट्ट और वराहमिहिर का और दूसरा अगस्तिमत का। पहिली व्यवस्था में तौल तंदुल और सर्षप (१ तंदुल = ८ सर्षप) में थी तथा मूल्य रूपकों में। हीरे की सबसे अधिक तौल बीस तंदुल और दाम दो लाख रूपक निश्चित की गई थी। तौल के इस क्रममें हर घटाव या चढ़ाव दो इकाइयों के बराबर होता था। २० तंदुल के हीरे का दाम दो लाख था और एक तंदुल के हीरे का एक हजार। देखने में तो यह हिसाब सीधा सादा मालूम पड़ता है, पर श्री फिनोने हिसाब लगा कर बतलाया है कि २० तंदुल यानी चार कैरट के हीरे का दाम इस रीति से बहुत अधिक बैठ जाता है।

अगस्तिमत के अनुसार तौल्य और सौल्य के आधार पर पिंड से हीरे का दाम निश्चित किया जाता था। पिंड का माप १ यव सौल्य और १ तंदुल तौल्य मान लिया गया है। इस तरह एक पिंड के हीरे का दाम ५०; दो का ५० गुणा ४; चार का

५० गुणा १२; पांच का ५० गुणा १६ —इस तरह बढ़ते बढ़ते २० पिंड का दाम २८०० पहुंच जाता है। पर इस मूल्यांकन में एक ही घनत्व के हीरे, चाहे वे, उनके हल्के होने पर उनका दाम बढ़ जाता था तथा भारी होने पर घट जाता था। इस तरह एक हीरा एक पिंड के घनत्व का होते हुए भी १।४ हल्के होने पर उसका दाम अठारह गुना होता था, १।२ हल्के होने पर छत्तीस गुना तथा ३।४ हल्के होने पर बहत्तर गुना हो जाता था। इसी तरह एक हीरा एक पिंड का घनत्व होते हुए भी भारी हो तो उसका दाम १।४ भारी होने पर आधा हो जाएगा इत्यादि। श्री फिनो की राय में अगस्तिमत का ही मूल्यांकन वास्तविक मालूम पड़ता है।

ठक्कुर फेरूने हीरे का मूल्यांकन अलग न देकर मोती, मानिक और पन्ने के साथ दिया है। पर हीरे का मूल्य निर्धारण करते समय उसे अगस्तिमत का ध्यान अवश्य रहा होगा। उसके अनुसार (३६) समपिंड हीरे का भारी होने पर कम दाम और फकर तथा हल्के होने पर ज्यादा दाम होता था।

अलाउद्दीन के समय जौहरियों की तौल का वर्णन ठक्कुर फेरू ने इस तरह से किया है—

९ राई	—	१ सरसों
६ सरसों	—	१ तंदुल
२ तंदुल	—	१ जौ
१६ तंदुल या ९ गुंजा (रत्ती)	—	१ मासा
४ मासा	—	१ टांक

टांक के उपर्युक्त तौल में कई बातें उल्लेखनीय हैं। श्री नेल्सन राइट (दि कॉयन्स एंड मेट्रालोजी आफ दि सुल्तान्स् आफ देहली, पृ० ३९१ से) ने अपनी खोज से यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि सुल्तान युगके टांक में ९६ रत्तियां होती थीं। रत्ती का वजन १०८ ग्रेन मान कर उन्होंने टांक की तौल १७२ ग्रेन निर्धारित की है। पर ठक्कुर फेरू के हिसाब से तो २४ रत्ती १ टांक यानी १७२.८ ग्रेन के बराबर हुई यानी एक रत्ती का वजन करीब ९.१५ ग्रेन के करीब हुआ। अब यहां प्रश्न उठता है कि गुंजा से यहां साधारण गुजा का ही अर्थ है अथवा यह कोई तौल थी जिसका वजन आधुनिक रत्तीसे करीब करीब पांचगुना अधिक था।

ठक्कुर फेरू (१११) ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि रत्नों का मूल्य बंधा हुआ न होकर अपनी नजर पर अवलंबित होता है, फिर भी अलाउद्दीन के समय रत्नों के जो दाम थे उनकी तौल के साथ उसने वर्णन किया है और यह भी बतलाया है की चार रत्न यानी हीरा, मोती, मानिक और पन्ने का दाम सोने के टंके में लगाया

जाता था। इन रत्नों की बड़ी से बड़ी तौल एक टांक और छोटी तौल एक गुंजा मान ली गई है। पर एक टांक में १० से १०० तक चढ़नेवाले मोती तथा एक गुंजा में १ से १२ पान तक चढ़नेवाले हीरे का मूल्य चांदी के टांक में होता था। उपर्युक्त रत्नों के तौल और मूल्य दो यंत्रों में समझाए गए हैं —

कीमती रत्न सम्बन्धी यंत्र—

गुंजा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	११	१२	१५	१८	२१	२४
हीरा	५	१२	२	३	५	७५	११	१६	२४	३२	४	६	१४	२८	५६	११२
	**	**	**	**	**	**	***	***	***	***	***	***	****	****	****	******
मोती	॥१	२	४	८	१५	२५	४	६	८४	११४	१६	३६	७	१२	२	
माणिक	२	५	८	१२	१८	२६	४	६	८५	१२	१६	२२	४२	८	१४	२४
पन्ना	।	॥	२	१०	५	३	४	५	६	८	१	१३	१८	२७	४	६

उपर्युक्त यंत्र की जांच से कई बातों का पता लगता है। सबसे पहली बात तो यह है कि अलाउद्दीन के काल में और युगों की तरह हीरे की कीमत सब रत्नों से अधिक थी। हीरा जैसे जैसे तौल में बढ़ता जाता था उसी अनुपात में उसकी कीमत बढ़ती जाती थी। बारह रत्ती तक तो उसका दाम क्रमशः बढ़ता था पर उसके बाद हर तीन रत्ती के वजन पर उसका दाम दुगना हो जाता था। अगर चांदी और सोने का अनुपात १० १ मान लिया जाय तो एक टांक के हीरे का मूल्य १,२०००० चांदी के टांक के बराबर होता था। इसके विपरीत एक टांक के मोती का मूल्य २००० और मानिक का २४०० सुवर्ण टंका था। पन्ने का दाम तो बहुत ही कम यानी एक टंक के पन्ने का दाम ६० सुवर्ण टंका था।

छोटे मोती और हीरों के तौल और दाम का पत्र—

मोती(टंक १)	१	१२	१५	२	२५	१	४	५	६ –७	७ –१	—	—	
स्वर्णटंक	५	४	३	२	१५	१२	१	८	५	३	—	—	
[illegible]	१	२	३	४	५	६	७	८	५	१	११	१२	
रूप टंक	१५	२६	२	१६	११	१	८	७	६	५	४	२	

उपर्युक्त यंत्र से यह पता चलता है कि मोती और हीरे जितने अधिक एक टांक में चढ़ते थे उतना ही उनका दाम कम होता जाता था और इसीलिए उनका दाम सोने के टांकों में न लगाया जाकर चांदी के टांकों में लगाया जाता था।

रत्न शास्त्रों के अनुसार नकली हीरा लोह पुखराज, गोमेद, स्फटिक, वैदूर्य और शीशे से बनता था। ठक्कुर फेरू (९७) ने भी इन्हीं वस्तुओं को नकली हीरा बनाने के काम में आने का उल्लेख किया है। नकली हीरे की पहचान अम्ल तथा दूसरे पत्थरों के काटने की शक्ति से होती थी। ठक्कुर फेरू (४८) के अनुसार नकली हीरा वजन में भारी, जल्दी घिसनेवाला, पतली धार वाला तथा सरलतापूर्वक घिस जानेवाला होता था।

मोती—महारत्नों में मोती का नम्बर दूसरा है। भारतीयों को शायद इस रत्न का बहुत प्राचीनकाल से पता था। मोती को जिसे वैदिक साहित्य में कृशन कहा गया है, सबसे पहला उल्लेख ऋग्वेद (१।३५।४,१०।६८।११) में आता है। अथर्ववेद में वायु, आकाश, बिजली, प्रकाश तथा सुवर्ण, शंख और मोती से रक्षा की प्रार्थना की गई है। शंख और मोती राक्षसों, राक्षसियों और बीमारियों से रक्षा करने वाले माने जाते थे। उनकी उत्पत्ति आकाश, समुद्र, सोना तथा वृत्र से मानी गई है।

रत्नशास्त्रों के अनुसार मोतीके आठ स्रोत—यथा सीप, शंख, बादल, मकर और सर्प का सिर, सूअर की दाढ़, हाथी का कुंभस्थल तथा बांस की पोर माने गए हैं। यह विश्वास भी था कि स्वाती की बूंदें सीपियों में पड़कर मोती हो जाती थीं। असुरबल के दांतों से भी मोती बनने का उल्लेख आता है।

मोती के उत्पत्ति सम्बन्धी उपर्युक्त विश्वासों की जांच पड़ताल से पता चलता है कि अथर्ववेद वाली अनुश्रुति से उनका खासा सम्बन्ध है। उसके वृत्रजात मानने से असुरबल वाली अनुश्रुति की ओर ध्यान जाता है। इस तरह हम देख सकते हैं कि मोती सम्बन्धी प्राचीन विश्वासों की जड़ वैदिक युग तक पहुंच जाती है।

ठक्कुर फेरू ने भी मोती के उत्पत्तिस्थान, रत्नशास्त्रों की ही तरह कहे हैं। उसके अनुसार शंखजन्य मोती छोटे, सफेद तथा गोल होते हैं और उनमें मंगल का आवास होता है। मच्छ से उत्पन्न मोती काला, गोल तथा हल्का होता है और उसके पहनने से शत्रु और भूत प्रेतों से रक्षा होती है। बांस में पैदा मोती गुंजे के इतने बड़े तथा राज देनेवाले होते हैं। सूअर की दाढ़ से पैदा मोती गोल चिकना और सास के फल इतना बड़ा होता है। उसको पहननेवाला अजेय हो जाता है। सांप से निकला मोती नीला तथा हलायची इतना बड़ा होता है। उसके पहनने से सर्पोपद्रव, विष, तथा बिजली से रक्षा होती है। बादल में पैदा मोती तो देवता पृथ्वी पर आने ही नहीं देते, गिरने के पहिले ही उन्हें रोक लेते हैं। चिन्तामणि मोती वह है जो बरसते पानी की एक बूंद हवा से सूख कर मोती हो जाय। सीप के मोती छोटे और मूल्यवान होते है।

रत्नशास्त्रों में मोती के आकरों की संख्या भिन्न भिन्न दी हुई है। एक अनुश्रुति के अनुसार आठ आकर हैं तो दूसरी के अनुसार चार। अर्थशास्त्र (२।११।२९) के अनुसार ताम्रपर्णी से निकलनेवाले मोती ताम्रपर्णिक, पाण्ड्यकवाट से पाण्ड्यकवाटक, पाश्य से पाशिक्य, कूल से कौलेय, चूर्ण से चौर्ण, महेन्द्र से माहेन्द्र, कर्दम से कार्दमिक, स्रोतसि से स्रौतसीय, ह्रद से ह्रदीय और हिमवत् से हैमवतीय।

उपर्युक्त सूचियों में ताम्रपर्णिक और पाण्ड्यकवाटक तो निश्चय मनार की खाड़ी के मोती के द्योतक हैं। ताम्रपर्ण से यहां ताम्रपर्णी नदी का तात्पर्य माना गया है। पाण्ड्यकवाट मदुरै है जहां मोती का व्यापार खूब चलता था। पाश्य से शायद फारस का मतलब

है। चूर्ण को टीकाकार ने केरल में मुचिरिके पास एक गांव माना है। यह गांव शायद तामिल साहित्य का मुचिरि और पेरिप्लस (स्काफ, वहि, पृ० २०५) का मुजिरिस था जिसकी पहचान क्रेंगनोर में मुयिरिकोट्ट से की जाती है। मुजिरिस ईसा की आरंभिक सदियों में एक बड़ा बंदर था और बहुत संभव है कि यहां मोती आने से किसी नदी के नाम के आधार पर मोती का चौर्णेय नाम पड़ गया हो। टीका के अनुसार कौलेय मोती का नाम सिंहल की किसी कूल नदी के नाम पर पड़ा, पर विचार करने से यह बात ठीक नहीं मालूम पड़ती। कूल से पेरिप्लस (५९) के कोल्चि तथा शिलप्पदिकारम् (पृ० २०२) के कोरकै से बोध होता है जो मोतियों के लिए प्रसिद्ध था। पेरिप्लस के समय में यह पांड्य देश का एक प्रसिद्ध बंदरगाह था। पर ताम्रपर्णी नदी द्वारा बंदर के भर जाने पर बंदरगाह वहां से पांच मील दूर हटकर कायल में पहुंच गया। माहेन्द्रक, कार्दमक, हारीय और स्रौतसीय का ठीक पता नहीं चलता। टीकाकार के अनुसार कार्दम ईरान और स्रोतसी बर्बर देश में नदियां और हृद बर्बर देश में दह था। इन संकेतों में जो भी सत्य हो पर यहां टीकाकार का फारस की खाड़ी और बर्बर देश से मोती आने की ओर संकेत अवश्य है।

हिमालय तो सब रत्नों का घर माना ही जाता था। वराह मिहिर ८१।२ के अनुसार सिंहल, परलोक, सुराष्ट्र, ताम्रपर्णी, पारशवास, कौबेरवाट, पांड्यवाट और हिमालय में मोती होते थे।

सिंहल—मनार की खाड़ी मोती के लिए प्रसिद्ध है। यह खाड़ी ६५ से १५० मील चौड़ी हिन्द महासागर की एक बाहु है। मोती के सीप सिंहल के उत्तर पश्चिमीतट से हट कर तथा तूतीकोरिन के आसपास मिलते हैं। मोतियों के इस स्रोत का उल्लेख प्लिनी (९।५४–८), पेरिप्लस (१५,१६,५९,५९), मार्कोपोलो (दि बुक आफ सेर मार्कोपोलो, मा०२, पृ०२६७, २६८) अमर बार्बेसा (लीराबिब्लिया डिसक्रिप्टा, हक्ल्येत सोसायटी, १८६६, पृ०६६) लिनशोटेन (दि वोयज आफ लिनशोटेन, हक्ल्येत सोसायटी, १८८४, मा०२ पृ०१३३–१३५) इत्यादि करते हैं।

परलोक—इसी को शायद ठक्कुर फेरू ने रामावलोक कहा है। इस प्रदेश का ठीक ठीक पता नहीं चलता पर यह ध्यान देने योग्य बात है कि मध्यकाल में अरब भौगोलिक पेगू को रामादेश कहते थे। बरमा के समुद्रतट में कुछ दूर मेर्गुई द्वीप समूह के समुद्र में अब भी मोती मिलते हैं। रामा से पेगू की पहचान की जा सकती है। यहां सल्ंग लोग मोती निकालते हैं। सुराष्ट्र कच्छ के रन के दक्खिन में, नवानगर के समुद्र तट के आगे बोधावदर के पास, भगरा से कच्छ की खाड़ी में पिंडेरा तक, आमरद, चोक, करुंबार और मीरा के द्वीपों के आसपास भी मोती मिलते हैं (सी० एफ० कुन्ज आर सी० एच० स्टिवेन्सन, दि बुक आफ पर्ल, पृ० १३२, लंडन १९०८)।

ताम्रपर्णी—जैसा हम ऊपर कह आए हैं यहां ताम्रपर्णी से मनार की खाड़ी से मतलब है। ताम्रपर्णी नदी के मुहाने पर पहले कोरके बंदरगाह पर, बाद में उसके भरजाने से उसके दक्खिन पांच मील पर, कायल बंदरगाह हो गया।

पांड्यवाट—इससे शायद मथुरे का मतलब है यहां मोती का खूब व्यापार चलता था। शिलप्पदिकारम् (पृ०२०७) के अनुसार यहां के जौहरी बाजार में चन्द्र गुरु, अंगारक और अणिमुत्तु किस्म के मोती मिलते थे।

कौबेरवाट—इसका ठीक पता तो नहीं चलता पर संभव है कि यहां चोलों की सुप्रसिद्ध राजधानी कावेरीपट्टीनम अथवा पुहार से मतलब हो। शिलप्पदिकारम् (पृ० ११० १११) के अनुसार यहां मोतीसाज रहते थे और वे ऐब मोती बिकते थे।

पारसवबास—इससे फारस की खाड़ी से मतलब है। यहां मोती बहुत प्राचीन काल से मिलते हैं। इसका उल्लेख, मेगास्थनीज, चेरक्स के इसिडोर, निआर्कस, तथा टाल्मी ने किया है। टाल्मी के अनुसार मोती के सीप टाइलोस द्वीपमें (आधुनिक बहरैन) मिलते थे। पेरिप्लस (३५) के अनुसार अबोई (मस्कत के उत्तर पश्चिम पैमानिक्स द्वीप समूह में कहलाता) में मोती के सीप मिलते थे। नवीं सदी में मासूदी ने उसका वर्णन किया है। पारी रेनो, मिमायर हुर लें ब' १८५९। इब्नबतूता (गिब्स, इब्नबतूता) ने इसका उल्लेख किया है। बार्बोसा ने (दि डूमेंटस आफ ड्वोर्टे बार्बोसा, पृ० ९५, लंदन, १८६६) हुर्मुज की यात्रा में फारस की खाड़ी के मोतियों का वर्णन किया है। लिन्शोटन और टावर्निये ने भी हुरमुज, बसरा और बहरैन के मोती के व्यापार का आंखों देखा वर्णन किया है।

अगस्तिमत (१०९–१११) और मानसोल्लास (१, ४१२) के अनुसार सिंहल, आरवाटी, बर्बर और पारसीक से मोती आते थे। सिंहल और फारस का तो हम वर्णन कर चुके हैं। आरवाटी से यहां अरब के दक्खिन-पूर्वी तट और बर्बर से लाल सागर से मिलनेवाले मोती के सीपों से तात्पर्य मालूम पड़ता है। अरब में अदन से मस्कत तक के बंदरों में मोती के गोताखोर मिलते हैं जो अपना व्यापार सेकोतरा के द्वीपों, पूर्वी अफ्रीका और जंजीबार तक चलाते हैं। लाल सागर में अकबा की खाड़ी से बाबेल मंदेब तक मोती के सीप मिलते हैं (कुंज, वही, पृ० १४२)।

ठक्कुर फेरू के अनुसार (४९) मोती रामावलोह, बब्बर, सिंहल कांतार, पारस, कैसिय और समुद्रतट स आते थे। उपर्युक्त तालिका कुछ अंश में रत्न शास्त्रों की तालिकाओं से भिन्न है। रामावलोह से जैसा हम पहले कह आए हैं, शायद मेरगुई के द्वीप समूह स अथवा पेगू से मतलब हो। बब्बर से लाल सागर के अफ्रीकी तट से मतलब है। यहां बबर लोगों से तात्पर्य नील नदी और लाल सागर के बीच रहनेवाले दनाकिल तथा सोमाल और गल्लों से है। कान्तार से यहां रेगिस्तान से अभिप्राय है। मार्कोपोलो (का पूर्सा द्वारा

संपादित, पृ० १५४–५५) में मह कन्तार किसी प्रदेश का नाम है जो शायद बेरेनिके से सिकंदरिया तक के मार्ग का द्योतक था। यह भी संभव है कि ठक्कुर फेरू का मतलब यहां कांतार से अरब के दक्खिन पूर्वी समुद्र तट से हो जहां के मोतियों के बारे में हम ऊपर कह आए हैं। अगर हमारा अनुमान ठीक है तो यहां कांतार से अगस्तिमत के आवाटी और मानसोल्लास के आवाम से मतलब है। केसिम से यहां निश्चय इब्नबतूता (गिब्स, इब्नबतूता, पृ० १२१, पृ० ३५१) के बंदर कैस से मतलब है जिसे उसने भूल से सीराफ के साथ में मिला दिया है। (वास्तव में यह बंदर सीराफ से ७० मील दक्खिन में है)। सीराफ (आनुषिक तहीरी के पास) पतन के बाद, १२ वीं सदी में उनका सारा व्यापार कैस चला आया। करीब १३०० के कैस का व्यापार हुरमुज उठ आया। कैस के गोताखोरों द्वारा मोती निकालने का आंखों देखा वर्णन इब्नबतूता ने किया है। जैसे, बाद में चल कर और आज तक बसरा के मोती प्रसिद्ध हैं उसी तरह शायद चौदहवीं सदी में कैस के मोती प्रसिद्ध थे।

इब्नबतूता के शब्दों में—'हम हुंजुबाल से कैस शहर को गए। जिसे सीराफ भी कहते हैं। सीराफ के लोग भले घर के और ईरानी नस्ल के हैं। उसमें एक अरब कबीला मोतियों के लिए गोताखोरी का काम करता था। मोती के सीप सीराफ और बहरेन के बीच नदी की तरह शांत समुद्र में होते हैं। अप्रेल और मई के महीनों में यहां फार्स, बहरेन और कतीफ के व्यापारियों और गोताखोरों से भरी नावें आती हैं।'

बुद्धभट्ट ने केवल सफेद मोतियों का वर्णन किया है। अगस्तिमत के अनुसार मोती महुआई (मधुर) पीले और सफेद होते हैं। मानसोल्लास में नीले मोती का भी उल्लेख है, तथा रत्नसंग्रह में लाल मोती का। ठक्कुर फेरू ने भी प्रायः मोती के इन्हीं रंगों का वर्णन किया है।

रत्नशास्त्रों के अनुसार गोल, सफेद, निर्मल, स्वच्छ, स्निग्ध, और भारी मोती अच्छे होते हैं। अच्छे मोती के बारे में ठक्कुर फेरू (५१) का भी यही मत है।

रत्नशास्त्रों के अनुसार मोती के आकार दोष—अर्धरूप, त्रिकोणापन, कृशपार्श्व और त्रिवृत्त (तीनगांठ); बनावट के दोष—शुक्तिपार्श्व (सीप से लगाव) मत्स्याक्ष (मछली के आंख का दाग), मिस्फोटपूर्ण (चिटक), बालुआहट (पंकपूर्ण शर्कर), रुक्षापन; तथा रंग के दोष—पीतापन, गदलापन, कांस्यवर्ण, ताम्राभ और जठर माने गए हैं। मोती के प्राय यही दोष ठक्कुर फेरू ने भी गिनाए हैं। इन दोषों से मोती का मूल्य काफी घट जाता था।

हम हीरे के प्रकरण में देख आए हैं कि ठक्कुर फेरू ने मोतियों के तौल और दाम का क्या हिसाब रखा था। प्राचीन रत्नशास्त्रों में इस सम्बन्ध में दो मत मिलते हैं—एक तो बुद्धभट्ट और वराहमिहिर का और दूसरा अगस्ति का। पहले सिद्धान्त में गुंजा

अथवा कृष्णल की तौल है। माष पांच गुंजों के बराबर होता था और शाण चार माष के। दाम रूपक अथवा कार्षापण में लगाया गया है। सबसे बड़ी तौल एक शाण मान ली गई है और कीमत ५२०० रूपक। तौल में हर एक माष बढ़ने पर दाम दुगुना हो जाता था। दूसरे सिद्धान्त में तौल गुंजा, मंजली और कलंज में निर्धारित है। एक कलंज चालीस गुंजों के अथवा चौबीस मंजली के बराबर माना गया है। गुंजा की तौल करीब आधा केरेट तथा कलंज करीब साढ़े बाईस केरेट के है। मोती की भारी से भारी तौल दो कलंज मानकर उनकी कीमत ११७११७२ (?) मानी गई है। तौल पर दाम किस आधार पर बढ़ता था, इसका विवरण ठीक तरह से समझ में नहीं आता।

सब रत्नशास्त्रों के अनुसार सिंहल में नकली मोती पारे के मेल से बनते थे। नकली मोती जांचने के लिए मोती, पानी तेल और नमक के घोल में एक रात रख दिया जाता था। दूसरे दिन उसे एक सफेद कपड़े में धान की भूंसी के साथ रगड़ते थे। ऐसा करने से नकली मोती का रंग उतर जाता था पर असली मोती और भी चमकने लगता था।

मानिक—अनुश्रुति के अनुसार पद्मराग की उत्पत्ति असुरबल के रक्त से हुई। मानिक के नामों में पद्मराग, सौगंधिक, कुरुविंद, माणिक्य, नीलगंधि और मांसखंड मुख्य हैं। बुद्धभट्ट के कुरुविंदज, सुगंधिकोत्थ, स्फटिक प्रसूत तथा वराहमिहिर के कुरुविंदभव, सौगंधिभव तथा स्फटिक का शाब्दिक अर्थ जैसे गंधक से उत्पन्न, ईंगुर से उत्पन्न, स्फटिक से उत्पन्न लिया जाय अथवा नहीं इसमें संदेह है। यह नहीं कहा जा सकता कि रत्नपरीक्षाकार को जिससे दोनों शास्त्रकारों ने मसाला लिया है गंधक, ईंगुर और स्फटिक से मानिक की उत्पत्ति के किसी रासायनिक प्रक्रिया का ज्ञान था अथवा नहीं।

प्रायः सब शास्त्रों के अनुसार सबसे अच्छा मानिक लंका में रावणगंगा नदी के किनारे मिलता था। कुछ हल्के दर्जे के मानिक कलपुर, अंध्र तथा तुंबर में मिलते थे (बुद्धभट्ट, ११४ वराहमिहिर ८२।१; मानसोल्लास, १।४७३–७४) ठक्कुर फेरू (५५) के अनुसार मानिक सिंहल में रामगंगा नदी के तट पर, कलशपुर और तुंबर देश में मिलते थे।

रावणगंगा—ठक्कुर फेरू की रामगंगा शायद रावणगंगा ही है। यहां हम पाठकों का ध्यान इब्नबतूता की सिंहल यात्रा की ओर दिलाना चाहते हैं। अपनी यात्रा में वह कुनकार पहुंचा जहां मानिक मिलते थे (गिब्स, इब्नबतूता, पृ० २५६–५७) यह नगर एक नदी पर स्थित था जो दो पहाड़ों के बीच बहती थी। इब्नबतूता के अनुसार (मौलवी मुहम्मदहुसेन, शेख इब्नबतूता का सफरनामा। पृ० ३३८–२९ लाहोर १८९८) इस शहर में आदम किस्म के मानिक मिलते थे। उनमें से कुछ तो नदी से निकलते थे और कुछ जमीन खोदकर। इब्नबतूता के वर्णन से यह भी पता चलता है

कि याकूत शब्द का व्यवहार मानिक और नीलम तथा दूसरे रंगीन रत्नों के लिए भी होता था। सौ फनम से ऊंची मालियत के पत्थर राजा स्वयं रख लेता था। मार्कोपोलो (यूल, दि बुक आफ सर मार्कोपोलो, २, १५४) ने भी सिंहल के मानिक और दूसरे कीमती पत्थरों का उल्लेख किया है। तावर्निये (ट्रावेल्स, भा० २, पृ० १०१-१०२) के अनुसार भी मध्यसिंहल के पहाड़ी इलाकेकी एक नदी से मानिक और दूसरे रत्न मिलते थे। बरसात में यह नदी बहुत बढ़ जाती थी। पानी कम हो जाने पर लोग इसमें मानिक इत्यादि की खोज करते थे।

उपर्युक्त उद्धरणों से रावणगंगा अथवा रामगंगा की वास्तविकता सिद्ध हो जाती है। सर ए० टेनेंट के अनुसार इब्नबतूता का कुनकार या कलकार गंपोला था जिसका दूसरा नाम गंगाश्रीपुर या गंगेली था। पर गिब्स के अनुसार कुनकार की पहचान कोर्नेगल्ले (कुरुनगल) से की जा सकती है जो इब्नबतूता के समय सिंहल के राजाओं की राजधानी थी। (गिब्स, इब्नबतूता, पृ० २६५ नोट ६)

क (का) लपुर — कलशपुर — प्राचीन रत्नशास्त्रों में मानिक का एक प्राप्तिस्थान कलपुर दिया है। यह पाठ ठीक है अथवा नहीं यह तो कहना संभव नहीं, पर छोटे मानिक का वर्णन करते हुए बुद्धभट्ट (१२९-१३१) ने कलशपुर का उल्लेख किया है। अगर कलपुर (मानसोल्लास—कलशपुर) पाठ ठीक है तो शायद उसका मिलान तामिल काव्य पट्टिनप्पालै के कालगम् से किया जा सकता है जिसे श्री नीलकंठशास्त्री कडारम् अथवा आधुनिक केदा मानते हैं (नीलकंठशास्त्री, हिस्ट्री आफ श्रीविजय, पृ० २६, मद्रास १९४९) पर केदा में मानिक कैसे पहुंचे यह प्रश्न विचारणीय है। संभव है कि स्याम और बर्मा के मानिक यहां बिकने के लिए पहुंचते हो और बाजार के नाम से ही उत्पत्तिस्थान का नाम पड़ गया हो। कलशपुर की पहचान सिंगोर के इस्तमस पर स्थित कर्मरंग से श्री सेमी ने की है (वही, पृ० ८१)। अगर यह पहचान ठीक है तो कलशपुर में शायद मानिक का व्यापार होता रहा होगा।

अंध्र — आंध्रदेश में मानिक मिलने का और दूसरा उल्लेख नहीं मिलता।

तुंबर — मार्कण्डेय पुराण (पार्जिटर का अनुवाद, पृ० ३४३) के तुंबर, जैसा श्री पार्जिटर का अनुमान है, शायद विंध्यपाद पर रहनेवाली एक जंगली जाति के लोग थे पर तुंबर देश की स्थिति का ठीक पता नहीं चलता। विंध्य में मानिक मिलने का भी पता नहीं है।

रत्नशास्त्रों में मानिक के बहुत से रंग कहे गए हैं जिनमें स्फटिका (पद्मराग) पीतरक्त (कुरुविंद) और नीलरक्त (सौगंधिक) मुख्य है। प्राचीन रत्नशास्त्रों के अनुसार सब तरह के मानिक एक ही खान में मिलते थे। बुद्धभट्ट के अनुसार सिंहल की नदी

रावणगंगा में चार रंग के मानिक मिलते थे पर मानसोल्लास (४७५-४७९) के अनुसार सिंहल का पद्मराग लाल, कालपुर का कुरुविंद पीला, आंध्र का सौगंधिक अशोक के पल्लव के रंग का, तथा तुंबर का नीलगंधि नीले रंग का होता था। पर रत्नों के अनुसार मानिक का रंगों के अनुसार वर्गीकरण कोरी कल्पना जान पड़ती है। अगस्तीय रत्नपरीक्षा (४७, ५२) के अनुसार तो मानिक के वर्ण भी निश्चित कर दिए गए हैं। उस ग्रंथ में पद्मराग ब्राह्मण, कुरुविंद क्षत्रिय, श्यामगंधि वैश्य और मांसखंड शूद्र माना गया है। ब्राह्मण वर्ण का मानिक सफेद और लाल मिश्रित, क्षत्रिय गहरा लाल, वैश्य पीला मिश्रित लाल और शूद्र पीला मिश्रित लाल रंग का होता था। यहां यह बात जानने लायक है कि यह विश्वास केवल भारतीय ही नहीं था इसका प्रसार लोगों में भी था। इब्नबतूता के अनुसार सिंहल के मानिक को ब्राह्मण कहते भी थे।

ठक्कुर फेरू के अनुसार (५७-६१) पद्मराग, सूर्य तपे सोने और अग्निवर्ण का; सौगंधिक पलास के फूल, कोयल, सारस और चकोर की आंख के रंग जैसा तथा अनारदाने के रंग का; नीलगंध कमल, आलता, मूंगा और ईंगुर के रंग का; कुरुविंद पद्मराग और सौगंधिक के रंग का, और जमुनिया जामुन और कनेर के फूल के रंग का होता था।

मानसोल्लास (४८५) के अनुसार स्निग्ध छाया, गुरुत्व, निर्मलता और अतिरक्तता मानिक के गुण माने गए हैं। अगस्तीय रत्नपरीक्षा के अनुसार (५९, ६०) बढ़िया, मानिक गहरे लाल रंग का, लोहे से न कटनेवाला, चिकना, मांसपिंड की आभा देने वाला, बुद्धिदायक तथा पापनाशक होता था।

मानिक के आठ दोष यथा—द्विच्छाय, द्विपद, भिन्न, कर्कर, लशुनपद (दूध से धुले की तरह) कोमल, जड़ (रंगहीन) और धूम्र (धुमैला) मानिक के दोष हैं (मानसोल्लास, ४७९-४८१)।

ठक्कुर फेरू के अनुसार (६२) मानिक के ये आठ गुण हैं यथा—सच्छाय, सुस्निग्ध, चिरणाम, कोमल, रंगीलापन, गुरुता, समता और महत्ता। इसके दोष हैं (६२) गतछाय, जड़ धूम्रता, भिन्न लशुन कर्कर और कठिन, विपद तथा रूक्ष।

ठक्कुर फेरू के अनुसार मानिक की तौल और दाम के बारे में हम ऊपर कह आए हैं। वराहमिहिर के अनुसार एक पल (४ कर्ष) के मानिक का दाम २६०००, ३ कर्ष का २००००, २ कर्ष का १२०००, १ कर्ष (१६ माषक) का ६०००, ८ माषक का ३०००, ४ माषक का १००० और २ माषक का ५०० है। बुद्धभट्ट (१४४) के अनुसार समान तौल के हीरे और मानिक का एक ही मूल्य होता है; पर हीरे की तौल तंदुलों में और मानिक की तौल माषकों में होती है। अगस्तिमत के अनुसार मानिक का दाम बहुधा तीन बातों पर अवलंबित था। यथा—मानिक की किस्म, वजन (यवों में) तथा कांति (सर्षपों में) मानिक की साधारण कांति का मापदंड २०

सर्षपों के उतार चढ़ाव में निहित थी। इसके लिए ऊर्ध्ववर्ति, पार्श्ववर्ति, अधोवर्ति; अथवा, ठक्कुर फेरू (६७) के ऊर्ध्वज्योतिस्, पार्श्वज्योतिस् और अधोज्योतिस् शब्द व्यवहार में आए हैं। अगर कांति २० सर्षपों से अधिक हो तो उसे कोतिरंग कहते थे और उसी अनुपात में उसका दाम बढ़ जाता था। वजन की इकाई २ यव मानी गई है, इसमें हर बार इकाई बढ़ने पर मानिक का दाम दुगुना हो जाता था। अधिक से अधिक दाम २६१, ९१४,००० तक पहुँचता है।

ठक्कुर फेरू ने (६१) मानिक के किस्मों पर दाम का अनुपात निश्चित किया है। उसके अनुसार पद्मराग, सौगंधिक, नीलगंध, कुरुविंद और जमुनिया के दामों में २०, १५, १०, ६ और २ बिस्वा मूल्य का अंतर पड़ जाता था। ठक्कुर फेरू ने (६८) केवल ऊर्ध्ववर्ती, अधोवर्ती और तिर्यग्वर्ती मानिकों को उत्तम, मध्यम और अधम श्रेणी का माना है बाकी को मिट्टी। सान पर चढ़ाने से घिसनेवाली, तथा छूते ही दाग पड़ने वाली तथा हीर में पत्थरवाली चुन्नी को चिप्पटिका कहते थे (७०)।

ठक्कुर फेरू ने तो नकली मानिक बनाने की किसी विधि का उल्लेख नहीं किया है पर रत्नशास्त्रों में, जैसा हम ऊपर देख आए हैं, नकली मानिक बनाने की विधियाँ दी हुई हैं और यह भी बतलाया गया है कि नकली मानिक कैसे पहचाने जा सकते थे। बुद्धभट्ट (१२९–१३१) ने पाँच तरह के नकली मानिक बताए हैं जो बनाए तो नहीं जाते थे पर वे साधारण उपरत्न थे जो मानिक से मिलते जुलते थे और जिनसे मानिक का धोखा खाया जा सकता था। ये पत्थर कलशपुर, तुंबर, सिंहल, मुक्तामालीय और श्रीपूर्णक से आते थे। मुक्तामाल का पता नहीं चलता पर श्रीपूर्णक से शायद यहाँ सिंहल के श्रीपुर से मतलब हो।

नीलम—अनुश्रुति के अनुसार नीलम की उत्पत्ति असुरबल की आँखों से हुई। शास्त्रों के अनुसार नीलम की दो किस्में थीं इन्द्रनील और महानील, पर इनके रंगों के बारे में शास्त्रकारों के विभिन्न मत हैं। बुद्धभट्ट के अनुसार इन्द्रनील का रंग इन्द्रधनुष जैसा होता है और महानील का रंग दूध में नीलापन ला देता है। पर दूसरे शास्त्रों के अनुसार यह इन्द्रनील का गुण है। ठक्कुर फेरू (८१) ने इन्द्रनील और महानील को मिलाकर नीलम का नामकरण महेन्द्रनील किया है।

बुद्धभट्ट के अनुसार नीलम केवल सिंहल से आता था। मानसोल्लास (४९२) के अनुसार नीलम सिंहल द्वीप के मध्य में रावणगंगा नदी के किनारे पद्माकर में मिलता था। अगस्तिमत ने कलिपुर और कलिंग के नाम भी जोड़ दिए हैं। उसके अनुसार कलिपुर का नीलम गाय की आँख के रंग का और कलिंग का नीलम बाज की आँख के रंग का होता था।

हम ऊपर देख आए हैं कि इन्द्रनीलता सिंहल के नीलम और उसके प्राप्तिस्थान का किस तरह आँखों देखा हाल वर्णन करता है। लिंस्शोटेन (भा० २, पृ० १४०) के अनुसार पेगू का नीलम भी अच्छा होता था, जो शायद मोगाके की मानिक की खानों से निकलता था। (तावर्नियेर, २, पृ० १०१, १०२)। कलपुर और कलिंग के नीलम से शायद बर्मा और स्याम के नीलम से मतलब हो जो कलिंग और केदा के बाजारों में जाकर बिकते थे।

रत्नशास्त्रों में नीलम के दस या ग्यारह रंग कहे गए हैं। श्वेतनीलाभ नीलम ब्राह्मण, रक्तनीलाभ क्षत्रिय, पीतनीलाभ वैश्य, तथा घननील शूद्र माना गया है। ठक्कुर फेरू के अनुसार नीलम के नौ रंग होते थे यथा—नील, मेघवर्ण, मोरकंठी, अलसीका फूल, गिरकर्णिका फूल, भ्रमरपंखी, कृष्ण, श्यामल और कोकिलानीलाभ।

रत्नशास्त्रों के अनुसार नीलम के पाँच गुण हैं, यथा—गुरुता, स्निग्धता, रंगाढ्यता, पार्श्वरंजकता और तृणग्राहित्व। ठक्कुर फेरू के अनुसार ये गुण हैं—गुरुता, सुरंगता, सुकोमलता, कोमलता और सुरंजनता।

रत्नशास्त्रों के अनुसार नीलम के छ दोष हैं यथा—अभ्रक (धूमिल) शर्कर या सशर्कर (रेतीला), त्रास (टूटा), भिन्न (चिटका), मृदा या मृत्तिका गर्भ (भीतर मिट्टी होना) और पाषाण (हीर में पत्थर होना)। ठक्कुर फेरू (८३) के अनुसार नीलम के नौ दोष हैं, यथा—अभ्रक, मंदिस (भद्दा), सर्करगर्भ, सत्रास, जठर, पथरीला, समल, सागार (मिट्टीभरा) और विवर्ण।

नीलम का दाम मानिक की तरह लगाया जाता था। ठक्कुर फेरू के समय में नीलम के दाम के बारे में हम ऊपर कह आए हैं।

पन्ना—(मरकत, तार्क्ष्य) की उत्पत्ति असुर बल के उस पित्त से मानी गई है जिसे गरुड़ ने पृथ्वी पर गिराया। प्राचीन रत्नशास्त्रों में पन्ने की खानों का वर्णन अस्पष्ट है। बुद्धभट्ट (१५०) के अनुसार जब गरुड़ ने असुर बल का पित्त गिराया तो वह बर्बरालय छोड़कर, रेगिस्तान के समीप, समुद्र के किनारे के पास एक पर्वत पर गिरकर मरकत बना गया। यह भी कहा गया है (१५९) की वहां तुरुष्क के वृक्ष होते थे। अगस्तिमत (२८७) के अनुसार वह सुप्रसिद्ध पर्वत समुद्र के किनारे के पास तुरुष्कों के देशमें स्थित था। अगस्तीय रत्नपरीक्षा (७५) के अनुसार पन्ने की दो खानें थीं एक तुरुष्क देश में और दूसरी मगध में। ठक्कुर फेरू ने (७२) मरकत के उत्पत्ति स्थान मलयगिरि, मलयाचल, बर्बर देश और उदधितीर माने हैं।

मरकत के उपर्युक्त आकर की जाँच पड़ताल से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि प्रायः सब शास्त्रकार पन्ने की खान बर्बर देश के रेगिस्तान में, समुद्र तीर के निकट, मानते हैं। टालमी युग से लेकर मध्यकाल तक प्राय: सब विवरण मिस्र में विशेष कर लाल

सागर के पास स्थित 'जर्बर' पर्वत की पन्ने की खान का उल्लेख करते हैं। इस खान का उल्लेख प्लिनी, कासमास इंडिको प्लायस्टस (करीब ५४५ ई०) मासूदी और नवीं सदी के दूसरे अरब यात्री करते हैं। अल इद्रिसी के अनुसार मध्य नील पर असान से कुछ दूर एक पर्वत के पाद पर पन्ने की खान है। यह खान शहर से बहुत दूर एक रेगिस्तान में है। इस पन्ने की खान की, दुनिया की और कोई दूसरी खान मुकाबला नहीं कर सकती। अपने फायदे और निर्यात के लिए यहां काफी आदमी काम करते हैं (पी०ए०जोबर्ट, अल इद्रिसी, १, पृ०३६), यहां यह भी उल्लेखनीय बात है कि असान से एक महीने की राह पर मरकता नामक एक शहर था जहां हब्श के लाल सागरवाले किनारे पर स्थित बलेग के व्यापारी रहते थे। यह संभव हो सकता है कि संस्कृत मरकत का नाम शायद इसी शहर से पड़ा हो पर संस्कृत मरकत की व्युत्पत्ति यूनानी स्मरग्दोस से की जाती है। यह यूनानी शब्द असीरी बर्रकू, हिब्रू बारिकेत या बारकत, शामी बोर्को का रूपांतर है। अरबी ज़ुमुर्रुद शायद यूनानी से निकला हो (लाउफर, साइनो इरानिका, पृ० ५१९) क्लिशोटेम (२, ५, १४०) के अनुसार भी भारत में बहुत कम पन्ने मिलते थे। यहां पन्ने की काफी मांग थी और वे मिस्र के काहिरा से आते थे।

अबर्लिद—इस देश का नाम और कहीं नहीं मिलता। पर यहां हम पेरिप्लस (७) के अवलितेस की ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं जिसकी पहचान बाबेल मंदेब के जल विभाजक से ७९ मील दूर जैला से की जाती है। भाबी के उत्तर में अवलित गांव में प्राचीन अवलितेस का रूप बच गया है। बहुत संभव है कि अवर्लिद भी इसी अवलितेस—अवलित का रूप हो। यहां पन्ना तो नहीं मिलता पर संभव है कि जैला के व्यापारी मिस्री पन्ना इस देश में लाते रहे हों और उसी के आधार पर अवर्लिद—अवलित पन्ने का एक स्रोत मान लिया गया हो।

मलयाचल—यह दक्षिण भारत का मलयाचल तो हो नहीं सकता। शायद ठक्कुर फेरू का उद्देश्य यहां गेबल जर्बर से हो जहां कुरमा के अनुसार तुरुष्क यानी गुग्गुल होता था। बर्बर और उदधि तीर का संकेत भी लाल सागर की ओर इशारा करता है।

मगध—अगस्तीय रत्नपरीक्षा में मगध में भी पन्ने की खान मानी गई है। मलेट (रेकार्ड्स आफ दि जियालोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, भा० ७ पृ० ४३) के अनुसार बिहार के हजारीबाग जिले में पन्ने की एक खान थी।

रत्नशास्त्रों में पन्ने की चार से आठ छाया मानी गई है। अगस्तिमत के अनुसार महामरकत में अपने पास की वस्तुओं को रंगीन कर देने की शक्ति होती थी। मरकत

सहज और स्वाभाविक रंग के होते थे। सहज का रंग सेवार जैसा और दूसरेका शुकपंख, सिरिष पुष्प और दूर्वा जैसा होता था।

रत्नशास्त्रों में पन्ने के पांच गुण यथा—स्वच्छ, गुरु, सुवर्ण स्निग्ध और अरजस्क (धूलिरहित) हैं। ठक्कुर फेरू के अनुसार (७६) अच्छी छाया, सुलक्षणता, अनेकरूपता, लघुता और वर्णाढ्यता पन्ने क पांच गुण हैं।

रत्नशास्त्रों के अनुसार शबलता, जठरता (कांतिहीनता) मलिनता, रूक्षता, सपाषाणता, कर्करता और विस्फोट पन्ने के दोष हैं। ये ही दोष ठक्कुर फेरू ने गिनाए हैं। केवल शबलता की जगह सरजस्कता आ गई है।

बुद्धभट्ट के अनुसार नकली पन्ना शीशा, पुत्रिका और भल्लातक से बनता था। इसके बनाने में मंजीठ, नील और ईंगुर भी उपयोग में लाए जाते थे।

उपरत्न

रत्नशास्त्रों में उपरत्नों का बड़ी सरसरी तौर पर उल्लेख हुआ है। पांच महारत्नों के विपरीत ठक्कुर फेरू ने विद्रुम, मूंगा, लहसनिया, वैडूर्य, स्फटिक, पुखराज, कर्केतन और भीष्म का उल्लेख किया है।

विद्रुम—अर्थशास्त्र (श्यामी अनुवाद, पृ० ७६) के अनुसार मूंगा आलकंद और विवर्ण से आता था। यहां आलकंद से मिस्र के सिकन्दरिया के बंदरगाह से मतलब है। टीका के अनुसार विवर्ण यवन द्वीप के पास का समुद्र है। अगर यह ठीक है तो यहां विवर्णसे भूमध्य सागर से तात्पर्य होना चाहिए। बुद्धभट्ट (२४९–२५२) के अनुसार मूंगा शार्कवक, रम्यालक, देवक और रामक से आते थे। यहां रामक से शायद रोम का मतलब हो सकता है। अगस्तिमत के एक क्षेपक (१०) में कहा गया है कि हेमकंद पर्वत की एक खारी झील में मूंगा पाया जाता था। ठक्कुर फेरू के अनुसार (९०) मूंगा कावेर, विन्ध्याचल, चीन, महाचीन, समुद्र और नेपाल में पैदा होता था।

पेरिप्लस (२८, ३९, ४९, ५६) के अनुसार भूमध्य सागर का लाल मूंगा बारबारिकम बेरिगाजा (भरुकच्छ) और मुजिरिस के बंदरगाहों में आता था। प्लिनी (३२।११) के अनुसार मूंगे का भारत में अच्छा दाम था। आज की तरह उस समय भी मूंगा सिसली, कोर्सिका और सार्डीनिया, नेपल्स के पास लेगहार्न और जेनेवा, कटालोनिया, बलेरिक द्वीप तथा ट्यूनिस अल्जीरिया और मोरक्को के समुद्र तट पर मिलता था। लाल सागर और अरब के समुद्रतट के मूंगे काले होते थे।

अगस्तिमत के हेमकंद पर्वत के पास एक खारी झील में मूंगा मिलने के उल्लेख से भी शायद लाल सागर अथवा फारस की खाड़ी के मूंगों से मतलब हो सकता है।

श्री माउफर के अनुसार (साइनो ईरानिका, पृ० ५२४–२५) चीनी ग्रंथों में ईरान में मूंगा पैदा होने के उल्लेख हैं। युकुन के अनुसार मूंगा फारस, सिंहल और चीन के दक्षिण समुद्र से आता था। तांग इतिवृत्त से पता चलता है कि फारस की प्रवाल शिखाएँ तीन फुट से ऊंची नहीं होती थीं। इसमें संदेह नहीं कि फारस के मूंगे एशिया में सब जगह पहुंचते थे। काश्मीर के मूंगे का वर्णन जो एक चीनी इतिहास कार ने किया है, वह फारसी मूंगा ही रहा होगा। मार्कोपोलो (भा० २, पृ० ४२) के अनुसार तिब्बत में मूंगे की बड़ी मांग थी और उसका काफी दाम होता था। मूंगे स्त्रियां गले में पहनती थीं अथवा मूर्तियों में जड़े जाते थे। काश्मीर में मूंगे इटली से पहुंचते थे और वहां उनकी काफी खपत थी (मार्कोपोलो, १, पृ० १५९)। टाव र्नियें (भा० २, पृ० १४४) के अनुसार आसाम और भूटानमें मूंगे की काफी मांग थी।

कावेर—यहां दक्षिण के कावेरी पट्टिनम् के बंदरगाह से मतलब हो सकता है। शायद यहां मूंगा बाहर से उतरता हो। विंध्याचल में मूंगा मिलना कोरी कल्पना मालूम पड़ती है।

चीन, महाचीन—लगता है चीन और महाचीन से यहां क्रमशः चीन देश और कैंटन से मतलब हो। संभव है कि चीनी व्यापारी इस देश में बाहर से मूंगा लाते हों।

समुद्र—इससे भूमध्य सागर, फारस की खाड़ी और लाल सागर के मूंगों से मतलब मालूम पड़ता है।

नेपाल—जैसा हम ऊपर देख आए हैं तिब्बत और काश्मीर की तरह नेपाल में भी मूंगे की बड़ी मांग थी। हो सकता है कि नेपाली व्यापारियों द्वारा मूंगा लाए जाने पर नेपाल उसका एक उत्पत्ति स्थान मान लिया गया हो।

लहसनिया—नीले, पीले, लाल और सफेद रंग की लहसनिया ठक्कुर फेरू (९२–९४) के अनुसार सिंहल द्वीप से आती थी। इसे बिडालाक्ष अथवा बिल्ली के आंख जैसी रंगवाली भी कहा गया है। उसमें सूत पड़ने से उसे कोई कोई पुलकित भी कहते थे।

वैडूर्य—सर श्री गार्बे, सौरीन्द्र मोहन ठाकुर और फिनो की राय है कि वैडूर्य का वर्णन लहसनिया से बहुत कुछ मिलता है। बुद्धभट्ट (२००) ने भी वैडूर्य को बिल्ली की आंख के शक्ल का कहा है।

पाणिनि ४।३।८४ के अनुसार वैदूर्य (वैडूर्य) का नाम स्थान वाचक है। पतं-जलि के अनुसार विदूर में ञ्य प्रत्यय लगाकर उसे स्थान वाचक मानना ठीक नहीं; क्योंकि

वैदूर्य विदूर में नहीं होता, वह तो बालवाय में होता है और विदूर में कमाया जाता है। पर शायद बालवाय शब्द विदूर में परिणत हो गया हो और इसीलिए उसमें य प्रत्यय लग गया हो। इसके माने यह हुए कि विदूर शब्द बालवाय का एक दूसरा रूप है। इस पर एक मत है कि विदूर बालवाय नहीं हो सकता, दूसरा मत है कि जिस तरह व्यापारी वाराणसी को जित्वरी कहते थे उसी तरह वैय्याकरण बालवाय को विदूर।

उपर्युक्त कथन से यह बात साफ हो जाती है कि वैदूर्य बालवाय पर्वत में मिलता था और विदूर में कमाया और बेचा जाता था। यह पर्वत दक्षिण भारत में था। बुद्धभट्ट (१९९) के अनुसार विदूर पर्वत दो राज्यों की सीमा पर स्थित था। पहला देश कोंग है जिसकी पहचान आधुनिक सेलम, कोयम्बटूर, त्रिचिनापल्ली और ट्रावनकोर के कुछ भाग से की जाती है। दूसरे देश का नाम बालिक, चारिक या तोलक आता है, जिसे श्री फिनो चोलक मानते हैं जिसकी पहचान चोलमंडल से की जा सकती है। इसी आधार पर श्री फिनो ने बालवाय की पहचान शेवरे पर्वत से की है। यह बात उल्लेखनीय है कि सेलम जिले में स्फटिक और कोरंड बहुतायत से मिलते हैं।

ठक्कुर फेरू (९४) का कुलियंग कोंग का बिगड़ा रूप है। समुद्र का उल्लेख कोरी कल्पना है। ठक्कुर फेरू ने लहसनिया और वैदूर्य अलग अलग रत्न माने हैं। संभव है कि देशभेद से एक ही रत्न के दो नाम पड़ गए हों।

स्फटिक

प्राचीन रत्नशास्त्रों के अनुसार स्फटिक के दो भेद यानी सूर्यकांत और चन्द्रकांत माने गए हैं। ठक्कुर फेरू (९६) ने भी यही माना है पर अगस्तिमत के क्षेपक में स्फटिक के भेदों में जलकांत और हंसगर्भ भी माने गए हैं। पृथ्वीचन्द्र चरित्र (पृ० ९५) में भी जलकांत और हंसगर्भ का उल्लेख है। सूर्यकांत से आग, चन्द्रकान्त से अमृतवर्षा, जलकांत से पानी निकलना तथा हंसगर्भ से विष का नाश माना जाता था।

बुद्धभट्ट के अनुसार स्फटिक कावेरी नदी, विंध्यपर्वत, यवन देश, चीन और नेपाल में होता था। मानसोल्लास के अनुसार ये स्याम देश, तापी नदी, विंध्याचल और हिमालय थे। ठक्कुर फेरू के अनुसार नेपाल, कश्मीर, चीन, कावेरी नदी, जमुना और विन्ध्याचल से स्फटिक आता था।

पुखराज

पुखराज की उत्पत्ति असुर बल के चमड़े से मानी गई है। इसका नाम लहसनिया जैसा होता था। बुद्धभट्ट के अनुसार पुखराज हिमालय में, अगस्तिमत के अनुसार सिंहल और कलहस (?) में तथा रत्नसंग्रह के अनुसार सिंहल और कर्क

में होता था। ठक्कुर फेरू ने हिमालय को ही पुखराज का उद्गम स्थान माना है पर यह बात प्रसिद्ध है कि सिंहल अपने पीले पुखराज के लिए प्रसिद्ध है।

कर्केतन—कर्केतन के उत्पत्ति स्थान का किसी रत्नशास्त्र में उल्लेख नहीं है। पर ठक्कुर फेरू ने पवणुप्पट्ठान देश में इसकी उत्पत्ति कही है। यहां शब्द दो जगहों से मतलब है पवण और उप्पट्ठान। पवण से संभव है शायद अफगानिस्तान में गजनी के पास पर्वान से मतलब हो और उप्पट्ठान से परि-अफगानिस्तान से। अगर हमारी पहचान ठीक है तो यहां पर्वान से शायद वहां कर्केतन के व्यापार से मतलब हो। उप्पट्ठान से रूस में उराल पर्वत में एकाटेरिन बर्ग और टाकोवाया की कर्केतन की खानों से मतलब हो (जी० एफ०, हर्बर्ट स्मिथ, जेम स्टोन्स, पृ० २३६, लंदन १९२३)। यह भी संभव है कि उपपट्ठान में पट्टन शब्द छिपा हो। इब्नबतूता ने (२६१–६२) फत्तन को चोल मंडल का एक बड़ा बंदर माना है पर इस बंदर की ठीक पहचान नहीं हो सकती। संभव है कि इससे कावेरी पट्टीनम् अथवा नागपट्टीनम् का बोध होता हो। अगर यह पहचान ठीक है तो शायद सिंहल का कर्केतन यहां आता हो।

ठक्कुर फेरू के अनुसार इसका रंग तांबे अथवा पके हुए महुए की तरह अथवा नीलाभ होता था।

भीष्म—ठक्कुर फेरू ने भीष्म का उत्पत्ति स्थान हिमालय माना है। यह रंगमें सफेद तथा बिजली और आग से रक्षा करनेवाला माना गया है।

गोमेद—रत्नशास्त्रों में इसका विवरण कम आया है। अगस्तिमत के क्षेपक में (४–५) गोमेद को स्वच्छ, गुरु, स्निग्ध और गोमूत्र के रंग का कहा गया है। अगस्तीय रत्नपरीक्षा (८३–८६) में गोमेद को गाय के मेद अथवा गोमूत्र के रंग का कहा गया है। उसका रंग धवल और पिंजर भी होता था। ठक्कुर फेरू (१००) ने इसका रंग गहरा लाल, सफेद और पीला माना है।

और किसी रत्नशास्त्र में गोमेद के उत्पत्तिस्थान का पता नहीं चलता। पर ठक्कुर फेरू ने इसका स्रोत सिरिनायकुलपरेवग देस तथा नर्मदा नदी माना है। सिरिनायकुलपरे में कौन सा नाम छिपा हुआ है यह तो ठीक नहीं कहा जा सकता पर गोलकुंडा से मसुलीपट्टन के रास्ते में पुंगम के आगे नगुलपाद पड़ता था जिसे तावर्नियें ने नगेलपर कहा है (तावर्नियें, १, पृ० १७१) संभव है कि नायकुलपर यही स्थान हो। वग देस से शायद बंगाल का बोध हो सकता है, बहुत संभव है कि १४ वीं सदी में सिंहल से गोमेद वहां जाता रहा हो।

पारसी रत्न

ठक्कुर फेरू ने (१०३) लाल, अकीक और पिरोजा को पारसी रत्न माना है। इसका यह अर्थ हुआ कि ये रत्न या तो फारस में होते थे अथवा उनका व्यापार फारस और अरब के व्यापारी करते थे।

लाल—आग की तरह लाल—यह रत्न बदखसाण देश यानी बदख्शां से आता था। मार्कोपोलो (भा० १, पृ० १४९–५०) के अनुसार बदख्शां के बलास मानिक प्रसिद्ध थे। वे सिग्नान के एक पहाड़ से खोद कर निकाले जाते थे और उन पर वहां के शासक का पूरा अधिकार होता था। लाल की खानें वंक्षु नदी के दाहिने किनारे पर इशकाशम जिले में शिगनान के सीमा पर स्थित हैं (वुड, ए जर्नी टु आक्सस, भूमिका पृ० ३३)

अकीक—ठक्कुर फेरू ने इसे पीले रंग का कहा है और इसकी उत्पत्ति यमन देश यानी अरब में यमन देश माना है। यमन देश के अकीक का उल्लेख इब्नबैतर (११९७–१२४८) ने किया है (फेर्रा, रेलेसद् रेखासीफ अ अ एक्सत्रेम ओरियां, १, पृ० २५६) और इसे कई बीमारियों की औषधि मानी है। आज दिन भी यमनी अकीक बंबई में प्रसिद्ध है। इसका दाम ठक्कुर फेरु के अनुसार बहुत कम होता था।

फिरोजा—ठक्कुर फेरू के अनुसार नीलाभ रंग का फिरोजा नीसावर और मुवासीर की खानों से आता था। निसावर से यहां फारस के निशापुर से मतलब है। तावर्निये (२, पृ० १०३–०४) के अनुसार फिरोजा फारस में दो खानों से पाया जाता था। पुरानी खान मशद से तीन दिन के रास्ते पर निशापुर के आसपास थी और नई मशद से पांच दिन के रास्ते पर थी। मुवासीर से यहां ईराक के मोसुल या अल्मोसिल से बोध होता है। लगता है पारसी फिरोजा यहां व्यापार के लिये आता था। आज दिन भी मोसुल में फिरोजे का व्यापार होता है।

लाल, लहसुनिया, इन्द्रनील और फिरोजे का दाम ठक्कुर फेरू के अनुसार तौल से सोने के टंकों में होता था। निम्नलिखित यंत्र से यह बात साफ हो जाती है—

मासा	॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४
लाल	१	२॥	६	९	१५	२४	३४	५
लहसुनी	७।	११॥ –२॥	४०	६०	११।	१८	२५॥	३०॥
इन्द्रनील	।	॥	॥।	१	२	५	८	१५
पैरोजा	।	॥	॥।	१	२	५	८	१५

उपर्युक्त यंत्र के अध्ययन से पता चल जाता है कि लाल इत्यादि की कीमत दूसरे महारत्नों के मुकाबिले में काफी कम थी।

उपसंहार

प्राचीन रत्नशास्त्रों के आधार पर हमने ऊपर यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि रत्नशास्त्र प्राचीन भारत में एक विज्ञान माना जाता था। उस विज्ञान में बहुत सी बातें तो अनुभूति पर अवलंबित थीं पर इसमें संदेह नहीं की समय समय पर रत्नशास्त्रों के लेखक अपने अनुभवों का भी संकलन कर देते थे। ठक्कुर फेरू ने भी अपनी 'रत्नपरीक्षा' में प्राचीन ग्रंथों का सहारा लेते हुए भी चौदहवीं सदी के रत्न व्यवसाय पर काफी प्रकाश डाला है। ठक्कुर फेरू के ग्रंथ की महत्ता इसलिये और भी बढ़ जाती है कि रत्न सम्बन्धी इतनी बातें सुल्तान युग के किसी फारसी अथवा भारतीय ग्रंथकार ने नहीं दी हैं। कुछ रत्नों के उत्पत्ति स्थान भी, ठक्कुर फेरु ने १४ वीं सदी के रत्नों के आयात निर्यात देख कर निश्चित किए हैं। रत्नों की तौल और दाम भी उसने समया नुसार रखे हैं, प्राचीन शास्त्रों के आधार पर नहीं। पारसी रत्नों का विवरण तो ठक्कुर फेरू का अपना ही है, पद्मराग के प्राचीन भेद तो उसने गिनाए ही हैं पर चुन्नी नाम का भी उसने प्रयोग किया है जिसका व्यवहार आज दिन भी जौहरी करते हैं। उसी तरह घटिया काले मानिक के लिए देशी शब्द चिप्पड़िया का व्यवहार किया गया है। हीरे के लिए फार शब्द भी आजकल प्रचलित है। लगता है, उस समय मालवा हीरे के व्यवसाय के लिए प्रसिद्ध था, क्योंकि ठक्कुर फेरू ने चोखे हीरे के लिए मालवी शब्द व्यवहार किया है। पन्ने के बारे में तो उसने बहुत सी नई बातें कही हैं। कुछ ऐसा लगता है कि ठक्कुर फेरू के समय में नई और पुरानी खान के पन्नों में भेद हो चुका था और इसीलिए उसने पन्नों के तत्कालीन प्रचलित नाम गरुडोद्गार, कीडउठी, वासवती, मूगउनी और धूलिमराई दिए हैं। इन सब बातों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ठक्कुर फेरू रत्नों के सच्चे पारखी थे। उन्होंने देख समझ कर ही रत्नों के वर्णन लिखे हैं केवल परंपरागत सिद्धान्तों के आधार पर ही नहीं।



अनुक्रम

*

* *

*

श्रीमालवंशीय ठक्कुर फेरूविरचिता

प्राकृतभाषाबद्धा

र त्न प री क्षा



सयलगुणाण निवास नमिउ सव्वन्नु तिहुयणपयास ।
संखेवि परप्पहिय रयणपरिक्खा भणामि अहं ॥ १ ॥
सिरिमालकुलुत्तसो ठक्कुर चंदो जिणिंदपयभत्तो ।
तस्संगरुहो फेरू जपइ रयणाण माहप्प ॥ २ ॥
पुव्वि रयणपरिक्खा सुरमिति अगत्थ बुद्धभट्टेहिं ।
विहिया त दट्ठूण तह बुद्धी मंडलीय च ॥ ३ ॥
अल्लावदीणकलिकाल चक्कवट्टिस्स कोसमज्झत्थ ।
रयणायरु व्व रयणुच्चय च नियदिट्ठिए दट्ठु ॥ ४ ॥
पच्चक्ख अणुभूय मडलिय परिक्खिय च सत्थार्थ(इ) ।
नाउ रयणसरूव पत्तेय भणामि सव्वेसिं ॥ ५ ॥
लोए भणति एव आसी वलवाणवो महाबलव ।
सो पत्तो अमविणे सग्गे इदस्स जिणणत्थ ॥ ६ ॥
तहिं पत्थिओ सुरेहिं जन्ने अम्हाण तु पसू होह ।
तेण पसन्ने भणिय भविओह कुणसु नियकज्ज ॥ ७ ॥
सो पसु वहिउ सुरेहिं तस्स सरीरस्स अवयवाओ य ।
सजाया वर रयणा सिरिनिलया सुरपिया रम्मा ॥ ८ ॥
अत्थिस्स जाय हीरय मुत्तिय दसाउ रुहिर माणिक्क ।
मरगयमणि पित्ताओ नयणाओ इन्दनीलो य ॥ ९ ॥
वइडुज्जो य रसाओ वमाउ कक्केयग समुप्पन्न ।
लहमणीओ य नहाओ फलिय मेयाउ सजाय ॥ १० ॥

विद्दुमु आमिस्साओ चम्माओ पुसराउ निप्पन्नो ।
मुक्काउ य भीसम्मो रयणाण एस उप्पत्ती ॥ ११ ॥

एव भणंति एगे भू[मि]विकारं इम च सव्व च ।
जह रुप्प कणय तंब य धाऊ रयणा पुणो तह य ॥ १२ ॥

तट्ठाणाओ गहिया निय निय वन्नेहिं नवहि सुगहेहिं ।
तत्तो जत्थ य जत्थ य पडिया ते आगरा जाया ॥ १३ ॥

सूरेण पउमराय मुत्तिय चंदेण विद्दुम भूमे ।
मरगयमणीउ बुद्धे जीवेण य पुसराय च ॥ १४ ॥

सुक्केण गहिय वज्ज सणिंदनील तमेण गोमेय ।
केऊण य वेडुज्ज मुक्का तत्थेव सेस तहिं ॥ १५ ॥

इय रयण नव गहाण अंगे जो धरइ सच्चसीलजुओ ।
तस्स न पीडंति गहा सो जायइ रिद्धिवंतो य ॥ १६ ॥

पुणु जइ सत्थे भणिया अदोस अइजुत्तया गुणड्ढा य ।
ते रयण रिद्धिजणया सदोस घण पुत्त रिद्धिहरा ॥ १७ ॥

जइ उत्तिमरयणतरि इक्को वि सदोसु कूडु समलु हवे ।
ता सयलउत्तिमाण कंतिपहाव हणेइ धुव ॥ १८ ॥

भणिया मूलुप्पत्ती अओ य वुच्छामि आगराईण्णि ।
वन्न गुण दोस जाई मुल्ल सव्वाण रयणाण ॥ १९ ॥

वज्र जहा—

हेमंत सूरपारय कलिंग मायग कोसल सुरट्ठे ।
पडुर विसएसु तहा वेणुनई वज्जठाणाई ॥ २० ॥

तंब सिय नील कुंकुस हरियाल सिरीसकुसुम घणरत्ता ।
इय वज्जवन्नछाया कमेण आगरविसेसाओ ॥ २१ ॥

पर विशेषोऽयम्—

कोसल कलिंग पढमे दुइए हेमंत तह य मायगे ।
पहुर सुरट्ठ तईए वेणुज सोपारय कलिमि ॥ २२ ॥
छ कोण अट्ठ फलहा बारम धारा य हुति वज्जा य ।
अट्ठ गुणा नव दोसा चउ छाया चउर वन्न कमा ॥ २३ ॥
समफलह उच्चकोणा सुतिक्खधारा य वारितर अमला ।
उज्जल अदोस लहु तुल इय वज्जे होंति अट्ठ गुणा ॥ २४ ॥
कागपग बिंदु रेहा समला फुट्टा य एगसिंगा य ।
वट्टा य जवाकारा हीणाहियकोण नव दोसा ॥ २५ ॥
सिय विप्प अरुण खत्तिय पीय वइस्सा य कसिण सुद्दा य ।
इय चउ वन्न दुजाई चुक्खा तह मालवी नेया ॥ २६ ॥
निद्दोस सगुण उत्तिम चत्तारि वि वन्न हुति जस्स गिहे ।
तस्स न हवति विग्घ अकालमरण न सत्तुभय ॥ २७ ॥
चत्तारि वि वन्न तहा पीयारुण नरवराण रिद्धिकरा ।
सेसा नियनिय वन्ने सुहकरा वज्ज नायव्वा ॥ २८ ॥
लच्छीए आयट्ठी थभइ अरिणो परि(र)क्कम समरे ।
तेण अरुण पीय नरेसरो धरइ धरवज्ज ॥ २९ ॥
जह दप्पणेण वयण दीसइ तह उत्तमेण वज्जेण ।
नर तिरिय रुक्ख मंदिर तहिंदिघणुक्खाइ दीसंति ॥ ३० ॥
अइचुक्ख तिक्खधारा पुत्तत्थीइत्थियाण हाणिकरा ।
चप्पडि मलिण तिकोणा रमणीण वज्ज सुहजणया ॥ ३१ ॥

भणियं च—

अहमेव पढमरयण सुपुत्तरयणाण खाणि सुह कुच्छी ।
कोण वराओ वज्जो इय दोस दाउ धर इत्थी ॥ ३२ ॥

समपिंड सगुण निम्मल गुरुतुल्ला हीणपिंड लहुमुल्ला ।
फार लहुतुल्ल वज्जा बहुमुल्ला सम समा मुल्लो ॥ ३३ ॥
वज्ज लहु फलह सिरं वित्थरचरण तिलोवरिं कांठ ।
जो जडइ अह जडावइ तस्स धुव हवइ बहु दोसं ॥ ३४ ॥
जस्स फलहाण मज्झे बुड्डो बुड्डो हुति भिन्न वन्नाइ ।
कागपय रत्तबिंदू त वज्ज होइ पुत्तहरं ॥ ३५ ॥
वज्जेण सव्वि रयणा वेह पावति हीरए हीरा ।
कुरुविंदो पुण वेहइ नीलस्स न अन्नरयणस्स ॥ ३६ ॥
अयसार कच्च फलिहा गोमेयग पुसराय वेडुज्जा ।
एयाउ कूडवज्जा कुणंति जे होंति कलकुसला ॥ ३७ ॥
कूडाण इय परिक्खा गुरु विनाया य सुहमधारा य ।
साणाय सुह घसिया दुह घसिया रयण जाइमवा ॥ ३८ ॥

॥ इति वज्रपरीक्षा ॥

अथ मुत्ताहल –

गयकुम १ संखमज्झे २ मच्छमुहे ३ वस ४ कोलदाढे य ५ ।
सप्पसिरे ६ तह मेहे ७ सिप्पउडे ८ मुत्तिया हुंति ॥ ३९ ॥
मदव(प)ह पीय रत्ता इय उत्तिम जधुछाय मज्झत्या ।
वट्टामलयपमाणा गयक्कजा हुंति रज्जकरा ॥ ४० ॥
दाहिणवत्ते संखे महासमुद्दे य कम्बुजा हुंति ।
लहु सेया अरुणपहा नरदुल्लहा मगलावासा ॥ ४१ ॥
मच्छे य साम वट्टा लहुतुला विमलदिट्ठिसजणया ।
अरि चोर भूय साइणि भयनामा हुंति रिद्धिकरा ॥ ४२ ॥
गुजसमा मदपहा हवंति कच्छ वन सव्व भूमीसु ।
रज्जकरा दुक्खहरा सुपवित्ता वसउद्धरणा ॥ ४३ ॥

सुवरदाढे वट्टा घियवन्ना तह य सालफलतुल्ला ।
चिट्ठंति जस्स पासे इंदेण न जिप्पए सोवि ॥ ४४ ॥

सप्पस्स नील निम्मल कक्कोलीफलसमाण लच्छिकरा ।
छल च्छिद्द अहि उवद्दव विसवाही विज्जु नासयरा ॥४५॥

मेहे रवितेयसमा सुराण कीलंत कहव निवडंति ।
गिण्हंति अंतराले अपत्त धरणीयले देवा ॥ ४६ ॥

थाय छिज्जइ कोवि हु जलबिंदू जलहरंमि वरिसंते ।
सु वि मुत्ताह[ल]लच्छी भणति चिंतामणी विउसा ॥ ४७ ॥

एए हुंति अवेहा अमुल्लया पूयमाण रिद्धिकरा ।
लोए बहुमाहप्पा लहु बहुमुल्ला य सिप्पिभवा ॥ ४८ ॥

रामावलोइ बब्बरि सिंघलि कतारि पारसीए य ।
केसिय देसेसु तहा उवहितडे सिप्पिजा हुंति ॥ ४९ ॥

सव्वेसु आगरेसु य सिप्पउडे साइरिक्ख जलजोए ।
जायति मुत्तियाइं सव्वालंकारजणयाइं ॥ ५० ॥

तारं वट्ट अमल सुसणिद्ध कोमल गुरु छ गुणा ।
लहु कढिण रुक्ख करडा विवन्न सह बिंदु छह दोसा ॥ ५१ ॥

ससिकिरणसम सगुण दीह इक्कगि कलुसिय हवइ ।
तस्स य खडस हीण मुल्ल निबडलिए अद्ध ॥ ५२ ॥

अहरूव पक्पूरिय असार विप्फोड मच्छनयणसम ।
करयाम गठिजुय गुरु पि वट्ट पि लहुमुल्ल ॥ ५३ ॥

पीयद्ध अयट्ट तिहा सखुर छट्ठसु खरड जह जुग्ग ।
सदोसे य बसंसं इयराण दिट्ठए मुल्ल ॥ ५४ ॥

॥ इति मुत्ताहलपरीक्षा ॥

अथ पद्मरागमणिर्यथा—

रामा गंगनई तडि सिंघलि कलसउरि तुंबरे देसे ।
माणिक्कुप्पत्ती विहु विहु पुण दोस गुण वन्ना ॥ ५५ ॥
पद्ममित्थ पउमराय सोगंधिय नीलगंध कुरुविंद ।
जामुणिय पच जाई चुन्निय माणिक्क नामेहिं ॥ ५६ ॥
सूरु व्व किरणपसरा सुसणिद्ध कोमल च अग्गिनिहा ।
ज कणयसम कढिया अक्खीणा पउमराय सा ॥ ५७ ॥
किंसुय कुसुम कसुमय कोइल सारिस चकोर अक्खिसमं ।
दाडिमबीजनिह ज तमित्थ सोगंधिया नेया ॥ ५८ ॥
कमलालत्तय विदुम हिंगुलुयसमो य किंचि नीलाभो ।
खज्जोयकतिसरिसो इय वन्ने नीलगंधो य ॥ ५९ ॥
पउम तह साव गंधयसमप्पह रंगबहुल कुरुविंदा ।
पुण सत्तास लहुय सजल च इय सहाव गुण ॥ ६० ॥
जामुणिया विन्नेया जवू कणवीररत्तपुप्फसमा ।
मुल्लुत्तसंतरमेय वीसं पनरस दस क तिग विसुवा ॥ ६१ ॥
सुच्छाय सुसणिद्ध किरणाभ कोमल च रंगिल्ल ।
सुत्त्य सम महत माणिक्क हवइ अहुगुणं ॥ ६२ ॥
गयछाय जड धूम भिन्न रुहसणं सक्करं कढिण ।
चिपय रुक्ख च तहा अड दोसा भणिय माणिक्क ॥ ६३ ॥
गुणपुत्त जहुत्त माणिक्क दोसवज्जिय अमल ।
जो घरइ तस्स रज्ज पुत्त अत्थ हवइ नूण ॥ ६४ ॥
गुणसहिय पउमराय घरिए नरनाह आवया टलइ ।
सहदोसेण उवज्जइ न ससय इत्थ जाणेह ॥ ६५ ॥
अगुण विवन्नच्छाय रुहसण जुय धडुय च खग्ग च ।
इय माणिक्क धरिय सुदेसमद्ध नरं कुणइ ॥ ६६ ॥

कर चरण वयण नयण सुपउमराय पइस्स जणयती ।
तो वहइ पउमराय पउमिणि सुयपउमजणणत्थ ॥ ६७ ॥
अहवट्टि उड्ढवट्टी तिरीयवट्टी य जा हवइ चुन्नी ।
सा अहमुत्तिम मज्झिम कूडा पुण सव्ववट्टी य ॥ ६८ ॥
जो मणि बहिप्पएसे मुचइ किरण जहग्गि गयधूम ।
सा इदकति नेया चदो व्व सुहावहा सघणा ॥ ६९ ॥
साणाइ पउमराय जो छिज्जइ अगुली छिविय कसिणा ।
त च पहाउ सगब्भा चिप्पिडिया हवइ सा चुन्नी ॥ ७० ॥

॥ इति माणिक्यपरीक्षा समत्ता ॥

अथ मरकतमणिर्यथा—

अवलिंद मलयपव्वय वव्वरदेसे य उवहितीरे य ।
गरुडस्स उरे कठे हवति मरगय महामणिणो ॥ ७१ ॥
गरुडोदगार पढमा कीडउठी बुईय तईय वासउती ।
मूगउनी य चउत्थी धूलिमराई य पण जाई ॥ ७२ ॥
गरुडोदगार रम्मा नीलामल कोमला य विसहरणा ।
कीडउठि सुहम णिद्धा कसिणा हेमाभकसिला ॥ ७३ ॥
वासवई य सउक्खा नील हरिय कीरपुच्छसम णिद्धा ।
मूगउनी पुण कढिणा कसिणा हरियाल सुसणेहा ॥ ७४ ॥
धूलमराई गरुया तह कढिणा नीलकच्च सारिच्छा ।
मुल्लु वीस विसोवा यसहु तह पच दुन्नि कमा ॥ ७५ ॥
रुक्ख विफोडा पाहण मल कक्कर जठर सज्जरस सह य ।
इय सत्त दोस मरगयमणीण साण फल वोच्छ ॥ ७६ ॥
रुक्खा य वाहिकरणी विप्फोडा सत्थघायसंजणणी ।
मलिण मईरंधयारी पाहाणी बधुनासयरी ॥ ७७ ॥

कक्कर सहिय अठत्ता अठरा जाणेह सव्व दोसगिह ।
सव्वरसा मामिच्चू मरगइदोसाइ ताण फल ॥ ७८ ॥
सुच्छायं सुसणिद्ध अणेरुय तह लहु च वसङ्ग ।
पच गुण सिसहरण मरगय मसराल लच्छिकर ॥ ७९ ॥
सूरामिमुह ठविय कर उयरे मरगयमि चिंतिज्जा ।
विप्फुरइ जस्स छाया पुनपविंसा छुरीणा सा ॥ ८० ॥

॥ इति मरकतमणिपरीक्षा समता ॥

अथ इन्द्रनीलम्–

सिंघलदीव समुब्भव महिंदनीला य चउ सुवन्ना य ।
छ दोस पच गुणाहि य तहेव नव छाय जाणेह ॥ ८१ ॥
सियनीलाभ विप्प नीलारुण खत्तिय वियाणाहि ।
पीयामनील वइसं घणणील हवइ त सुद्द ॥ ८२ ॥
अब्भय मदि सकक्कर गब्भा सत्तास जठर पाहणिया ।
समल सगार विवन्ना इय नीले होंति नव दोसा ॥ ८३ ॥
अब्भय दोस धणक्खय सकक्कर वाहिउ मदिए कुट्ठ ।
पाहणिए असिघायं भिन्नविवन्ने य सिंहभयं ॥ ८४ ॥
सत्तासे बधुवह समल सगारे य जठर मित्तखय ।
नव दोसाणि फलाणि य महिंदनीलस्स भणियाइ ॥ ८५ ॥
गुरुय तह य सुरंग सुसणिद्ध कोमल सुरजणय ।
इय पच गुण नील करंति मणि कोव पसमति ॥ ८६ ॥
नील घण मोरकठ य अलसी गिरिकन्नकुसुमसंकासा ।
अलिपंखकसिण सामल कोइलगीवाभ नव छाया ॥ ८७ ॥
हीरय चुन्निय माणिक मरगय नील च पंच रयणमय ।
इय धरिए ज पुन्न हवइ न त कोडिदाणेण ॥ ८८ ॥

॥ इति इन्द्रनीलमहापचरयणुद्धार्य ॥

अह विद्रुम लहसणियय वइहुज्जो फलिह पुसराओ य।
ककेयग मीसम्मो भणिय इय सत्त रयणाण ॥ ८९ ॥

विद्रुम जहा–

कावेर विंझपव्वइ चीण महाचीण उवहि नयपाले।
वल्लीरूव जायइ पवालय कदनालमय ॥ ९० ॥

[पाठान्तर–वल्लीरूव कच्छ(च्छ)वि पवालय होइ उयहिमज्झम्मि।
बहुरच कठिण कोमल जह नाल सम्मसुसणेह ॥ ५०]

बहुरंग सुसणिद्ध सुपसन्न तह य कोमल विमल।
घणवन्न वन्नरत्त भूमिय पय विद्रुम परम ॥ ९१ ॥ छ ॥

लहसणियओ जहा–

नीलुज्वल पीयारुण छाया कतीइ फिरइ जस्सगे।
त लहसणिय पहाण सिंघलदीवाउ सभूय ॥ ९२ ॥
इक्कोवि य लहसणियओ अदोस अइ चुक्खओ विरालक्खो।
नवगहरयण समगुणो भणति त सपुलिय केवि ॥ ९३ ॥

वइहुज्ज जहा–

कुवियगय देसोवहि वइदूरनगेसु हवइ वइडुज्ज।
वसदलाभ नील वीरिय सताण पोसयरं ॥ ९४ ॥

[पाठान्तर–रयणायरस्स मज्झे कुवियंगय नाम वणवओ तस्य।
वइदूरनगे जायइ वइडुज्ज वंसपत्ताम ॥ ५१]

फलिह जहा–

नयवाल कासमीरे चीणे कावेरि जउणनइतीरे।
विंझगिरि हुति फलिह अइनिम्मलदप्पणु व्व सिय ॥ ९५ ॥

[पाठान्तर–नयवाले कसमीर चीणे कावेरि अउणनइकूले।
विंझनग उप्पज्जइ फलिह अइनिम्मल सेय ॥ ५४]

रविकताओ अग्गी ससिकताओ झरेइ अमिय जल।
रविकत चदकते दुन्नि वि फलिहाउ जायति ॥ ९६ ॥

[पाठान्तर–उप्पत्तीओ अग्गी ससिकंतिओ झरेइ अमियजलं ।
रविकंत-चंदकंते दुन्नि वि फलिहाओ जायंति ॥ ५५]

पुसराय जहा–

बहुपीय कणयवन्नो समणिद्धो पुसराओ हिमवंते ।
जायइ जो धरइ सया तस्स गुरू हवइ सुपसन्नो ॥ ९७ ॥

[पाठान्तर–बहुपीय रुहिरवण्णो ससिणेहो होइ पुसराओ य ।
मीसह विण चंदसमो दुन्नि वि जायंति हिमवंते ॥ ५६]

कक्केयण जहा–

पवणुप्पट्ठाण देसे जायइ कक्केयण सुलाणीओ ।
तंबय सुपक्क महुवय नीलाभ सदिढ सुसणिद्ध ॥ ९८ ॥ छ ॥

[पाठान्तर–पवणुप्पट्ठाणदेसे जायइ कक्केयणं सुलाणियओ ।
तंबय सुपक्कमहुय चय नीलाभ सुदिढ सुसणेहं ॥ ५२]

भीसम जहा–

भीसमु दिणचंदसमो पंडुरओ हेमवंतसंभूओ ।
जो धरइ तस्स न हवइ पाएण अग्गि विज्जुभयं ॥ ९९ ॥

॥ इति रयणसत्तक ॥

सिरिनायकुल परेवग देसे तह नव्वुया नईमज्झे ।
गोमेय इंदगोव सुसणिद्ध पंडुरं पीय ॥ १०० ॥

[पाठान्तर–सिरिनायकुलपरेवगदेसे तह नम्मलनईमज्झे ।
गोमेय इंदगोव सुसणेह पंडुरं पीयं ॥ ५३]

गुणसहिया मलरहिया मंगलजणया य लच्छिआवासा ।
विग्घहरा देवपिया रयणा सव्वे वि सप्पछाया ॥ १०१ ॥
मुत्तिय वज्ज पवालय तिन्नि वि रयणाणि मिच्छजाईणि ।
वज्जवि जाइविसेसो सेसा पुण मिच्छजाईओ ॥ १०२ ॥
इय सत्थुत्तर(सत्तुत्तम) रयणा भणिय मणामित्थ पारसीरयणा ।
मलागर संजुत्ता लाल अकीया य पेरुज्जा ॥ १०३ ॥

[पाठान्तर—इय सत्तुघयरका भणिय मणामिरय पारसी रयणा ।
धण्णागर सञ्जुत्ता अन्ने जे पाउर्सजाया ॥ ५७]

अइतेय अग्गिवन्न लाल वदखसाण देसंमि ।
जमणदेसे यकीक लहु मुल्ल पिल्लुसमरंग ॥ १०४ ॥

[पाठान्तर—अइतेय अग्गीवण्ण लाल वद्दक्खसाण देसम्मि ।
यमणदेसे यकीक लहु मुल्लं पिल्लुसमरंग ॥ ५८]

नीलमल पेरुज्ज देसे नीसावरे मुवासीरे ।
उप्पज्जइ खाणीओ दिट्ठिस्स गुणावह भणिय ॥ १०५ ॥

[पाठान्तर—नीलनिह पेरुज्ज देसे नीसावरे गुवासीर ।
उप्पज्जइ खाणीओ दिट्ठिस्स गुणावह भणिय ॥ ५९]

॥ इति वज्रादिसर्वरत्नाना स्थानज्ञातिस्वरूपाणि समाप्त (?) ॥

*

अथैतेषामेव मूल्यानि वक्ष्यते जथागाहा। पुन: भावानुसारेण जथा—

जे सत्थ दिट्ठिकुसला अणुभूया देस काल भावन्नू ।
जाणिय रयणसरूवा मडलिया ते भणिज्जति ॥ १०६ ॥
हीणग अतजाई लक्खण सत्तुज्झया फुडकल्का ।
अय जाणमाणया विहु मडलिया ते न कईयावि ॥ १०७ ॥
मडलिय रयण दट्ठु परोप्पर मेलिऊण करसन्न ।
जपति ताम मुल्ल जाम सहासम्मय होइ ॥ १०८ ॥
धणिओ अमुणियमुल्लो हीणहिय मुणइ तस्स नहु दोसो ।
मडलिय अलियमुल्ल कुणति जे ते न नदति ॥ १०९ ॥
अहमस्स अहियमुल्ल उत्तमरयणस्स हीणमुल्ल च ।
जे भयलोहवसाओ कुणति ते कुट्ठिया होंति ॥ ११० ॥
रयणाण दिट्ठ मुल्ल निरुद्ध वद्ध न होइ कईयावि ।
तहवि समयाणुसारे ज वट्टइ त भणामि अह ॥ १११ ॥

तिहु राइएहिं सरिसम छहि सरिसम तदुलो य बिठण जवो ।
सोलस जवेहि छहि गुंजि मासओ तेहिं चहु टको ॥ ११२ ॥
एगाइ जाव [बा]रस तिग वुड्ढी जाम गुंज चउवीसं ।
चउ रयणाण मुल्ल तोलीण सुवन्नटकेहिं ॥ ११३ ॥
पच दुवालस वीसा तीसा पन्नास पचसयरी य ।
दसहिय चउसट्ठि सय दो चाला ति सय वीसा य ॥ ११४॥
चारि सय तह य छह सय चउदस सय उवरि बिठणबिठण जा ।
इक्कार सहस दुगसय मुल्लमिण इक्क हीरस्स ॥ ११५ ॥
अद्ध इग दु चउ अट्ठय पनरस पणवीस चाल सट्ठी य ।
चुलसीइ चउदसुत्तर सय च कमसो य सट्ठिसयं ॥ ११६ ॥
तिन्नि सय सट्ठि समहिय सच सया तहय बारस सया य ।
दो सहस कणय टका मुत्तियमुल्ल वियाणेहिं ॥ ११७ ॥
दो पच अट्ठ बारस अट्ठार छवीसा य [याल] सट्ठी य ।
पचासी वीसा सउ सट्ठि सय दुसय वीसा य ॥ ११८ ॥
चउ सय वीसा अड सय चउदस चउवीस पिहु पिहु सयाणि ।
गुंजाइ [मास ?] टक उचिम माणिक्क मुल्लु वरं ॥ ११९ ॥
पायद्ध एग दिवड दु ति चउ पण छच अट्ठ दह तेरं ।
ठार सगवीस चत्ता सट्ठि महामरगयमणीण ॥ १२० ॥

अस्यार्थं एष पत्रपुठिजत्रेणाह ॥ छ ॥

गुंजा	१	२	३	४	५	६	[illegible]	८	९	१	११	१२	१५	१८	२१	२४
हीरा	५	११२	२	३	५	७५	११	१६	२४	३९	४	६	[illegible]	९८	५६	११२
मोती	३	१	२	३	८	१५	२५	[illegible]	३	८४	११४	१६	३६	०	१२	२
माणिक	२	५	८	११	१८	२६	[illegible]	६	८५	१२	१६	२२	४२	८	[illegible]	२४
मराइ	१	[illegible]	१	१०	२	३	४	५	६	८	१	११	१४	२०	४	६

[illegible] गाह ११२ उपरे गाह १२ [illegible] ॥ छ ॥

अद्धमासाय अहिय मासय अद्धद्ध जाम चउ मासं ।
तोलीण हेमटंकिहिं मुल्लु कमेण सुरयणाण ॥ १२१ ॥
एग दुसढ छ नवग पनरस चउवीस तह्य चउतीस ।
पन्नास लालमुल्ल पउण एयाउ ल्हसणियर्यं ॥ १२२ ॥
पा अद्ध पउण एग दु पच अट्ठेव तह्य पन्नरसं ।
इय इद[नील] मुल्ल तहेव पेरोजयस्स पुणो ॥ १२३ ॥[†]

अस्यार्थं जन्त्रे जथा–

मासा	॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४
लाल	१	२॥	६	९	१५	२४	३४	५
ल्हसणी	॥।	१॥।	७॥	९॥।	११।	१८	२५॥	३७॥
इंद्रनील	।	॥	॥।	१	२	५	८	१५
पेरोजा	।	॥	॥।	१	२	५	८	१५

सिरि वद्ध गुण अद्ध पाय अणुसार पाय करह च ।
टंकिक्कि जे तुल्ती मुत्ताहल त भणामि अह ॥ १२४ ॥[‡]
दस वारस पन्नरसा वीस पणवीस तीस चालीसा ।
पन्नार(सा) सत्तर सय चडति टंकिक्कि तह मुल्ल ॥ १२५ ॥[‡]
पन्नास चालीस तीस वीस च तह्य पन्नरस ।
बारस दस ह पण तिय इय मुल्ल रुप्पटंकेहिं ॥ १२६ ॥[†]

इति मुत्ताहल।

अथ वज्र जथा–

एगाइ जाम वारस तुल्ति गुजिक्कि वज्ज ताणमिम ।
मुल्ल मढल्लिएहिं ज भणिय त भणिस्सामि ॥ १२७ ॥

पणतीस छव्वीसं वीस सोलस तेरस[य] वुसेवा ।
अट्ठ च एग ऊणा जा तिय कमि रुप्पट्टकाय ॥ १२८ ॥ छ ॥

अस्यार्थं जत्रेणाह –

मोती टंक १	१	१२	१५	२	२५	३	४	५	७	१		
रुप्प टंका	५	४	३	२	१५	१२	१	८	५	३		
चत्र गुंजा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	११	१२
रुप्प टंका	३५	२६	२	१६	१३	१	८	७	६	५	४	३

† मुद्रित प्रतिमें १२३ वीं गाथाका पाठ भिन्न रूपमें मिलता है और उसके नीचे यंत्ररूप कोष्ठक दिया गया है उसकी अंकगणना भी भिन्न प्रकारकी है । गाथा और कोष्ठक निम्न प्रकार हैं –

[अट्ठ ति छह] दह तेरस सोलस बावीस तीस टंकाई ।
लालस्स मुल्लु एयं पेरुजं इंदनील सम ॥ १२३

अस्यार्थं यंत्रकेणाह –

मासा	॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४
हीरा	७	१६	३०	६०	१००	१५०	२२०	३४०
चूनी	८	१८	३	६०	१२०	२५०	४८०	९६०
मोती	२	८	३	८०	१२०	१८०	२००	४०५
मराइ	४	६	१०	११	२५	३४	५०	७०
इंद्रनील	।	॥	।॥	१	२	५	७	१०
लहसणीया	।	॥	।॥	१	२	५	७	१०
लाल	॥	३	६	१०	१३	१६	२२	३०
परोजा	।	॥	।॥	१	२	५	७	१०

‡ मुद्रित प्रतिमें १२४, १२५, १२६ इन ३ गाथाओंके स्थानपर पाठभेदवाली भिन्न गाथाएं हैं तथा उनके नीचे यंत्ररूपसे जो कोष्ठक दिये हैं उनमें अंकादि भी भिन्न गिनती बताते हैं। गाथाएं और कोष्ठक निम्न प्रकार हैं—

बारस चउदस सोलस वीसाई दसहिय च जाव सयं।
टंकिकि जे तुलती मुत्ताहल ताण मुल्लमिम ॥ १२४‡
चालीसं पणतीस तीस चउवीस सोलसिक्कारं।
अट्ठ छ इगेग हीण जाव दु कमि रुप्प टंकाण ॥ १२५‡
एगाइ जाव बारस चडंति गुंजिकि वज्ज ताणमिमं।
वीसाय सोल तेरस गारस नव इगूण जाव दुगं ॥ १२६‡

अस्यार्थं पुनर्यंत्रकेणाह—

मोती टंक प्रति	१२	१४	१६	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
रूप्य टंकाः	४०	३५	३०	२४	१६	११	८	६	५	४	३	२

हीरा गुंजा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
रूप्य टंकाः	२०	१६	१३	११	९	८	७	६	५	४	३	२

✿

अइ सुक्ख निम्मला जे नेय सव्वाण ताण मुल्लु मिम।
नहु इयर रयणगाण कणयद्ध विद्रुमे मुल्ल ॥ १२९ ॥
गोमेय फलिह भीसम कक्केयण पुसराय वेडुज्जे।
एयाण मुल्लु दम्मिहि जहिच्छ कज्जाणुसारेण ॥ १३० ॥ छ ॥

✿

[पाठभेद—अइ सुक्ख निम्मला जे नय सव्वाण ताण मुल्लमिम।
सदोसे सयमसं ममालए मुल्ल दसमसं ॥ २७
गोमेय फलिह भीसम कक्केयण पुस्सराय वइडुज्जे।
उब्भिड्ड पण छ टंका सयमयद्ध विद्रुम मुल्लं ॥ २८
॥ इति सर्वेषां मूल्यानि समाप्तानि ॥]

✿

सिरि धंधकुले आसी कन्नाणपुरम्मि सिट्ठि कालियओ ।
तस्सुय ठक्कुर चंदो फेरू तस्सेव अंगरुहो ॥ १३१ ॥

तेणिह रयणपरिक्खा विहिया नियतणय हेमपालकए ।
कर मुणि गुण ससि वरिसे (१३७२)
अल्लावदी विजयरज्जम्मि ॥ १३२ ॥

*

[पाठभेद–तेणय रयणपरिक्खा रइया संखेवि ढिल्लिय पुरीए ।
कर मुणि गुण ससि वरिसे अल्लावदीणस्स रज्जम्मि ॥ १२६]

*

॥ इति परमजैन श्रीचन्द्रांगज ठक्कुर फेरू विरचिता
संक्षिप्तरत्नपरीक्षा समाप्ता ॥



१ पाठान्तर–फेरूविरचित संक्षेप्यरत्नपरीक्षा समाप्तः ।

ठक्कुर फेरू विरचिता

प्राकृतभाषायद्धा

द्रव्यपरीक्षा



ॐ नमो कमलवासिणी देवी ।

कमलासण कमलकरा छणससिवयणा सुकमलदलनयणा ।
संजुत्तनवनिहाणा नमिवि महालच्छि रिद्धिकरा ॥ १ ॥
जे नाणा मुद्दाइ सिरि ढिल्लिय टकसाल कज्जठिए ।
अणुभूय करिवि पच्चिउ यन्हि मुहे जह पयाउ चिय ॥ २ ॥
त भणइ कलसनदण चंदसुओ फिरउणुमाय तणयत्थे ।
तिह मुल्लु तुल्लु दव्वो नाम ठाम मुणत्ति जह्वा ॥ ३ ॥
पढम चिय चासणिय, वीयइ कणगाइ रुप्प सोहणिय ।
तइए भणामि मुल्ल, चउत्थए सव्व मुदाइ ॥ ४ ॥ वार ॥

चासणिय जह्वा—

सुक्क पलासकट्ठ गोमय आरन्नगा अजा अत्थिय ।
कमि तिय इगे गि भाय एगट्ठ यहिय त रक्ख ॥ ५ ॥
छाणिय सेर सवायं वधि गह वकनालि धमि मद ।
धव अंगार सवा मणि सोहिय उत्तरइ चासणिय ॥ ६ ॥
त पुणरवि सोहिज्जइ पण तोला रक्ख वधिऊण गह ।
ता हवइ सह कूर अइ निम्मल चासणिय रुप्प ॥ ७ ॥

॥ इति सर्व चासनिका मूलसोधनविधि ॥

सीसस्स अमल पच करेवि लहु खड तुलिवि सोहिज्जा ।
नीसरइ रुप्प सयल सीस गच्छेइ खरडि मद्दे ॥ ८ ॥

सय तोलामज्झेण बारह जव सीसए हवइ रुप्प ।
पच्छा पुण पुण सोहिय तहावि निक्ण न कइयावि ॥ ९ ॥

॥ इति नागचासनिका ॥

रुप्पस्स वीस मासा छटक नाग च देइ सोहिज्जा ।
जं जायइ ते विसुवा एव हुइ रुप्प चासणिय ॥ १० ॥

॥ इति रुप्पचासनिका ॥

नाणय हइक्क हरजय रीणी चक्कलिय टक दस गहिउ ।
पनरह गुण सीसेण सोहिय नीसरइ ज रुप्प ॥ ११ ॥
तस्साओ पाडिज्जइ रुप्प सीसस्स ज रहइ सेस ।
त चासणिय सरूव अन्न ज खरडि मज्झि हवे ॥ १२ ॥
नीचुच्च नाणयाओ कमेण चउ दु जव किंचि हीणहिया ।
संगहइ खरडि रुप्प अवस्स चासणिय समयमि ॥ १३ ॥
हरजय चासणिय दुग दह दह टकस्स मेलि गहि अद्ध ।
पउण दु जवतरेसु ह दु जवतरि वाहुडइ नूण ॥ १४ ॥

॥ इति द्रव्यचासनिका ॥

चासणिय जव दहग्गुण जि टक मासा हवति तस्सुवरे ।
अगिगस्स मुखि दीयइ टकप्पइ जे जवा होंति ॥ १५ ॥
त सय मज्झे रुप्प तहच्छमाणस्स पूरणे अत ।
तंवअहियस्स पुण जुय सछाही सा भणिज्जेइ ॥ १६ ॥

॥ इति सछाहिकाविधिः ॥

सामन्नेण सुवन्नो बारहि वन्नीय भित्ति वणओ य ।
पच जव हीण चिप्प पिंजरि वन्नी य पच तुले ॥ १७ ॥
सिय खडिय लूण कक्कर सम मिस्सिय पुन्न सा सलोणीयं ।
मेलगाय कणय चिप्पय करेवि तेण सह पइयव्व ॥ १८ ॥

तिहु अग्गिछ्ह सलोणी सत्ति सलूणीहि सुज्झण चिप्प ।
इक्कारसीय वन्नी इक्कारस जव भवे सुक्स ॥ १९ ॥
सय तोल कणय पइए ज घट्टइ सा सलूणिय चिप्पे ।
चिप्पे दहग्गि पक्के जं घट्टइ त च कायरिय ॥ २० ॥
चिप्परस तिन्नि मासा पच करिवि मिचि कणय सह पइए ।
स तिहाउ जओ घट्टइ मिचीओ पढम चासणिय ॥ २१ ॥
पच्छा ति अग्गि पक्के पुणो वि तिय मास मिचि सह पइए ।
तेरह विसुव जवस्स य इय अंतरु वीय चासणिए ॥ २२ ॥
परपुन्न दहग्गि प[इ?]ए मिचि सम हवइ तइय चासणिय ।
टकाण चक्कलीय गहिज्जइ य कणय चासणिय ॥ २३ ॥

॥ इति सुवर्णशोधना चासनिका च ॥

मेलगइ रुप्प विसुवा दह तेरह सोल ठार उणवीसा ।
पच उण चउण तिउण विउण सम सीसय दिज्जा ॥ २४ ॥
सयल कुदव्व गच्छइ खरहितरि रहइ सेस रुप्पवर ।
तं पुण दिवइ सीसइ सोहिय हुइ वीस विसुव धुव ॥ २५ ॥

॥ इति रुप्पसोधना ॥

तुलिय सलूणीयाओ अड्डाइ गुणीय खरडि रुप्परस ।
वट्टेवि मेलि पिंडिय करिज्ज कोम स चुन्न सहा ॥ २६ ॥
तत्तो करेवि कुट्टिय धमिज्ज घट्टइ तईय अंसुमल ।
हवइ दुभामिस्स वल तस्साओ अडुय कुज्जा ॥ २७ ॥
नीसरइ सयल रुप्प सीसं तय च जाइ खरडि मज्झे ।
सा खरडि पुण धमिज्जइ पिहु पिहु नीसरहि दुन्नेवि ॥ २८ ॥
काइरिय पुणो एव कीरइ तस्साउ तय सह कणय ।
नीसरइ तस्स चिप्प हुइ सीस खरडि भज्झाओ ॥ २९ ॥

॥ इति मिश्रदल शोधना ॥

कज्जलिय मूसि थूरिय तोपाल नियारयस्स सुहम कण ।
सोहग्ग फ सज्जिय दसंस जुय कढिय हवइ दल ॥ ३० ॥

॥ इति कणचूर्ण शोधना ॥

चउ भाय अमल तब्बय वर पिप्पल सोल भाय सह कढियं ।
इय रीस कायव्व रुप्पस्स विसोव करणत्थे ॥ ३१ ॥
वीस विसोवा रुप्प मासा वीसाउ जं जि कझ्जा ।
तिच्चिय मासा रीस दिज्ज हवइ ते विसोव कस ॥ ३२ ॥

॥ इति रुप्पवनमालिका ॥

अइ चुक्ख रुप्प तब्बय कमि पनरह सह सह चउ रीसे ।
इय भाय वनियत्थे सोलस चउ कणय घडणत्थे ॥ ३३ ॥
जारिस वन्नी कीरइ तिच्चिय दु जवहिय मिच्चि कणओ य ।
सेस दु जवूण रीसं एव तोलिकु हवइ परं ॥ ३४ ॥
रीस सम कणय पढम गालिवि पुण थोव कणय सह कढिय ।
पुण सेस सहा वट्टिय ता हवइ जहिच्छ वन्नाम ॥ ३५ ॥

अथवा —

राम कर भाय सुल्भ तारं मुणि सत्त भाय सह कढिय ।
एयं सयस रीसं सुवन्न वन्नस्स हरण वरं ॥ ३६ ॥
सेयालीस विभाय धुर कणय करवि एग एगूणं ।
तच्चुल्लि दिज्ज रीसं कमेण पाऊण सुद्ध वन्न ॥ ३७ ॥

॥ इति कनकवनमालिका ॥

जवि सोलसेहि मासउ चहु मासिहि टकु तोलओ तिठणो ।
सोलहि जवेहि वन्नी वारहि वन्नी महाकणओ ॥ ३८ ॥
वन्नी तुल्लेण हय मिच्चि सुवन्नस्स अग्घ सह गुणिय ।
बारस भागे पत्त जहिच्छमाणस्स तं मुल्लं ॥ ३९ ॥

नाणा वन्नी कणओ नाणा तुल्लेण जाम गालिज्जा ।
केरिस वन्नी जायइ अह एरिस वन्नि किं तुल्लो ॥ ४० ॥
जसु वन्नी ज तुल्लो सो तस्सरिसो गुणेवि करि पिंड ।
तुल्लि विहत्ते वन्न इच्छा वन्नी हरे तुल्ल ॥ ४१ ॥

॥ इति स्वर्ण विवहार ॥

उग्घाड मूसि दुग सउ पडिय सओ ढक्क मूसि उद्देसो ।
आवट्ट खए गच्छइ हरजइ तह रीण वट्टे य ॥ ४२ ॥
छेयणि घडणु ज्जालणि सहस्सि तोलेहि रुप्पु चउमासा ।
कणओ सवाउ मासउ टकइ सहस्सि दम्मेहिं ॥ ४३ ॥

॥ इति ह्रास्य ॥

चहु सय दुत्तरि कणओ चहु सय वत्तीस कणय टको य ।
तेवन्नि सड्ड रुप्पउ सट्ठि टकउ नाणउ ति वन्ने ॥ ४४ ॥
तोलिक्कस्स सलूणी दम्मिहि वत्तीसि चउ हु कायरिय ।
रुप्पस्स खरडि सीसय पमाणि छह टक दम्मिक्के ॥ ४५ ॥
सीसस्स मली सीसस्स अडए तह य कउल खरडि पुणो ।
लोहच्छि लोह कक्कर इय अग्घ तेर वासट्ठे ॥ ४६ ॥
रुप्पय कणय ति धाउय इय तिय मुद्दाण मुल्ल दम्मेहिं ।
वन्निय तुल्ल पमाणे सेस दु धाउय टंकेण ॥ ४७ ॥
नाणा मुद्दाण कए आरिसु टको पमाणिओ होइ ।
टकेण तेण मुल्लं गणियव्व सयल मुद्दाण ॥ ४८ ॥
भणिसु इव नाणवट्ट दम्मिसिहि जाम इत्तिय मुद्द ।
इय अग्घ पमाणेण इत्तिय मुद्दाण कइ मुल्ल ॥ ४९ ॥
रासिं तिगाइ गुणिय मज्झिम हरिऊण भाउ ज लद्ध ।
त ताण मुद मुल्ल न ससय भणइ फेरु त्ति ॥ ५० ॥

॥ इति मौल्यम् ॥

अथ मुद्रा यथा—

सवा इगवन्न दम्मिहिं पुत्तलिया सीमलीय चउतीसे ।
तोला इक्कु कज्जानिय बावनि आवुनिय इगवन्ने ॥ ५१ ॥
रीणी जे मुद्दा ल्ग स तिह्रा गुणचासि तोलओ तेवि ।
सड्डुचयाल रुवाई खुराजमी ,सड्डु पचासे ॥ ५२ ॥
वालिङ्ग पाउ ओवम रुप्प मया तिन्नि छोसि तिहु तुल्ले ।
सड्डु सउ असी चचा तोला इक्को य बावन्नो ॥ ५३ ॥
सिरि देवगिरिउ वन्नो सिंघणु तुल्लेण मासओ इक्को ।
सतरह विसुवा सड्डा रुप्पउ ताराय मासन्दो ॥ ५४ ॥
अन्न ज जि करारिय खड़ल्ग नरहृबाइ रीणीय ।
तई सयल दिट्ठि मुद्द अहवा चासणिय अग्गिमुहे ॥ ५५ ॥

॥ इति रूप्यमुद्रा ॥

१

पुतली	तो०	५१।
सीमली	०	३४
कज्जानी	०	५२
मावनी	०	५१
रीणीमुद्रा	०	४९
रुवाई	०	४८॥
खुराजमी	०	५०॥
वालिश जि १		
प्रति		५२
१६०	पा.	१
८०	पा.	१
४०	पा	१

मीघणमुद्रा ऽ०४
तारा मा० ॥ ऽ०२
रीणी खड्डिया ल्ग मरहवाति
कगरी पते दृष्टि अथवा
चासनी प्रमाण मूल्यं ।

कणय मय सीयराम दुविह् सजोय तह् विओयं च ।
वह् वन्नी दस मासा अभऌणीया सपूयवरा ॥ ५६ ॥
चउकडिय तह् सिरोहिय अट्ठी वन्नी सवा चउ म्मासा ।
तुल्ले कुमरु पुणेव अट्ठी वन्नी धुव जाण ॥ ५७ ॥
पउमाभिहाण मुद्दा बारह् वन्नी य तस्स कणओ य ।
तुल्लेण टकु इक्को सच जवा सोल विसुवसा[२] ॥ ५८ ॥
देवगिरी हेमच्छ सत्तादसी सिंघणी महादेवी ।
ठाणकर लोहकुडी अट्ठी वाणकर पउण दसी ॥ ५९ ॥
खम्भघर चुक्खरामा सड्ढनवी केसरी य छह् सड्ढा ।
सच जव दसी वन्नी कउलादेवी वियाणाहि ॥ ६० ॥
जे अम्मि अच्छु बहुविह् थरेहि तह् मुद्दु तुल्लु नज्जेइ ।
चउमासा दीनारो जहिच्छ वन्नी णुसारि फलो[३] ॥ ६१ ॥

॥ इति स्वर्णमुद्रा ॥

१

या १० सीताराम मासा १०
१ संयोगी १ वियोगी
वानी ८ चउकडीया ४।
वा ८ सिरोहिया ४।
वा ८ कुमरु सिद्धगिरि मासा ५।
वा १२ पदमा टं १ जव ७ ऽ०॥०

२

भाछ देवगिरी मुद्रा स्वर्णमय
वानी विठरामप्रमाणे
१०। सिंघण
१०। महादेवी
८ ठाणाकर
८ लोहकुण्डी
५॥ रामचाण
५। खम्भघर. चोपीराम
[illegible] केसरी
१० ज ७ कौमदेवी
० दीनार मा ४

वाणारसीय मुद्दा पउमा नामेण इक्कि सय मज्झे ।
तिन्नेव धाउ तुल्ले तोला सइतीस जाणेह ॥ ६२ ॥
पच जव हीण वारह वन्नी कणओ य टक इगयाला ।
छत्तीस अमल रुप्प तब चउतीस टकेव ॥ ६३ ॥

४

> ० पवमा १०० मध्ये धातु ३ टंक १११
> टं ४१ सोनाधानी ११ जव ११ चीपा
> टं ३६ रूपा चोपा नवाती चिम्बा २०
> टं ३४ ताम्बा चोपा अमल प्रधान

इक्कि पउमस्स मज्झे रुप्प कणय तब मासओकिक्को ।
सच दह पच जव कमि मुन्न चउ पनर विसुवहिया ॥ ६४ ॥
इय एगि पउम तुल्ले मुणि ७ जव विसुवस सोल टक इगो ।
जाणेह तस्स मुल्लो जइयल उणसट्ठि अह सट्ठी ॥ ६५ ॥

५

> ० पद्मा १ संतोल्ये टं १ जव ७ ऽ०॥१
> मासा १ ज ७ ऽ०॥ रूपा चोखा ॥
> मासा १ ज १० ऽ४॥ १ कनक चोखा ॥
> मासा १ ज ५॥ ०ऽ४ तांबा निमक

भगवा तिधाउ समव पउमा समतुल्ल विविहमुल्ला य ।
भगवदसणिय नामे कारिय जियसत्त रायस्स ॥ ६६ ॥

६

> भगवा भातापिच मौल्य मुद्रा ११
> तोल्ये मासा ४ जव ७ भगवंत नाम
> जितशत्रु नृप कारितं ॥

मुद्द विलाई फोरं भासा नय तुल्लि सिसि धाऊ य ।
तंय दिवड्ढमासं सेस कणय रुप्प अद्धद्ध ॥ ६७ ॥
पउण ति टका मुल्लं इमस्स सेसाण कमिण पाऊण ।
जा पाय टकओ हुइ इक्कारस मुद्द तुल्लि समा ॥ ६८ ॥

७

> विलाई फोर मुद्रा ११ ताल्ये ।
> मासा ९ मूल्ये टंका ऽ३॥ ऽ३॥ ऽ३ ऽ२
> ऽ१॥। ऽ१॥ ऽ॥ ऽ। ऽ०॥। ऽ०॥ ऽ ।

माहोवयस्स मुद्दा तुल्लो इक्कस्स सड्ढ चउमासा ।
संजोय तिन्नि धाऊ पिहु पिहु नामेहि त भणिमो ॥ ६९ ॥
रुव कणय गुज चउ चउ तवउ गुणवीस वीरवमो य[८] ।
मुल्लु चउवीस जइयल हीरावमस्स बावीस[९] ॥ ७० ॥
तस्सु अढाइ मासा रुप्पु सुवन्नो य इक्कु इक्को य ।
तियलोयवम मुल्लु छवीस[१०] विविह मोजस्स[११] ॥ ७१ ॥

८

२४ वीरवरसु	मासा ४॥	त्रधातु
० सोनउ	० रूपउ	त्रांबा
० रत्ती ४	० रत्ती ४	र १९

९

२२	हीरावरसु	मासा ४॥	त्रधातु
०	० सोनउ	रूपउ	तांबा
०	० र ३॥	र ३॥	१९॥

१०

२६ त्रिलोकवरसु १ मासा ४॥ मा
० मा १ सोन मा १ रूपौ मा २॥ तांबा

११

० मोज्ञ नाना तौल्य विविध मूल्य
० त्रधातु संभव ।

वट्टइ तिय कमि धाऊ रुप्प कणय गुज अट्ठ पण अट्ठट्ठ ।
तस्सु भव ११ सतर १७ वीसं २ मुल्ले चालीस तीस वीस धुव[१२] ॥७२॥

१२

पाखम्म	मासा		सोना	रूपा	तांबा
४०	१	४॥	र.८	र ८	र ११
३०	१	४॥	र ५	र ५	र १७
२०	१	४॥	र ३॥	र ३॥	र २०

॥ इति त्रिधातुमिश्रितमुद्रा ॥

अथ खिधाखुमुद्राः –

जे तोला जे मासा जि टक उल्लविय सयल मुद्देहिं ।
त सयमज्झे रुप्पउ जाणिज्जहु सेस तंबो य ॥ ७३ ॥
खुरसाण देस संभव चिन्हक्खर पारसीय तुरुक्कीय ।
तमय रुप्प डु धाऊ इमेहि नामेहि जाणेह ॥ ७४ ॥
भमइ य एगटिप्पी सिकदरी कुरुलुकी पलाहउरी ।
सम्मोसीय लगामी पेरि जमाली मसूदीया ॥ ७५ ॥
सय मुद्द मज्झि रुप्पउ ति चउ ति दु इगेग दु दु इग दु तोला ।
सुन० ति ३ सुन० छ ६ दु २ सवापण ५।
छ ६ दु २ सढनव ९॥ पउणदुइ १॥ मासा ॥ ७६ ॥
चउतीसं तेवीस चउतीसिगयाल असी सट्ठि कमे ।
इगयाल सगयाल पणपन्न अडयाल टक्कि[१३] ॥ ७७ ॥
॥ इति खुरसाणीमुद्रा । विवर जन्त्रेणाह–

१३

३४	मांभइ मुद्रा	१०० मध्ये रूपा	तो ३	मा ०
२३	इगटीपी	१०० मध्ये रूपा	तो ४	मा ३
३४	सिकन्दरी	१०० मध्ये रूपा	३	मा ०
४१	कुरुलुकी	१०० मध्ये रूपा	२	मा ६
८०	पलाहोरी	१०० मध्ये रूपा	१	मा २
६०	समोसी	१ ० मध्ये रूपा	१	मा ५।
४१	लगामी	१०० मध्ये रूपा	२	मा ६
४७	पेरी	१०० मध्ये रूपा	२	मा २
५५	जमाली	१ ० मध्ये रूपा	१	मा ९॥
४८	मसूदी करारी	१०० मध्ये रूपा	२	मा १॥

अवदुल्ली तह फुत्तुली तुल्लि सवापण दुमासिया मुद्दे ।
सट्ठि असी तह रुप्प दु दु जव चउ सोल विवकम्मे[१४] ॥७८॥

१४

० अवदुल्ली	१ मासा ५।	मध्ये रूपा	जव २५४	प्र ६०
० फुतुली	१ मासा २	मध्ये रूपा	जव ४॥	प्र० ८०

॥ इति अठनारीमुद्रा ॥

विक्कम नरिंद भणिमो गोजिग्गा अठणतीस तोल रुवा ।
दुउराहा पणवीस सवा रुमे अहुठ चउ मुछे ॥ ७९ ॥
भीमाहा छव्वीसं तोला मासड्ढु चारि टकिक्के ।
चोरी मोरी तोला पणवीसं मुल्लि चारि सवा ॥ ८० ॥
करड तह कुम्मरुपी कालाकचारि य छक्क करि मुछे ।
सय मज्झि अट्ठमासा सतरह तोला य खलु रुप्प[१५] ॥ ८१ ॥

॥ इति विक्रमार्कमुद्रा ॥

१५

०	गोजिगा	१०० मध्ये	रुपा तोळा	२९	मासा ९	प्रति	३॥
०	दुउराहा	१०० मध्ये	रुपा तोळा	२५	मासा ३	प्रति	४
०	भीमाहा	१०० मध्ये	रुपा तोळा	२६	मासा ०॥	प्रति	४
०	चोरी मोरी	१०० मध्ये	रुपा तोळा	२५	मासा ०	प्रति	४।
०	करड	१०० मध्ये	रुपा तोळा	१७	मासा ८	प्रति	६
०	कुम्मरुपी	१०० मध्ये	रुपा तोळा	१७	मासा ८	प्रति	६
०	कालाकचारि	१०० मध्ये	रुपा तोळा	१७	मासा ८	प्रति	६

गुज्जरवइ रायाण बहुविह मुदाइ विविह नामाइ ।
ताण चिय भणिमोह तुछ मुछ निसामेह ॥ ८२ ॥
कुमर अजय भीमपुरी लूणवसा रुप्पु टक पणवन्ना ।
पच नव विसुव मुछो तुछे चउमास तेर जवा ॥ ८३ ॥
वीसलपुरीय छह करि कुल्हे गुग्गुलिय टक पन्नास ।
दुछहर पनर तोला अहुट्ट मासा छ सङ्ग करे ॥ ८४ ॥
अज्जुणपुरीय तोला बारह सङ्ढाय मुल्लि अट्ठ करे ।
कट्टारिया चउद्दस तोला मासा ति सत्तेव ॥ ८५ ॥
नव करि असपालपुरीगारस तोला अङ्ढाइय मासा ।
सारंगदेव नरवइ तस्स इम संपयक्खामि ॥ ८६ ॥
सोढलपुरी छ तोला मासा अट्ठेव मुछु पन्नरसा ।
पणमासा दहतोला दस करि लाखापुरी जाण[१] ॥ ८७ ॥

१६

५१४	कुमरपुरी	१००	मध्ये	तोला	१८	मा०	४
५१४	मलयपुरी	१००	मध्ये	तोला	१८	मा०	४
५१४	भीमपुरी	१००	मध्ये	तोला	१८	मा०	४
५१४	लावणसापुरी	१००	मध्ये	तोला	१८	मा०	४
८	अर्जुनपुरी	१००	मध्ये	तोला	१२	मा०	६
३	वीसलपुरी	१००	मध्ये	तोला	१३	मा०	८
	१ कुंडे १ सूगळे						
४॥	सोमहर	१००	मध्ये	तोला	१५	मा०	३॥
७	रूप्यारिपा	१००	मध्ये	तोला	१४	मा०	२
९	आसपाल पु	१००	मध्ये	तोला	११	मा०	२॥
१५	सोहडपुरी	१००	मध्ये	तोला	९	मा०	८
१०	कान्हापुरी	१००	मध्ये	तोला	१०	मा०	५

गयिका य पच तोला रुप्पउ सयमज्झि वीस करि सुद्धे ।
पद्दिया रज्जपलाहा सोलह करि छ तोल अद्धुठ मसा ॥८८॥
वेवल्य सट्ठ सोलस रुप्पु छ तोलाय मासओ पउणो ।
इय इत्तियाण तुल्लो मासा पचेव इक्किको ॥ ८९ ॥
अट्ठ करिवि सट्ठ सया तोला सढवार तुल्लि मासट्ठा ।
दस तोल सत्त मासा वराह नव सट्ठ टकीण ॥ ९० ॥
वारह सड्ढ करेविणु तोलट्ठ रुवा विनाइका चडी ।
कन्हडपुरी छ सड्ढा रूप्पु पनरह तोल अद्धुठ मसा ॥ ९१ ॥
वाण इगवीस तोला अधमासउ रुप्पु पच इगि टके ।
मछवाह छ करि सोलह तोला मासद्ध रुप्पु सए[१०] ॥ ९२ ॥
चउतीसा पइतीसा छत्तीसा तह य सत्ततीसाय ।
मालवपुरि छारीया चासणिए सुद्ध एयाण ॥ ९३ ॥

॥ इति गुर्जरीमुद्रा ॥

१७

२०	गयिका	१००	मध्ये	तोला	५	मा०	०
१६	पद्दिया	१००	मध्ये	तोला	६	मा०	[illegible]
१६	रज्जपलाहा	१००	मध्ये	तोला	६	मा०	३॥
१६॥	वेवला	१००	मध्ये	तोला	६	मा०	०॥
८	थाठसया	१००	मध्ये	तोला	१२॥	मा०	२॥
९॥	वराह मुद्र	१००	मध्ये	तोला	१०	मा०	७
१२॥	विनायका	१००	मध्ये	तोला	८	मा०	०
[illegible]	कान्हडपुरी	१००	मध्ये	तोला	१५	मा०	३॥
५	वाण मुद्रा	१००	मध्ये	तोला	२१	मा०	॥
६	मछवाहा	१००	मध्ये	तोला	१६	मा०	८

मालविय चउक्कडिया तोला अट्ठाय सड्ढ चारि करे ।
दिउपालपुरी पनरह तोला पण मास छह सड्ढा ॥ ९४ ॥
कुंडलिया छह तोला पउण छ मासा य मुद्दि पञ्चरसा ।
मासड्ढ पंच तोला बारह जव कउलिया सतरं ॥ ९५ ॥
बावीस टंक दव्वो तेरह सड्ढा छडुल्लिया होंति ।
सेलद्धी तुगह पण तोला तियमास चउवीस (उणवीसं?) ॥९६॥
इय इच्चियाण तुल्ल चउमासा दह जवा हवंति धुव ।
जानीया चित्तउडी वीसं दव्वो य पण तोला[१८] ॥ ९७ ॥

१८

प्रति	नाम	१०० म रूपा तो०	मा० तोस्ये	रु०	जव
१२॥	चौकडिया	८	०	१	१०
५॥	दिउपालपुरी	१५	५	१	१०
१५	कुंडलिया	[illegible]	५॥।	१	१०
१७	कउलिपा मुद्र	५	[illegible]	१	१०
१३॥	छडुलिया	७	४	१	१०
१९	सेलद्धी तोगड	५	[illegible]	१	१०
२०	जानीया चितौडी	५	०	०	०

जक्करिया गलहुलिया बावीस तीस मुद्दु तह दव्वो ।
कमि चारि तिन्नि तोला छ जव चउम्मास चउमासा ॥ ९८ ॥
मासड्ढ इक्कु तोलउ रुप्पो य खालगा य छप्पन्ना ।
सिवगणय पचहत्तरि मुद्दि सवा तोलओ रुप्पो ॥ ९९ ॥
चउदस सवा चउदसी तोला बपडाय मलित सच्च करे ।
सिह चोर मार मलुवा तेरह तोलाय सच्च सच्च सवा[१९] ॥१००॥

॥ इति मालवीमुद्रा ॥

१९

प्रति	नामानि १०० मध्ये	रूपा तो०	मा०	तोस्ये	रु०
२२	जक्कारीया नाम १०० मध्ये	४	५॥।	०	०
३०	गलहुलिया ” ”	३	४	०	०
५६	ख्वालगा मुद्रा शत १ मध्ये	१	८	०	०
७५	सिवगण्या शत १ मध्ये	१	३	०	०
७	बापडा नाम मुद्रामध्ये	१४	०	०	०
१७	मलीता नाम मुद्रा मध्ये	१४	३	१	०
७	सीहमार नाम मुद्रा म०	१३	०	१	०
७	चोरमार नाम १०० म०	[illegible]	०	१	०

चाहडी तिन्नि कमसो दुउत्तरी अंककी पुराणीय ।
ति ति दु तोॅल वह ति दह मास छव्वीस बतीस पणतीसं ॥१०१॥
आसल्लिय सत्तरहुत्तरि दु तोल छम्मास दव्वु चालीस ।
आसल्ली ठेगा महि छ टक कणु मुल्लि पन्नास ॥ १०२ ॥
आसल्लिय नविय तुल्ले सतरह तोला सवाय इगि टके ।
टक अढाई रुप्पउ सय मज्झे वीस मासाय ॥ १०३ ॥

॥ इति नलपुरमुद्रा [२] ॥

[१]

प्र० २८	चांहडी दुमोत्तरी १०० मध्ये	तो० ३	मा० १०
प्र० ३२	चांहडी आंकडी १०० मध्ये	तो० ३	मा० ३
प्र० ३५	चांहडी पुराणी १०० मध्ये	तो० २	मा० १०
प्र० ४०	आसल्ली सत्तरोत्तरी मध्ये	तो० २	मा० ६
प्र० ५०	आसल्ली ठेंगा १०० मध्ये	तो० २	मा०
प्र० १७	आसल्ली नवी ठेका १ प्रति तुलित तोला १७। मध्ये रुपा तोला २॥ सव १ मध्ये रुपा तो ५ (?)		

चदेरियस्स मुद्दा मुल्ले कोल्हापुरीय छह सड्ढा ।
पनरह तोला सतिहा तुल्ले चउ विसुव टक्कु इगो ॥ १०४ ॥
सड्ढह सड्ढ बारह तोला जीरीय हीरिया सयगे ।
बारह करिवि सु कमे टक्कह इक्के वियाणेह ॥ १०५ ॥
दव्वु अढाई तोला अकुडा सय मज्झि मुल्लु चालीसा ।
जइत अढ मास नव जव दव्वो मुल्लेण वियढ सय ॥ १०६ ॥
सड्ढु सउ वीर टक्कह जव तेरह सत्त मास सय मज्झे ।
लक्खण सवा छ मासा रुप्पु सए मुल्लु असी सयं ॥ १०७ ॥
राम सु जव पउमासा तुल्लि सया मुल्लि टकए इक्के ।
बव्वावरा मसीणा खसरं च सय नवइ अहिय ॥ १०८ ॥

॥ इति चदेरिकापुरसत्कमुद्रा [२१] ॥

२१

प्र०	६॥	कोल्हापुरी	१०० मध्ये	तो०	१५	मा०	४	जव	०
प्र०	१२	खीरिया	१०० मध्ये	तो०	८	मा०	६	जव	०
प्र०	८	हीरीया	१०० मध्ये	तो०	१२	मा०	६	जव	०
प्र०	४०	मकुल्हा	१०० मध्ये	तो०	२	मा०	६	जव	०
प्र०	१५०	बहरत	१०० मध्ये	तो०	०	मा०	८	ज०	९
प्र०	१६०	बीरसुंद	१०० मध्ये	तो०	०	मा०	७	ज०	१३
प्र०	१८०	लखमणी	१०० मध्ये	तो०	०	मा०	६	ज०	४
प्र०	२००	राम	१०० मध्ये	तो०	०	मा०	४	ज०	२
प्र०	१९०	बब्बावरा	१०० मध्ये	तो०	०	मा०	५	ज०	८
प्र०	१९०	मसीप्पा	१०० मध्ये	तो०	०	मा०	५	ज०	८
प्र०	१९०	खसर	१०० मध्ये	तो०	०	मा०	५	ज०	८

॥ इति चंदेरिकापुरमुद्राः ॥

जालधरी वडोहिय जइतचंदाहे य रूपचदाहे ।
रुप्प चउ तिन्नि मासा दिवढ सय दु सय टकिके ॥ १०९ ॥
तिन्नि सय इक्कि टके सीसडिया हुइ तिलोयचदाहे ।
संतिउरीसाहे पुण चारि सया इक्कि टकेण ॥ ११० ॥

॥ इति जालधरीमुद्रा[२२] ॥

२२

प्र०	१५०	जइतचंदाहे	१०० मध्ये	रूपा तो०	०	मा०	४
प्र०	२००	रूपचंदाहे	१०० मध्ये	"	०		३
प्र०	३००	त्रिलोकचंदाहे	१०० मध्ये		०		०
प्र०	४००	सांतिउरी साहे	" मध्ये	,	०		०

अथ ढिल्लिकासत्कमुद्रा यथा—

अणग मयणप्पलाहे पिथलपलाहे य चाहडपलाहे ।
सय मज्झि टक सोलह रुप्पउ उणवीस करि मुल्लो ॥ १११ ॥

॥ एता मुद्रा राजपुत्र-तोमरस्य[२३] ॥

२३

प्रति	नामानि मुद्राणां	सत १ मध्ये		रूप्य	तोला	मासा
१९	अणगपलाहे	सत १	"	"	५	४
१९	मदनपलाहे	सत १		,	५	४
१९	पिथउपलाहे	सत १		"	५	४
१९	चाहड पलाहे	सत १		"	५	४

सूजा सहावदीणी तहेव महमूद साहि चउकढिया ।
टक चउद्दस रुप्पउ सय मज्झे मुल्लु इगवीसं ॥ ११२ ॥
कहगा सरया मखिया सवा छ तोला य रुप्पु सोल करे ।
कुल्हलिया पण तोला छ मास अट्ठार इगि टके ॥ ११३ ॥
छुरिया जगडपलाहा चउतोल दु मास रुप्पु पणवीसं ।
दुक्कडीड्डेगा अड्डिया इगि मासइ रुप्पि तेवीसं ॥ ११४ ॥
कुत्वाइची जजीरी तह य फरीदीय परसिया मज्झे ।
दस मासा तिय तोला मुल्ले टकिकि छव्वीसा ॥ ११५ ॥
चउक कुवाचीय वफा सवा ति तोला य मुल्लि इगतीसा ।
सतिहाय तिन्नि तोला खकारिया तीस करि जाण ॥ ११६ ॥
उणतीस निंवदेवी मुल्ले तोला ति सड्ढ चउमासा ।
धमडाह जकारीया अड्ढ तोलाऽडवीस करे ॥ ११७ ॥
पढमा अलावदीणी सयगा समसीय चारि टक सवा ।
इगसट्ठि इक्कि टक्कइ सत्तरि चउ टक मोमिणिया ॥ ११८ ॥
दुक सेला पच रवा तोला तिय दिवड्ढ मासओ रुप्पो ।
बत्तीस करिवि मुल्ले टक्कइ इक्के वियाणिज्जा ॥ ११९ ॥
तितिमीसि कुल्लखाणी खलीफती अघचंदा सिकंदरीया ।
नव टक रुप्पु मुल्ले चउतीस करेवि इय समसी ॥ १२० ॥
समसद्दीण सुयाण रुकुणी पेरोजसाहि पणतीसं ।
तह वारसुत्तरी पुण इग मासा हीण तिय तोला ॥ १२१ ॥
समसदि सुया रदीया तस्स रवी दुन्नि ढिल्लिय बुदउधा ।
सढ सोल पउण तेरह टक्क उणवीस इगतीसा ॥ १२२ ॥
नवगा पणगा मउजी मासा नव सड्ढ तोलओ इक्को ।
पणपन्न सोलहुतरी दुइ तोला मुल्लि पचासं ॥ १२३ ॥
उणचास पनरहुतरी दुइ तोला इक्कु मासओ रुप्पो ।
छक्का दु तोल दु मासा सईताल मउज्जिया एव ॥ १२४ ॥

पेरोजसाहि नवुण अलावदीणस्स एय मुद्दाइ ।
वलवाणीय इक्कगी अड्डा तिय टक मुल्लि असी ॥ १२५ ॥
वलवाणि वामदेवी तिस्सूलिय चउकडीय सगवन्ना ।
मुल्ले दिवड्डु तोलउ सय मज्झे वन्नु नायव्वो ॥ १२६ ॥
तेरहसई मरुट्टी नवइ करिवि इक्कु तोलओ रुप्पो ।
उग्घइ मूलत्थाणी नवमासा रुप्पु तीस सय ॥ १२७ ॥
मरकुट्टीय मुकारी वारह नव नवइ १२९९ अंकिसस्स महे ।
तोलिक्कु अद्ध मासउ सत्तासी मुल्लि जाणेह ॥ १२८ ॥
सीराजी दुइ तोला छम्मासा रुप्पु मुल्लि इगयाला ।
घउपन्न मुक्खतलफी मासा दस तोलओ इक्को ॥ १२९ ॥
काल्हुणी तह नसीरी दक्कारी सत्त छ पण ७।६।५ टक कणो ।
सगयालीस पचासं पणपन्ना कमिण टक्किक्के ॥ १३० ॥
सत्तावीस गयासी दु ति हिय सयमज्झि १०२।१०३ टक दस रुप्प ।
मउजी सह पण तोला समसी हुय रुप्प टकाय ॥ १३१ ॥
जल्लाली तह रुकुणी सड्ढ पण टक रुप्पु सय मज्झे ।
मुल्ल सवाउ दम लहति वट्टति विवहारे ॥ १३२ ॥
अन्नन देससंभव असुणियनामाइ जं जि मुद्दाइ ।
ते पनरह गुण सीसइ सोहिवि कणु मुल्लु नज्जेइ[२४] ॥ १३३ ॥

२४

प्रति	नामानि मुद्राणां	सत १ मध्ये		रूप्य	तोला	मासा
२१	सूजानाम मुद्रा	सत १	”	”	४	८
२१	सहावदीनी मुद्रा	सत १		”	४	८
२१	महमूदसाही मुद्रा	सत १	”	”	४	८
२१	चउकडीया मुद्रा	सत १	”	”	४	८
१६	फटका नाम मुद्रा	सत १		”	६	३
१६	सरवा नाम मुद्रा	सत १	”	”	६	३
१६	मलिया मुंद	”	”	”	६	३
१८	कुंवस्थिया मुंद	-	”	”	५	६
२५	धुरिया मुंद		”	”	४	२
२५	अगटपछाहर नाम	”	”	”	४	२
२१	दुकडीया टगा		”	”	४	३
२६	दुपाइयी जजीरी मुद्रा			”	३	१०

-- ५ --

मति	नामानि मुद्राणां	सत १	मध्ये	रूप्य	तोला	मासा
२९	फरीदी नाम मुद्रा	„	„	„	१	१०
२९	पतंसिया मुद्रा	„	„	„	१	१०
३१	चउक नाम मुद्रा	सत १	„	„	१	१
३१	वफा नाम मुद्रा वर्द्ध	„	„	„	१	१
३०	सक्करिया नाम मुद्रा	„	„	„	१	४
२९	मींयघेवी नाम मुद्रा	„	„	„	१	४॥
२८	घमडाहा नाम मुद्रा	„	„	„	१	१
२८	जकरीया नाम मुद्रा	,	„	„	१	१
३१	मसावदीवी मुद्रा	„	„		१	५
३१	सतका समसी मुद्रा	„		,	१	५
७०	मोमिनी अलाई मुद्रा	„	,	„	१	४
३२	सेका समसी „	„	,	,	१	१॥
३४	तिरिमीसी नाम मुद्रा	„	„	„	१	०
३४	कुच्छआली „	,	„	,	१	०
३४	अलीफती „	„	„	„	१	०
३४	मघघेदा „	,	„	,	१	०
३४	सिकंदरी नाम मुद्रा	,	„	„	१	०
३५	रुकुमी नाम मुद्रा	„	„	,	२	११
३५	पेरोज साही „	„	„	„	२	११
३५	षाच्छोवरी „ ,	,	„	„	२	११
१९	रही डिल्लिकर टंकसालसर्स मध्ये		„	„	५	१
३१	रही कुरीषां टंकसाल कुवाऊ		„	„	४	१
५५	षार० नवका मउजी		„		१	५॥
५५	पनच्च मउजी नाम मुद्रा		„	„	१	५॥
५५	सोकहोतरी मुद्रा सत १ मध्ये		„	„	२	०
५९	पनरहोतरी मुद्रा सत १ मध्ये		„	„	२	१
५७	छका नाम मुद्रा सत १ मध्ये		,	„	२	२
८०	घसपाणी इकांगी सत १ मध्ये		,	„	१	२
५७	घसपाणी पामघेवी सत १ मध्ये		„	„	१	१
५७	चौकडीया		„	„	१	१
९०	तेरहुसई मचेढी सत १ मध्ये		„	„	१	०
११०	चचार्ई मुसपाणी सत १ मध्ये		„	„	०	१
८७	मचेढी इगामी मुद्रा सत १ मध्ये			„	१	०।
८७	सुकारी नाम मुद्रा सत १ मध्ये			„	१	०।
४१	सीराजी नाम मुद्रा सत १ मध्ये			„	२	१
५४	मुस्तकफी मुद्रा सत १ मध्ये			„	१	१०
४७	कुतुबी नाम मुद्रा सत १ मध्ये			„	२	४
५०	नसीरी दिल्ली टंकसालहता				२	०
५५	इक्मरी नाम मुद्रा सत १ मध्ये			,	१	८॥
२७	गयासी दुगाणी नाम मुद्रा			„	१	४
२०	मउजी नाम मुद्रा तिगाणी सत १			„	५	०
४८	जलाली नाम मुद्रा वर्तमाना			„	१	१०
४८	रुकुमी नाम मुद्रा प्रवर्त्तमान			„	१	१०

॥ इति श्री दिल्ली राज्ये पचनाममुद्राः ॥

संपइ पवट्टमाणा मुद्दा अल्लावदीण रायस्स ।
दुविह दुगाणी वुच्चो पउणा दस अट्ठ टक सए ॥ १३४ ॥

छग्गाणी पुण दुविहा सड्ढा पणवीस पउण पणवीसा ।
टंक सय मज्झि रुप्पउ सड्ढा चउ दु जय नव विसुवा ॥१३५॥

इग्गाणी सय मज्झे तयउ पण नवइ टक पण वुच्चो ।
रायहरे विवहारे गणिज्ज इग्गाणिया सयल ॥ १३६ ॥

इग पण दह पन्नासं सय तोला तुल्लि हेम टकाइ ।
चउ मासा दीनारो रुप्पय टको य तोलीणो ॥ १३७ ॥

चउ मास जाव घडिय सहावदीणस्स तुच्छ मुद्दाइ ।
दम्म छगाणी टका रुप्प सुवन्नस्स तोलीणा ॥ १३८ ॥

॥ इति अश्वपति महानरेन्द्र पातिसाहि अलावदी मुद्रा [२५] ॥

२५

० रुप्य टंक १ मध्ये प्रति गण्यते ॥

१०	छगानी	सत मध्ये	तो ८	मा १	ज ४॥
१०	छगानी	सतमध्ये	तो ८	मा १	ज २॥
३०	दुगानी	सत मध्ये	तो १	मा ३	ज०
३०	दुगानी	सत मध्ये	तो २	मा ८	ज०
६०	इगानी	सत मध्ये	तो १	मा ८	ज०

० शेष सांचा सत १ टंक पूरणे सर्व मुद्र

इचो भणामि संपइ कुदुबुदी रायवदिल्लोढस्स ।
चउरंस वट्ट मुद्दा नाणाविह तुच्छ मुल्लो य ॥ १३९ ॥

बत्तीसं कणयमया रुप्पमया बीस दम्म सत्तविहा ।
चउसिह तमय साहा मुद्दा सव्वेसि तेसट्ठी ॥ १४० ॥ दारं ॥

इग पण दह तोलाइ दस हिय जा सउ दिवड्ढ सउ दु सय ।
इय वट्ट हेम टंका चउरंस पुणोवि एमेव ॥ १४१ ॥

तेरह मासा सतिह्वा सुवन्न टको य सोनिया तिविहा ।
इग मासिया दुमासिय चउगुंजा एय बत्तीसं ॥ १४२ ॥

॥ इति स्वर्णमुद्राः[२६] ॥

२६

हेम टंका मासा तौल्ये
- ० इक तोलिया १
- ० पंच तोलिया १
- ० दस तोलिया १
- ० पंचास तोलिया १
- ० सय तोलिया टंका १

हेमदीनार मासा ४
रुप्य टंका सर्वेपि इक तोलिया ।

२७

कनक मुद्रा ३२ यथा–
२९. टंका मानाविधा तोलो यथा–
१५. वृत्ताकार मासा तो० तो
१ ५ १० २० ३०
४० ५० ६० ७० ८०
९० १०० १५० २००
१५. चतुःकोण तोल्ये वृत्ताकार वत् लिखित ।
१ मासा १३८ संवृत्ताकार ।
३. अपर मासा वृत्त कपुमुद्रा–
१ मासा १ । १ मा० २ । १ गुं० ४
३२.

रुप्पिग तोली वट्टा चउदस चउरंस हेम सम तुल्ला ।
पच विहा रुप्पइया इग दु ति चउमासि अद्ध तुल्ल ॥ १४३ ॥

॥ इति रुप्यमुद्रा[२८] ॥

२८

रुप्यमुद्रा २० विवरणम् ।
१५. टंका मुद्रा मानाविध तो० ।
१ संवृत्ताकार तो० १
१४. चतुःकोणा । तोलो यथा–
१ ५ १० २ ३० ४० ५०
६० ७० ८० ९ १०० १५० २००
वर्ष ।
५. रुपीया मुद्रा नाना तोलो ।

१ मासा १	१ मासा २	१ मा० ३
१ मासा ४	१ मासा ६	संवृत्ता०

२०.

दुग्गाणी य छग्गाणी तुल्ले मुल्ले य रुप्प तमे य ।
अल्लाई सम जाणह अमे अमे वि ह्री भणिमो ॥ १४४ ॥
चउगाणी वट्ट सए सोल सवा टक नव जवा रुप्प ।
चउमासा तुल्लेण न संसय इत्थ नायव्व ॥ १४५ ॥
चउवीस वारसट्ठ य अडयालीसाण मुद्द चउरंसा ।
तुल्ले य रुप्प तवय संखा कमि अट्ठगाणीओ ॥ १४६ ॥
तिचीस टक नव जव चउ विसुवा रुप्पु सेस तंबो य ।
सय अट्ठगाणिएहिं इगेगि तुल्लो य चउमासा ॥ १४७ ॥

॥ इति द्रम मुद्रा[२१] ॥

२१

द्रम्मा मुद्रा छत ७ नामाविष तोलो मूलो ।
वृत्ताकार मुद्रा ३ तोल्ये टं १
१. दुगाणी १०० मध्ये धातु २
टं. ८ नवाती रूप्य । टं. ९२ तांम्र
१. चउगानी १०० मध्ये धातु २
टं. १६ मा० १ जव ९ रूप्य
टं ८३ मा० २ जव ७ त्रांबा
१ छगानी १०० मध्ये धातु २
टं. २४ मा० ३ जव १॥ रूप्य
टं. ७५ मा० जव १४॥ तांम्र
चतुरस्र मुद्रा ४
१ अठगानी १०० मध्ये
टं. ३३ मा० जव ९ ऽ४ रू०
टं. ६६ मा० ३ ज० ४॥. १ तां०
१ बारहगानी १०० टं० १५०
मा० १ ज० १५॥. ३। २ऽ४ रू०
मा० ४ ज० ऽ ३॥. २॥. १ तां०
१ चउवीसगानी तो टं० ३ (३००?)
मा० ३ ज० १५॥ २॥. ४॥. ३ रू०
मा० ८ ज० । २ ऽ ० । ऽ ० ॥ तां०
१ अडतालीसगामी टं० ६ (६००?) चउवीसगामीतो
द्विगुण द्रव्यं ।
ताम्र मुद्रा ४ साहा सें ।
० ऽ १ मासा १
० ऽ १। मासा १।
० ऽ २॥ मासा २॥ ० ऽ ५ मासा ५

विसुवा सवाय विसुवा अथवा पइका य तंब चउरसा ।
तुल्लेण कमि चडता मासाओ जाम पण मासा ॥ १४८ ॥

॥ इति साहे मुद्रा ॥

एव दव्वपरिक्ख दिसिमिर्चं चदतणयफेरेण ।
भणिय सुय बघवत्थे तेरह पणहत्तरे वरिसे ॥ १४९ ॥

इति श्रीचन्द्राङ्गज ठक्कुर फेरू विरचिता
द्रव्यपरीक्षा समाप्ता ।

ठक्कुरफेरूविरचिता

धातूत्पत्तिः ।

❀

अथ धातूत्पत्तिमाह–

रुप्प च मट्टियाओ नइ पव्वयरेणुयाउ कणओ य ।
धाउव्वाओ य पुणो हवन्ति धुम्मिवि महाधाऊ ॥ १ ॥
पट्ट च कीडयाओ मियनाहीओ हवेइ कत्थूरी ।
गोरोमयाउ दुव्वा कमल पकाउ जाणेह ॥ २ ॥
मउरं च गोमयाओ गोरोयण होन्ति सुरहिपित्ताओ ।
चमरं गोपुच्छाओ अहिमत्थाओ मणी जाण ॥ ३ ॥
उण्णा य छुक्कडाओ दन्त गइन्दाउ पिच्छ रोमा(मोरा?)ओ ।
चम्म पसुवग्गाओ कुयासण दारुखण्डाओ ॥ ४ ॥
सेलाउ सिलाइयं मलप्पवेसाउ हुइ जवाइ वरं ।
इय सगुणेहि पवित्ता उपत्ती जइय नीयाओ ॥ ५ ॥

इत्युत्पत्तिः ।

अथ करणीयमाह–

पित्तलि जहा–

वे मण अधा(?)वटिय कुट्टिवि रचिज्ज गुडमणेगेण ।
ज जायइ निच्चीढ तयक तयय सहा कहिय ॥ ६ ॥
सा वीस विसुव पित्तल दुभाय तंत्रेण पनर विसुवा य ।
तुल्लेण सवयाओ सवाइया ढक्क मूसीहिं ॥ ७ ॥

तम्बय जहा–

खप्परय खाणीओ आणवि कुट्टिज्ज धाहु मट्टी य ।
गोमयसहियं पिंडिय करेवि सुक्कवि य पइयव्व ॥ ८ ॥

पच्छा सुज्झइ खिविय धमिज्ज नीसरई सव्व मलक्कद्ध ।
ज हिट्ठे रहइ दल त पुण कुट्टेवि धमियव्व ॥ ९ ॥
तस्साउ व्हइ पयर त तत्तमिट्ठय वियाणेह ।
झुज्झाणए पुणेव गुट्ठ गुलिय तओ हवइ ॥ १० ॥

अथ सीसय जहा—
ना(न)गस्साणीओ पाहण कड्डिवि कुट्टेवि पीसि धोइज्जा ।
ज होइ त मलदल दुभाय तइयस लोहजुय ॥ ११ ॥
सय सय पलस्स मूसी ते चाडिवि तीस अंगए इक्के ।
आवट्टिय तुल्लेण चउत्थभागूण हुइ सीसं ॥ १२ ॥
लोह सारं च पुणो उप्पत्ती धाउपाहणाओ य ।
पित्तल-कसाईण विणट्ठए होइ भिंगारी ॥ १३ ॥

अथ रंगय जहा—
रंगस्स धाउ कुट्टिवि करिज्ज कोमंस चुण्ण सह पिंड ।
धमिय निसरई ज त पुण गालिय कथिया होन्ति ॥ १४ ॥

अथ कसय जहा—
कथिय सेरक्कारस मणेग तम्ब च पयर गुट्ट वा ।
आवट्ट घडिय सुद्ध कसं हुइ बीसयसूण ॥ १५ ॥

अथ पारय जहा—
पारस्स धाउ ठविय तस्सोवरि गोमयक्कुडि कुज्जा ।
मवग्गिधमियमाणो उड्डवि संचरइ तस्स मज्झे ॥ १६ ॥

अहवा

रसकूव भणन्तेगे तरुणत्थी तत्थ करवि सिंगारं ।
तुरियारूढ झक्किवि अपुव्वपयरेहिं नस्सेइ ॥ १७ ॥
कूवाओ तस्स कए पारं उच्छलवि धावए पच्छा ।
माहुडइ पहुमकाओ पुणोवि निवडेइ तत्थे य ॥ १८ ॥

ज रहइ नियट्ठाणे कत्थव कत्थेव खड्डुखड्डीहिं ।
तत्थाउ गहइ सा तिय उप्पत्ती पारयस्स इम ॥ १९ ॥

अथ हिंगुल्य जथा—

एगमण पारइ तहा गन्धय चुन्न च सेर दस खिविठ ।
दूराओ आसन्न मदग्गी कीरए मिस्सं ॥ २० ॥
कुट्टेवि तहिं खिविज्जइ मणसिल हरियाल सेर पा पाय ।
पूरिवि कच्च कराव दट्टिज्जइ खोरचुन्नेण ॥ २१ ॥
मढि मट्टिय सदलेण तिन्नि अहोरत्ति वह्नि जालिज्जा ।
जाव झुगध ता हुइ सेर छयालीस हिंगुल्य ॥ २२ ॥

अथ सिन्दूरं जहा—

सीसयमणेगमज्झे वसयरक्खा वहन्ह सेराइ ।
गालिवि मेलिवि कुट्टिवि छाणवि जलि घोलि धरियव्व ॥२३॥
नित्तारिऊण नीरं ज हिट्ठे तस्स वडिय क्य सुक्क ।
घणि कुट्टि हखि छाणिय ठवि भट्ठी अग्गि कायव्व ॥ २४ ॥
जइ जइ लग्गइ ताव तह तह रंग चडेइ जा ति दिण ।
सेरूण सिन्दूरं तग्गालिय हवइ पुण सीसं ॥ २५ ॥
एव च भणिय संपइ कुधाउमज्झे सुधाउ भणिमोह ।
कविय रगे कणय तोल्य सय जव चउत्तीस ॥ २६ ॥
सयतोलामज्झेण धारइ जव सीसए हवइ रुप्प ।
पच्छा पुण पुण सोहिय सहावि निकण न कइयावि ॥२७॥

अथ धातोकरणी विधि—कप्पूर अगर-चदण-मृगनाभीत्यादि ।

दाहिणवत्त संख इगमुह रुदक्ख सालिगार्म च ।
देवाहिट्ठिय तिन्नि वि अमुल्ल सपहाय भणियन्ति ॥ २८ ॥

खीरोवहिसंभूय विभूसणं सिरिनिहाण रायाण ।
दाहिणवत्त संख बहुमंगलनिलयरिद्धिकरं ॥ २९ ॥
वट्टन्ति रेहकलियं पंचमुह सुम्भ सोलसावत्तं ।
इय सखं रिद्धिकरं संखिणि हुइ दीहहाणिकरा ॥ ३० ॥
सिरिकणयमेहलजुय वरठाणे ठविय निच्च सुइ काउ ।
दुद्धि न्हविऊण चन्दणि कुसुमागरि मन्ति पूइज्जा ॥ ३१ ॥

पूजामन्त्र —

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीधरकरस्थाय
पयोनिधिजाताय लक्ष्मीसहोदराय चिंतितार्थसम्प्रदाय
श्रीदक्षिणावर्त्तसंखाय । ॐ ह्रीं श्रीं जिनपूजायै नमः ॥

इति पूजाविधिः ।

दाहिणवत्तो य संखोयं जस्स गेहम्मि चिट्ठइ ।
मंगलाणि पवट्टन्ते तस्स लच्छी सयंवरा ॥ ३३ ॥
तस्संखि खिविय चंदणि तिलय जो कुणइ पुहवि सो अजिओ ।
तस्स न पहवइ किंची अहि-साइणि विज्जु-अग्गि-अरी ॥ ३४ ॥
नरनाहगिहे संख वुड्ढिकरं रज्जि रट्ठि भण्डारे ।
इयराण य रिद्धिकरं अंतिमजाईण हाणिकरं ॥ ३५ ॥
दाहिणवत्ते संखे खीरं जो पियइ वंच्च कुलच्छी य ।
सा वञ्झा वि पसूवइ गुणलक्खणसंजुय पुत्तं ॥ ३६ ॥

दुमुहा मगलजणया तिमुहा रिवहरण पउर मज्झत्था ।
पचमुहा पुन्नयरा सेसा सुपवित्त सामन्ना ॥ ३९ ॥

इति रुद्राक्षा ।

गण्डुयनइसभूय सालिग्गाम कुमारकणयजुय ।
चक्कंकिय सावत्त वट्ट कसिण च सुपवित्त ॥ ४० ॥
लोया तईयमत्ता हरि व्व पूयति सालिगामस्स ।
सेयत्थि मुत्तिहेऊ पावहरं करिवि झायति ॥ ४१ ॥

इति शालिग्रामम् ।

मरुभूमि दक्खिणोवहि केलिवण तत्थ केलिगुदाओ ।
कहरत्खओ य जायइ कप्पूरं केलिगब्भाओ ॥ ४२ ॥
कप्पूर तिन्नि किंत्तिम इक्कडि तह भीमसेणु चीणो य ।
कद्धाउ सुकमि मुल्लो वीस दस छ विसु व विसुवसो ॥ ४३ ॥
कायासुगन्धकरण तहत्थिमज्झाय मेयग सीय ।
वाय-सलेसम-पित्त तावहरं आमकप्पूर ॥ ४४ ॥

इति कर्पूर ।

अगरं त्सासदुवार किण्हागर तिल्लिय च सेंबलय ।
वीसं दस तिय एग विसोवगा सुकमि अन्तरय ॥ ४५ ॥
अइकढिण गवलवन्न मज्झे कसिण सरुक्ख गरुय च ।
उण्ह घसिय सुयध दाहे सिमिसिमइ अगरवरं ॥ ४६ ॥

इत्यगरम् ।

मलयगिरि पव्वयमि सिरिचदणतरुवर च अहिनिलय ।
अइसीयल सुयध तग्गधे सयलत्थणगध ॥ ४७ ॥
सिरिचदणु तह चदणु नीलवई सूकडिस्स जाइ तिय ।
तह य मलिन्दी कठही बब्बरु इय चदण छविह ॥ ४८ ॥
वीसं वारह इग तिहाउ पा निसुय चदण सेरं ।
पण तिय दु पाउ टका जइथल चउ तिन्नि कमि मुल्ल ॥ ४९ ॥

खीरोवहिसंभूय विभूसण सिरिनिहाण रायाण ।
दाहिणवत्त सख बहुमंगलनिलयरिद्धिकरं ॥ २९ ॥
वट्टन्ति रेहकलिय पत्तमुह सुब्भ सोलसावत्तं ।
इय सव्व सिद्धिकरं सखिणि हुइ दीहहाणिकरा ॥ ३० ॥
सिरिकणयमेहलजुय वरठाणे ठविय निम्म मुह काउ ।
दुद्धि न्हविऊण चन्दणि कुसुमागरि मन्ति पूइज्जा ॥ ३१ ॥

पूजामन्त्र –

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीधरकरस्थाय
पयोनिधिजाताय लक्ष्मीसहोदराय चिंतितार्थसम्प्रदाय
श्रीदक्षिणावर्त्तसंखाय । ॐ ह्रीं श्रीं जिनपूजायै नमः ॥

इति पूजाविधि ।

दाहिणवत्तो य संखोय जस्स गेहम्मि चिट्ठइ ।
मगलाणि पवट्टन्ते तस्स लच्छी सयवरा ॥ ३३ ॥
तस्संस्ति खिविय चवणि तिल्य जो कुणइ पुहवि सो अजिओ।
तस्स न पहवइ किंची अहि-साइणि विज्जु-अग्गि-अरी ॥ ३४ ॥
नरनाहगिहे सख युद्धिकरं रच्चि रट्ठि मण्डारे ।
इयराण य रिद्धिकरं अंतिमजाईण हाणिकर ॥ ३५ ॥
दाहिणवत्ते सखे भीरं जो पियइ कय कुलच्छी य ।
सा वझा वि पसूवइ गुणलक्खणसजुयं पुत्त ॥ ३६ ॥

इति दक्षिणावर्त्तसङ्ख ।

दीवतरि सिवभूमी सिवदन्तस्स तत्थ हुन्ति रुद्दक्खा ।
एगाइ जा [च]उदस वयणा सव्वे वि सुपविता ॥ ३७ ॥
पर उत्तमेगवयणा सिरिनिलया विग्घनासणा सुहया ।
मणपजुय कण्ठ सवणे भुय सीसे संठिया सहला ॥ ३८ ॥

दुमुहा मंगलजणया तिमुहा रिवहरण चउर मज्झत्था ।
पचमुहा पुन्नयरा सेसा सुपवित्त सामन्ना ॥ ३९ ॥

इति रुद्राक्षा ।

गण्डइनइसभूय सालिग्गाम कुमारकणयजुय ।
चक्कंकिय सावत्त वट्ट कसिण च सुपवित्त ॥ ४० ॥
लोया तईयभत्ता हरि व्व पूयति सालिगामस्स ।
सेयत्थि मुत्तिहेऊ पावहरं करिवि झायति ॥ ४१ ॥

इति शालिग्रामम् ।

मइभूमि दक्खिणोवहि केलिवण तत्थ केलिगुदाओ ।
कहरब्भओ य जायइ कप्पूरं केलिगब्भाओ ॥ ४२ ॥
कप्पूर तिन्नि किचिम इक्कडि तह भीमसेणु चीणो य ।
कम्बाउ सुकमि मुल्लो वीस दस छ विसु व विसुवंसो ॥ ४३ ॥
कायासुगन्धकरण तहत्थिमज्झाय भेयग सीय ।
वाय-सलेसम पित्त तावहरं आमकप्पूर ॥ ४४ ॥

इति कर्पूर ।

अगरं खासदुवार किष्हागर तिल्लिय च सेवलय ।
वीसं दस तिय एग विसोवगा सुकमि अन्तरय ॥ ४५ ॥
अइकढिण गवलसम मज्झे कसिण सगन्ध गरुय च ।
उण्ह घसिय सुयध दाहे सिमिसिमइ अगरवरं ॥ ४६ ॥

इत्यगरम् ।

मलयगिरि पव्वयमि सिरिचदणतरुवर च अहिनिलय ।
अइसीयल सुयध तग्गधे सयलभणगध ॥ ४७ ॥
सिरिचदणु तह चदणु नीलवई सूकडिस्स जाइ तिय ।
तह य मलिन्दी कउही बब्बरु इय चदण छविह ॥ ४८ ॥
वीस बारट्ठ इग तिहाउ पा विसुव चदण सेरं ।
पण तिय दु पाउ टका अइथल चउ तिन्नि कमि मुल्ल ॥ ४९ ॥

सिरिचन्दणरस चिण्हू वन्ने पीय च घसिय रत्ताम ।
साए कड्डुय सीय सगठि संताव नासयरं ॥ ५० ॥
इति चन्दनम् ।
नयवाल्हकासमीरा कामरुया मिय चरन्ति सुकमेण ।
मासी मुत्थगठि उन कत्थूरिय अरुण पीयघणा ॥ ५१ ॥
नयवाल्हकासमीरे मियनाही हवइ वीस विसुवा य ।
पचि उरमाइ पव्वय समूय दहट्ट जाणेह ॥ ५२ ॥
मियनाहि वीणओ हुइ पण तोला जाम चम्म सह तुछो ।
तस्स कणु वार विसुवा चम्मो त्रिसुवह उद्देसो ॥ ५३ ॥
मियनाहि उण्हमहुरं कडुय तिक्ख कसायसुभाव ।
दुग्गन्धि छदि तावं तियदोसहरं च सुसणेह ॥ ५४ ॥
इति मृगनामीकत्थूरिका ।
कसमीरि जवद्वि केसरि देसे हुइ कुंकुम सुगन्धवरं ।
वीस वारह विसुवा पण आवण हुप्पयस्स भव ॥ ५५ ॥
इति कुंकुमम् ।
मुर मास कुट्ठ वाल्य नह चन्दण अगर मुत्थ छल्लीरं ।
सिल्हारसखंडजुय सम मिस्स दहग वर धूवं ॥ ५६ ॥
इति धूप ।
कप्पूरसुरहिवासिय चन्दणसंभूय परम सिय वासा ।
मासीवाल्यसंभव कत्थूरिय वासिया सामा ॥ ५७ ॥
इति वासः ।

इति ठक्कुरफेरूविरचिते धातोत्पत्तिकरणीविधि समाप्त ।

श्रीविक्रमादित्ये संवत् १४०१ वर्षे फागुण सु० ८ चन्द्रवासरे
मृगसिरनक्षत्रे लिखितम् । सा० मावदेवात्मज पुरिसड ।
आत्मवाचनपठनार्थे शुभमस्तु ।

ठक्कुर फेरू विरचित

ज्योतिषसार

॥ ॐ स्वस्ति ॥

॥ आदित्यादिग्रहा नमः ॥

•

सयलसुरासुर नमिउ जोइससारं भणामि किं पि अह
संखेवि परप्पहिय निरिक्खिउ पुव्वसत्थाइ ॥ १

हरिभद्द-नारचंदे पउमप्पहसूरि-जउण-वाराहे ।
लल्ल-परासर-गग्गे कयगथाओ इम गहिय ॥ २

दिणसुद्धि बयालीसं विवहारे सट्ठि गणिय अडतीसं ।
गाह दुहियसउ लग्गे बुसय बयालीस जुय सव्वे[†] ॥ ३ ॥ दारं ॥

[प्रथमं दिनशुद्धिद्वारम्]

दिणशुद्धि जहा—

रवि[1] ससि[2] कुजे बुहे गुरे सिये सणिवारा राई केन्ये सहिय गहा ।
ससि बुह गुर सिय सोमा कूर त्ति बुहो य जेण जुओ ॥ ४

नंदा भद्दा य जया रित्ता पुन्ना य पडिवयाइ तिही ।
नक्खत्त जोय रासी चक्क अवकहड सुपसिद्ध ॥ ५

न जहा—अश्विनी १, भरणि २, कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशिरः ५, आर्द्रा ६, पुनर्व्वसु ७, पुष्य ८, अश्लेषा ९, मघा १०, पूर्वफाल्गुनी ११, उत्तरफाल्गुनी १२, हस्त १३, चित्रा १४, स्वाति १५, विशाखा १६, अनुराधा १७, ज्येष्ठा १८, मूल १९, पूर्वाषाढा २०, उत्तराषाढा २१, अभीचि २२, श्रवण २३, धनिष्ठा २४, शतभिषा २५, पूर्वभाद्रपद २६, उत्तरभाद्रपद २७, रेवति २८ ॥ इति नक्षत्रनामानि ॥

---

† ४२ दिणसुद्धि, ६० व्यवहार, ३८ गणित, १०२ लग्न=२४२ गाहा ।
—टिप्पणी

विष्कंभ १, प्रीति २, आयुष्मान् ३, सौभाग्य ४, सोभन ५, अतिगंड ६, सुकर्मा ७, धृति ८, शूल ९, गंड १०, वृद्धि ११, ध्रुव १२, व्याघात १३, हर्षण १४, वज्र १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १७, वरियान् १८, परिघ १९, शिव २०, सिद्धि २१, साध्य २२, शुभ २३, शुक्ल २४, ब्रह्मा २५, ऐंद्र २६, वैधृति २७ ॥ इति योगनामानि ॥

मेषु १, वृषु २, मिथुनु ३, कर्क ४, सिंघु ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिकु ८, धनु ९, मकरु १०, कुम्भु ११, मीनु १२॥ इति राशिनामानि॥

चु चे चो ला अश्विनी। लि लु ले लो भरणि। अ इ उ ए कृत्तिका। ओ व वि वु रोहिणी। वे वो क कि मृगशिरः। कु घ ङ छ आर्द्रा। के को ह हि पुनर्वसु। हु हे हो ड पुष्य। डि डु डे डो असलेषा। म मि मु मे मघा। मो ट टि टु पूर्वफाल्गुनी। टे टो प पि उत्तरफाल्गुनी। पु ष ण ठ हस्तः। पे पो र रि चित्रा। रु रे रो त स्वाति। ति तु ते तो विशाखा। न नि नु ने अनुराधा। नो य यि यु ज्येष्ठा। ये यो भ भि मूल। भू ध फ ढ पूर्वाषाढा। भे भो ज जि उत्तराषाढा। जु जे जो खा अभिजित्। खि खु खे खो श्रवण। ग गि गु गे धनिष्ठा। गो स सि सु शतभिषक्। से सो द दि पूर्वभद्रपदा। दु थ झ ञ उत्तरभद्रपदा। दे दो च चि रेवती। इति नक्षत्रावकहडचक्रम् ॥

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादे मेषः १। कृत्तिकाणां त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरार्द्ध वृष २। मृगशिरार्द्ध आर्द्रा पुनर्व्वसुपादत्रय मिथुनः ३। पुनर्वसुपादमेक पुष्य असेषा कर्कटः ४। मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनीपादे सिंहः ५। उत्तरफाल्गुनीनां त्रयः पादा हस्त चित्रार्द्ध कन्या ६। चित्रार्द्ध स्वाति विशाखापादत्रय तुला ७। विशाखापादमेक अनुराधा ज्येष्ठा वृश्चिकः ८। मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ पादे धनः ९। उत्तराषाढाणां त्रयः पादा श्रवण धनिष्ठार्द्ध मकरः १०। धनिष्ठार्द्ध शतभिष पूर्वभद्रपदपादत्रय कुंभः ११। पूर्वभद्रपादमेकं उत्तरभद्रपद रेवती मीनः १२। इति नक्षत्रे राशयः ॥

रवि पडिवऽट्ठमि नवमी कर मूल पुणव्वसू धणिट्ठा य ।
अस्सिणि पुस्सो य तहा ति-उत्तरा रेवई सिद्धा ॥ ६
सोमे नवमी बीया मियसिरि अणुराह पुस्सु रोहिणिया ।
सवण इय पच रिक्खा भयसरे जया तिहि सुहया ॥ ७

तिय छट्ठऽट्ठमि तेरसि मूलऽस्सणि रेवई य असलेसा ।
मियसिर उत्तरभद्दव इय सिद्धा भूमवारंमि ॥ ८
बीया सत्तमि बारसि असलेसा पुस्सु सवण अणुराहा ।
किंत्तिय रोहिणि मियसिरि बुद्धदिणे इय सुहा भणिया ॥ ९
पंचमि दसमिक्कारसि पुन्निम अणुराह पुव्वफग्गु करं ।
पुस्सु पुणव्वसु रेवइ अस्सणि य विसाह गुरि सिद्धा ॥ १०
सुक्के तेरसि नवा अणुराहा सवण पुव्वफग्गु तिय ।
उत्तरसाढ पुणव्वसु रेवइ अस्सिणिय रिद्धिकरा ॥ ११
सणि नवमि चउथि अट्ठमि चउद्दसी सवण साइ रोहिणिया ।
मह सयभिस पुव्वफग्गु तिहि-वार-मि सिद्धिजोय सुहा ॥ १२

॥ इति वार-तिथि-नक्षत्र-सिद्धियोगा[1] ॥

छट्ठिक्कारसि चउदसि रवि बारसि तेरसी य सोमदिणे ।
भूमे पडिव इगारसि तेरऽट्ठमि चउदसी बुद्धे ॥ १३
गुरि दु चउ सत्त बारसि नम्वि बीय चउत्थि चउद्दसी सुक्के ।
पण सत्त पुन दह सणि तिहि वार विरुद्ध जाणेह ॥ १४

॥ इति तिथि-वार-विरुद्धयोग[2] ॥

सूराइ बारसीओ इगूणजा छट्ठि कक्कजोगोऽय ।
रवि ससि सत्त बुहिगे तियँ सवसय छ गुरि सुक्कि तिया ॥ १५

॥ कर्कट–संवर्त्तयोगौ[3] ॥

मर चित्तुत्तरसाढा धण-उत्तरफग्गु-जिट्ठ-रेवइया ।
सूराइ जम्मरिक्खा मुणेह तह वज्जमुसल पुणो ॥ १६

॥ इति जन्मनक्षत्र वज्रमुशलं[4] च ॥

---

1 द्रष्टव्यं प्रथम कोष्ठकम् । 2 द्रष्टव्यं द्वितीय कोष्ठकम् । 3 द्रष्टव्यं तृतीय कोष्ठकम् । 4 द्रष्टव्यं चतुर्थ कोष्ठकम् ।

रवि मह ति विसाहाई चंदि विसाहा ति-पुव्वसाढाई ।
कुजि अद्द धणिट्ठतिय बुह मूल ति रेवयाईया ॥ १७
गुरि किंत्तिय रोहिणि तिय भिगु रोहिणि पुस्स तिय सणे हत्थं ।
उत्तरफग्गु तिय तह जमघड्डप्पाय-मिस्सुकमो ॥ १८

॥ इति जमघटः । उत्पातादित्रययोगः ॥

विक्खंभ मूल गंडे अइगंडे वज्जु तह य वाघाए ।
वइधिइ सूराइ कमे अइदुट्ठा सूलजोगा ए ॥ १९

॥ इति शूलयोगः ॥

रवि सत्त पण ति चउ वसु चंदे रसं वेयं नयंण मुणि राम ।
पण तिय इग दु छ भूमे चउं वेर मुणि पंचं एग बुहे ॥ २०
रामं इग छ वसु चउ गुरि भिगु दुं मुंणि सेरऽग्गिं मुंणि सणि रसं ।
चउ छ दु कुलि-उवकुलिया कटय पहरऽद्ध कालकमे ॥ २१

॥ इति कुलिक-उपकुलिकादित्रयम् ॥

इग दुन्नि छ [illegible] रविणो चंदे पढमऽट्ठ पंचमी सुहया ।
चउ-सत्तऽट्ठा भूमे तिन्नि लहऽट्ठा बुहम्मि सुहा ॥ २२
दो पंच सत्त जीवे सुक्के चउ पढम छ [illegible] अट्ठ वरा ।
सणि सत्तऽट्ठम पंचम पहरद्धपमाण सुहवेला ॥ २३

॥ शुभवेला इयम् ॥

दुपहर घडिए ऊणे दुपहर घडि एगि अहिय मज्झण्हे ।
विजय नाम मुहुत्त पसाहगं सयलकज्ज सया ॥ २४

॥ विजयाह्वयमुहूर्तम् ॥

जइ पुण तुरिय कज्ज हमिज्ज लग्ग न लब्भए सुद्ध ।
ता छायाधुवलग्ग गहियव्व सयलकज्जेसु ॥ २५

---

5 इदयर्ता पञ्चम कोष्ठकम् । 6 इदयर्ता षष्ठ कोष्ठकम् । 7 इदयर्ता सप्तमं कोष्ठकम् ।

रवि वीस चंदि सोलह कुजि पनरह सत्तु बुद्धि चउदसग।
गुरि तेर सुक्कि सणिणो बारह बारंगुले सको ॥ २६

अथवा

सणि सुक्कि सोमवारे सड्ढऽट्ठ पया बुहिऽट्ठ नव भूमे।
गुरि सत्त रविइग्गारस नियतणु छाया उ सुहकज्जे ॥ २७

॥ छायालग्नम्[8] ॥

मह य धणिट्ठा उदए उड्ढो किच्चियऽणुराह धू तिरिओ।
उड्ढे धयाइ कीरइ तिरिए दिक्खा-पयट्ठाई ॥ २८

॥ मुखलग्नम्[9] ॥

मुणि घडिय सूलगंडे विक्खमे पच तिन्नि वाघाए।
वज्ज अट्ठगड नव नव परिह वल वज्जि सेस सुहा ॥ २९

॥ योगाः[10] ॥

जाणेह काल होरा पढमा वाराहिवस्स तत्तो य।
छट्ठे छट्ठे ठाणे घडिया अड्ढाइया जाव ॥ ३०

॥ कालहोरा[11] ॥

घण-मीणे विस-कुंभे अज-कक्के मिहुण-कन्न अलि-सीहे।
मियं-तुल रवि वड्ढकमे बु चउ छ अड दसमि बारसिया ॥ ३१

॥ इति सूर्यदग्धतिथयः[12] ॥

कुंभ-धणे अज-मिहुणे तुल-सीहे मयर-मीण विस-कक्के।
विच्छिय-कन्ने सुकमे पुव्वुत्ततिही य ससिदड्ढा ॥ ३२

॥ इति चन्द्रदग्धतिथयः ॥

मेसाइ कमि चउक्के पडिवाई पणमिस्स पा पाय।
एव तप्परए पुण जा पुनिम कूरदड्ढतिही ॥ ३३

॥ इति क्रूरदग्धास्तिथयः[13] ॥

---

8 दृश्यतां अष्टम कोष्ठकम्। 9 दृश्यतां नवम कोष्ठकम्। 10 दृश्यतां दशम कोष्ठकम्। 11 दृश्यतां एकादशं कोष्ठकम्। 12 दृश्यतां द्वादश कोष्ठकम्।

चउ छट्ठे नव दसमे तेरसमे वीसमे य नक्खत्ते ।
रविरिक्खाउ गणिज्जइ रविजोयं[1] सयलकज्जकरं ॥ ३४
रवि-कुज-बुह-सियवारा दुगतरे भरणिमाइ रिक्खाइ ।
पुन्निम तिय भद्दा तिहि निवजोया तरुणजोगा य ॥ ३५
नदा पचमि नवमी अस्सणिमाई दुगतरे रिक्खा ।
बुह-भूम-सोम-सुक्का कुमारयोगा मुणेयव्वा ॥ ३६
रविजोय-रायजोए कुमारजोए सुसुद्धदियहे वि ।
ज सुहकज्ज कीरइ त सव्व बहुफल हवइ ॥ ३७
॥ इति रविजोग[13] राजजोग कुमारयोगत्रयम्[14] ॥
गुर कुज सणि तिहि भद्दा मिय चित्त धणिट्ठ जमलजोगोऽय ।
तिप्पाए नक्खत्ते इय सहिय तिपुक्खरं जाण ॥ ३८
जमल-तिपुक्खरजोए सुहकज्ज पुत्तजम्म-वीवाहं ।
नट्ठ-विणट्ठ सव्व हवेइ त विउण-तिउण कमे ॥ ३९
॥ इति जमल त्रिपुष्करयोगौ[15] ॥
वे वार सणि विहप्फइ दु दु अंतरि किंचिगाइ नक्खत्ता ।
तिहि रत्ता तेरऽट्ठमि नायव्वा थविरजोगा य ॥ ४०
जुद्ध जणावणीय जलासए धुव अणसणाईण ।
ज पुण वि अकरणीय त कीरइ थविरजोगेण ॥ ४१
॥ इति स्थविरयोगः[16] ॥
सणि ससि बुह अभिसेय बुह-गुर-सुक्केसु वत्थपहिरणय ।
सूरे कज्जारंभ पुर नंगल मगले कुज्जा ॥ ४२

*

इति श्रीचंद्रांगजठक्कुरफेरुविरचिते ज्योतिषसारे
दिनशुद्धिर्नाम प्रथम द्वारं समाप्तम् ॥ गाथा ४२ ॥

---

१ सूर्यनक्षत्रात् चन्द्रनक्षत्र याम गणनीयम् । ४।६।९।१०।१३।२०। रवियोग उत्तमः । 'इक्कस्स भय पभाणस्स भजति गयघडसहस्सा । तह रविजोगसणहा गयणम्मि गहा न दीसंति ॥"

13 दसपर्वा त्रयोदश कोष्ठकम् । 14 दसपर्वा चतुर्दश कोष्ठकम् । 15 दसपर्वा पञ्चदश कोष्ठकम् । 16 दसपर्वा षोडश कोष्ठकम् । 17 दसपर्वा सप्तदश कोष्ठकम् ।

एतैर्यन्त्रेणाह—

प्रथमं कोष्ठकम्

वार	तिथिसिद्धियोग	नक्षत्रसिद्धियोग
रवि	१।८।९	ह। मू। पु। ध। अ। पु। उ ३। रे।
चंद्र	९।२ मतं० श्रेया	मृग। अनु। पुष्य। रो। अ।
मंगल	३।८।१३	मू। अश्वि। रे। अश्ले। मृ। उभ।
बुध	२।७।१२	अश्ले। पुष्य। अ। अनु। ह। रो। मृ।
गुरु	५।१०।११।१५	अनु। पू० फा। ह। पुन। पु। वि। रे। अश्वि।
शुक्र	१।६।११।१३	अनु। अ। पू०फा। उ०फा। उ०षा। पुन। रे। अश्वि। ह।
शनि	४।७।८।१४	अ। स्वा। रो। मघा। शत। पूर्वाफाल्गुनी

द्वितीयं कोष्ठकम्

वार	तिथिविषम	कर्कट	संवर्त	वज्रमुसल	यमघंट	उत्पात	मृत्युयोग	काणयोग
रवि	४।११।१४	१२	७	भरणी	मघा	विशा	अनु	ज्येष्ठा
सोम	१२।१३	११	७	चित्रा	विशा	पू० षा	उ० षा	अभि
मंगल	१।११	१०	०	उ० षा	आर्द्रा	धनि	शत	पू० भा
बुध	१३।८।१४	९	१।३	धनि०	मूल	रेवती	अश्वि	भरणी
गुरु	२।४।७।१२	८	६	उ० फा	कृत्ति	रोहि	मृग	आर्द्रा
शुक्र	६।७।७।१४	७	३	ज्येष्ठा	रोहि	पुष्य	अश्ले	मघा
शनि	५।७।१०।१५	६	०	रेवती	हस्त	उ० फा	हस्त	चित्रा

तृतीयं कोष्ठकम्

वार	कुलिक	उपकुलिक	कंटक	अर्धप्रहर	कालवेला	शुभवेलाप्रहरार्द्ध
रवि	७	५	३	४	८	१।५।६
चंद्र	६	४	२	७	३	१।८।५
मंग	५	३	१	२	६	४।७।८
बुध	४	२	७	५	१	३।५।८
गुरु	३	१	६	८	४	२।७
शुक्र	२	७	५	३	७	४।१।६।८
शनि	१	६	४	६	२	७।८।५

चतुर्थं कोष्ठकम्

छायालग्नं(ग्रम्)		
वार	शंकुरंगुल	तनुछायापाद
रवि	२०	११
चंद्र	१६	८॥
मंग	१५॥	९
बुध	१४	८
गुरु	१३	७
शुक्र	१२	८।
शनि	१२	८॥

पञ्चमं कोष्ठकम्

होरा २४ भवन्ति। प्रथमवाराधिपस्य यावत् घटी २॥ कालहोरा अहोरात्रेऽपि होरा	
वार	घटी
रवि	२॥
शुक्र	२।
बुध	२।
चंद्र	२॥
शनि	२॥
गुरु	२॥
मंग	२।

षष्ठं कोष्ठकम्

सूर्यदग्धास्तिथयः	
राशयः	तिथिः
धन। मीन	२
वृष। कुंभ	४
मेष। कर्क	६
मिथुन। कन्या	८
वृश्चिक। सिंह	१०
मकर। तुला	१२

सप्तमं कोष्ठकम्

चंद्रदग्धास्तिथयः	
राशयः	तिथिः
कुंभ। धन	२
मेष। मिथुन	४
तुला। सिंह	६
मकर। मीन	८
वृष। कर्क	१०
वृश्चिक। कन्या	०२

अष्टमं कोष्ठकम्

एते क्रूरदग्ध(ग्धा)स्तिथयः मेषसंक्रान्त्यादिः											
मे	वृष	मि	क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी
१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४
५	५	५	५	१०	१०	१०	१०	१५	१५	१५	१५
०।	०।	०।	०।	०।	०।	०।	०।	०।	०।	०।	०।

नवमं कोष्ठकम्

राजयोगः, तरुणयोगः-स्त्री		
तिथि	नक्षत्र	वार
१५	भर। मृग। पुष्य	रवि
३	पू० फा। चित्रा। अनु	बुध
२	पू० षा। ध।	मंग
७	उत्तर भा	शुक्र
१२		

दशमं कोष्ठकम्

कुमारयोगः		
तिथि	नक्षत्र	वार
१	अश्वि। रो	बु
६	पुन। म	मं
११	ह। विशा	सो
५	मूल। श	शु
१०	पू० भा	

एकादशं कोष्ठकम्

यमलयोगः		
तिथि	नक्षत्र	वार
२	मृ	गुरु
७	चि	मंग
१२	ध	शनि

द्वादशं कोष्ठकम्

त्रिपुष्करयोगः		
तिथि	नक्षत्र	वार
२	कृत्ति। पुन	गुरु
७	उ० फा। वि	मंग
१२	उ० षा। पू० भा	शनि

त्रयोदशं कोष्ठकम्

स्थविरयोगः		
तिथि	नक्षत्र	वार
४	कृत्ति। आर्द्रा	शनै-
९	आश्लेषा	श्च
१४	उत्त० फाल्गुनी	र
१३	स्वाती। ज्येष्ठा	बृ
८	उत्तराषाढा	ह
०		स्प-
०		ति

चतुर्दशं कोष्ठकम्

सूर्यादिग्रह राशिस्थिति	रवि मास	चंद्र दिन	मंग मास	बुध मास	गुरु मास	शुक्र मास	शनि मास	राहु मास
	१	२।	१॥	१	१३	१	३०	१८
उदयदिन सं०	०	०	६६०	३६	३७२	२५१	३४२	०
अस्तदिन सं०	०	०	१२०	१६	३२	९	४२	पश्चि०
			०	३२	०	७७	०	पूर्व०
वक्रदिन	०	०	९५	२१	११२	५२	१३४	०

पञ्चदशं कोष्ठकम्

३।६।८।११	उत्तम
५।७।१०।१२	मध्यमा
९।४।१।२	अधमाः
महम्पराह	फलं इति

षोडशं कोष्ठकम्

रवि ३।६।१०।११	चंद्र १।३।६।७।१०। ११ सित० २।५।९	मंगल ३।६।११
राहु ३।६।१०।११	गोचरशुद्धिका शुभा मता	बुध २।४।६।८।१०।११
शनि ३।६।११	शुक्र १।२।३।४।५। ८।९।११।१२	गुरुः २।५।७।९।११ विवाहे मध्य

सप्तदशं कोष्ठकम्

शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ
११	५	३	१२	३	१२	७	२	२	५	२	१२	१ २	८ ७
३	९	११	०५	११	०५	१ ६	५ १२	४ ३	३ ९	११ ९	०८ १०	३ ४	१ १०
१०	४	०६	०९	०६	०९	११	८	८	१	५	०४	५ ८	९ ५
९	१२					१० ३	४ ९	१० ११	८ १२	७	०३	९ ११ १२	११ ६ ३
रवि वेधः शनि विना		शनियामवेधः रविविना		भूमस्य वामवेधः		चंद्रवेधः बुध विना		बुध वेध चंद्र विना		बृहस्पतिः वामवेधः		शुक्रस्य वेधः	

[द्वितीय व्यवहारद्वारम्]

•

सणि तीस गुरू तेरह अट्ठारस राहु दियहु मासु कुजो ।
बुह-सिय-रवेगु मासो सिवा दु दिण चदु रासिठिई ॥ १
खदु सैयं सट्ठ छतीसौ तिन्नि यैहैत्तर दु-एग-श्वंनौसौ ।
तिन्नि वैयोल गारय(ह) आइ कमे उदयदिणसंखा ॥ २
सुक्के-रवि सोले दसणौ नवे बयालीसैं पच्छिमत्थ दिणा ।
भूमाई तह पुव्वे बुह सिय बत्तीसैं सगेसैयरी ॥ ३
पणसैट्ठि एगैवीस बारेसअहिय सय च बावैन्ना ।
चैउतीस सयं दियहा वक्कगया मगलाइ कमे ॥ ४

॥ इति ग्रहाणां राशि-स्थिति-उदया ऽस्त-वक्रदिनसङ्ख्या(ख्या) ॥

रवि तिय छट्ठो दसमो चंदो तिय सत्त छ इग दसमो य ।
सियपक्खि दु पण नवमो गुरु पचम दु नव सत्तमओ ॥ ५
सुक्कु दु पठ खब दहट्ठो कुजु सणि ति छ मिगु छ सत्त दसरहिओ ।
राहू तिय दस छट्ठो गोयरि सवि गारहा सुहया ॥ ६
रवि मगलु पविसंता चदु सणी निस्सरंत गुरु अंते ।
मज्झगया बुह सुक्का सुह-असुह फल पयच्छति ॥ ७
बुहु विज्जा-गमणि सिमो सणि दिक्खा गुरु विवाहि जुद्धि कुजो ।
निवदसणमि सूरो सव्वसुकज्जे बली चदो ॥ ८
नव सत्त पच बीओ दिवायरोऽ सुरगुरू य सि छ दहमो ।
एए जहुत्तपूइय हवति सुपसन्न बीवाहे ॥ ९

॥ इति जन्मराशितो ग्रहाणां गोचरः ॥

गहणे रासीओ जानिय रासी ति चउ अट्ठ गार सुहा ।
पण नव दह ऽत मज्झिम, छ सत्त इग बुत्ति अइअहमा ॥ १०

॥ इति ग्रहणराशिफलम् ॥

चवुबल सियपक्खे कसिणे ताराबलं सुरिक्खाओ ।
चेउ छ नेधुचिम दु इगट्ठ मज्झिमा ति पणे सत्तऽहमा ॥ ११

॥ इति ताराबलं जन्मनक्षत्रात् ॥

जो गहु गोयरि अबलो तस्समसुहमवि जइ गहो कोइ ।
हुइ वामवेहि सु गहो असुहो वि सुहस्स फलु देइ ॥ १२

रवि सणि विणु सणि रवि विणु चंद विणा बुद्ध बुह विणा चंदो ।
असुहक समसुहके सेसस्स गहाण वेहसुहा ॥ १३

गारह तिय दह छ सुहो पण नव चउरंतिमो रवी असुहो ।
सणि कुज ति गार छ सुहा असुहंतिम पंचमा नवमा ॥ १४

सत्तेग छ इक्कारस दह तिय चंदो सुहकरो भणिओ ।
दु पणतिमऽट्ठ चउ नव असुवरो वामवेहमि ॥ १५

दु चउ छ अड दह गारस ठाणे बुद्धो महाबली होइ ।
पण ति नवेगऽट्ठते असुहो विय होइ नायव्वो ॥ १६

बीओ इक्कारसमो नव पंचम सत्तमो य विद्धिकरो ।
बारऽट्ठ दह चउत्थो तइओ य असुवरो जीओ ॥ १७

सुक्को इगाइ जा पण अट्ठ नविक्कार अंतिमो सुहओ ।
अड सत्तिग दह नव पण इक्कारस छ तिय विरू सुहो ॥ १८

॥ इति सूर्यादिग्रहाणां जन्मराशितो वामवेधः, फलाफलम् ॥

पुव्वऽग्गी जमे नेरई पच्छिमे वायव्व उत्तरीसाण ।
इय अट्ठदिसा सुकम पायालाऽऽयाससहिय दसं ॥ १९

॥ इति दिसाक्रमम् ॥

सिरि मुहि कंधे य भुयो करि हियए नाहि गुज्झे जाणु पये ।
ति ति दु दु दु पण इगेग दु छ रवि रिक्खा उ गण सुकमे ॥ २०

एयस्स फल कमसो सिरिवइ मियहार सुर्हुड परेएसं ।
चोरी सरं लँहुतुट्ठो तिथिरत्त विदेस अप्पांऊ ॥ २१

॥ इति रविनक्षत्राद् रविचक्रम् ॥

मुहि दाहिणेकर पाए वामकेरे हियें सिरे नयणे गुज्झे ।
इगे चउँ छ चउँ पणे ति दु दु सणि नक्खचाउ सुकमेण ॥ २२
रोय लाहं विदेसं घघणं लाहं च पूये सुहं मिच्चू ।
भणिया एइ गुणागुण गणिज्ज ता जाव नियरिक्खं ॥ २३

॥ इति शनिचक्रम् ॥

चउ सिरि चउं दाहिणकरि कठिगे पण हियें छ पाये वामकरें ।
चउ, ति नयणि गुररिक्खा पय वामकरं वज्जि सेस सुहा ॥ २४

॥ इति गुरुचक्र ॥

तम रिक्खु मुहि ति फुल्लिये चउ फलियें ति अहले ति झडिये गुडिक्क
तिय रायँस तिय तामँस चउ सुहँ तिय असुँह तमचक्क ॥ २५
फुल्लिय फलिए लाह अपा(खा)णि लच्छी सुह च सुहि रिक्खे ।
सुह अहल झडिय रायस तामस असुहे य असुहतम ॥ २६

॥ राहुनक्षत्राद् गणनीयम् ॥

राहतनुचक्क—पुव्वो वायव्वो विय दाहिणे ईसाणे पच्छिमेऽग्गी य ।
उत्तँर-नेरइ सुकमे चउघडिय राहु दिणमाण ॥ २७

॥ इति राहु दिनचक्रम् ॥

पुव्वुत्तरऽग्गिनेरइ दाहिण पच्छिम्म वायवीसाणे ।
सियपडिवयाइ जोइणि कमि संमुह दाहिणे वज्जा ॥ २८

॥ इति योगिनीचक्रम् ॥

कसिणे सत्तमि चउदसि दिण भद्दा दसमि तीय रयणीए ।
सिय पुत्रिमट्ठमियहे चउत्थि इक्कारसी य निसे ॥ २९

पण घडिय घणहुरा ऽऽहम भयकरी वह दुवालसंतकरी ।
विट्ठी तियघडियतिम घण-कणयसुहकरी जाण ॥ १०
मणुँ वहुँ मुँणि तिहि[११] वेयों दहँ रुदँ ति[१] पुव्वयाइ अह दिसे ।
पढमपहराइ भद्दा पिट्ठि सुहा संमुहा असुहा ॥ ११

॥ इति भद्राचक्रम् ॥

गिहभूमि सत्तभाय पण दह तिहि तीस तिहि वहिकु कमे ।
इय दिण संख च[र]क्किसि सिर पुछ समक्कि वच्छठिई ॥ १२

रविचक्र कोष्ठकम्

मस्तके	३	श्रीपति
मुखे	३	मिष्टभोजन
स्कंधे	२	स्कंधपति
भुजौ	२	परदेशी
हस्तयोः	२	तस्कर
हृदये	५	ईश्वर
नाभिः	१	अल्पायुष
गुह्ये	१	स्त्रीरत
जानुन्यां	२	विदेश
पादयोः	६	अल्पायु
रविनक्षत्रात् रविचक्रम् ।		

शनिचक्र कोष्ठकम्

मुखे	१	रोग
द० करे	४	लाभ
पादयोः	६	विदेश
वामहस्ते	४	बंधन
हृदये	५	लाभ
शीर्षे	३	पूजा
नेत्रयोः	२	शोभा
गुह्ये	२	मृत्यु
शनिनक्षत्रात् गणनीयम् । जाव जन्मरिक्षम् । शनिचक्रम् ।		

गुरुचक्र कोष्ठकम्

मस्तके	४	राज्य
दा० हस्ते	४	लक्ष्मी
कंठे	१	विभूति
हृदये	५	राज्यश्री
पादयोः	६	पीडा
वा० हस्ते	४	मृत्यु
नत्रयोः	३	सुखप्राप्ति
बृहस्पतिनक्षत्रात् गणनीयम् । जाव जन्मभक्षम् ।		

राहुचक्र कोष्ठकम्

अशुभ	१	मुक्त नक्षत्र
शुभ	३	पुष्पित नक्षत्र
शुभ	४	फलित नक्षत्र
अशुभ	३	अफलित नक्षत्र
अशुभ	३	खंडित नक्षत्र
शुभ	१	शुद्ध नक्षत्र
अशुभ	३	राजस नक्षत्र
अशुभ	३	तामस नक्षत्र
शुभ	४	शुभ नक्षत्र
अशुभ	३	अशुभ रिक्ष
राहुनक्षत्रात् । रेखाशुभाशुभा ।		

राहुघडीचक्र कोष्ठकम्

ईशा १६	पूर्व ४	अग्नि २४
उत्त २८	राहुघडी चक्रम्	दक्षिण १२
वायु ८	पश्चिम २०	नैऋत्य ३२

तिथियोगिनीचक्र कोष्ठकम् ।

ईशा ८	पूर्व १।९	आग्नेय ३।११
उत्त २।१०	तिथियो-गिनी चक्रं	दक्षिण ५।१३
वायु ७।१५	पश्चिम ६।१४	नैऋत्य ४।१२

भद्राचक्र कोष्ठकम् ।

पूर्वे कृष्णे दिवा १४	आग्ने शुक्ले दिवा ८	दक्षिण कृष्णे दिवा ७	नैऋत्य शुक्ले दिवा १५	पश्चिम शुक्ले रात्रि ४	वायव्य कृष्णे रात्रि १०	उत्तर शुक्ले रात्रि ११	ईशान कृष्णे रात्रि ३
प्रहर १	प्रह २	प्रह ३	प्रह ४	प्रह ५	प्रह ६	प्रह ७	प्रह ८

॥ इति भद्राचक्रं सम्मुखं वर्ज्यो प्रहरमाने ॥

वत्सचक्र कोष्ठकम् ।

ई		कन्या		तुला		वृश्चिक		आ
सिंह	५	१०	१५	३०	१५	१०	५	धन
	१०			पूर्व			१०	
	१५						१५	
कर्क	३०	उत्तर		इति वत्सं		दक्षिण	३०	मकर
	१५						१५	
मिथुन	१०			पश्चिम			१०	कुंभ
	५	१०	१५	३०	१५	१०	५	
वा		वृष		मेष		मीन		नै

मिगु सणि तमु सधु रवे, तमु चंदे, शुह कुजे, ससी सुद्दे ।
बुह मिगु जीवे, सुक्के रवि ससी, मंदे रविंदु कुजा ॥ २४
चं मं गु मित्त सूरे, बु र चंदि, र च गु भूमि सु र बुद्दे ।
स म र गुरि स बु सिए, बु सु मंदे, मित्त सेस समा ॥ २५

॥ इति शत्रुमित्रोदासीना ॥

शत्रु-मित्र-उदासीन ग्रहकोष्टकम् ।

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शु.श.प	शून्य	बुध	चंद्र	बु.शु.	र.चं	र.चं.मं.
मित्र	चं.मं.गु.	बु र.	र.चं.गु	शु.र.	चं.मं.र.	श.बु.	बु.शु
सम	बुध	मं.गु.शु.श.	शु श प.	मं.गु.श प.	श प	मं गु प.	गु प

मेस विस मयर कन्ने कक्के मीणे तुले य मिहुणे य ।
सूराइ कमेणुच्चा नीचा उच्चा उ सत्तमगा ॥ ३६
॥ इति उच्चनीचौ ॥
सवणऽद्द पुस्सु रोहिणि ति-उत्तरा सय धणिट्ठ उड्ढमुहा ।
रायाभिसेय मंदिर छत्तालयाइ कायव्वा ॥ ३७
भरणिऽसलेस ति-पुव्वा मू म वि किची अहोमुहा रिक्खा ।
नीम्व सर कूव वावी पकीरए भूमिखणणाई ॥ ३८
चित्त अणु जिट्ठ रेवइ मिय कर पुण साइ अस्स तिरियमुहा ।
गय तुरय करह दमण जत्त सगड अरहट्ट कुज्जा ॥ ३९
॥ इति ऊर्ध्वमुख-अधोमुख पार्श्वमुखा नक्षत्रा ॥
मू स स्सा ह ति-पुव्वा मिय धण सवणऽद्द चित्त असलेसा ।
पुस्सु पुणऽस्सिणि गुर बुह ससि रवि भिगु इय सुहा विज्जा ॥ ४०
॥ विद्यारंभे श्रेष्ठाः ॥
धण पुण रोहिणि रेवइ ति-उत्तरा पुस्सु पच हत्थाई ।
अस्सिणि बुह-गुरु-सुक्का वत्थालंकारि पुरिससुहा ॥ ४१
हत्थाइ पच रेवइ धणिट्ठ अस्सिणि गुरऽच्छ भिगुवारे ।
चूडाइकणयरयण वत्थ पहिरेइ नारिवरा ॥ ४२
॥ इति पुरुषस्त्रियो वस्त्रालंकारे प्रधानाः ॥
पाणिगहणाउ गमण पढमे तइए य पचमे वरिसे ।
गुर सुक्क चंद सयले विवाहलग्गो य मेलग्गो ॥ ४३
रोहिणि मूल ति-उत्तर मह मिय कर चित्त पुस्सु धण साई ।
बुहवारे नववहुया सुगिहिपविट्ठा हवइ सुहया ॥ ४४
॥ मूलनवहूगृहप्रवेशे शुभदिननक्षत्राः ॥

किंत्तिय भरणि सलेसा पुणव्वसू चित्त सवण मूल मघा ।
अदा पुस्सो य तहा न कुणइ न्हाण पसू य तिया ॥ ४५

॥ प्रसूतास्त्रीस्नाने एते नक्षत्रा निषेधाः ॥

पचग घणिट्ठगाई जा रेवइ पचरिक्ख ताव धुय ।
दक्खिणदिसे न गम्मइ न कट्ठ तिणगहण गिहछाया ॥ ४६
हत्थ सवणाइ तिय तिय अणुहार(राह)स्सिणि अमीइ मिय मूल ।
पुस्सु पुणव्वसु रेवइ सुहया गुर चद मेसिज्जे ॥ ४७

॥ इति भैसज्जे(पथ्ये) ॥

जे इच्छति सुसहल नववहुय सवाल गुव्विणी ते वि ।
न हु गच्छति पएग दाहिण तह समुहे सुक्के ॥ ४८
दुक्काल देसभगे रायभए इक्कि नयरि वीवाहे ।
जे तिय तिवार आगय ताण सुक्को न दूसेइ ॥ ४९
पोढतिय सुक्कि दाहिण आगच्छइ समुह च वज्जेइ ।
कन्नाअ चेय तवस्सिणी दाहिण समुहो न दूसेइ ॥ ५०

॥ इति शुक्रफलम् ॥

सिंघट्ठिय जइ जीवे महसुच होइ अहव रवि मेसे ।
ता कुणहु निव्विसंक पाणिग्गहणाइ कल्लाण ॥ ५१

॥ इति मते गुरसिंघस्यफलम् ॥

जो कज्जु जेण रिक्खे भणिओ सो तस्स सुहुति कायव्वो ।
दिण निसि पनरसम सो ज हुइ त मुहुतपरिमाणो ॥ ५२
अद्द अहि मि(मि?)त्त मह घणं पुव्वुत्तरं साढ ऽमीई रोहिणियो ।
जिट्ठ विसैह मूल सैय पुव्वुंत्तर फग्गुं दिणमुहुता ॥ ५३
रयणिमुहुत्त अद्दो पुव्वाभद्दाइ अट्ठ नक्खत्ता ।
पुणव्वसु पुस्सु सवणे करे चित्ती सोई य पन्नरसा ॥ ५४

॥ इति दिन-रात्रिमुहूर्त्तनाम ॥

मूल मिय सवण हत्थे पुस्सु पुणव्वसु कुज ऽक गुरुवारे ।
घणपक्खि सुद्धदियहे सीमतयउन्नय कुज्जा ॥ ५५

॥ सीमन्तोन्नयनम् ॥

सवणाइ तिन्नि हत्थ रेवइ अणुराह साइ अस्सिणिया ।
पुस्सु पुणव्वसुऽमीई ति उत्तरा सुहदिणे चंदे ॥ ५६
नामक[र]ण ऽन्नपासण नयणजण जायकम्म वयबंध ।
सिप्पाइ चूडकरण तणुमूसणमाइ कायव्व ॥ ५७

॥ इति नामकरण अन्नप्राशन चूडाकरणं च ॥

कर सवण चित्त रेवइ रोहिणि अणुराह पुस्सु जिट्ठा य ।
अस्सिणि पुणव्वसे मि य करिज्ज सिसुकन्नवेह सुहा ॥ ५८
पुस्सु पुणव्वसु रोहिणि ति उत्तरेहिं कुसुमवत्थाई ।
जत्तेण परिहरिज्जहु जइ वछहु सुपइसोहग्ग ॥ ५९

॥ इति कुसुमवस्त्रे निषेधः ॥

रोहिणि पमुहाईण अघय काण च चिप्पडं अमलं ।
सयलंद्धसुद्धिसुन्न गयवत्थ कमेण उवएसं ॥ ६०

*

॥ इति श्री चन्द्राङ्गज ठक्कुरफेरु विरचिते ज्योतिषसारे व्यवहारद्वार द्वितीयं समाप्तम् ॥ २ ॥

[तृतीय गणितपयद्वारम् ।]

*

उज्जेणि दाहिणुत्तर जत्थ ठिण सुहमु कीरए लग्गो ।
तत्थंतरस्स जोयण पन्न उण रसेहिं ज पत्त ॥ १
पि-सैयं छ उत्तर पिंडे हीणज्जुय दाहिणुत्तरे कमसो ।
ससि वेयं भाइ लद्ध अगुल पडिअगुल ज च ॥ २

रवि[12] अगुल सकस्स य विसथ च्छायाइ त च मेस तुले।
अयण सूणदिणेहिं जहिच्छठ्ठाणस्स नायव्व ॥ ३

॥ इति विषवच्छाया ॥

एगूण सेठ्ठेसय पैणसट्ठि वैसेहि विसवच्छायहय।
सोलेह वैसु रोम फल सदेसचरखंडियपलाइ ॥ ४

॥ चरखंडिकानयनम् ॥

वसु रिक्खि नद नैवे कर ति वैसैण तिय-वैते नद गुणेतीस।
वैसु रिक्ख चरखडिय कमुक्कमे रिणधण कुज्जा ॥ ५
मेसाइ कमि उवक्कमि इच्छियठाणस्स लग्गपलसंखा।
भणिय च असो वुच्छ तक्कालिय ज फुड लग्ग ॥ ६

॥ लग्नानयनम् ॥ स्थापना लिख्यते–

		ढीली योजन ७४	आसी योजन ८१	लग्नप्रमाणं पलसंख्या।	
२७८	[illegible]	विषवच्छाय अंगुल	विषम च्छाया अंगुल	ढीली सं०	आसी सं०
२९९		अंगु १	६	मेषु २१४	२१२ मीनु
३२१		प्र १०	११	वृषु २४७	२४५ कुंभ
३२१		चरखंडिक	चरखंडिका	मिथु ३०१	३ १ मकर
२९९		३४	३६	कर्कु ३४५	३४५ धनु
२७८		५२	४	सिंघु ३५१	३५१ वृश्चि
		२२	२२	कन्या ३४२	३४४ तुल
		परमदिन घ० ३४ प० ३६	परमदिन घ० ३४ प० ५४		

घण मिहुणगए सूरे जित्तिय भोयसि फिरइ सकपहा।
तित्तिय अयणस धुव अनि पवाहिय इम जाण ॥ ७
पण ख रैहूंणे साग सट्ठिफल रैइसहिय अयणसा।
से सूरे वायव्वा लग्गे कती चराणयणे ॥ ८

॥ इत्ययनांशाः ॥

संकतीमुच्चसा संकमणं सोहि सट्ठि घडियाओ ।
सेसकल वियलज त मेसाइउ वेस फुडसूर ॥ ९

॥ स्फुटसूर्यः ॥

फुडसूरऽयणसजुय तीसाओ सेस ज च असाई ।
तेण हय उदयलग्ग त रविरासीउ नायव्व ॥ १०
हिट्ठाओ सट्ठिफल उड्ढे जुय ख रीम फलजत ।
हीण हिट्ठपलाओ सेसाओ लग्ग साहिज्जा ॥ ११
सेसं तीसच्चणं खलु असुद्धलग्गे फलसगाईणि ।
मेसाइमुसस हिय अयणसविहीण फुडु लग्ग ॥ १२

॥ इति इष्टकालजन्मादि स्फुटलग्नम् ॥

एव च फुडियलग्ग भणिय, मणामित्थ सत्तवग्गविहिं ।
गिहं होरा देक्काण नैव बारह सैत्त तीसंसा ॥—दारं ॥ १३
रवि सीहो ससि कक्को कुज अलि मेसो य बुह मिहुण कन्ना ।
गुर धण मीणो सिय विस तुलो य सणि कुभ मयर गिहा ॥ १४

॥ इति गृहस्वामी ॥

लग्गाद्ध पढम होरा विसमे सूरस्स तह य चदसमे ।—होरा ।
दिक्काणो य तिभागो सपच नव अहिवई कमसो ॥—द्रेक्काण । १५
अज सीह धणु अजाई विस मयर त्थी नवंस मयराई ।
तुल मिहुण धड तुलाई कक्को अलि मीण कक्काई ॥—नवांशकः । १६
नियअहिवयाइ सुकमे बारस असा मुणेह इक्किक्के ।
एव च सत्तमंसो गणिज्जए जम्मलग्गमि ॥ १७

॥ इति द्वादशांशाः सप्तांशौ ॥

सैर बाण वसु मुणिंदिये मगल सणि जीव सुक्कस्स ।
विसमे लग्गे सुकमे उवक्कमे स मिण तसंसा ॥ १८

॥ इति त्रिंशांशाः ॥

फुढलग्गस्ससाई फलपिंड नैवं छैं दुसैयं विभइसेएं ।
सट्ठि फल चउठाण इय खडुवग्गस्स खडुवग्ग ॥ १९

॥ इति सप्तपञ्चवर्गशुद्धिः ॥ अथ भायगुणाः—

इगवीस पुव्व सतरह अड अठरह अट्ठ जिण रवी सतरं ।
चउदह छवीस अट्ठय मेसाई सुकमि गुणयारा ॥ २०

लग्नानि	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	धन	म	कुं	मी
गुणाकार	२१	१७	१७	८	१८	८	२४	१२	१७	१४	२६	८

जो लग्गो ठाविज्जइ तीसंसो तस्स गुणइ गुणयारे ।
ज हुइ त पल उवरिं हवइ छ पण वग्गसुद्धी य ॥ २१
अह ज लग्गा सुहगह नवसगेगुण त गुणेयव्व ।
नवं फल उवरि सुद्ध विणावि खडुवग्ग भणहि इगे ॥ २२

॥ इति षड्वर्गस्योपायः ॥

इय छ पण वग्गसुद्धी सोमगहाण च सयलकज्जकरा ।
कूरग्गहाण असुहा सुहया उवयत्थसुद्धि पुणो ॥ २३
दसनवसगसामी जा पिक्खइ लग्ग उदयसुद्धि इम ।
दिक्खा पयट्ठमाई सुहावहा सव्वकज्जेसु ॥ २४

॥ इति उदयशुद्धिः ॥

जोइ नवसगु लग्गे तस्स फलत्तस्सै सामि जइ पिच्छे ।
लग्गस्स य जा मित्तं हविज ता अद्द(त्थ ?)सुद्धी य ॥ २५

अस्तशुद्धि स्त्रीणा शुभकरी ।

दसम सिए नव पणगे चउ अट्ठ गहा केंदसठाणाओ ।
पिक्खंति पायवुड्ढी लग्ग दिट्ठीणुसारि फल ॥ २६

मुत्तेगैरसठाणे संठिय पिक्खंति पुन्नदिट्ठि गहा ।
लग्गं गहाण दिट्ठी गणिज्ज वाम विणा राहु ॥ २७

अत्र पुनः केचिदेवमाहुः–

दो बारहघा य छट्ठ पाओ, दिट्ठी य अद्ध तिय गारसाओ ।
पचो नव ठाण गहाण पउण, चउकिंद दिट्ठी पर(रि)पुन्न नूण ॥ २८

अथवा–

तिय दसमगो य मंदो तिकोणगो ५।९ जीओ अट्ठ-चउ भूमो ।
सुक्क-रवी बुह चंदा पुन्नं पिक्खंति जायाओ ॥ २९

॥ इति ग्रहाणां दृष्टिः ॥

जा तिय ता न विकप्प तियहिय किंच सवाउ हीलिज्जा ।
रूडु रूवहियाउ हीणा नवहिय पंचाउ सोहि भुज ॥ ३०

॥ इति भुजम् ॥

चरखंडपिंडविहूण स छै लद्ध तीसै जुत्त परमदिण ।
कक्कयण सूणदिणे निसिद्ध दिणमाणु मिस्सु भवे ॥ ३१

॥ इति परमदिन मिश्री ॥

अयणस्तजुत्तसूरं भुजकम करिवि सेस जं रासी ।
तं चरखंडियभुत्त भुज्जेहि गुणिज्ज अंस कला ॥ ३२

हरिऊण तीसि भाय लद्धपल जुत्त भुत्त खंडिक्कं ।
त पनरहिजुय हीण अज तुल कमि विहूण दिणरयणि ॥ ३३

॥ इति दिन रात्रिमानम् ॥

परमदिणाओ हीण इच्छियय दिणमाणु सेस सपिहय ।
पंचे फल बारसंगुलै संकस्स दिणद्धछाय भुव ॥ ३४

॥ इति मध्याह्नच्छाया ॥

जा जहि काले छाया दिणद्धछाया वि हीण सकेजुया ।
दिणमाण छ घे गुणंसेण फल दिवसगयसेसं ॥ ३५

॥ गतशेषदिनम् ॥

दिवसद्ध सकेजुय गयघडियफलेण मज्झछायजुय ।
संकूणे सेसअंगुल जहिच्छकालस्स छायवर ॥ ३६

॥ इति इष्टच्छाया ॥

संकपहावग्गजुय तस्स पए कनु कन्नवग्गाओ ।
सोहेवि संकवग्गं सेसस्स पए हवइ छाया ॥ ३७

॥ कर्णच्छाया ॥

वासरमुत्त घडी पल संपइ तिहि वार रिक्ख जोयजुय ।
त तक्कालियवारं तिहिरिक्ख जोय जाणेह ॥ ३८

॥ तिथ्यादितत्कालिक योग ॥

॥ इति परमजैन श्री चन्द्राङ्गज ठक्कुरफेरू विरचिते ज्योतिषसारे गणितपद तृतीयं द्वार समाप्तम् ॥

[चतुर्थं लग्नद्वारम्]

गुरखित्तगए सूरे रविखित्ते जीउ गुर-रविखित्ति गिहे ।
सुक्के य सुरगुरे वा बाले बुड्ढे य अत्थमिए ॥ १
तिन्नि वह दियह बाले पक्ख पण दियह भिगु सुए बुड्ढे ।
पुव्वावरसुक्कमेण तिदिण गुरू बाल पण बुड्ढे ॥ २
हरिसयण अहियमासे रवि ससिगहणाउ जाव सत्त दिणा ।
संकंति पढम अग्गिम इय ति दिण खिणत्तयाईए ॥ ३
जिट्ठस्स जिट्ठमासे वइधिइ वितिपाय विट्ठि ससि नट्ठे ।
न हु लग्ग दायव्व जम्मदिणे जम्मभे मासे ॥ ४

॥ इति सर्व मासादिनिषेधः ॥

लंघो पाय वेहं जुई ओमित्त गलग्गेहु प्पगेहं ।
इक्कग्गलं दिणदोसा चय दिक्ख पइट्ठ वीवाहे ॥ ५

॥ चक्रम् ॥

पचुड्डरेहा पण तिरिय रेहा, पत्तेय पठकूणिहि विन्नि रेहा ।
वामस्स कूणग्गहि बीयरेहा, किचीयमाइ मुणि लत्तवेहा ॥ ६

॥ पंचशलाकाचक्रम् ॥

रवि कुज गुरु सणिकमसो बारह ति छ अट्ठ पुरउ लत्त ति ।
पुन्निम ससि बुह भिगु तम पच्छा बावीस सत्त पच नव ॥ ७
विग्घहरं भयजणणं मरणं कलहं च धणुनासयरं ।
कज्जविणासं गमणं मरणं सुराइलत्तफलं ॥ ८

॥ इति लत्ताः ॥

मह चित्ता असलेसा रेवइ अणुराह सवण इय पाओ ।
रविरिक्खाओ ठविज्जइ असिसणिमाईणि जोइज्जा ॥ ९

॥ इति पातम् । वज्रपातकरम् ॥

ससिहरनक्खत्ताओ जइ हुइ गहु इक्कि रेह बीयदिसे ।
ता जाणिज्जहु वेह परिहरियव्व जओ भणिय ॥ १०
रवि कुजवेहे विहवा बुहि वझा भिगु अलत्त सणि दासी ।
गुरुवेहेण तवस्सिणी विलासिणी राहुवेहेणं ॥ ११
उत्तरसाढतपए सवणाइमघडिय चारि अभीई ।
तत्थट्ठिए गहेण उप्पज्जइ रोहिणीमेय ॥ १२
परिहरिवि सिद्धपाय करिज्ज कज्ज मसक्किय नूण ।
सप्पस्स वद्ध अंगुलिछेए ता हवइ कत्थ सिरं ॥ १३

॥ इति वेधः ॥

सणि सुक्क राहु केऊ रवि कुज रासिद्धि चंदसहिय जुई ।
बुद्ध विहप्फइसहिय न हवइ कत्थेव जुइदोसं ॥ १४

॥ इति युतिः ॥

लग्गससि जो नवसगु जामित्तनवसगो य जेण गहो ।
चउवन्न जाव सुद्धं उवरे जामित्त जुइदोसं ॥ १५
ससि लग्ग सत्तमो जइ कूरगहो त च चयहु जामित्त ।
जत्थुमयदिसे कूरा चंदे अह लग्गि गलगहय ॥ १६

॥ इति यामित्र-गलग्रहौ स्तौ ॥

रविरिक्खाउ उवग्गह वज्जह पंचऽट्ठ चउ दसऽट्ठारं ।
उणवीसं वावीसं तेवीसइम च चउवीसं ॥ १७
विज्जुमुह सूलं असणी केऊक्को वज्जं कंपं निग्घायं ।
इय नाम फल कमसो अट्ठेव उवग्गहाण च ॥ १८

॥ इति उपग्रहः ॥

एगुड्ढ तिरिय तेरस रेहापंक्कमि विसमजोगिक्क ।
सम जए अडवीसं तयइ तुल्ल च सिररिक्ख ॥ १९
सिररिक्खाउ कमेण अट्ठावीस ठविज्ज नक्खत्ता ।
जइ इक्कि रेह रवि ससि इक्कग्गलु त वियाणाहि ॥ २०

॥ इति इक्कग्गल । इति लत्तयादिदोसाः ॥

सणि पवणु असु पाय बुह गुर कलह कुजऽग्गि रवि रत्त ।
सुक्केण य सतावं अहिचक्के किचियाइ ससिनाडिं ॥ २१

॥ इति अहिचक्रदोषः ॥

उदयाओ गय लग्ग सकतीमुत्तदियह जुयसेय ।
त पचहा ठवेउ सिहि[१५] रवि[१२] यद्दं ऽट्ठं मुणि[४] सहिय ॥ २२
नवसेस जत्थ पणं तत्थ फल कलहं अग्गीं रायभयं ।
चोरभयं मिच्चु कमे पइठ विवाहे य ताऽरिट्ठ ॥ २३

॥ इति सुधर्पंचकदोषः ॥

मुचि कलत्ते रवि सणि लहऽट्ठ इग ससि छ सत्त अट्ठ सुक्के ।
इग सत्तऽट्ठ कुजि अट्ठ गुरि सत्तऽड बुहि किंवि राहु न विवाह ॥ २४

उदय ऽट्ठमगे मम्म नव पचम कूर कंटय भणिय ।
दसम चउत्थे सल्ल कूरा उदय ऽत्थिर्त छिद्द ॥ २५

मम्मणदोसे मरण कटयदोसे कुलक्खयं हवइ ।
सल्लेण रायसत्तू छिद्दे पुत्त विणासेइ ॥ २६

॥ इति लग्ने मंगफराः ॥

अरिगय नीए वक्के अत्थमिए लग्गरासि निसिनाहे ।
अबले रवि गुरु चंदे अदिट्ठसामी सया वज्जे ॥ २७

॥ इति लग्नदोषाः ॥

चरलग्गेण य जत्ता दुविवयभावे विवाह सुरठवणा ।
थिरलग्गि गिहपवेसं मेसाई चर थिर दु भावं ॥ २८

तणु धणु सहयं सुमित्तं सुयं सत्तु कलत्त मित्तु धम्मं च ।
कम्मं लाह य वयं लग्गाई सुकमि इय भाव ॥ २९

ससि पीठ कुसुम्व लग्गो नक्खगो सुफलु तह य माउरसो ।
लग्गो मग्गणहारो भावाहिवई य वायारो ॥ ३०

जु जु माउ सामि मित्ते सुहग्गहे दिट्ठु जुत्तु सो सहलो ।
पावगहे हाणिकरो असेसकज्जेहि नायव्वो ॥ ३१

भावाहिवई भाव लग्गवई लग्ग लग्गवइभाव ।
भावाहिवो य लग्गं पिक्खइ ससिदिट्ठ सयलसुह ॥ ३२

लग्गाहिवई जहिं जहिं भावे संचरइ त तहा कुणइ ।
मित्तगिहुच्चविसेसे इय तत्त सव्वकज्जेसु ॥ ३३

भावतगओ य गहो परभावफल च देइ पिच्छासु ।
जावंतिम इक्क घडी जम्म विवाहाइ तत्थ फल ॥ ३४

पण ससि अहुट्ठ सूरो तिन्नि गुरे दु दु बुहे य सुक्के य ।
सड्ढ सणि भूमि राहे इय लग्गे वीस विसुवा य ॥ ३५

॥ इति लग्नभावः ॥

अथ लग्न यथा—

इग दु ति चउ पण नव दस सुहया सोमा ति गारहा सव्वे ।
कूर सडा ससि बीओ मुणि मज्झिम अट्ठम अडुत्ता ॥ ३६
असुहट्ठाणठिओ वि हु लग्गो कूरो न दोसकरणक्खमो ।
किंदु-तिकोणठिएहिं जइ दिट्ठो सुरगुरु मिगूहिं ॥ ३७
इय जम्म जत्त दिक्खा रायमिसेयाइ सूरिपयठवणे ।
बिंबपइट्ठ-विवाहे सुहलग्गो सयलकज्जेहिं ॥ ३८

॥ इति जन्म-यात्रा-राज्याभिषेक सूरिपदादिसर्वसामान्यलग्नम् ॥

अथ विशेषकार्यमाह—

रिक्ख तिहि लग्ग मुकमे नव पच चउत्थय ति पुरिम घुरे ।
दुन्नेग अद्ध घडिया वज्जह गडुत अइदुट्ठा ॥ ३९

॥ इति गंडांतः ॥

मूले तणुं छट्ठि साह्रो पत्ते कुसुम्व फले सिहं च इय रुक्ख ।
चउ सत्तं अट्ठ दहे नवे पणे रसे भंये घडिय मुकमि फल ॥ ४०
मूले मूल तणि धेणु सहोव(य)रो छट्ठि साह मार्यक्ख ।
फत्तेऽपचक्खेय कमि मती रज्ज च चिरजीवी ॥ ४१

॥ इति मूलनक्षत्रजातफलम् ॥

१ ५ ८ १२ २ ३ १।४।७।१ ।९।५
छ पणऽट्ठऽत विणा सुहु दु ति किंदि तिकोण सुक्क गुरु चदा ।
इय जम्मलग्गि सुहया ति गारहा सव्वि कूर सडा ॥ ४२
सुगिहुच-मित्तगिहजुय सणि कुज सूरो य मुत्ति दसमे सुहा ।
अरिगय अणुच्च रिउजुय विलेया अत्यहाणिकरा ॥ ४३

॥ इति जन्मे ॥

सवण धणिट्ठ विसाहा दक्खिण अवरेण मूल पुरसो य ।
कर पुव्वफग्गु उत्तर पुव्वे पुव्वुत्तरासाढा ॥ ४४
सोम सणी पुव्वदिसे गुरु दाहिण पच्छिमेण सुक्क रवी ।
उत्तर बुह भूमो विय गमणे वज्जेह दिगसूल ॥ ४५

॥ इति नक्षत्रचार दिक्शूलम् ॥

किग्वीउ सत्त सत्त य पुव्वाइ चउदिसेहिं परिघठिई ।
अग्गी वायव कोणे रेहा उल्लंघि न चलिज्जा ॥ ४६

॥ इति परिघचक्रम् ॥

पुव्वाइदसदिसेहिं कमेण सियपडिवयाइ हुइ पासो ।
तस्सम्मुहो य कालो गमणे दुन्नि वि समुहवज्जा ॥ ४७
दिणवारं पुव्वाई कमेण संचारि जत्थ ठाणि सणी ।
काल तत्थ वियाणसु तस्संमुहु पासु भणहिं इगे ॥ ४८

॥ काल पाशौ सन्मुखौ वर्ज्यौ ॥

जिट्ठा य पुव्वभद्दव रोहिणिया तह य उत्तराफग्गू ।
पुव्वाइ सुकमि कीला संमुह गमणे विवज्जिज्जा ॥ ४९

॥ इति कीला ॥

धण सीह मेस पुव्वे, विस कन्ना मयर दाहिणे चंदो ।
तुल कुंभ मिहुण अवरे, उत्तर अलि मीण कक्क य ॥ ५०
वामो चंदो असुहो निच्च, दाहिणोऽहाणिकारगो ।
पिट्ठि च असुहो चंदो, संमुहो अइसुंदरो ॥ ५१

॥ इति चंद्रचार ॥

निसि अंतिमदुघडीओ पहरु पहरु पुव्वयाइ हुइ सूरो ।
गमणे दाहिण पिट्ठी पवेसगे वामु पिट्ठि सुहो ॥ ५२

॥ इति रविचार ॥

जा नाडी वहइ धुव त चरणऽग्गे करेवि चलियव्व ।
सिज्झति सयलकज्ज इय लग्ग सयललग्गाण ॥ ५३

॥ इति हसचार ॥

पडिवऽट्ठ पुन्निमाऽवम रत्ता तिहि कूर वार भरणिऽद्दा ।
मह किंचि विसाहुत्तर ति सलेसा जच इय असुहा ॥ ५४
सय साइ चित्त रोहिणि घण सवण ति पुव्व मज्झिमा जचा ।
पुण पुस्स मूल रेवइ मिय कर जिट्ठऽस्सिणीऽणुराह सुहा ॥ ५५

॥ इति अधम मध्यमोत्तमप्रस्थानाः ॥

रवि कुज ति छह दह लाहे बुह-गुर-सुक्का खढत रहिय सुहा ।
इगे छे अडऽते विणा ससि जचा लग्गे ति छायु सणी ॥ ५६

॥ याम्रालग्नम् ॥

इय मंडलीय नरवइ पत्थाणे पच सत्त दह दियहा ।
पचसयघणुहमज्झे वह ठवरि ठविज्ज सत्य वत्थाई ॥ ५७
रेवइ मूल ति उत्तर सय साइऽणुराह पुव्वमहक्खा ।
पुस्सु पुणव्वसु रोहिणि सवणऽस्सिणि हत्थु दिक्खसुहा ॥ ५८

॥ तिथिवारनक्षत्रप्रधानाः ॥

दु पण छ रवि दु ति छ ससी कुज ति छ दह बुहु ति दु छ पण दहमो।
किंद तिकोणे य गुरू सुक्को तिय छ नव बारसमो ॥ ५९
मंदो दु पण छ अट्ठमो सुक्क विणा सव्वि गारहा सुहया ।
चयाउ कूर सत्तम अह असुहा दिक्खसमयमि ॥ ६०
रवि ति ससि सच दहमो बुहेग चउ सच नव गुरू ति छ दो ।
सुक्को दु पच सणि तिय मज्झिम सेसा असुह सेसा ॥ ६१

॥ इति दीक्षालग्नकुंडलिका उत्तममध्यमाधमा ॥

सियपक्खि पडिव बीया पचमि दह तेर पुन्निमा सुहया ।
कसिणे पडिव दु पचमि निंदपइट्ठाइ सुहवारा ॥ ६२

सवण धणिट्ठ विसाहा दक्खिण अवरेण मूल पुरसो य ।
कर पुव्वफग्गु उत्तर पुव्वे पुव्वुत्तरासाढा ॥ ४४
सोम सणी पुव्वदिसे गुरु दाहिण पच्छिमेण सुक्क रवी ।
उत्तर बुह भूमो विय गमणे वज्जेह दिगसूल ॥ ४५

॥ इति नक्षत्रचार दिक्शूलम् ॥

किचीउ सत्त सत्त य पुव्वाइ चउद्दिसेहिं परिघठिई ।
अग्गी वायव कोणे रेहा उल्लंघि न चलिज्जा ॥ ४६

॥ इति परिघचक्रम् ॥

पुव्वाइदसदिसेहिं कमेण सियपडिवयाइ हुइ पासो ।
तस्सम्मुहो य कालो गमणे दुन्नि वि समुहवज्जा ॥ ४७
दिणवारं पुव्वाई कमेण संघारि जत्थ ठाणि सणी ।
काल तत्थ वियाणह तस्समुहु पासु भणहि इगे ॥ ४८

॥ काल पाशौ सन्मुखौ वर्ज्यौ ॥

जिट्ठा य पुव्वभद्दव रोहिणिया तह य उत्तराफग्गू ।
पुव्वाइ सुकमि कीला समुह गमणे विवज्जिज्जा ॥ ४९

॥ इति कीलाः ॥

धण सीह मेस पुव्वे, विस कन्ना मयर दाहिणे चंदो ।
तुल कुंभ मिहुण अवरे, उत्तर अलि मीण कक्के य ॥ ५०
वामो चंदो असुहो निच्च, दाहिणोऽत्थाणिकारगो ।
पिट्ठि च असुहो चंदो, समुहो अइसुंदरो ॥ ५१

॥ इति चन्द्रचार ॥

निसि अंतिमदुघडीओ पहरु पहरु पुव्वयाइ हुइ सूरो ।
गमणे दाहिण पिट्ठी पवेसगे वामु पिट्ठि सुहो ॥ ५२

॥ इति रविचार ॥

दुन्ह वग्गक ठविउ वट्ठु भाए सेस अग्गिमो लहइ ।
बहु काइणि मग्गतो पुरिसो तियपासि सो सहलो ॥ ७२

॥ रिणलभ्यवर्गः ॥

गरुड मजार सीहे साणे अहि उदरे य मिर्ये मिढे ।
इय अट्ठवग्गजोणी पचमठाणे हवइ वयर ॥ ७३

॥ इति पचमे वैरम् ॥

तुरेय गये मेसे अहि अहि साणे विरालँ च मेसं मजार ।
मूसुदरे पसु महिसं वेंघ महिसी य वेंघ च ॥ ७४
मियँ हरिणं साणे वनरं निउलंदुग वानरो य हरि तुरेय ।
सीहे पसु हत्थिं एव अस्सिणिमाईण जोणिकम ॥ ७५

॥ नक्षत्राणां जो (यो) नयः ॥

सीह-गयं महिस-तुरय मूसयं-मजार वनरं-मेस ।
अहि निउल पसु-वेंघ मिय-साण विरुद्ध अन्नोन्न ॥ ७६

॥ इति योनिवइर ॥

वर कन्नरासि सामि य सत्तू असुहा य सेस सुह वरणे ।
इय सत्तमेय पीई भणिय, भणामित्य वीवाह ॥ ७७

॥ इति वरणे सप्तधा प्रीतिः ॥

अट्ठि वरिसेहि गउरी, नवि रोहिणि, दसहि कन्न, उवरित्थी ।
एव जाव गणिज्जइ, बारहवरिसुवरि न गणिज्जा ॥ ७८
गुर रवि ससि लग्गबले गउरी सेसा इगेगि रहियकसे ।
इय भणिय सुह विवाह न विवाह सत्तवरिसतले ॥ ७९
पच घडी सिहि अंते छह रिक्खंते य ति दिण मासते ।
दुहिय अउच विहव कमि हवेइ तिय पाणिगहणकए ॥ ८०
रेवइ मह मिय रोहिणि मूल ति उत्तरऽणुराह कर साई ।
बुह गुर सिय ससि वारा पाणिग्गहणे सुहा भणिया ॥ ८१

सवण धणिट्ठ पुणव्वसु पुस्सु महा मूल साइ रोहिणिया ।
हत्थु अणुराह रेवइ ति उत्तरा हरिणि सुपइट्ठा ॥ ६३

॥ इति प्रतिष्ठायां तिथिनक्षत्रवारशुभाः ॥

अथ लग्नम्–

दु ति छ ससी ति छ कूरा दु छ किंद तिकोण गुरु पइट्ठसुहा ।
सुहु वह इगाइ जा पण इग चउ नव वह सिओ सविक्कारी ॥ ६४

॥ इति उत्तिमा ॥

मज्झिम रवि कुज पचम दु पण छ मुणि सुक्कु छ नव सत्त बुहो ।
किंद तिकोणे चंदो वहऽट्ठ पण सणि गुरु तईओ ॥ ६५

॥ मध्यमा ॥

सोमगहऽट्ठम ति सिओ मगलु सूरो दु अट्ठ नव किंदे ।
सणिग दु चउ नव सत्तम पइट्ठ ससि वारहा असुहा ॥ ६६

॥ अधमा इति प्रतिष्ठाविनशुद्धिः ॥

गणे नाडि रासि वेग्ग पचम वेहरं च जोणिवइरं च ।
रासिवईणं मेत्त कमा वर सयहा पीई ॥ दारं ॥ ६७

पुस्सु पुणस्सिणि रेवइ कर साइऽणुराह मिय सवण देवा ।
भरणि ति पुव्व ति उत्तर रोहिणि अद्दा य मणुयगणा ॥ ६८

घण चित्त जिट्ठ मह सय मूल विसा किचि रक्खससलेसा ।
सुकुलुसिम नर रक्खस मरण मज्झिम्म सेसगणा ॥ ६९

॥ इति देव-मनुष्य (ष्य) राक्षसगणाः ॥

अहिचक्कि अस्सिणाई चरकस म एगनाडि त वेह ।
कन्ना वरणे असुह सुहय गिहसामि मिचाई ॥ ७०

॥ इति नाडिवेधः ॥

समरासीओ अट्ठम वइरं विसमाओ अट्ठमे पीई ।
सत्तु खडऽट्ठय असुह दु बारसं तह य अभसुह ॥ ७१

॥ इति षडाष्टक-दु(द्वि)र्द्वादशको ॥

तुन्ह वग्गक ठविउ वड्ढु भाए सेस अग्गिमो लहइ ।
वहु काइणि मग्गतो पुरिसो सियपासि सो सहलो ॥ ७२

॥ रिणलभ्यवर्गः ॥

गरुड मजार सीहे साणे अहि उदरे य मिये मिंढे ।
इय अट्ठवग्गजोणी पंचमठाणे हवइ वयर ॥ ७३

॥ इति पञ्चमे वैरम् ॥

तुरेय गये मेसे अहि अहि साणे विराले य मेसे मजार ।
मूंसुदुरे पसु महिसे वग्घ महिसी य वग्घ च ॥ ७४
मिये हरिणे साणे वनरे निउलदुग वानरो य हरि तुरेय ।
सीहे पसु हत्थि एव अस्सिणिमाईण जोणिकम ॥ ७५

॥ नक्षत्राणां खो (यो) नयः ॥

सीह-गये महिस-तुरय मूसये-मजार वनरं-मेसं ।
अहि निउल पसु-वग्घ मिय-साण विरुद्ध अन्नोन्न ॥ ७६

॥ इति योनिवइर ॥

वर कन्नरासि सामि य सप्तू असुहा य सेस सुह वरणे ।
इय सत्तमेय पीई भणिय, मणामित्थ वीवाह ॥ ७७

॥ इति वरणे सप्तमा प्रीतिः ॥

अट्ठ वरिसेहि गउरी, नवि रोहिणि, दसहि कन्न, उवरित्थी ।
एव जाव गणिज्जइ, बारहवरिसुवरि न गणिज्जा ॥ ७८
गुर रवि ससि लग्गबले गउरी सेसा इगेगि रहियकमे ।
इय भणिय सुह विवाह न विवाह सत्तवरिसतले ॥ ७९
पंच घडी तिहि अंते छह रिक्खंते य ति दिण मासंते ।
दुहिय अउत्त विहुत्र कमि हवेइ तिय पाणिगहणकए ॥ ८०
रेवइ मह मिय रोहिणि मूल ति उत्तरऽणुराह कर साई ।
बुह गुर सिय ससि वारा पाणिग्गहणे सुहा भणिया ॥ ८१

अथ लग्नम्–

भिगु ससि विणु सहि (? णि) छट्ठा इग दु चउ नवऽति पच दह सोमा ।
बीवाहे ससि बीओ सव्वे तिय गारहा सुहया ॥ ८२
बुह-गुर छट्ठा सणि सूरु अट्ठमा सुहय भूम रवि नवमा ।
बुह गुर सुक्का अंते करगहणे सयणसुक्खकरा ॥ ८३
भिगु सस्स् रवि सुसरो सुह दुह लग्ग पसइ सुयठाण ।
जामित्तवई भत्ता तियस्स जाणेहु वल्लमाणो ॥ ८४

॥ इति विवाहे लग्नम् ॥

अथ क्षौरकर्म्म–

छट्ठऽट्ठमि नम्वि चउदसि अमावस चउथि विट्ठि गइते ।
संझा निसि मज्झन्हे एए वज्जेह खुरकम्मे ॥ ८५
पुस्सु पुणव्वसु रेवइ सवण धणिट्ठा मियऽस्सिणी हत्था ।
चित्त बुह सोमवारा खउरं सुहलग्गि कायव्वा ॥ ८६
दु पण नवते सोमा सुहपावा असुह तिय छ गार सुहा ।
बुह गुर सिय किंदि सुहा ससि कूरा असुह सेस खउरि समा ॥ ८७

॥ इति क्षउरकर्म्मफलाफलम् ॥

रोहिणि महा विसाहा ति उत्तरा भरणि किंत्तियऽणुराहा ।
इय मुडण लोयकए इयो वि न जीवए वरिसं ॥ ८८

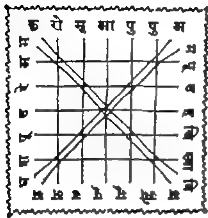
॥ इति नक्षत्राः मुंडन लोचे वर्जनीयाः ॥

सुहलग्गे चयचले लणिज्ज नीमा अहोमुहे रिक्खे ।
उड्ढमुहे नक्खत्ते चिणिज्ज सुहलग्गि चयचले ॥ ८९
चित्तऽणुराह ति उत्तर रेवइ मिय रोहिणी य सय पुस्सो ।
साइ धणिट्ठ सुहकर गिहप्पवेसे य ठिइसमए ॥ ९०
कूरा ति छ गारसगा सोमा किंदे तिकोणगे सुहया ।
कूरऽट्ठम अइअसुहा सोमा मज्झिम गिहारंभे ॥ ९१
किंदऽट्ठम ति कूरा असुहा तिय गारहा सुहा सव्वे ।
कूरा बीया असुहा सेस समा गिहपवेसे य ॥ ९२

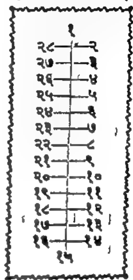
सूर गिहित्थो गिहिणी चदु घण सुक्कु सुरुगुरू सुक्खं ।
जो सबलु तस्स भाव सबल हुइ नत्थि संदेहो ॥ ९१
॥ इति गृहनीम्व निवेस प्रवेसे च ॥
चवयलहीणदियहे चरलग्गि तिकोण किंदि पावगहे ।
तिहि रिच क्रूर वारे रोयविमुक्कस्स ह्लाण वरं ॥ ९२
॥ इति रोगीरोगविमुक्ते स्नानदिनम् । इति कुंडलिकालमानि ॥
फुड्ड गोधूलियलग्ग दिणति दिट्ठे दुभाय रविबिंबे ।
अम्मच्छम्मे जाणसु दुदलतरूपत्तमिलमाणे ॥ ९३
फुल्लति य वल्लीओ सउणा निलयत्थि उम्छगा होंति ।
राइसिणि सिरिस किंकिरि पवाडपत्ता मिलति गोधूले ॥ ९४
जमि गोधूलियालग्गे चंदो मुत्ती खडऽट्ठमो ।
कुलिओ कतिसम्मो य, त च वज्जेह जत्तओ ॥ ९५
रवि-चंदमुत्तरासी पिंडे हुइ जत्थ छ च वारस वा ।
तत्थ कमि कतिसमो सणिच्छरंते हवइ कुलिओ ॥ ९६
जइ सव्वदोसरहिय गुणबलसहिय च लब्भए लग्ग ।
ता गोधूलिय सुहमवि बुहि एकि सया वि वज्जिज्जा ॥ ९७
अजापाल [य] गोवाला लुद्धा धीवर कोलिया ।
जे धरंति पुणो तेसिं, लग्ग गोधूलिय वरं ॥ ९८
॥ इति गोधूलिकलग्नम् ॥
आसी सङ्कुलेसु सिद्धिकलसो ठाणे सुकन्नाणए,
तस्सगस्स रुहो सुठकुरवरो चदु व चंदो इह ।
फेरू तत्तणओ य तेण रइय जोइससारं इम,
वोसचऽग्गिग (१३७२) वच्छरे दुगसय गाहा दु चत्ताहिय ॥२४२
॥ इति श्री चन्द्रांगज ठक्कुरफेरू विरचिते ज्योतिष्कसारे लग्नसमुच्चय द्वार चतुर्थ समाप्तम् ॥
ज्योतिषसार गाथा २४२ । ग्रंथाग्रं श्लोक ४१७ । यंत्र कुंडलिका सहितम् ।

ज्योतिषसार ग्रन्थनिर्दिष्टानां यन्त्र चक्र कुण्डलिकादीनां स्थापना यथा–

२४ तमे पत्राङ्के सूचितं पञ्चशलाका-
चक्रमिदम्—



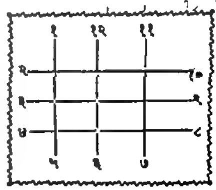
२५ तमे पत्राङ्के सूचितं
'सूक्रगल' चक्रमिदम् ।



परिघचक्रमिदम् ।



ज्योतिषाम्यचक्रम् ।



र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा
३	२	३	१	२	२	३	३
६	१	६	२	१	१	६	६
११	४	११	३	४	४	११	११
	७		४	७	७		
	१०		[illegible]	१०	१०		
	९		९	९	९		
	५		१०	५	५		
	३		११	३	३		

जन्म कुंडलिका

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा
उ०	उ०	उ०	उ०	उ०	उ०	उ०	उ०
३	२	३	१	१	१	३	३
६	३	६	२	२	२	६	६
११	४	११	३	३	३	११	११
	५		४	४	४		
	९		५	५	५		
	१०		९	९	९		
	११		१०	१०	१०		
			११	११	११		
म०	म०	म०	म०	म०	म०	म०	म०
७	७	७	७	७	७	७	७
अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ
८	८	८	८	८	८	८	८
१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

सर्वसामान्यलग्नकुंडलिकायन्त्रमिदम्।

२५ पत्राङ्के सूचितलग्न-मंगलकुंडलिकायन्त्रमिदम्।

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	ग्रह
१	१	१	७	८	१	१	१	मंगल
७	८	७	८	०	७	७	४	कुंभ
●	१	८	०	०	८	०	७ १०	शिखा

यात्राख्यकुंडलिकायन्त्रमिदम्।

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा
३	२	३	१	१	१	३	३
६	३	[illegible]	२	२	२	६	६
१०	४	१०	३	३	३	११	११
११	५	११	४	४	४		
	७		५	५	५		
	९		७	७	७		
	१०		८	८	८		
	११		९	९	९		
			१०	१०	१०		
			११	११	११		

ग्रह	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उत्तमा	२ ५ ९ ११	२ ३ ९ ११	३ ६ १० ११	३ २ ९ ५ १० ११	१ ४ ७ १० ९ ५ ११	३ ६ ९ १२	२ ५ ९ ८ ११
मध्यमा	३ ०	७ १०	० ०	१ ४ ६ ९	३ ६ २	२ ५	३ ०
अधमा	१ ४ ७ ८ ९ १० ११	१ ४ ५ ८ ९ १२	१।२ ४।२ ७।८ ९।१२	८ १२ ० ०	८ १२ ० ०	१ ७ ४ ८ १० ११	१ ४ ७ ९ १ १२

दीक्षाकुण्डलिका उत्तम-मध्यम-अधमा

प्रतिष्ठाकुण्डलिकाचक्रम्

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	ग्रह
३ ६ ११	२ ३ ६ ११	३ [illegible]	१०।१ ३	९।६ ११		३ ६ ११	[illegible]
५ ० ०	१।४ ७।१० ५।९	[illegible]					
४।८ ५।१ ६।७ १०।११	८ १२ ० ०	४।५ [illegible]					

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	
३	२।४	३	१।२	१।२	१।२	३	३	
६	५।१२	६	४।९	४।९	६।९	६	६	
११	७।१०	११	१२।५	१२।५	१२।५	११	११	
८	९।११	९	१०।३	१०।३	१०।३			
९			११।६	११।६	११।६			

विवाह कुंडलिया

सुन्दर कर्मकुंडलियंत्र

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	
३ ६ ११	२ ५ ९ १२	३ ६ ११	२।५ ९।१२ १।४ ७।१०	२।५ ९।१२ १।४ ७।१०	२।५ ९।१२ १।४ ७।१०	३ ६ ११	३ ६ ११	उत्तम कुंडली
० ८ ०	३।६ ८।११	८	३।६ ८।११	३।६ ८।११	३।६ ८।११	८	८	मध्यम
२।५ ९।१२ १।४ ७।१०	१ ४ ७ १०	२।५ ९।१२ १।४ ७।१०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	२।५ ९।१२ १।४ ७।१०	२।५ ९।१२ १।४ ७।१०	अधम

ग्रह	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उत्तमा	२ ५ ६ ११	२ ३ ६ ११	३ ६ १० ११	३ २ ६ ५ १० ११	१ ४ ७ १० ९ ५ ११	१ ६ ९ १२	२ ५ ६ ८ ११
मध्यमा	१ ०	७ १०	० ०	१ ४ ७ ९	१ ६ २	२ ५	३ ०
अधमा	१ ४ ७ ८ ९ १० ११	१ ४ ५ ८ ९ १२	१।२ ४।२ ७।८ ९।१२	८ १२ ० ०	८ १२ ० ०	१ ७ ४ ८ १० ११	१ ४ ७ ९ १ १२

दीक्षाकुण्डलिका उत्तम-मध्यम अधमा

प्रतिष्ठाकुण्डलिकाचक्रम्

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	ग्रह
३ ६ ११	२ ३ ६ ११	३ ६ ११	१०।१ २।३ ४।५ ११	२।५ १।४ ७।१० ५।९ ११	१ ४ ९ १० ११	३ ६ ११	उत्तम कुण्डलि
५ ० ०	१।४ ७।१० ५।९	५ ० ०	४ ९ ७	१ ० ०	२ ५ ३ ७	१० ८ ५	मध्यम कुण्डलि
२।८ ५।६ ४।७ १०।११	८ १२ ० ०	२।८ १।४ ५।१० ७।१२	८ १२ ० ०	८ १२ ० ०	८ ३ १२	१।२ ४।९ ७।१२	अधम कुण्डलि

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	
३ ३ ११ ८ ९	२।४ ५।१२ ९।१० ३।११	३ ३ ११ ९	१।२ ४।९ १२।५ १०।३ ११।६	१।२ ४।९ १२।५ १०।३ ११।६	१।२ ४।९ १२।५ १०।३ ११।६	३ ६ ११	३ ६ ११	

विपाक कुंडलिया

उत्तर कर्मकुंडलिकायंत्र

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	
३ ३ ११	२ ५ ९ १२	३ ३ ११	२।५ ५।१२ १।४ ७।१०	२।५ ५।१२ १।४ ७।१०	२।५ ५।१२ १।४ ७।१०	३ ६ ११	३ ६ ११	उत्तम कुंडली
० ८ ०	३।६ ८।११	८	३।६ ८।११	३।६ ८।११	३।६ ८।११	८	८	मध्यम
२।५ ५।१२ १।४ ७।१०	१ ४ ७ १०	२।५ ५।१२ १।४ ७।१०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	२।५ ५।१२ १।४ ७।१०	२।५ ५।१२ १।४ ७।१०	अधम

गृहसीम्यनिवेसप्रवेश कुंडलिका

ग्रह	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
उत्तम	३	१।४	३	१।४	१।४	१।४	३	३
	६	७।१०	६	७।१०	७।१०	७।१०	६	१
	११	९।५	११	९।५	९।५	९।५	११	११
		३।११		३।११	३।११	३।११		
मध्यम	९	८।२	९	८।२	८।२	८।२	५	५
	५	६।१२	५	६।१२	६।१२	६।१२	९	९
अधम	८।१	०	८।१	०	०	०	८।१	८।१
	४।७	०	४।७	०	०	०	४।७	४।७
	१०।१२	०	१०।१२	०	०	०	१०।१२	१०।१२
	२	०	२	०	०	०	२	२

ज्योतिषसारस्य विवरणम्–द्वार ४, गाथा २४२

प्रथमं दिनशुद्धि द्वारं गाथा ४२

गा १ द्वारगाथा	गा० १ जन्म नक्षत्र चन्द्रमुहा० ।	गा० १ योगानां अशुभ घटी ।
,, २ वार तिथिनामानि ।	,, २ यमघंट उत्पातादियो० ।	,, १ चंद्रदग्धास्तिथयः ।
,, ० नक्षत्र २८ नामा० ।	, १ शूलयोगः ।	,, १ सूर्यदग्धास्तिथयः ।
,, ० योग २७ नामानि ।	२ शुभवेला वेध ।	,, १ क्रूरदग्धास्तिथयः
,, ० राशि १२ नामानि ।	२ कुलिक उपकुलिकादि	, १ कुमारयोगः ।
,, ० नक्षत्र अवकहड चक्रं ।	वेध ।	,, १ राजतरुणयोगः ।
, ० नक्षत्रे राशयः ।	१ विजयाख्य मुहूर्तं ।	,, १ रवियोगः ।
,, ७ वार तिथि नक्षत्र सि० ।	,, १ शुभलग्नं वेध ।	, १ योगत्रयफलं ।
,, २ विरुद्धयोगाः ।	,, १ छायालग्नो यथा ।	२ यमल त्रिपुष्कर ।
,, १ कर्कसंवर्तकयोगाः ।	,, १ काल होरा च २ ।	,, २ स्थविरयोग ।
		,, १ वार शुभ ।

एवं गाथा ४२ दिनशुद्धिद्वार

द्वितीयं व्यवहारद्वारं गाथा ६०

गा० ४ ग्रहाणां राशिस्थिति उच्चास्तवक्रादिना ।	गा० १ योगिनी चक्र ।	गा० १ शुक्र फलाफलं ।
	,, १ मन्त्रा चक्र ।	,, १ गुरु सिंहस्थफलं ।
,, ५ ग्रहगोचर शुद्धि ।	,, २ वत्सगति चक्र ।	,, १ दिनरात्रिमुहूर्त ।
, १ ताराबल जन्मन० ।	,, २ शत्रुमित्रोदासीन ।	,, १ सीमंतोन्नयन०
,, १ ग्रह गोचर राशि ।	१ अधनीचौ ।	,, २ नामकरणमन्नप्रा० ।
,, ७ ग्रहाणां वामवेध ।	,, १ ऊर्ध्वाधो तिर्यक् ।	,, १ कर्णवेधदिन ।
,, १ दिनार्क यथा ।	१ विद्यारंभे वेद ।	,, १ क्षुरकर्मवस्त्रनिधे० ।
,, २ रविवार्क यथा ।	२ पुरुषस्त्रियो च० ।	,, १ अंधकाणादिनक्ष० ।
,, २ शनिवार्क यथा ।	, २ वधूगृहप्रवेशा० ।	
,, १ बृहस्पति यथा ।	१ स्त्रियःस्नान यत्रा० ।	इति व्यवहारद्वारं
,, २ राहतनु चक्र ।	,, १ पंचक नक्षत्रा ।	द्वितीयं । गाहा ६०
,, १ राहदिन चक्र ।	,, १ भेषज नक्षत्रा ।	

तृतीयं गणितपद्द्वारं गाथा ९८

गा० ३ विषुवच्छायाः ।
" १ चरखंडआनयनं ।
" २ लग्नानयनं ।
" २ अयनांशानयनं ।
" १ स्फुटसूर्यः ।
" ३ स्फुटलग्नानयनं ।
" ७ षड्वर्गानयनं ।
" ३ षड्वर्गोदयाः ।
" २ क्षयशुद्धि ।
" १ मासशुद्धि ।

गा० ४ ग्रहाणां दृष्टि ।
" १ शुभ कर्म ।
" १ परमदिन ।
" २ दिनरात्रिमानं ।
" १ मध्याह्नच्छाया ।
" १ गतशेषदिनं ।
" १ इष्टच्छाया ।
" १ कर्णच्छाया ।
" १ तिथ्यादितत्कालिक
इति गणितपदं तृतीयं द्वारं । गाथा ९८

चतुर्थं लग्नसमुच्चयद्वारं गाथा १०२

गा ४ वर्षमासादिनिषेध ।
" १९ छायापातादिदोष ८ ।
" १ मद्धिचक्रे मासदोष ।
" २ कुग्रहपंचकदोषः ।
" ३ लग्ने मंगलचाः ।
" १ लग्नदोषाः ।
" ७ लग्नस्य भावाः ।
" १ लग्नविशोपकाः ।
" ३ सर्वेसामान्यलग्नं ।
" ५ जन्मकुंडलिका ।

गा० १४ यात्राकुंडलिका ।
" ५ दीक्षाकुंडलिका ।
" ५ प्रतिष्ठाकुंडलि ।
" १८ विवाहकुंडलि० ।
" ३ क्षौरकर्मकुंड० ।
१ मुंडनलोचकर्म ।
५ गृहनीस्थप्रवेश ।
" १ रोगीस्नानदिनं ।
" ९ गोघृतिच्छद्रे ।
" १ संपूर्णकरणं ।

इति लग्नसमुच्चयद्वारं चतुर्थं । गाह १०२

इति श्री चंद्राणाठक्कुरफेरुविरचितज्योतिष्कसार द्वार ४ गाहा २४२

सं० बीजकविवरणम् ।

॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

ठक्कुर फेरू-विरचित

गणितसार



[प्रथमोऽध्यायः ।]

नमिऊण तिजयनाहं लच्छीस गिरीस-सयल देवज्ज ।
लेहाण गणणपाडी पुव्वायरिएहिं जह वुत्ता ॥ १
तत्तो व (? वि) किंचि गहिय किंचि वि अणुभूय किंचि सुणिऊणं।
त सयललोयहेऊ फेरू पभणेइ चंदसुओ ॥ २
पडिकाइणि तह काइणि पडिविस्संसा तहेव विस्ससा ।
जावय होंति विसोवा वीस उण कमेण नायव्वा ॥ ३
वीसि विसोइहिं दम्मो दम्मिहिं पचासि टकओ इक्को ।
वीस कम दीह वित्थरि अह कवी सहि वीगहुओ ॥ ४
पव्वंगुलि चउवीसिहिं मचीस करगुली य विसेया ।
अठ्ठ जवि तिरियगेहे पव्वगुलु इकु जाणेह ॥ ५
चउवीसंगुल हत्थो पडिय चहु हत्थि हवइ दडु इगो ।
त्रिहुसहसिदंडि कोसो चहुँकोसिहिं जोयणो इक्को ॥ ६
इय भणिय सरहत्थ विक्खमायाम गुणिय पहहत्थ ।
वित्थारहु उदय गुण त घण अत्थ वियाणाहि ॥ ७
चहुँ करपुडेहिं पाई चहुँ पाई एगु माणओ भणिओ ।
चहुँ माणेहि वि सेई सोलस सेई मसे पत्थो ॥ ८
छहिं गुंजि मासओ हुइ तेहिं त्रि चहु टकु टंकि दसहिं पलो ।
छहि पलिहिं इक्कु सेरो सेरिहिं चालीसि इक्कु मणो ॥ ९

जवि सोलसेहि मासउ तेहिवि चहु टकु तोलओ तिउणो ।
सोलहि जवेहि वन्नी बारहि वन्नी महाकणओ ॥ १०

सट्ठि पलि एग घडिया घडिया सट्ठीहि एगु दिणु रयणी ।
दिणि रयणि तीसि मासो बारहि मासंमि वरिसु इगो ॥ ११

एग दह सय सहसं दसहस लक्ख तहेव दसलक्ख ।
कोडिं तह दसकोडी अव्व दसअव्व जाणेह ॥ १२

खव तह दसखव्व संख दससंख पउम दसपउम ।
नील तह दसनील नीलसय नीलसहसं च ॥ १३

दससहस नील तह पुण नील लक्खो वि नील दसलक्ख ।
तह कोडिनील इयाइ संख अकाइ नामाइ ॥ १४

॥ इति २५ गणिताङ्क ॥

परिकम्म पणवीसं तहऽट्ठ जाई य अट्ठ विवहारा ।
अहिगारा चारेय पणयालीसाइ दाराइ ॥ १५

।

इच्छाएगि जुयद्धे इच्छा गुणियं हवेइ संकलिय ॥ १६

१ अथ संकलितमाह–

सम दिण दल मग्ग गुण विसम अगिमदलेण सगुणिय ।
ज हुइ त सकलिय न ससय इत्य नायव्व ॥ १७

इच्छा पच्छऽक्खरिहिं गुणिज्जइ, पच्छु मेलि पुणु इच्छ हणिज्जइ ।
निउणिहिं पच्छिहिं भाउ हरिज्जइ लद्धकिहि संकलित कहिज्जइ ॥ १८

एग्गाई जाव दस संकलिय पिहगु दस गुणाण च ।
एगुत्तर वुड्ढिकमे भणेह एयाण मूल पुणो ॥ १९

संकलियद्ध गुणिगि जुय तस्स पय एगि हीण अद्धेण ।
अह विउण वग्गमूले सेस सम संकलियमूल ॥ २०

२. अह(ध) व्यवकलितमाह–

जइ सकलियपएण इक्किक एगयाइ वड्ढेइ ।
तइ विमकलिए छिज्जइ इक्किक मूलरासीओ ॥ २१
सेग विमकलियपय संकलियपय च कीरए सहिय ।
दुन्ह पयतरि गुणिय दलीकय विमकलियसेस ॥ २२
संकलिय सहस्साओ दसाइ दसन्दसऽहियस्स सकलिय ।
साहेवि भणसु पडिय ज हुइ विमकलियसेसंक ॥ २३
विमकलियसेस सोहि वि संकलियधणाउ सेस्स विउणजुय ।
तस्स पय सेससम त हुइ विमकलियमूलपय ॥ २४
सकलियपय विउण सेग विमकलियपयविहीणदल ।
विमकलियजुय ज हुइ त उवराओ य विमकलिय ॥ २५
सयसंकलियधणाओ उवराओ तीइ जाम विमकलिय ।
ता किं जायइ त भणि, जइ विमकलिय वियाणाहि ॥ २६

३ अथ गुणाकारमाह–

ठवि गुणरासि हिट्ठे कवाडसंधि व्व उवरि गुणरासी ।
अनुलोम-विलोमगई गुणिज्ज सुकमेण गुणरासी ॥ २७
बीसा सउ बत्तीसिहि नव सइ चउसट्ठ सत्तवीसेहिं ।
अडहिय सउ सट्ठिगुण किं किं पत्तेय होंति फल ॥ २८
अह गुणरासी खडिवि इगेग अंकेण गुणवि करि पिंड ।
परकमि चडति पती छेय करवि सुकमि गुणिय पुणो ॥ २९

त्रुटीक गुणाकार सत्यालीक परिज्ञान–

गुणरासि गुणरासी पिहु पिहु पिंड नवस्स सेसगुण ।
तह गुणियरासिपिंड नवसेससम हवइ सुद्ध ॥ ३०
खेवसमखजोए रासि अविगयत्स्स जोडणे हीणे ।
सुन्न गुणाणइ सुन्न सुन्नगणे सुन्न सुन्नेण ॥ ३१

सुन्नस्स य गुणयारं सुन्नस्स य भागहरं तहा वग्गं ।
सुन्नस्स वग्गमूल घणाइ भणि जइ वियाणासि ॥ ३२

४ अथ भागाहरमाह–

जस्ताओ पाडिज्जइ सहरणीओ जु हरइ सुज्झि हरे ।
उवरि लिहि हारणीय हिट्ठि हरंसं भवे भाय ॥ ३३

५. अथ वर्गः–

पढमकु वग्गु ठविय अवरकमे विउणआइ अंकेहिं ।
गुणि पुव्वसहिय पुण तह वग्गजुय ठाणहियवग्ग ॥ ३४
जो अंकु तिणय अंके गुणिज्ज सो वग्गु अहव इच्छ दुहा ।
दहूण जुय गुणेविणु तहिट्ठवग्गाहिय इय वग्ग ॥ ३५
एगाइ नवताण सोलस चउवीस अट्ठवीसाण ।
पत्तेय वग्गरासी ज जायइ त भणह सिग्घ ॥ ३६

६. अथ वर्गमूलमाह–

ज हवइ वग्गरासी तस्सताओ गणिज्ज जाव धुर ।
विसम सम विसमट्ठाणे वग्ग साहेवि मूलक ॥ ३७
विउणु करि चालि भाय फलपती तस्स वग्गि सोहि पुणो ।
पुव्वविहि जाव चरिम विउण तमद्धिय मूल ॥ ३८

७ अथ घनमाह–

धुरिमकघण ठाविय तस्सेव धुरंक वग्गु तिहु गुणिय ।
बीयत्ते गणिऊण ठाणाहिय मुकमि जोडिज्जा ॥ ३९
पुणु बीय अंकवग्ग धुरिमकिहि गुणिवि तिउण करि जुय ।
पुणु तस्स य अंसस्स य घण करिवि सहिय घणमेय ॥ ४०
इच्छिय अंकु तिहा ठवि उवरुप्परि गुणिय ज हवइ स घणो ।
अग्गिमु पुव्वकि हय तिउण पुव्वघणजुयसेसं ॥ ४१

एगाई जाव नव तह सोलस दुसय पचवीसाण ।
तिन्नि सय नवऽहियाण पत्तेय किं हवेइ घण ॥ ४२

८ अथ घनमूलमाह-

घणपय दोअ घणपण घणपयमाय घणेण पाडिज्ज ।
त लद्धक मूल घालिवि तईयक्नति दिज्जा ॥ ४३
तवग्गु तिउणु तस्सेव पच्छए घरिवि भाउ पाडिज्जा ।
लद्ध पति ठविज्जइ हरकविगमो य कायव्वो ॥ ४४
पतिस्स अंकवग्ग तिउण पुव्वक्कि गुणिवि सोहिज्जा ।
अंति पयस्स घण पुण सोहिय त लद्ध पुण एव ॥ ४५

९ अथ अभिन्नपरिकर्मोपक्रमाह-

भिन्नकु इम ठविज्जइ रू(ऊ)वरि असस्स मज्झि छेयतले ।
हीणंसे बिंदुचय अच्छेय जत्थ तत्थेग ॥ ४६
छेय हय रूवरासी अंसा जुय गय सवनण हवइ ।
अन्नोन्नछेयगुणिया हवति कमि सदिसछेयसा ॥ ४७
सदिसच्छेय करेविणु ता कीरइ जोड हीण अंसाण ।
न हवइ छेयाण जुई कयावि इय भणिय सत्थेहिं ॥ ४८
छेयके विउण कए उवरिमरासी हवेइ अद्धीय ।
सव्वेवि पायरेहिं भिन्नठिई एस नायव्वा ॥ ४९

१० अथ भिन्नसंकलितमाह-

सदिसच्छेयसजुई छेएण विहत्त भिन्नसंकलिय ।
ति छ पण नवस पिंड तह पउण सि दिउढ सतिहाय ॥ ५०
आदायस्स वयस्स य सवनण करवि सदिसछेय पुणो ।
पिहु पिहु अंसाण जुई तयनरे भिन्न विमकलिय ॥ ५१
अद्ध तिहाय खडसा नवसु अट्ठाउ सोहि किं सेस ।
सड्ढ तिय पच्च सतिहा नवम ग्वडमाउ सोहिज्जा ॥ ५२

११ अथ भिन्नगुणाकारमाह–

अंसेण असगुणिय छेएण वि छेय गुणिवि हरियव्व ।
ज हवइ लद्धमक त जाणह भिन्नगुणयारं ॥ ५३
पाऊण पच वम्मा गुणिज्ज सतिहाय अट्ठ वम्मेहिं ।
अद्ध खडसि गुणिय पिहु पिहु किं हवइ तस्स फल ॥ ५४

१२. अथ भिन्नभागाहारमाह–

करिऊण छेय अंसा हरस्स विवरीय न हारणीयस्स ।
पुव्वविहि गुणि विभाय एस विही भिन्नभायस्स ॥ ५५
अड्ढाइएहि भाय हरिज्जए पठणसत्तदम्मेहिं ।
चहु सतिहाइ विहत्त सवा छ किं ताण लद्ध फल ॥ ५६

१३ अथ भिन्नवर्गमाह–

अंसाण वग्गरासी हिट्ठिम छेयाण वग्गमाएण ।
पाडेवि ज जि लद्ध त जाण [हु] भिन्नवग्गफल ॥ ५७
अड्ढाइयस्स वग्ग सतिहा पचस्स पठणसत्तस्स ।
भणि अद्ध तिहाय पुणो जइ वग्गविही वियाणासि ॥ ५८

१४ अथ भिन्नवर्गमूलमाह–

अंसस्स वग्गमूले छेयणमूलेण भाउ पाडिज्जा ।
विसम-सम-विसमकरणे हुइ मूल भिन्नवग्गस्स ॥ ५९

१५. अथ भिन्नघनमाह–

अंसस्स घण कुज्जा छेयस्स घणाण भाउ हरिऊणं ।
ज किंपि तत्थ लद्ध भिन्नघणं त वियाणाहि ॥ ६०
सड्ढय-सत्तस्स घण सवाय पनरस पा तिहायस्स ।
ज जायइ घणरासी पच्चेय त भणिज्जासु ॥ ६१

१६ अथ भिन्नघणमूलमाह–

अंसघणमूलरासे छेयणघण मूलभाउ पाडिज्जा ।
घणपय दोअ घणपए इय करणे हवइ घणमूल ॥ ६२

१७ अथ त्रैरासिकमाह–

आइ अंते‌क्कजाई ठविज्जए अन्नजाइमज्झेण ।
अंतेण मज्झि गुणिय आइमभाग तिरासियग ॥ ६३
जा इक्कारस दुम्मिहि दोसिय कर सत्त कप्पडो होइ ।
ता चउवीसिहि दम्मिहि कइ हत्थ हवंति ते कहसु ॥ ६४
मणिसु हव नाणवट्ट नव मुद्द लहंति दम्म पणवीस ।
इय अग्घपमाणेण सोलस मुद्दाण कइ मुल्लं ॥ ६५
चंदण पल सवाय सतिहा नव दम्म मुल्लु पावेइ ।
ता छ पल सड्ढसूणा किंचिय दम्माइ पावंति ॥ ६६
दम्मि सवा सत्तेहिं पिप्पलि दुइ सेर छट्ठमसऽहिया ।
लब्भइ ता नव दम्मिहि तिहाय ऊणेहिं किं हवइ ॥ ६७
पाउणवीसा सएहिं दम्मिहि सतिहाय पंच पत्था य ।
ता तदुलाइ अन्न कइ लब्भइ इक्कि दम्मेण ॥ ६८
बारहवन्नी कणओ सतिहा सय दम्मि तोलओ इक्को ।
जइ हुइ त इक्कि मासय वन्नसहीणस्स कइ मुल्लो ॥ ६९
जइ जोयणछट्ठंसं पंगुलओ चलइ सत्त दिवसेहिं ।
ता सट्ठि जोयणाइ किंचिय कालेण गच्छेइ ॥ ७०
अंगुलसयसो जइ दिणस्स छट्ठंसि कीडओ चलइ ।
गच्छिहइ अट्ठजोयण नियसई केण कालेण ॥ ७१

अथ पंचरासिकमाह–, सप्तनवैकादशरासिको य (?)

हिट्ठिम फलक्क विवरिय पिहु पिहु कमि दो वि पक्ख गुणिऊण
थोवक-रासिभाय पण सत्त नवाइ रासीण ॥ ७२

१८ अथ पंचराशिकमाह–

मासेण पंचगसए वरिसे सट्ठिस्स किं फल हवइ ।
अह नो नज्जइ काल फल मूल तह पमाणघण ॥ ७३

११ अथ भिन्नगुणाकारमाह–

अंसेण असगुणिय छेण्ण वि छेय गुणिवि हरियव्व ।
ज हवइ लद्धमक त जाणह भिन्नगुणयारं ॥ ५३
पाऊण पच दम्मा गुणिज्ज सतिहाय अट्ठ दम्मेहिं ।
अद्ध स्सहसि गुणिय पिहु पिहु किं हवइ तस्स फल ॥ ५४

१२. अथ भिन्नभागाहरमाह–

करिऊण छेय असा हरस्स विवरीय न हारणीयस्स ।
पुव्वविहि गुणि विभाय एस विही भिन्नभायस्स ॥ ५५
अड्ढाइएहि भाय हरिज्जए पउणसत्तदम्मेहिं ।
चहु सतिहाइ विहच सवा छ किं ताण लद्ध फल ॥ ५६

१३ अथ भिन्नवर्गमाह–

अंसाण वग्गरासी हिट्ठिम छेयाण वग्गभाएण ।
पाडेवि ज जि लद्धं त जाण [हु] भिन्नवग्गफल ॥ ५७
अड्ढाइयस्स वग्ग सतिहा पंचस्स पउणसत्तस्स ।
भणि अद्ध तिहाय पुणो जइ वग्गविही वियाणासि ॥ ५८

१४ अथ भिन्नवर्गमूलमाह–

अंसस्स वग्गमूले छेयणमूलेण भाउ पाडिज्जा ।
विसम-सम-विसमकरणे हुइ मूल भिन्नवग्गस्स ॥ ५९

१५. अथ भिन्नघनमाह–

अंसस्स घण कुज्जा छेयस्स घणाण भाउ हरिऊण ।
ज किंपि तत्थ लद्ध भिन्नघण त वियाणाहि ॥ ६०
सड्ढय-सत्तस्स घण सवाय पनरस पा तिहायस्स ।
ज जायइ घणरासी पत्तेय त भणिज्जासु ॥ ६१

१६ अथ भिन्नघणमूलमाह–

असघणमूलरासे छेयणघण मूलभाउ पाडिज्जा ।
घणपय थोअ घणपए इय करणे हवइ घणमूल ॥ ६२

१७ अथ त्रैराशिकमाह-

आइ अंतेकजाई ठविज्जए अन्नजाइमज्झेण ।
अंतेण मज्झि गुणिय आइमभाग तिरासियग ॥ ६३
जा इक्कारस दमिहिं दोसिय कर सच कप्पडो होइ ।
ता चउवीसिहिं दम्मिहिं कइ हत्थ हवंति ते कहसु ॥ ६४
मणिसु हुव नाणवट्ट नव मुद ल्हति दम्म पणवीस ।
इय अग्घपमाणेण सोलस मुदाण कइ मुल्ल ॥ ६५
चवुण पल सवाय सतिहा नव दम्म मुल्लु पावेइ ।
ता छ पल खडसूणा किंचिय दम्माइ पावंति ॥ ६६
दम्मि सवा सचेहिं पिप्पलि दुइ सेर छट्ठमसऽहिया ।
लब्भइ ता नव दम्मिहि तिहाय ऊणेहिं किं हवइ ॥ ६७
पाउणवीसा सएहिं दम्मिहि सतिहाय पच पत्था य ।
ता तदुलाइ अन्न कइ लब्भइ इक्कि दम्मेण ॥ ६८
बारहवन्नी कणओ सतिहा सय दम्मि तोलओ इक्को ।
जइ हुइ ता इक्कि मासय दससहीणस्स कइ मुल्लो ॥ ६९
जइ जोयणछट्ठमं पगुलओ चलइ सच दिवसेहिं ।
ता सट्ठि जोयणाइ किंचिय कालेण गच्छेइ ॥ ७०
अंगुलसत्तसो जइ दिणस्स छट्ठसि कीडओ चलइ ।
गच्छिहइ अट्ठजोयण नियत्तई केण कालेण ॥ ७१

अथ पंचराशिकमाह-, सप्तनवैकादसराशिको य (?)

हिट्ठिम फलक विवरिय पिहु पिहु कमि दो वि पक्ख गुणिऊण
थोवक-रासिभाय पण सत्त नवाइ रासीण ॥ ७२

१८. अथ पंचराशिकमाह-

मासेण पचगसए वरिसे सट्ठिस्स किं फल हवइ ।
अह नो नज्जइ काल फल मूल तए पमाणघण ॥ ७३

मासे तिहाय ऊणे सड्डसए दिवडु दम्मु ववहारो ।
ता सतरहि पाऊणिहिं सवायनवमास किं हवइ ॥ ७४
सड्ढ मणह भाडइ जोयण सतिहाइ दम्म पउणछुए ।
ता नव सवा मणाण किं हुइ दस जोयणे पउणे ॥ ७५
जइ बारस कम्मयरा चहु दिवसिहि तीस दम्म पावंति ।
पणयालीस दिणेहिं ता किं पावंति अट्ठ जणा ॥ ७६
जइ किरि मिंचि सुवन्नो गुजूण तिमास पउणवीस घणे ।
ता सड्ढदसी वन्नी गुजहिय दुमास कइ मुल्ल ॥ ७७

१९. अथ सप्तराशिकमाह–

छ दीह तिकर वित्थर दुइ कवल नवइ दम्म पावंति ।
नव दीह पंच वित्थरि ता कवल सत्त कइ मुल्ल ॥ ७८

२० अथ नवराशिकमाह–

चीर बारह पंच वन्नेहि,
ते दीहुण सत्त कर, तिन्नि हत्थ वित्थारु अच्छइ ।
तह सव्वह मुल्ल किउ छ सय दम्म दोसियहि निच्छइ ।
जइ चहु वन्निहि अट्ठ कर दीहि पंच वित्थारि ।
ता नव चीरह मुल्लु कइ, कहि दोसिय विचारि ॥ ७९

२१ अथ एकादश राशयो(शीन्) आह–

दु छ ति दु इग पत्थाई जा कर पुड मुग सट्ठि दम्मेहिं ।
ता नव ति दुग तिकमे पत्थाई मुग कइ मुल्ल ॥ ८०

२२. अथ न्यस्तत्रैराशिको(क)माह–

मज्झ च आइगुणिय अंतेण विहत्त वित्थ तियरासी ।
अंताइ एग जाई ठवि मज्झे अंत जाईय ॥ ८१
दह सेइयमि पत्थे मविया मत्तहिय वीस पत्थाइ ।
सोलसि सेई पत्थे कह पत्थ हवंति ते कहसु ॥ ८२
छासट्ठि टंकतुल्ल तुलिया मण थीस वक्खरं तइया ।
जइ बाहत्तरि तुल्ल तुलिय ति हवंति कित्तिय मणा ॥ ८३

सट्टिक्करस वत्ती तोला चालीस सङ्घ कणओ य ।
ता दस सघाय वत्ती पवट्टणे हवइ केवइओ ॥ ८४
नव आयाम तिवित्थर दुइ सइ वीसहिय कवला सव्वे ।
पचायाम दु वित्थर कइ कवल होंति ते कहसु ॥ ८५

२३ अथ क्रयविक्रयमाह–

मज्झत गणिय मूल अंताई गुणिय सव्व उप्पत्ती ।
विक्रय क्रयतरि भायं नाइज्जइ मूल्लाहघणं ॥ ८६
सत्तरह मण टकेण लिज्जहि पन्नरस विक्किणिज्जति ।
जइ दस टका लाहे ता कहु टकाण ते मूले ॥ ८७
तिहु दम्मि पच वत्थू लिज्जहि नवि दम्मि सच विक्किज्जा ।
दम दुवालस लाहे कित्तिय दम्माण सा मूले ॥ ८८
उवरि दम्म तलि वत्थु ठविज्जहि वंकइ विम्मि वि रासि गुणिज्जइ ।
आइम रासि लाहि ताडिज्जइ विहु रासि अंतरि पाडिज्जइ ॥ ८९

२४ अथ भांडप्रतिभांडकमाह–

मह पडिभडकरणे विवरीय मुल्ल फल च विवरीय ।
कमि गुणवि दोवि रासी हरिज्ज लहु रासिणा भायं ॥ ९०
सइ दम्मि दुमण पिप्पलि तिहु सय दम्मेहि पच मण सुठी ।
ता पिप्पलि सच मणे पाविज्जइ सोंठि कितिय मणा ॥ ९१

२५. अथ जीवविक्रयकरणमाह–

जीवस्स विक्कएण य वरिस विवरीय फलक विवरीय ।
सेसं च पुव्वविहिणा जाणिज्जहु जीववरमुल्ल ॥ ९२
दस वरिसा तिय करहा टका सठ अठ्ठ अहिय पावति ।
सा नव वरिसा करहा कइ मुल्ल हवइ पचाण ॥ ९३

॥ इति परमजैन श्रीचन्द्राङ्गज ठक्कुरफेरुविरचितायां गणितसार कौमुदीपाठ्यां पचविंशतिपरिकर्म्मसूत्र (आणि ?) समाप्तानि ॥

॥ इति प्रथमोऽध्याय ॥

[द्वितीयोऽध्यायः ।]

१ अथ भागजाती कलासवर्ण्णनमाह–

समछेय करवि पच्छा असजुई हवइ भागजाई य ।
अद्धस्स अधु(द्ध) तस्स य पणस-छट्ठसु किं हवइ ॥ १

२. अथ प्रभागजातिमाह–

छेएण छेय गुणिय असे अंसा पभागजाई य ।
अद्धस्स अधु (द्ध) तस्स य पणस छट्ठसु किं हवइ ॥ २

३ अथ भागभागजातिमाह–

छेएण रूवगुणिए छेयगमे हवइ भागभागविही ।
अंसाण जुई भाय घणेण पिहगस गुणवि फल ॥ ३

एगि तिभाय दुभाय एगि सु नव भाय सत्तमाय च ।
एगि छमाय तिभायं किं सयदम्माण पिहुगु फल ॥ ४

वावि छ कर चउ नाल्य भरंति कमि दिणिगि वल ति घडरंसो ।
जइ समकालि ति मुचहि ता पूरहि केण कालेण ॥ ५

४ अथ भागानुबधमाह–

अहहरि उवरिसु हरु गणि स अंसि हिट्ठिमहरेण गुणि रूव ।
जा हवइ चरिम छेय एसा भागाणुबधविही ॥ ६

सड्ढ तिय तस्स पाय सहिय ज तस्स छट्ठमसजुय ।
तस्सद्ध जुत्त किं हुइ तहअ सतिहाय तस्स पायजुयं ॥ ७

५. अथ भाग(गा)पवाहमाह–

हिट्ठिम हरि उवरिमहरु गुणिज्ज हिट्ठिम हरे गयसेण ।
उवरिम रूव गुणिज्जहि एव भागापवाह्ं च ॥ ८

तिय अद्धूण पउणं तस्स स्वट्ठसूण तहय अद्ध च ।
तस्स चउरसरहियं किं किं पचेय हों(हो)ति फलं ॥ ९

६ अथ भागमातृजाती आह–

भागाई पच जाई समासण त च भागमचीय ।
पिहु पिहु जहुत्तकरण करेवि समछेय असजुई ॥ १०
अद्ध पयस्स माय तिभायमाय तछद्ध अद्धहिय ।
तइयस्सु अद्धहीण एगहु किं हवेइ घण ॥ ११

७. अथ वल्लीसवर्णने आह–

वल्लीसवण्णविही हिट्ठिम छेएण गुणवि छेयसा ।
उवरिमअंसे रिणु धणु पक्खीरए हिट्ठिमसाण ॥ १२
दुइ तोला तिय मासा तहेव चउ गुंज पच विसुवा य ।
ते सत्तमसहीणा सवण्णे किं हवइ वल्ली ॥ १३

८. अथ स्तंमस(ऽस्तमाद्य)कजाती आह–

समछेय अंस पिंड रूवाओ सोहि ज हवइ सेस ।
तेण पच्चक्खभाय लद्धके थमपरिमाण ॥ १४
अद्ध छडस दुवालस असा जल पक वालुयत्यकमे ।
पच्चक्ख तिन्नि कविय भणि पडिय ! थमपरिमाण ॥ १५
भारू पचमु गयउ पुवद्दि,
दक्खिण अट्ठमउ सोलसमु पच्छिम पणट्ठउ,
चाउद्दु गउ उत्तरह सीहमइण इम छट्ठु नट्ठउ ।
तलइ रहिउ पडिय ! निसुणि गोरू सउ पणयालु,
ते इकट्ठा जइ कराहि कइ लोडइ धणवालु ॥ १६
अधु सत्तिहाउ विज्झे खडसु सत्तस अहिउ जलतीरे ।
अट्ठसु नवसहिउ थलिगय चउसेस किं जूहे ॥ १७

॥ इति परमजैन श्रीचन्द्राङ्गज ठक्कुरफेरूविरचिते गणितसारे कौमुदीपाठ्यां अष्टौ भागजातयः ॥

॥ इति द्वितीयोऽध्याय ॥

[तृतीयोऽध्यायः ।]

१ अथ व्यवहारगणनायां मिश्रकव्यवहारे आह–

नियकालि पमाणधण फलेण परकालु वि तव्वोय ।
मिस्सि गुणिऊण वोमवि जोयाविहु तम्मि फलमूलं ॥ १
मासेण पचगसए चहु मासिहि दम्म पचसह वीसा ।
तस्स फल किं मूलं जइ मुणसि त भणसु सिग्घेण ॥ २

२. अथ भाण्डके आह–

नियकालि पमाणघण गुणिज्ज फलकालि कम्मिफलाईणि ।
अंसाण जुईभाय मिस्सि गुणवि लद्ध मूलाई ॥ ३
मासे सयस्स पण फलु एग विप्पस्स अद्ध विचीय ।
लेहगपायं वरिसे नवसयफ्वहियमिस्सघण ॥ ४

३ अथ एकपत्रीकरणे आह–

गयकाल फलसमासे मासफलद्धेण भाइ कालो य ।
मासफलु पिंडु सयगुणि घणपिंडे हरि सयस्स फलं ॥ ५
दुगि तिगि चउ पंचग सइ मासे घणु दिन्नु एग दु ति छ सयं ।
चहु छहि दसह मासिहि एग पच कइ हवइ ॥ ६

४ अथ प्रक्ष्ये(क्षे)पके आह–

समछेयसजुई हर मिस्सं पत्तेयअंसि गुणिऊण।
पक्खेवकरणमेय मिस्साउ फल मुणिज्जेइ ॥ ७
दुनि तिय पच चउ भण वीय पक्खविय तं च निप्पन्नं ।
विसय दहोत्तर हल हरि विभाण वि किमह मिस्सफल ॥ ८
टंकह छहि गुणिज्जहि मुद्धे दस टक पचि दम्मेहिं ।
टक छ्यासी पट्टं किं गुणिय किं गुणावविय ॥ ९
कचोलु सच उवए सत्तोवरि एगु हिट्ठि विक्खमा ।
दसि दम्मि भरिउ चद्दणि अंगुलि इक्किक्कि कइ मुद्धो ॥ १०

५. अथ समविषमक्रययोः आह–

मुल्ले वत्थु वि हत्थो पिहगस गुणेय अंस जुवभाव ।
दव्वेण अंसगुणिओ समविसमक्य तिरासि विहि पुव ॥ ११
दम्मिक्कि सेरु छुरडइ तिम्मि यहेडा छ सेर आमलया ।
भो विज्ज ! देहि फक्किय सममत्ता इक्क दम्मस्स ॥ १२
तिहुँ अट्ठ सेरु पिप्पलि सतिहा नवि दम्मि मिरिय सेरु इगो ।
चहुँ पउणु सेरु सुठी इगस्स तिउड्डू सम देहि ॥ १३
दमि नव सेर तदुल इक्कारस मुग सेरु इक्कु घिओ ।
ति दु इग अंस वणिय ! कमि सवाय दम्मस्स मे देहि ॥ १४

६ अथ सुवर्णव्यवहारे आह–

ज सुवन्ना ज तुल्ल त तेण गुणेवि कीरए पिंड ।
तुल्लि विहत्ते वन्नी वन्नी भाए हवइ तुल्ल ॥ १५
नव दस अड्डिक्कारस वन्नी तोलाय तिय छ पण जुयल ।
एगत्थ गालिय त केरिस वन्नी हवइ कणय ॥ १६

७ अथ सुवर्णे भिन्नोदाहरणमाह–

अट्ठ सवा नव पउण छ वन्नी तुल्लेति पच दुइ मासा ।
तिय छ पण अंस सहिया आवट्टे किं हवइ कणय ॥ १७

८. अथ पक्वसुवर्णस्य आह–

वन्न सुवन्न गुणिक्क विपक्क कणए विहत्तवन्नाय ।
इच्छा वन्नीभाए पक्कसुवन्नस्स तुल्लक ॥ १८
छ पणट्ठ सत्त तोलय नव सत्त दसट्ठ वन्नपक्काय ।
संजायवीसतोला केरिस वन्नी हवइ कणय ॥ १९

दुतीक –

सत्तट्ठ नव छ वन्ना पउ पच ति सत्त तोल्या कमसो ।
इक्कारसीय वन्नी तुल्ले किं हवइ पक्कविओ ॥ २०

९. अथ नष्टसुवर्णवर्णमाह–

उप्पन्नवन्नएण सुवन्नपिंड गुणेवि सोहिज्जा ।
वन्नसुवन्नवहिक्क गयवन्न सुवन्नए भायं ॥ २१
तिय पंच सत्त मासा नवट्ठ दसवन्न अट्ठमासन्ने ।
उप्पन्ना दस वन्ना का वन्नी अट्ठमासाण ॥ २२
उप्पन्नवन्नताडिय कणयजुई वन्नकणयवहपिंड ।
सोहिवि भाय गयकणयवन्नि उप्पन्नवन्नूणे ॥ २३
अहियस्स हीणछेय हीणस्स य अहिय इच्छ वन्नीओ ।
छेयक तुल्ल भागा इय इच्छाकरणवन्नविही ॥ २४
पण सत्त नव इगारस वन्नीओ पिहुगु पिहुगु किं लिज्जा ।
जेण हुइ दसी वन्नी तुल्ले तोलिक्कु त भणसु ॥ २५

॥ इति मिश्रकव्यवहारम् (रः) ॥

१ अथ सेढीव्यवहारो यः (? यथा–)

गच्छेगूणुत्तर हय सहाइ अत्तघणु पुणवि आइ जुयं ।
दुविहत्त मज्झिम घण गच्छ गुण हवइ सव्व घणं ॥ २६
वीसाइ पंच उत्तर सपादिणे तुरिय हरडईमाण ।
त भणि तह नट्ठाई उत्तर गच्छ पुणो भणसु ॥ २७

२. अथ नष्टाद्यानयने करणमाह–

नट्ठाइजाणणत्थे सव्वधण गच्छ भत्तलद्धाओ ।
एगूण गच्छिउ तरू गुणेवि दलि सोहि सेसाई ॥ २८

३ अथ नष्टोत्तरानयने करणसूत्रमाह–

उत्तरनट्ठाणयणे गच्छेण विहत्तसव्वधणरासी ।
आइविहीण काउ निररेगच्छ दल लद्ध चयं ॥ २९

४ अथ नष्टगच्छानयने आह–

अडउत्तर हयगुणिय दुगुणाई सुद्धि हीणवग्गजुयं ।
मूल घण सि उणूण सचय चयविउण हरि गच्छ ॥ ३०

५. अथ संकलितैक्यानयने आह-

इग चय संकलियक वि जुएण पएण गुणिवि तिहु भाय ।
लद्ध संकलिय जुई न ससय इत्थ नायव ॥ ३१
संकलिय वग्ग तह घण पिहु पिहु पचाण किं हवइ इक्क ।
गणिऊण भणसु सिग्घ जय गणियविहिं वियाणासि ॥ ३२

६. अथ वर्गैकघनैक्यानयनमाह-

इच्छपय विउणसेग ति हरिय संकलिय गुणिय वग्गजुई ।
संकलियवग्गु ज हुइ त घणपिंड वियाणेहि ॥ ३३

७ अथ संकलितवर्गघनैक्यानयने आह-

सेग विउण पय पय गुण सेग पयद्धेण गुणिय हुइ ज त ।
संकलियवग्ग तह घण तिन्हाण जुई मुणेयव ॥ ३४

॥ इति सेढीव्यवहारे सूत्रगाथा सम्मत्ता ॥

अथ क्षेत्रव्यवहारमाह-

चउरंस दीह चउरस विक्खभायामु गुणिय त खेच ।
चउरंसे छ कर भुया ति पच कर दीह चउरंसे ॥ ३५
भुव पिंडद्ध चउहा कमेण भुवहीण सेस गुण सुक्कमे ।
तस्स पए त खिच तिभुए अ चउब्भुए जाण ॥ ३६
मुहभुव कर पणवीसं भूमिभुव सट्ठि वाम वावन्न ।
दाहिण उणयालीस किं जायइ तस्स खिचफल ॥ ३७
भूमिभुव हत्थ चउदस तेरस एग च बीय पन्नरस ।
एय विसम तिकोण खित्तफल अस्स किं हवइ ॥ ३८
सयलाण चउरसाण भूमुह जोयद्ध लम्ब गुणखित्त ।
तसाण भूमुवद्ध लम्बगुण हवइ खित्तफल ॥ ३९
भुवजुव तेरस पनरस भूभुव इगवीस पच हत्थ मुहे ।
मज्झे लघु दुवालस एरिसखित्तस्स किं माण ॥ ४०

तिकोणफल विठल भूमत्त मज्झ लद्धओ हवइ ।
भुवलद्ध वग्ग अंतरि सेसस्स पए हवइ अहवा ॥ ४१
भुवलद्ध वग्गपिंड तस्स पए हवइ निच्छय कण्णं ।
सव्वत्थ खित्तगणणे एस विहि हवइ नायव्वा ॥ ॥ ४२
विक्खंभ वग्ग दह गुण तम्मूले वट्टखित्त परिहि धुव ।
विक्खम पाय गुणिया परिही ता हवइ खित्तफल ॥ ४३
दस विक्खमे खित्ते समवट्टे किंपि जायए परिही ।
गुणिऊण भणहि पढिय ! तस्सु खित्तफलस्स किं हवइ ॥ ४४
वट्टस्स य विक्खमं तिऊण तह छट्ठमसजुय परिही ।
विक्खमद्धे गुणिया परिहि दल तस्स खित्तफल ॥ ४५
जीवा सर पिंडद्ध सर गुणिय वग्ग दहगुणं काउ ।
नव भाए ज लद्धं तस्स पए हवइ धणुह फल ॥ ४६
धणुपिंडे इगवीसं जीवा पनरस छक्क छक्क जस्स सरं ।
भणि पढिय ! गणियफल किं जायइ तस्स धणु खित्त ॥ ४७
सरवग्ग छगुणकियं जीवा वग्गहिय मूल धणु पिंडं ।
धणुवग्गाओ जीवा वग्गूण छभाय मूल सरं ॥ ४८
धणु सर जुयद्धहीणं धणुद्धाओ वग्ग चउण पय जीवा ।
पत्तेय गणियमाण एयाण फल हवइ नूण ॥ ४९
थालिंदे तिभुव दुग भुरुजे दो धणुह चउरसं मज्झे ।
दो धणुह जवाकारे कुलिसे चउभुव दु कम्बिज्जा ॥ ५०
तिभुव गयदतोवम चउब्भुव सगडचक्कवट्टसम ।
च्चदस्स सरिस धणुह वट्ट परिपुन्नचदसम ॥ ५१
थालिंदोवम खित्तं वित्थारे पचवीस कर दीहे ।
दल लद्ध तिन्नि घरा गयदते किं हवेइ फल ॥ ५२
निम्मागारे खित्ते उभयमुहे तिकर पचकर लद्धे ।
धरामुहे पण हत्थ ति मज्झि दह लद्ध कुलिसुवमो ॥ ५३

॥ इति क्षेत्रव्यवहारसूत्रं समाप्तं ॥

१ अथ खातव्यवहारमाह–

तल्मुह मज्झे विसमं उच्च अहव दीह-विसम वा ।
त एगट्ठ काउ विसमट्ठाणेहिं हरिय सम ॥ ५४
सम वित्थर-दीहगुण उच्चे गणिय हवइ खित्तफल ।
खाय समसुववेहे घणोवम जायए गणिय ॥ ५५
दु सि चउ कर उच्चे पुक्खरणी पच हत्य वित्थारे ।
सोलस हत्थायामे किं जायइ तस्स खचफल ॥ ५६
दीह कर सट्ठ सोलस वित्थारे दस सवाय अद्धुदए ।
अह वित्थरु दीहुदए सम नवकर किमिह पिहगु फल ॥ ५७

२ अथ कूपस्य फलानयनमाह–

कुववित्थारं वग्ग तिउण खडसहिय वेहिं गुणियव्व ।
चहु भाए ज लद्ध त करसंखा हवइ सव्व ॥ ५८
कूवस्स य विक्खम छ हत्य कर वीस जस्स उच्च ।
कूवस्स तस्स पडिय ! खचफल किं हवेइ धुव ॥ ५९
तिकोणयाइ खिचा पुव्वुचा खित्तफलसमा जाण ।
ते वि गुणिय तिवेहे हवति घणहत्य खचफले ॥ ६०

३ अथ पाषाणफलानयनकरणसूत्रम्–

दीहगुलाणि वित्थर पिंडगुल ताडियाणि विमएहिं ।
जिणें अट्ठ तेरसेहिं हवति पाहाणघणहत्था ॥ ६१
सड्ढतिय हत्थ वित्थरि करद्ध पिंडे सिलासहे जस्स ।
ससिहाय पच दीहे कमित्थ हुइ तस्स गणियफल ॥ ६२
ज हवइ विविहरूय वट्ट तिकोणाइ सयलपाहाण ।
खित्तफलु व्व गुणेविणु पिंडगुण हवइ तस्स फल ॥ ६३
दस हत्थे विक्खमे घरट्टपट्ट व्व वट्टपाहाणे ।
। दिवढकरमाणपिंडे किं होइ इमस्स गणियफल ॥ ६४
गोलसुदयघणद्ध सनवसे अहिय त हवइ सेल ।

परिहि चउत्थ भायं हय परिहि नवसहिय खित्त ॥ ६५
छ कर दीहुदय वित्थर समवट्ट गोलयस्स पाहाण ।
किं गणिय किं खित्त ज हुइ तं भणहि पत्तेय ॥ ६६

४ अथ पाषाणस्य तौल्यमाह–
घणकविय इक्केण ढिल्लियसंभूय पाहण सव्व ॥
पचास मण जायइ तुलिओ चउवीस तुल्लो [य] ॥ ६७
वसी अडयालीसं मम्माणी सट्ठि कसिणु घासट्ठी ।
जज्जावय कल्लाणय ऊणवमक्कुंदुक्कडो सट्ठी ॥ ६८

॥ इति खातव्यवहारसूत्रगाथा १५ सम्मत्ता ॥

अथ चितिव्यवहारमाह–
गोमट्ट पायसेव चउरसं वट्ट मुनोरय तोंक ।
सोवाण पुल कूव वावी इय नवविहा भित्ती ॥ ६९
पढममवि सुद्धभित्ती वित्थरदीहुदय गुणिय ज हवइ ।
तस्साउ धार वारी आलय कड्ढाउ सोहिज्जा ॥ ७०
सेसाओ दसमंसं दिवड्ढय मट्टियस्स घट्टेइ ।
सेसा पाहणसंखा हवति घणहत्थमाणेण ॥ ७१
पच कर भित्ति उदये दस दीह दुवित्थरे य तम्मज्झे ।
धारु ति उदइ दु वित्थरि का सखा हवइ पाहाणे ॥ ७२

अथ इट्टानां गणना–
दीहे वित्थरिपिंडे अङ्गु तिहा अट्ठमसु इट्ट कमे ।
चउ उदइ विवडु वित्थरि दह दीहे भित्ति के इट्टा ॥ ७३

१ अथ गोमटमाह–
गोमट्टमूलपरिही अद्ध पा परिहि गुणिय सनवंसं ।
भित्ति(?त्ति)गब्भाओ चयण बाहिर मज्झाउ त खित्त ॥ ७४
भित्ति(?त्ति)गब्भाओ परिही ऊणवीस छ वित्थरस्स किं चयण ।
बाहिर परिही पढिय । चउवीस किं हवइ खेत्त ॥ ७५

परिहीविक्खमझे गुणिय नवसहिय खल्लु गुमट्टे ।
अणुमक्सहिय भणियं न संसय इत्थ नायव्व ॥ ७६

२. अथ पायसेवमाह–
चउरंस पायसेव बाहिर भित्ती य मज्झिम थम ।
वित्थरु दीहुदय गुण ज हुइ त कविया जाण ॥ ७७
भित्ति तह थम अंतरि कमुष मग्ग फिरंत त दीह ।
तल उवर जुयहुदय वित्थर गुणिय हवइ पूरं ॥ ७८

३ अथ वई–
तह वट्टपायसेवे थम भित्ती य गणहु कूवु व्व ।
पूरंतर छचिदल त चउरंसु व्व जाणेह ॥ ७९

४ अथ मुनारया–
वट्टपासेवसरिसा मुनारया होंति सयल मज्झाओ ।
पुणु इत्थिय विसेसं तिकोणदल वट्टदलभित्ती ॥ ८०

५. अथ ताक–
वारिस्सुवरिम ताक दीहुदए गुणिय भित्तिपिंडगुण ।
सत्तस दिवड्ढण सिहाजुय जायए खल्लु ॥ ८१
सत्त कर ताक दीह सिहासहिय हत्थ चारि जस्सुदय ।
हत्थेग भित्तिपिंड किं जायइ तस्स खल्लफल ॥ ८२

६. अथ सोपानम्–
सोवाणहिट्ठुवरिम जोयह उदयवित्थरे गुणिय ।
नव हिट्ठि उवरि एग दु पिहुल छह उवइ किमिह फल ॥ ८३

७ अथ पुलपयमाह–
वित्थरु धीह उदए गुणिय, ताकविहीण मुवजुवसहिय ।
निग्गम अहिय तह खल्लूण, जलपुल्यध त हुइ नूण ॥ ८४

८. अथ कूप–
कुवभित्तिमज्झि परिही वित्थर उदएण गुणिय हवइ फल ।
दस उदइ दु कर वित्थरि अट्ठारस परिहि किं चयणं ॥ ८५

अथ वापी पट मेदि–

चउरंस दीह वट्टा खडस अट्ठस संखवच्चाई ।
बहुछदि होंति वाकी(?वी) ते दिट्ठपमाणि गुणियति ॥ ८६

॥ इति थितिव्यवहारसूत्र गा० १८ सम्मत्ता ॥

अथ क्रकचव्यवहारसूत्रकरणमाह–

दारु जहच्छियमाणे तस्साउ जहिच्छ फलिह कीरति ।
दुण्ह वलु दीहु वित्थरु गुणिज्ज फलहेहिं भागु चि ॥ ८७
अट्ठ कर दीहु दारो करदु वित्थारि वलि तिहाउ करे ।
दीहेगु पाउ वित्थरि नवसु दलि किमिह फल्हेण ॥ ८८

अथ करवत्ते दारुच्छेदितगणना–

करवच लीह जे हुइ ते दीहिण गुणिय होंति हत्थाइ ।
वित्थरवसाउ कोडी चिरावणी अग्घमाणेण ॥ ८९
इग दिवढ विसुव सइ गजि दु ति वित्थरि गजि असीहिं कोडी य ।
चहु विसुवहि सट्ठि गजे पचाइ नवति चालीसे ॥ ९०
दस्साइ जाव तेरस विसुवा वित्थारि ताव तीसेहिं ।
उक्करते जा सोलस ता वीसि गजेहि कोडी य ॥ ९१
उवरि जा वीस विसुवा ता कोडी दसि गजेहि जाणेह ।
उवरि करवतु न चलइ इय भणिय सुचहारीहिं ॥ ९२
दारु गज सत्त दीहे त्रिसोवगा अट्ठ सत्त वित्थारे ।
दस लीह फलह गारस चीरिय कइ कोडिया होंति ॥ ९३
अट्ठ जव कवियगुलि जवेगु करवत्त लीह फलहि इगे ।
वट्टस्स सडकरणे पिंड त वीहु जाणेह ॥ ९४
महुव वड साल सीसम निंव सिरीसाइ सम चिरावणिय ।
खयरजण कीर सवा सेंवलु सुरदारु गुणि पउण ॥ ९५

॥ इति क्रकचव्यवहारो समत्तो ॥ गाहा ९ ॥

अथ राशिव्यवहारमाह–

समभुवि कयऽन्नरासी तप्परिहि खडंस वग्गु उदयगुणे ।
ज हुइ ते घणहत्था घणहत्थे इक्कि पत्तो य ॥ ९६
तिल कुद्दव घन्नाण नवसु उवओ य रासि परिहीओ ।
दुसमसु मुग्ग गोहुम बोर कुलत्था इगारसमो ॥ ९७
सिहरु व्व वट्टरासी चउरुदय तस्स परिहि छत्तीस ।
भित्तिसंलग्गअद्ध कूणंतरि पाय परिही य ॥ ९८
बाहिरकूणे पउण परिही उवओ सएह जाणेह ।
किं जायइ करसखा पिहु पिहु रासीण त भणसु ॥ ९९
दल पाय पउण परिही गुणिवि कमे दु चउ सत्तिहाएण ।
पुव्वु व्व फल पच्छा नियनियगुणयारए भाय ॥ १००

॥ इति राशिव्यवहारसूत्र सम्मत्त ॥ गाहा ५ ॥

अथ छायाव्यवहारसूत्रकरणमाह–

थमाइ भित्ति छाया दंडि मिणवि गुणहु दडमाणेण ।
तस्सेव दडच्छाया हरिज्ज भाय फलेणुदय ॥ १०१
चउवीसगुल दंडे छाया थमस्स तिन्नि दंड सवा ।
दड सवा अट्ठारस अगुल किं थमु उच्चत्त ॥ १०२

अथ लग्नानयनकरणम्–

समभूमि दु कर वित्थरि दुरेह वट्टस्स मज्झि रविसंक ।
पढमत छाय गब्भे जमुत्तरा अद्धि उदयत्थ ॥ १०३
चउ चउ इग मयराई पण तिय इग कक्कडाइ धुव रासी ।
सचगुल पह मुंणिजुव फल रुगयजुत्त दिवस गय सेसं ॥ १०४

॥ इति छायाव्यवहारसूत्रं सम्मत्त ॥ गाथा ४ ॥ एकत्र गाथा १०४ ॥

॥ इति परमजैन श्रीचन्द्राङ्गज ठक्कुरफेरुविरचितायां
गणितकौमुदीयाभ्यां अष्टौ व्यवहाराणि(रा) समाप्त(प्ताः) ॥

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

[चतुर्थोऽध्यायः ।]

अथ देसा(?शा)धिकारमाह–

डिल्लिय रायट्ठाणे कज्ज भूय करण मज्झमि ।
जं देसलेहपयडी त फेरू भणइ पयडुओ ॥ १
जसु जसु वटिवि दिज्जइ तसु तसु जीवलइ ज भये दव्वो ।
सो गुणिवि लब्द घम्मिहि सव्वाण य जीवलइ भाय ॥ २
सेव रायह, [सेव रायह] पच जण गए य,
तह सव्वह जीवलइ तीस सहस्स एगत्य रासिण,
तिय तेरस पच दुइ सच सहस इय भिन्न रूविण,
वय कारणि जा नवसहस ते सव्विवि पावसि ।
निय निय जिवला कइतह किं किं कसु आवसि ॥ ३
उपक्खइ ज दव्वं हुइ त पंडिय ! करिज्ज सयगुणिय ।
चट्टीहरे वि भाय ज लब्भइ त सई होइ ॥ ४
गामि नयरि देसे जइ नवि लखि पचास सहसि चट्टी य ।
सचरि सहस उपक्खइ ता तस्स किसा सई होइ ॥ ५
जिसा सई भेइज्जइ जिचिय घण कइ तहि स चट्टिज्जा ।
जुयल तंक फुसिवि तह पणभागे होंति विसुवा य ॥ ६
सहसेति अंतिमका फुसवि कमे लिहसु दु चउरट्ठ गुणा ।
ते विसुवाई जाणह एव दस सहसि लक्खे वा ॥ ७
जइ चट्टी मूलघण दु लक्ख नव सहस पच ■ [? ग] तीसा ।
चउक सई भेइज्जइ ताम घण किचिय हवइ ॥ ८

(१) अथ देशांके–

घणरासि अंतिमको फुसिज्ज त विठण विसुय घसमसो ।
दो अंतिमक फुसिए पणसि तह विसुव सयमसो ॥ ९
रासिस्स अतिमके भिसुया विसुवसगाइ सेस कमा ।
आइम अंकाणद्धे धम्मा जाणेह धीसंसे ॥ १०

(२) अथ मुक्तातयमाह–

मुक्तातइ ज वरिसे त गय दिण गुणवि वरिस दिणिभाय ।
पचि सहस्सि मुकातइ नवि दिणि चउमासि किं हवइ ॥ ११
जित्ता दम्म मसेलिय विज्जहि मासिकि ते तिभागूणा ।
सेस हवंति विसोवा दिवसे दिवसे मुणेयव्वा ॥ १२

(३) अथ चावकगती–

लहुगइदिणसंखगुण लहु दीहगइस्स अंतरे भाय ।
लद्धदिणेहि मिलती अप्पगई लहुगई दो वि ॥ १३
चउ जोयणीय पच्छा नवम दिणे सत्त जोयणी चलिओ ।
तस्स वहोडण हेऊ मिलेइ सो कइय दिवसेहिं ॥ १४
पचाइ दु वड्ढता जोयण दिवसेण चल्लए करहो ।
जोयण चउदस करही कित्तिय दिवसेहि सो मिलइ ॥ १५
आइ मज्झत रासी अताओ आइ हीण मज्झेण ।
भाए लद्ध वित्तुण एगजुय करह दिणमाण ॥ १६

(४) अथ संवत्सरानयनमाह–

विक्कमाइ जे वरिस मास चित्ताइ करिवि दिण,
छे मुँणि नदे लद्धहिय मास ते वच्छर जुय पुण,
नैव निहोण रैस वरिस मास दुइ दुइ दिण ऊणय,
साजिय वच्छरु हवइ मास मुहरम माईणय,
साजिकु पुणेव करिवि पर अहिय मास सोहेवि पुणि ।
नैव मुँणि छे वरिस दुइ दिण अहिय पडिय। विक्कमसमउ भणि ॥१७

॥ इति देशाधिकारकरणसूत्रं सम्मत्तं ॥

(५) अथ वस्त्राधिकारमाह–

जुज पट्टोलय अतलस साराई पट्ट वत्थ एमाई ।
कर वासक ताणाई इय सुहमा थूल साडाई ॥ १८

सय हत्थि सयल कप्पहि सीवाणि कर विवड्ढ एगु कत्तरणे ।
इग दु तिय कोर घुवणे घट्टइ पट्टसुयाइ कमे ॥ १९
सयल खीमेहिं कप्पड समसंख नवार किंचि हीणहिया ।
दहली जविणा सव्वे थमाउ सवाइया उदए ॥ २०
उदयस्स वार विमुवा कमरतले अट्ठ उवरि सव्वेहि ।
इग थमि दु थमे वा इत्तो सिय कप्पड भणिमो ॥ २१
सव्वाण पडतलोवर जुयद्ध उदए गुणिज्ज जा कमरं ।
पिट्ठी वित्थर दीह हय अट्ठस हिय जुय वत्थ ॥ २२
मज्झिम डडस्साओ चउण खीमस्स कडयलपवेसो ।
तस्स दिवड्ढ परिही बारसमसूण चउरसे ॥ २३
चउ कर मज्झिम थम सोलस कमरं च परिही बावीसं ।
तस्स खीमस्स पडिय ! किं जायइ वत्थपरिमाणं ॥ २४
अट्ठंस तह य वट्टे तिउण कमरं तयद्ध जुय वउरं ।
इय घर हय सीमाणय थमाउ तनाव चउगुणिय ॥ २५
तगोटी इग थमा हिट्ठुवर जुयद्ध उदय गुण वत्थ ।
थमा परिहि पणगुण दुगथमा मज्झ पड अहिया ॥ २६
खरिगह मडव उवर उभयदिसे जि कर तस्स अद्धुदय ।
तत्तो पणगुण परिही परिहिदल उदय गुण वत्थ ॥ २७
भित्तिवलय पड दोन्निवि दुवार पड बेवि उदयदीहगुणा ।
इय वत्थ अद्धद्ध मडव सह वार तह भित्ति ॥ २८
वारिगह खडहुसा च्छत्तागारा य मडवागारा ।
एयाण च तरक्क हिट्ठुवर जुयद्ध उदयगुणा ॥ २९
इग थम छगुण परिही दुथम परिही य मज्झ पड अहिय ।
अट्ठस जुत्त उदए थमाउ तनाव पचगुणा ॥ ३०
मीराण वारिग हुइ चिल्ग चउरस दु एग थमा य ।
सम उदय चउण कमर विउण परिहि अट्ठमस हिय ॥ ३१

मच्छहलि पत्तवल्ली भुयुक्काकलिय मज्झ मल्लरिया ।
एयाण य कप्पडओ तह तहय पुडस्स पुण अहिओ ॥ ३२
छायापढ पवोवय सराइ चाजमणियाइ मित्तिपडा ।
वित्थरु दीहे गुणिया मुज्झति विणोयचित्त विणा ॥ ३३
दहली जरूइ ताफा छज्जय कुव्वाय परख पडिरूवा ।
छत्तालव निसाणा ते टिप्पपमाणि नायव्वा ॥ ३४
उद्देस सियावणिय सइ गजि नावार दम्म सोलसग ।
चित्त गजिक्कि पच्छा दहली जसराइ चेति दुग ॥ ३५
किमिस गजिक्कि चिचे मुहमे चउवीस थूलि वीसा य ।
पचारि टक डोरी इग सुत्त अरुण नील वा ॥ ३६
नावार सरज चम्म नीलारुण कसिण वत्थ त पयड ।
सुत्त नवार सइ गजि निव पठण इयर सेरद्ध ॥ ३७

॥ इति वस्त्राधिकारे गाहा २१ सम्मत्ता ॥

अथ जन्माधिकारकरणसूत्रमाह–

विणयेरग्गि रसे तेरे चेंठ[व]सिविये जुगे ईसेरे ।
इय कुट्ठिहि ख(०) इगाइ इगिगि समट्ठिय लिहि मणहर ।
केर निहि सोलसे तह य उवेहि वसु तिहि दिसि ससिहरे ।
इच्छादलिरूे हरिवि कमिण ठवि जत्तु मुणहि पर ।
जा सुभु वारि ताणुक्कमिहि जतरि तव्विवरीउ धुय ।
जा सव्वि गेहि विसम हव सम, सम विसमाइ समक जुय ॥३८

॥ पट्ट गृहे जन्म ॥

दाहिण मज्झेगाई सत्तहि य खडाइ पचहि य वामे ।
दंते चउतीस सुरे सरे मुणि उणेवीस ठारे पणेवीस ॥ ३९
पणतीसे ति पर्ठे दु रवी तेरहे जिणे तीमे रिक्खे मगेवीस ।
मेणु ससगेहे दमे नवे नगे तेविसे पुव्वाइ जन छगिह ॥ ४०
१

लिहि धुराउ पाओलि अरू अह मेलि पुणुवरिम ।
पायओलि इय कमिहिं जाव पा जतु हवइ इम ।
मज्झिमऊ उवक्कमिहि चरिम पा जतु पुणु वि कमि ।
चउ गिहाइ चउ सुद्धि जत इय हुइ इग चय कमि ॥ ४१
तिहि[१५] निहि[९] रसे जुयें वसु करें[२] तेर[१३] गोरे ।
सेसि मुणि रवि[१२] मणुं दिसि[१०] कले गुणे सरे ।
अधु पउ चहु चहुठे चउसठि गिहि ।
रूे ति[३] दु चउे कमिऽणुकमेगाइ लिहि ॥ ४२

अथ विषमजन्त्रानयने–

ख इगाइ जहिच्छोलि गिह संखिग जुय सपुव्व पढमोलि ।
तत्तो मज्झिम मज्झिम गिहाउ गिह जुच सुकमेहिं ॥ ४३
धुरि पति चरिम अंकाउ जत्य अहियक्कु हवइ तित्य गिहे ।
सव्वगिहसंख सोहिवि लिहिज्ज इय विसमगिहजत ॥ ४४
जुगें गहे लोयणें हरनयणे इवियें मुंणि अंहेहिं ।
सेसि रसें जतु इगाइ लिहि, इक्कासी कुट्ठेहि ॥ ४५

॥ इति जन्त्राधिकारो सम्मत्तो ॥ गाहा ८ ॥

अथ प्रकीर्णकाधिकारमाह–

(१) कुसुमानयनमाह–

दुगुणा दुगुण जि उव्वरहि, वार वार तिहु जुत्त ।
अह जइ को कुसुमु न उवरइ, ता धुरि तिन्नि निरुत्त ॥ १
इक्कु सुरगिहु चहु दुवारेहिं,
पत्तेय तहि जक्खु इगु वार तुल्ल तसु मज्झि सुरवइ ।
घम्मिउ कुसुमाण वि बहल सयल थिय अद्धद्ध सुठवइ ।
ज तावत इगेगु दे सविहि वारि जक्खस्स ।
सेस वीस जहि उव्वरहि सव्वे कइ हुइ तस्स ॥ २

(२) अथ आम्रानयनमाह–

जे पच्चा ते असि गुणिज्जहि, आइ हीण करि सुद्धि हरिज्जहि ।
लद्ध विउण रूवसंजुत्ता, पढिय ! ते जण गया निरुत्ता ।
सेढिय सकलिये फलसंखा, लद्ध विहत्ते हुइ फलसखा ॥ ३
अंबु अट्ठसु कटक मज्झाउ,
गउ अब तोडण वणिहि मक्खणत्थ आएसि राणय ।
चउरादि वड्डत छह एण परिहि सव्वेहि आणिय ।
ज कटकु थिउ लद्ध तिहि, वीस वीस सव्वेहि ।
कय जण गय कित्तउ कटकु, कइ अवाणिय तेहि ॥ ४

(३) अथ जमाश्रिक वरिसोला नयनमाह–

गुणक थप्पिवि कमिण एगाइ,
उवरुप्परि गुणिवि गुणि वार वार इक्किक्कु दीजइ ।
वरिसोला जे हवइ सव्वि तेइ पढमह भणिज्जहि ।
तेवि अंक रूवाह विणु, पुव्व परिहि गुणियति ।
हुइ ति ति मक्खहि सव्वि जण, पढिय इउ पमणति ॥ ५
गय जमाइय पच्च सासुरइ,
वरिसोलाऽणुक्कमिहि वियइ सासु तद्दिय भरेविणु ।
तह भुजिय रहहि जि ते थिउण ति चउ पण गुण करेविणु ।
अतिम सहि मक्खहि अवरि, भणहि एण वहु खद्ध ।
सविहि एगु सा मक्खिया, कइ थाकइ कइ खद्ध ॥ ६

(४) अथ वस्त्रफलानयनमाह–

जे जण गहति हत्थ ते चउण गुणिज्ज लद्ध वत्थकरे ।
त वत्थु दीहु वित्थरु कर जण गुण चउण सव्वि जणा ॥ ७
वर वत्थु इगु चउदिसि इगेगु करु ठाहिउ तिहु तिहु जणेहिं ॥
नव नव करि अणि पच्चा कइ जण वरवत्थु कइ हत्था ॥ ८

(५) अथ करभगत्यामाह–

आइ-मज्झतरासी अंताओ आइ हीण मज्झेण ।
भाए लद्ध विउण एगजुय करह दिणमाण ॥ ९

घउ जोयणाइ तिय तिय वड्ढतो निच्च चल्लए करहो ।
सोलस जोयण करही किंचिय दिवसेहि सा मिलइ ॥ १०

(६) अथ विपरीतोद्देशाकमाह–

सेसूण जुत्त वग्ग गय अहिय तस्स मूलभाय गुण ।
गुणयारेण विहत्त सो अमुणिय रासि नायव्वो ॥ ११

पचगुण नवविहत्त तवग्ग नवहियस्स मूल च ।
दो हीण तिन्नि सेस विविरिय उद्देसगो रासी ॥ १२

(७) अथ पञ्चचिन्ताज्ञानमाह–

सत्तरि गुण तिउनेहिं पचहि इगवीस पनर सत्तेहिं ।
पिंडेण सउ पणुत्तरु वेवि हरिवि मुणह परचित्तं ॥ १३

चिंतिय मुयकरसहिय बिउणिगि जुय पचगुण मुयासहिय ।
दह गुण रव पणक रूव सेस कमे मुणइ मुत्त विणा ॥ १४

(८) अथ मर्दिताङ्कज्ञानमाह–

सयलकपिंड सोहिवि रासिस्सताउ सेसपिंडाओ ।
ज हीणु नवस्सु पावइ पूरइ मलियकु सुन्नु नव ॥ १५

(९) अथ सदृशांकानयनमाह–

एगाई य नवता अट्ठ विणा इच्छियकु नवि गुणिओ ।
पुव्वकरासि गुणिया हवंति एगाइ सरिसंका ॥ १६

(१०) अथ गोसंख्यानयनमाह–

उवराओ जा हिट्ठि हुइ, ताणुक्कमिहि ठविज्ज ।
उवरुप्परि सव्वेवि गुणि, गावि एम जाणिज्ज ॥ १७

चहु दुवारिहिं गावि नीसरिय,
गय पाणी पंच सरि सत्त रुक्ख तलि ते घइट्ठिय ।
आवत्ति वारिहि नविहि पइसि छच्च वाडिहि निविट्ठिय ।

रक्खहि अट्ठ गुवाल तह, सारिच्छिय सहि तेवि ।
पडिय ! किन्तिय गावि हुइ, तम्मि नयरि सव्वे वि ॥ १८

(११) अथ गोदुगुधघटनमाह–

गो जण सममागेण जणसख इगाइ ठवि कमु कमसो ।
जा अंतिम गोअंक समपण्हे दुद्धु अंकसम ॥ १९

इति श्रीचन्द्राङ्गठक्कुरफेरुविरचिते गणितसारे देशा
धिकाराया' चत्वारि(रः) अधिकारानि(राः)
सम्मत्ता ॥ गाहा ६४ ॥

अथ उद्देशपचग सूत्रमाह–

पणमेविणु सिद्धिकरं भणामि निप्पत्तिपचगुद्देस ।
धन्निक्खुचुप्पडाण देसकरग्घाणमाणाण ॥ १
सव्वत्थ अन्न निप्पइ भूमिविसेसेण अंतरं बहुय ।
ढिल्लिय आसिय नरहड वरुण पएसा इम जाण ॥ २
खित्तस्स दीह वित्थर विग्गहया गुणिय हवइ भूसखा ।
वीस कमि दीह-वित्थरि अह कविय सट्ठि वीगहओ ॥ ३
अन्नस्स फल जायइ निप्पन्ने वीस विसुव वीगहओ ।
सट्ठि मण धन्न कुद्दव चउवीस मउट्ठ जाणेह ॥ ४
चउला मण बावीस तिल सोलस मुग्ग मास अट्ठार ।
वीस कगुणिय चीणय पनरह कूरी सवाईया ॥ ५
सोलस मण कप्पासा चालीस जुवारि दस सणो तह य ।
इक्खु सवाणिय साहा इत्तो आसाढिय जाण ॥ ६
गोहुव पणयालीसं कलाव मस्सूर चणय वत्तीस ।
जव छप्पन मणाइ सरिसम अलसीइ करड दस ॥ ७
वट्टला सोरि कुलत्था चउदस मण होंति सव्व कण तुलिया ।
जीरा घणिया दस मण पर सिक्कय मज्झि गणियति ॥ ८

सव्वे वि वेसवारा हालिम मेत्थी य सग्गवच्ची य ।
कोर धन्नाइ सैंकय सठ दम्म करस्स विग्गहए ॥ ९

॥ इति धान्योत्पत्तिफलम् ॥

नव खारि पचास मणी इक्खुरसो तस्स पचमन्नु गुलो ।
सक्कर छहसे हुइ सोलसमसे य खडा य ॥ १०
तस्स दिवड्ढा रव्वा हीणाहिय पुण हुवेइ नीरवसा ।
पुणु इत्तिय नवि चलइ जा भणियं दिट्ठ पच्चेण ॥ ११
खडाउ तिभागूणा निवात वरिसोल्गा मखे पउणा ।
अइचुक्ख सेस सीरो इग वारा होइ खडसमा ॥ १२

॥ इति इक्षुरसफलम् ॥

तिल-सरिसम करड मणे सिक्क नव सच पंच विसुव कमे ।
दुन्नि अडसु नवसो लूणिउ तच्चो य पउण विओ ॥ १३

॥ इति स्नेहफलम् ॥

दसि छालीएहि गावी महिसी तव्विउण चहु वयहि हलो ।
चुल्हि पवाणे कुढिया नाविय वल्हार मडर विणा ॥ १४
देवइ कन्नचला तह नीली कविलीय गो अवत्तीय ।
विप्प सवासणि य पुणो करं चरं नत्थि एयाण ॥ १५
टका वचीस हलो तिविह कुढी एग दीवढ दु टकीय ।
महिसिक्कु गावि अद्धो बुड्ढिय वसहस्स टको य ॥ १६
इय भणिय ठवेसं हीणाहिय होंति चट्टियणुसारे ।
अद्ध तिहा पा अभ्र तिण प्पर पा हीण मा सफरं ॥ १७

॥ इति देशकरफलम् ॥

जे पाई दम्मक्किहि मवति ते तिउण निप्फ्ए सेई ।
अन्नेवि विउण पाई टक्कइ इक्केवि जाणिज्जा ॥ १८
जि किवि सेर भणियहि दम्मिकिहि, ते वि सवाया मण टकिक्किहि ।
मणह माउ पचमु पाडिज्जहु, सेस सेर दम्मिक्कि मुणिज्जहु ॥ १९

जिचिहि किचिहि दम्मिहि पडिय ! मणु एगु वक्खरो होइ ।
तस्सद्धेहिँ विसोहहि सेरो इक्को वियाणाहि ॥ २०
गणिमवत्थूण जिचिहि दम्मेहिँ होइ कोडिया इक्का ।
तावइय विसोवेहिँ लब्भइ एगा गणिम वत्थू ॥ २१

॥ इति अर्घस्य फलम् ॥

अथ मानानि–

वट्टस्स य विक्खम तिउण तह छट्ठमस जुय परिही ।
सा पाय वित्थरे गुणि ज जायइ त जि खित्तफल ॥ २२

–दर्शन (६) परिधि १९ क्षेत्र फल २८ इति वृत्तं ॥

वट्टाओ चउरंस वारस विसुवा हवेइ सविसेस ।
चउरंसाओ वट्ट तह वट्टड पचमस्सूण ॥ २३
तिकोणयाओ वट्ट सड्डदुमाल्स विसोव हुइ खित्त ।
वट्टाओ य तिकोण विसोवगा सच अद्धहिया ॥ २४

०॥२८	०॥।१	०॥।१	० ०॥२॥	०।२०॥

॥ इति क्षेत्रमानम् ॥

विशेप पया दर्शनमाह–

गोलस्स य उदयघण पउण पउण व हवइ पाहाण ।
परिहिचउत्थ भाय हयपरिहि नवसजुयखित्त ॥ २५

न्यास (६) लब्ध गोलकफल १९० क्षेत्रफल १००ऽऽ३, घनि २१६
पउणं १६२ पुणु पउणं १२० फल ॥ परिहि ४॥। गुणित १० जात
९० । अस्य नवांस १० एव १०० क्षेत्रफल ॥

घण कविय इक्केण दिहिय सभूय पाहण सव्व ।
पन्नासमण जायइ तुलिओ चउनीससय तुल्ले ॥ २६

वसी अडयालीसं सट्ठि ममाणीय कसिणु बासट्ठी ।
जव्वावर कमाणय उणवम्न कुद्दुक्कुठो सट्ठी ॥ २७
मट्टी मण पणवीसं तुसंम्न मण अट्ठारस षणम्न ।
दह मण तिल्ल घयं तह सोलस मण लवण उद्देस ॥ २८
राजु इगु तिजणसहिओ वारस गज भित्ति पाहणे चिणइ ।
चउवससयाइ इट्टा उदेस जल गग्गरी तीसा ॥ २९
सगवीस मणा हक्क नव चुन्न बिउणु खोरु इक्कि गजे ।
पाहाण भित्ति चिज्जइ नव मणइ इमेव जाणेह ॥ ३०
लेवे केवण चुन्न पउण मण पायसेर सण सहिय ।
तइयस खोर जुच तलवट्टे अद्ध जलठाणे ॥ ३१ ॥ ।
छाणय मण चालीसं तह कक्कर सट्ठि पक्क हुइ चुन्न ।
रक्ख पवाहिय सट्ठी अरक्ख चालीस कलिया य ॥ ३२
उद्देस पचगमिम चदासुय फेरुणा अओ भणिय ।
जह देसकरुप्पची चट्टिय समए मुणिज्जेइ ॥ ३३

॥ इति उद्देसपयर्ग सम्मत्तं ॥

॥ इति परमजैन श्रीचन्द्राङ्गज ठक्कुरफेरूविरचित गणितसार कौमुदीपाट्यां सूत्रं समाप्तः (?सम्) ॥

॥ सय वस्तुपंच तथा गाथा मिश्रित ३११ ॥

लिखित चैत्र सुदि ९ संवत् १४०४ ।

सूत्र सं० गाथा तथा वस्तुमय गणित ३११ ।

॥ इति गाथा ७८ परिकर्माणि २५ सूत्रस्य बीजक यथा शुभमस्तु ॥

अपरभाग जाति ८ अष्ट नामानि
सूत्र गाथा० १७

अपर व्यवहार ८ गणना ।
सूत्र गा० १०४
१ प्रथम मिश्रक व्यवहार
गा० २९

२ तुतीक सेढी व्यवहार
गाथा ९

३ क्षेत्र व्यवहार सूत्र
गाथा १९

४ खात व्यवहार गाथा १५

गा० ४ खातघनानाविधि गणन १
" २ कूपस्य फलानयन २
" १ पाषाण फलानयन ३
" २ पाषाण तोल्य गणन ४

———

५ चिति व्यवहार गाथा १९

गा० १ मूलप्रबंध गा० १
" ५ भित्ति इटपाषाण २
" ३ गोमठ चिणन गा० ३
" २ पाषसेवभित्ति ४
" २ सुतारा गणित सीख्या ५
" २ ताल गणना छुरि ६
" १ सोपान गणना ७
" १ पुरुषंगसगा० ८
" १ कूप संगणना ९
" १ वापीसंगणना १०

———

६ क्रकच व्यवहार गाथा ९

० काष्ठ दीर्घ वि०
करवती छिद्०
नानाकाष्ठ
पत्ता गाथा ९

———

७ राशि व्यवहार गाथा ५

अन्न राशि
दीर्घोदय
विस्तर
गणितसारि

———

८ छाया व्यवहार गाथा ४

० छाया साधना
० दिवसाघना

॥ इति अष्ट व्यवहार सूत्र गाथा १०४ ॥



ठक्कुर-फेरू-विरचित

वास्तुसार।



[प्रथम गृहलक्षणप्रकरणम् ।]

नमो जिनाय।

सयलसुरासुरविंद वंसण-वंभाणुगाइ नमिऊण ।
पयरण ति वत्थुसारं जहुत्त सखेवि भणिमो हं ॥ १

गेहे पनरहिय सयं, विंबपरिक्खस्स गाह तीसाइ ।
पासाइ सट्ठि भणिय, पणहिय सय दुन्नि सव्वेवं ॥ २ ॥ दारं ॥

बत्तीसंगुल भूमी खणेवि पूरिज्ज पुणवि सा गत्ता ।
तेणेव मट्टिएण हीणाहिय सम फल नेय ॥ ३

अहव त भरिय नीरे चरणसय गच्छमाण जा सुसइ ।
ति-दु-इग अंगुल कमि भूं अहं मज्झिम उत्तमा जाण ॥ ४

सिय विप्प, अरुण खत्तिय, पीयल वइसाण, कसिण सुद्दाण ।
मट्टियवन्नपमाणे सुहया विवरीय असुहयरी ॥ ५

॥ इति भूमिपरीक्षा ॥

समभूमि दुकर वित्थरि दु रेहचक्कस्स मज्झि रवि १२ संकं ।
पढमंत छाय गब्भे जमुत्तरा अद्धि उदयत्थं ॥ ६

पाठान्तरे-१ वण्णाणुगं पणमिऊणं । २ गेहाइ वत्थुसारं संखेवेणं भणिस्सामि ।
३ इगवन्नसयं च गिहे बिंबपरिक्खस्स गाह तेवन्ना ।
तह सत्तरि पासाए दुगसय चउवुत्तरा सव्वे ॥ २ ।
४ चउवीसंगुल । ५ मट्टियाए । ६ फला नेया ।
७ मह सा भरियजलेण य । ८ भूमी । ९ अहम ।
१० सिय विप्पि अरुण खत्तिणि पीय वइसी अ कसिण सुद्दी अ ।
मट्टियवण्णपमाणा भूमी नियनियवण्ण सुक्खयरी ॥
११ दुवेह ।

॥ दिग्साधनायन्त्र ॥

समभूमी तिहुीए वट्टति छ अंगु कोण कक्कडए ।
कूण दु दिसि सेंतरगुल मज्झि तिरिय हत्थु चउरंसे ॥ ७

चउरंसिक्किक्कि दिसे बारस भागाउ पचै भा मज्झे ।
कूणेहिं सड्ढ तिय तिय एव हुइ सुद्ध अट्ठंसे ॥ ८

॥ इति भूमिसाधना ॥

चउरंस अदिसिमोघा अवम्मिया ऽफुट्ट तिदिणबीयरुहो ।
अछकुर भूमिसुहा पुव्वेसाणुत्तरखुवही ॥ ९

वम्मइणी वाहिकरा रोरूसर फुट्टभूमि मच्चुयरी ।
ससल्ल बहुदुक्खा त वुच्छ सल्लनाणमिम ॥ १०

व क च त ए ह स प्प य इय नव वर्णा कमेण लिहिऊण ।
नव कुट्ठा भूमिकया पुन्नाइ मुणह पन्हेणे ॥ ११

व प्पन्हे नरसल्ल सड्ढकरे मिचुकारग पुव्वे ।
क प्पन्हे खरसल्ल अग्गि दुहत्थेहि निवदण्डं ॥ १२

दाहिणे च प्पन्हेण नरसल्ल कडितलमि मिचुकरं ।
त प्पन्हिसाण नेरइ डिंमाण य मिचु सड्ढकरे ॥ १३

ए पन्हे अवरदिसे सिसुसल्ल सड्ढहत्थि परदेसं ।
वायवि ह पन्हि चउकरि अंगारा मित्तनासयरा ॥ १४

---

१ अट्ठ । २ सरंगुल । ३ भाग पच । ४ इय जायइ । ५ दिण तिग बीयप्पसवा चउरंसाऽवाम्मिणी अफुट्टा य । ६ भू सुहया । ७ °पुष्फदा ।

८ वम्मइणी वाहिकरी ऊसर भूमीइ हवइ रोरकरी ।
आइफुट्टा मिचुकरी दुक्खकरी तह य ससल्ला ॥

९ इसपन्ना । १० वण्णा । ११ लिहियप्पा । १२ पुन्नाइ दिसासु तहा भूमिं काऊण नवभाए ॥ ११ ॥

मट्टिमंतिऊण खडियं विहिपुव्वं कन्नाया करे दाओ ।
आणाविज्जइ पन्हं पणहाइम अक्खरे सल्लं ॥ १२ ॥

१३ अग्गीए दुक्करि । १४ जामे । १५ तप्पण्हे निरईए सड्ढकरे सासु सहु सिसुहाणी ॥ १५ ॥ १६ पच्छिमदिसि य पण्हे सिसुसल्लं कर दुगम्मि परएसं ।

स प्पन्हि उत्तरेण ये धये घरसङ्ख कैंढीइ रोरकरं ।
प प्पण्हे गोसल्लं सहुकेंरीसाणि घणनासं ॥ १५
य प्पन्हि मज्झकुट्ठे केसं छार कयाल अइसल्ला ।
वच्छत्थलप्पमाणा मिच्छुकरा हौंति नायव्वो ॥ १६
इय एवमाइ अभिवि जे पुव्वगयाइ हौंति सल्लाइ ।
ते सव्वे वि य सोहिवि वच्छबले कीरए गेहं ॥ १७

तं जहा । वच्छचक्कं–

कन्नाइ तिन्नि पुव्वे घणाइ तिय दाहिणे भवे वच्छो ।
पच्छिम मीणाइ तिय उत्तर मिहुणाइ तिय णेयं ॥ १८
गिहभूमि सत्तभाये पण ५ दह १० तिहि १५ तीस ३० तिहि १५
दस १० पण ५ कमे ।
इय दिणसंखे चउदिसि सिरि पुछ समकि वच्छठिई ॥ १९
अग्गिमओ आयुहरो धणक्खय कुणइ पच्छिमो वच्छो ।
वामो य दाहिणो वि य सुहावहो होई नायव्वो ॥ २०
घण मीण मिहुण कन्ने रवि ठिय गेहं न कीरए कैंहवि ।
तुल विच्छिय मेस विसे पुव्वावर सेस सेस दिसे ॥ २१

॥ इति वत्स ॥

सोय १ धण २ मिच्चु ३ हाणी ४ अत्थ ५ सुन्न च ६ कलह ७
उव्वसिय ८ ।
पूया ९ संपई १० अग्गी ११ सुह च १२ चित्ताइ मासफलं ॥ २२

॥ इति गृहारंभे मासफलाफलम् ॥

---

१ उत्तरदिसि सप्पण्हे । २ विय । ३ कडिम्मि । ४ करे घणयिणासमीसाणे ।
५ अप्पण्हे मज्झगिहे माच्छार कपाल केस बहुसल्ला ।
वच्छउचउप्पमाणा पायण य हुंति मिच्चुकरा ॥ १७ ॥
६ कन्नाइतिगे पुव्वे वच्छो तहा दाहिणे धणाइ तिगे ।
पच्छिमदिसि मीण तिगे मिहुण तिगे उत्तरे हवइ ॥ १९ ॥
७ माए । ८ इच्छकम्मा । ९ संखा चउदिसि । १० आउहरो । ११ हवइ ।
१२ धण मीण मिहुण कण्णा संकंतीए न कीरए गेहं । १३ संपई ।

ई	कन्या	तुला	वृश्चि	आ
५	१०	१५	१०	१५	१०	५

सिंह कर्क मिथुन — पूर्व — उत्तर — वत्स — दक्षिण — पश्चिम — धन मकर

ईसाण य धननासा	पूर्व य मृत्यू	आग्नेय य नृपभय
उत्तर य वरिद्र	य मृत्युकर	दक्षिण य मृत्यू
वायव्य ह मित्रनास	पश्चिम य परदेश	नैऋत्य ठ विग्घमृत्यू

वइसाहे मग्गसिरे सावणि फग्गुणि मयतरे पोसे।
सियपक्खे सुहदीहे[1] कए गिहे हवइ सुह रिद्धी॥ २३

सुहलग्गे चंदबले खणिज्ज नीमा[2] अहोमुहे रिक्खे।
उड्ढमुहे नक्खत्ते चिणिज्ज सुहलग्गि चंदबले॥ २४

सवणऽद्द पुस्सु रोहिणि ति उत्तरा सय धणिट्ठ उड्ढमुहा।
भरणिऽसलेस ति पुव्वा मू-म वि कित्ती अहोवयणा॥ २५

पुव्वुत्तर नींवतले विय अक्खय रयण पंचगं ठवियं[4]।
सिलानिवेसं कीरइ सिप्पीण समाणणापुव्वं॥ २६

लग्नं यथा—

मिगुलग्गे[9] बुहदसमे विणयरु लाहे ११ विहेप्फई[5] किंदे १।४।७।१०।
जइ गिहनींवारंभे[6] ता वरिससयाउं[7] तम्मि गिहं॥ २७

दसम चउत्थे गुरु-ससि-सणि
कुज-लाहे ११ सुं वरिस साम असी[8]।
इग ति चउ छ मुणि १।३।४।६।७
कमसो गुरु-सणि-सियं-रवि-बुहम्मि सयं॥ २८

---

१ दिवसे। २ नीमीउ। ३ नीम। ४ ठविउं। ५ विहप्फई। ६ नीमारंभे। ७ सयाउयं हवइ। ८ अढवित्र वरिस असी। ९ मिगु।

सुक्कुदए रवितइए मंगलि छट्ठेसु पंचमे जीवे ।
इय लग्गकए गेहे धण-कणजुय दुसय वरिसाऊ ॥ २९

सुगिहत्थो ससिलग्गे गुरुकिंदे बलजुएसु विद्धिकरो ।
कूरट्ठम अइअसुहा सोमा मज्झिम गिहारंभे ॥ ३०

इक्कोवि गिहे निच्छइ परगेहि परंसि सत्त बारसमे ।
गिहसामि वण्णनाहे अवले परहत्थि हुई गेह ॥ ३१

बमण सुक्क बिहप्फइ रवि-कुज खत्तिय मैयकु वइसो य ।
सुहु सुद्दु मिच्छ सणि तमु गिहसामिय वंस जाणेह ॥ ३२

कूरा ति-छ-गारसगा सोमा किंदे तिकोणगे सुहया । १।४।७।१०।५।५
जइ अट्ठमो य कूरो अवस्स गिहसामि मारेइ ॥ ३३

॥ इति गृहनींवनिवेशलग्नम् ॥

चित्तऽणुराह ति उत्तर रेवइ मिय-रोहिणी य विद्धिकरा ।
मूलऽद्दा असलेसा जिट्ठा पुच्च विणासेइ ॥ ३४

भरणी महा ति पुव्वा गिहसामिहया विसाह तियनासं ।
कित्तिय अग्गिभयकरं गिहप्पवेसे य ठिइ समए ॥ ३५

तिहि रित्त ४।९।१४ वार कुज-रवि चरलग्ग विरुद्ध जोय दिणचद ।
वज्जिज्ज गिहपवेसे सेसा तिहि-वार-लग्ग सुहा ॥ ३६

किंदऽट्ठमति कूरा १।४।७।१०।८।१२ असुहा ति छगारहा ३।६।११ सुहा भणिया ।
सव्वे अट्ठम असुहा इय लग्ग गिहपवेसस्स ॥ ३७

---

१ म । २ दोपरिससयाउयं रिद्धी । ३ पलजुओ । ४ करो । ५ गहे । ६ हीर गिह । ७ मयंम घइसो म । ८ वण्ण माह इमे । ९ सपल सुद्दजोपसम्मे मीमारंमे य गिहपवेसे म । १० पुव्वतिगं मह भरणी गिहसामिवहं विसाहत्थी नासं । ११ समए । १२ किंदु दु भडंव दूरा । १३ किंदुतिकोणलिंगादे सुहया सोमा समा सेसे ।

सूरे गिहत्थो गिहिणी चंदे घण सुक्कु सुरगुरू सुक्ख ।
जो समलु तस्स भाव सबेल हुइ नत्थि संदेहो ॥ ३८

॥ इति गृहप्रवेशलग्नं ॥

राया १ सेणाहिवई २ अमच्च ३ जुवराय ४ अणुज ५ रण्णीण ६ ।
नैमित्तिय ७ विज्जाण य ८ उवरोहियं ९ पच पच गिहा ॥ ३९

एगसय अट्ठहिय चउसट्ठी सट्ठि असीअ चालीस ।
तीस चालीस तिगे कमेण करसंख वित्थारो ॥ ४०

चउ छच्च अट्ठ तिय तिय अट्ठ छे तियगेसु अंसजुयदीहे ।
सेसगिहाण य माण वित्थाराओ मुणेयव्व ॥ ४१

अड छच्च चउ छ चउ छह चउ तिय गेहीण हीण सुकमेण ।
वित्थाराओ सेसा सेसगिहा हुति ऐयाण ॥ ४२

अस्यार्थं यन्त्रेणाह–

हस्त संख्या		राजा	सेनाधिप	अमात्य	युवराज	अनुज	राजीनां	नैमित्तिक	वैद्य	उपरोहित
१	वित्थर	१०८	६४	६०	८०	५०	६०	४०	४०	४०
	दीर्घ	१३५	७४॥ऽ	७०	१०२॥ऽ	६२॥ऽ	७०॥	५१॥ऽ	५२॥ऽ	५१॥ऽ
२	वित्थर	१००	५८	५६	७४	३६	२४	३६	३६	३६
	दीर्घ	१२९	६७॥ऽ	६६	९८॥ऽ	४८	२७	४२	४२	४२
३	वित्थर	९२	५२	५२	६८	३२	१८	३२	३२	३२
	दीर्घ	११५	६०॥ऽ	६ ॥	९०॥ऽ	४२॥ऽ	२०	३७॥ऽ	३७॥ऽ	३७॥ऽ
४	वित्थर	८४	४६	४८	६२	२८	१२	२८	२८	२८
	दीर्घ	१०५	५३॥ऽ	५४	८२॥ऽ	३७॥ऽ	१३॥	३२॥ऽ	३२॥ऽ	३४॥ऽ
५	वित्थर	७६	४०	४४	५६	२४	६	२४	२४	२४
	दीर्घ	९५	४६॥ऽ	४९॥	७०॥ऽ	३२	७॥	२८	२८	२८

वस्र चउछ्क्कर्स्स गिह पचीस कराइ वित्थेर भणिय ।
चउ चउ हीण सुंकमे जा खोडसे अंतजाईण ॥ ४३

---

१ सूर । २ चंदो । ३ भावो सयलु भवे । ४ पुरोहियाण इह पंच गिहा ।
५ छ छ छ माग जुत्त वित्थराओ । ६ सेसगिहाण य कमसो माणं दीहत्तणे नेयं ।
७ अट छह चउ छह चउ छह चउ चउ चउ हीणया कमेणेव ।
मूलगिहवित्थराओ सेसाण गिहाण वित्थारा ॥ ४२ ॥
८ गिहेसु । ९ वित्थरो भणिआ । १० हीणो कमसो । ११ सोलस ।

दसमस-अट्ठमस खडस चउरंस वित्थरस्सहिय ।
दीह सव्वगिहस्सं य दिय-खत्तिय-वइस-सुद्दाण ॥ ४४

अस्यार्थ पुनः यन्त्रेणाह–

हस्त	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	अंत्यज
विस्तार	३२	२८	२४	२०	१६
दीर्घ	३५।५४	३१।३	२८	२५	११

अंगुल सत्तहिय सय उदए गब्भे य होइ पणसीई ।
गणियाणुसार दीहे सुगिहोलिंदस्स इय माण ॥ ४५†
पव्वगुलि चउवीसिहिं वैचीसि करंगुलेहि कवीया ।
अट्ठि जवि तिरिय गेह पव्वगुलु इक्कु जाणेह ॥ ४६
पासाय-रायमंदिर-तडाग-पायार-वत्थभूमीइ ।
इय कवीहि गणिज्जैहि गिहसामिकरेहिं गिहवत्थू ॥ ४७
गिहसामिसुहत्थेण नीम्व विणा मिणसु वित्थर-दीह ।
गुणि अट्ठेहि विहत्त सेस धयाई भवे आया ॥ ४८
धय १ धूम २ सीह ३ सोणे ४ विस ५ खर ६ गय ७ धंखि ८ एइअट्ठाया ।
पुव्वाइ धयाइ ठिई फल च नामाणुसारेण ॥ ४९
विप्पे धयाउ दिज्जा खत्तिये सीहाउ वइसि वसहाओ ।
सुद्दाणे कुंजराया धखाउ मुणीण दायव्वा ॥ ५०
धय गय सीह दिज्जा सते ठाणे धओ य सव्वत्थ ।
गय पचाइणे वसहा सेडय तह कब्बडाईसु ॥ ५१

---

१ गिहाण य । २ इक्किक गईयं इम परिमाणं । † इसके बाद मुद्रित में निम्नोक्त गाथायें हैं–जं दीहवित्थराई भणियं तं सयलमूलगिहमाणं ।
सेसमलिंदं जाणह अहुरिय जं वहीकम्मं ॥ ४६ ॥
ओवरय साल कक्खो पवाईयं मूलगिहमिणं सव्वं ।
मह मूलसालमज्झे जं वट्टह तं च मूलगिहं ॥ ४७ ॥
३ छव्वीसिं । ४ कंबिआ । ५ अट्ठहिं जव मज्झेहिं । ६ भूमीए । ७ गणिज्जइ । ८ गिहसामिणो करेणं भित्ति विणा । ९ साणा । १० अट्ठ आय इमे । ११ सित्ते । १२ सुद्दे अ कुंजराओ धंखाउ मुणीण नायव्वं । १३ पंचाणणे ।

वावी कूव तडागे सयणे अ गओ अ आसणे सीहो ।
वसहो भोयणपत्ते छत्तालये धओ सिट्ठो ॥ ५२

विस-कुंजर-सीहाया नयरे पासाय-सव्वगेहेसु ।
साण मिच्छाईण[1] घरस्स कारुयगिहाईसु ॥ ५३

धूम रसोइठाणे तहेव गेहेसु वह्निजीवाण ।
रासहु वेसाण गिहे धय गय-सीहाउ रायहरे ॥ ५४

दीह वित्थरिगुणियं ज हुइ त मूलरासि नायव्वं ।
वसु ८ हय रिक्ख २७ विहत्त, गिहनक्खत्त मेवे सेस ॥ ५५

गिहरिक्ख वेयहय नवमाए लद्ध भुत्तरासि धुव ।
गिहरासि सामिरासी छक्कट्ठे दुवार(ल)सं असुह ॥ ५६

रिक्ख वसु ८ सेस वय त च तिहा जक्ख-रक्खस पिसाय ।
आय काउ कमेण हीणाहिय सम मुणेयव्व ॥ ५७

जक्ख वओ विद्धिकरो धणनासं कुणइ रक्खस वओ य ।
मज्झिम वओ पिसाओ तह्य जमसं च वज्जिज्जा ॥ ५८

मूलरासिस्स (मूलस्स रासि ?) अंक गिहनामक्खर वयकसंजुत्त ।
तियं ३ सेस मुणहु अंसा इंद-जमा तहय रायाणो ॥ ५९

गिहरिक्ख सामिरिक्ख पिंड नव सेस छ चउ नव सुहया ।
मज्झिम दो पढमट्ठा ति पच सत्ताऽहमा तारा ॥ ६०

अह कन्ना-वरपीई गणिज्जए तह य सामिय गिहाय ।
जोणि-गणे-रासि-सव्व त जाणह जोय(इ)साओ य ॥ ६१

---

१ मिच्छाईसु । २ त मेवं । ३ अडु गुण वसु मत्तं । ४ हयइ । ५ गिह रिक्खं चउगुणियं नवभत्तं लद्धु भुत्तरासीओ । ६ सव्वट्ठु । ७ वसुभत्त रिक्खसेसे वयं । ८ भाउ अंधाउ कमसो । ९ तिविहुत्तु सेस अंसा ईदंस-जमंसरायंसा । १० गेहमसामिमपिंडे नवभत्तं सस छ चउ नव सुहया । मज्झिम दुग इग अट्ठा ति पंच सत्तहमा तारा ॥ ६० ॥ ११ गिहाण । १२ जोणि-गण-रासि पमुहा मावी वेहो य गणियव्वो ।

‡ मुद्रितपुस्तके एतदनन्तर निम्नलिखिता गाथा लभ्यन्ते—

ओवरय नाम साला अेपेग दुसालु मण्णए गेहं ।
गइ नाम य अलिंदो इग दु तिऽलिंदोइ पट्टसालो ॥ ६५

पटसाल पार दुदु दिसि आलिय भित्तीहिं मंडवो हवइ ।
पिट्ठी दाहिण वामे अलिंद नामेहिं गुंजारी ॥ ६६
आलिय नाम मूसा थंभय नाम च हवइ खडदारं ।
मार पट्टो य सिरिओ पीढ कडी धरण एगट्ठा ॥ ६७

ओवरय-पट्टसाला-पजंतं मूलगेह नायव्वं ।
एअस्स चेव गणियं रेखण गेहाइ गिहमूसा ॥ ६८

ओवरय-अलिंद-गई गुंजारि-भित्तीण पट्टयंमाण ।
आलिय मंडवाण य भेएण गिहा उवज्जंति ॥ ६९

चउद्दस गुरु पत्थारे लहुगुरुभेएहिं सालमाईणि ।
जायंति सव्व गेहा सोल सहस्स ति सय चुलसीआ ॥ ७०

तत्तो य जिं किवि संपइ वट्टंति धुवाइ संतणाईणि ।
ताण चिय नामाइं लक्खणचिण्हाइ वुच्छामि ॥ ७१

धुव १ धन्न २ जय ३ नंद ४
स्वर ५ कन्त ६ मणोरम ७ सुमुह ८ दुमुह ९ ।
कूर १० सुपक्ख ११ धणद १२ खय १३
अक्कन्द १४ विउल १५ विजय १६ गिही ॥ ६२

पोडशा गृहम्

ऽऽऽऽ	धुव
।ऽऽऽ	धन्न
ऽ।ऽऽ	जय
।।ऽऽ	नंद
ऽऽ।ऽ	खर
।ऽ।ऽ	कंत
ऽ।।ऽ	मनोरम
।।।ऽ	सुमुह

ऽऽऽ।	दुमुह
।ऽऽ।	कूर
ऽ।ऽ।	सुपक्ख
।।ऽ।	धणद
ऽऽ।।	खय
।ऽ।।	अक्कंद
ऽ।।।	विउल
।।।।	विजय

ठवि चउ गुराइ सुकमे
लहुओ गुरु हिट्ठि सेस उवर समा ।
ऊणेहिं गुरु एव
पुणो पुणो जाम सव्वलहू ॥ ६३

---

१ पत्थारि गुरुलघियेउ । २ जाव ।

त धुव-धन्नाईण पुव्वाइ लहूहिं साल नायव्वा ।
गुरुठाणि मुणह सुस नामसम भावं जाणेह ॥ ६४ ‡

॥ इति षोडशगृहम् ॥

‡ षोडशगृहकोष्ठकानन्तर मुद्रितपुस्तके एता निम्नगता गाथा लभ्यन्ते ।

संतण १ संतिद २ वड्ढमाण ३ कुक्कुडा ४ सत्थियं ५ च हंसं ६ च ।
वद्धण ७ कब्बुर ८ संता ९ हरिसण १० विउला ११ कराल १२ च ॥ ७५

विद्धं १३ चित्त १४ घणं १५ कालदंड १६ तहेव बंधुद १७ ।
पुत्तद १८ सव्वंगा १९ तह वीसइम कालचक्कं २० [च] ॥ ७६

तिपुरं २१ सुंदर २२ नीला २३ कुडिल २४ सासय २५ य सत्थदा २६ सीलं २७ ।
कुट्टर २८ सोम २९ सुभद्दा ३० तह भद्दमाणं ३१ च कूरक्खं ३२ ॥ ७७

सीहिर ३३ य सव्वकामय ३४ पुट्ठिद ३५ तह किचिनासणा ३६ नामा ।
सिणगार ३७ सिरीवासा ३८ सिरीसोम ३९ तह किचिसोहणया ४० ॥ ७८

जुगसीहर ४१ बहुलाहा ४२ लच्छिनिवासं ४३ च कुविय ४४ उज्जोया ४५ ।
बहुतेयं ४६ च सुतेयं ४७ कलहावह ४८ तह विलासा ४९ य ॥ ७९

बहु निवासं ५० पुट्ठिद ५१ कोहसन्निहं ५२ महंत ५३ महिता य ५४ ।
दुक्खं ५५ च कुलच्छेय ५६ पयावबद्धण ५७ य दिव्वा ५८ य ॥ ८०

बहुदुक्ख ५९ कंठच्छेयण ६० जंगम ६१ तह सीहनाय ६२ हत्थीणं ६३ ।
कंटक ६४ इह नामाइं लक्खणमेय अओ वुच्छं ॥ ८१

केवल ओवरय दुगं संतण नामं मुणेह तं गेहं ।
तस्सेव मज्झि पढं सुरेगअलिंदं च सत्थियमं ॥ ८२

सत्थिय गेहस्सग्गे अलिंदु बीओ अ तं भणे संतं ।
संति गुंजारि दाहिण पंम संतिय तं हवइ विद्धं ॥ ८३

चित्तगिहे वामदिसे अइ हवइ गुंजारि ताव बंधुदं ।
गुंजारि पिट्ठि दाहिण पुरओ दु अलिंद त तिपुरं ॥ ८४

पिट्ठी दाहिण वामे इगेग गुंजारि पुरउ दु अलिंदा ।
तं सासय आवासं सव्वाण पयाण संतिकरं ॥ ८५

---

१ मिधि । २ हवइ फल मेसि ।

दाहिण वाम इगेग अलिंद जुअलस्स मंडवं पुरओ ।
ओवरय मज्झि थंभो तस्स य नामं हवइ सोमं ॥ ८६

पुरओ अलिंद तियग तिदिसिं इक्कि हवइ गुंजारी ।
थंभय पट्ट समेयं सीधर नामं च तं गेहं ॥ ८७

गुंजारि जुअल तिहुं दिसि दुलिंद मुहे य थंभ परिकलियं ।
मंडव जालिय सहिया सिरिसिंगारं सय विंति ॥ ८८

तिन्नि अलिंदा पुरओ तस्सग्गे भद्दु सेस पुव्वु व्व ।
त नाम सुप्पासीधर बहुमगल रिद्धि-आवासं ॥ ८९

दु अलिंद-मंडव तह जालिय पिट्ठेग दाहिणे दु गई ।
भित्तिंतरि थंभ जुआ उज्जोय नाम धणनिलयं ॥ ९०

उज्जोअगेह पच्छइ दाहिणए दुगइ भित्ति अंतरए ।
जइ हुंति दो ममठी विलासनाम हवइ गेहं ॥ ९१

ति अलिंद मुहस्सग्गे मंडवयं सेसं विलासु व्व ।
तं गेहं च महंतं कुणइ महड्ढि धसंताण ॥ ९२

मुहि ति अलिंद समंडव जालिय तिदिसेहिं दु दु य गुंजारी ।
मज्झि पढय गय भित्ती जालिय य पयाववद्धणयं ॥ ९३

पयाववद्धणए जइ थंभय ता हवइ जंगमं सुभवं ।
इअ सोलस गेहाइं सव्वाइं उत्तरमुहाइं ॥ ९४

एयाइं चिय पुव्वा दाहिण पच्छिम मुहेण वारेण ।
नामंतरेण अन्नाइ तिन्नि मिलियाणि चउसट्ठि ॥ ९५

संतणमुत्तरवारं तं चिय पुव्वमुहु संतद भणिय ।
धम्ममुह बहुमाण अवरमुहं कुणइ सव्वेसु ॥ ९६

अग्गे अलिंद तियग इक्किक्क वाम दाहिणोवरय ।
थंभजुयं च दुसालं तस्स य नाम हवइ घरं ॥ ९७

पयथे य चउ अलिंदा उभयदिसे इक्कु इक्कु ओवरओ ।
नामेण वासव त जुगअंत नाम वसइ धुवं ॥ ९८

मुहि ति अलिंद दु पच्छइ दाहिण वामे अ हवइ इक्किक्कं ।
त गिह नाम धीयं हियच्छियं चउसु पमाणं ॥ ९९

दो पच्छइ दो पुरओ अलिंद तह दाहिणे हवइ इक्को ।
कालक्ख त गेह अकालि दंडं कुणइ मूयं ॥ १०० ॥

अलिंद तिन्नि पयणे जुअलं जुअलं च वामदाहिणए ।
एगं पिट्ठिदिसाए पुरओ संमुहि पड्डुमए ॥ १०१
दु अलिंद चउदिसेहिं सुव्वय नाम च सव्वसिद्धिकरं ।
पुरओ तिन्नि अलिंदा तिदिसि दुगं तं च पासायं ॥ १०२
चउरि अलिंदा पुरओ पिट्ठि तिगं तं गिहं दुसेहर्क्ख ।
इइ पराई गेहा अहुसि निपनामसरिसफला ॥ १०३
विमलाइ सुंदराई हंसाइ अलंकियाइ पमवाई ।
पम्मोय सिरिमवाई चूडामणि फलसमाई य ॥ १०४
पमाइआसु सव्वे सोलस सोलस हवंति गिह तत्तो ।
इक्किक्काओ चउ चउ दिसिमेय-अलिंदमेएहिं ॥ १०५
तिअलोयसुदराई चउसट्ठि गिहाइ हुति रायाणो ।
ते पुण भवइ संयइ मिच्छाण च रक्खमावेय ॥ १०६



पुव्वेदिसे अत्थाण अग्गेीय रसोइ दाहिणे सयण ।
नेरइ नीहारठिई भोयणठिइ पच्छिमे भणिय ॥ ६५
वायव्वे सव्वायुहं कोसुत्तर धम्मठाणु ईसाणे ।
पुव्वाइविनिद्देसो मूलगिहदारविक्खाओ ॥ ६६
पुव्वेणं विजयवारं जमवारं दाहिणेणं नायव्व ।
अवरेण मयरवारं कुबेरवारंउत्तरे पासे ॥ ६७
नामसम फलमेयं वारं न कयावि दाहिणे कुज्जा ।
कारणवसाउ जइ हुइ चउदिसि भागट्ठ कायव्वा ॥ ६८
सुहवारु असमजो चउहिं दिसेहिं पि अट्ठभागाओ ।
चउ तिय १ दुन्नि छ २ पण तिय ३ तिय पण ४ पुव्वाइ सुकम्मेण ॥६९
वाराउ गिहपवेसं सोवाण करिज्ज सिट्ठिमग्गेण ।
पयठाण सूरमुहु जलकुंभ रसोइ आसन्न ॥ ७०

---

१ पुव्वे सीहदुवारं । २ अग्गीइ । ३ सव्वाउहं । ४ विक्खाए । ५ पुव्वाए । ६ दाहिणाए । ७ वारं उईचीए । ८ मेर्सि । ९ अह होइ कारणेणं ताउ चउदिसि अट्ठ भाग कायव्वा । १० चउसु पि दिसासु अट्ठभागासु ।

सईमुहाइ गेहो कायव्वा सिप्पि[1]-हट्ट वग्घमुहा।
गिहपाराउ कमुच्चा हट्टुच्चा पुरओ मज्झसमा ॥ ७१

पुव्वुभयं अत्थहरं जमुच्चेय मंदिरं धणसमिद्धं।
अवरुन्नयं विद्धिकरं उत्तरुन्नयं होइ उव्वसियं ॥ ७२

मूलाओ आरंभ कीरइ पच्छा कमे कमे कुज्जा।
मूल गणियविसुद्धं वेहं सव्वत्थ वज्जिज्जा ॥ ७३

तलवेह १ कोणवेह २ तालुयवेह ३ कवालवेह ४ च।
तह थंभ ५ तुलावेहं ६ दुवारवेहं च ७ सत्तमयं ॥ ७४

समविसम भूमिकुंभिय जलपूरं परगिहस्स तलवेहं।
कूणसमं जइ कूणं न होइ ता कूणवेह[11] तु ॥ ७५

इक्कखणे नीचुच्चं पीढं तं मुणह तालुयावेहं।
बारस्सुवरिमपट्टे गब्भे पीढं च सिरवेहं ॥ ७६

गेहस्स मज्झि भाए थंमेगं तं मुणेह उरसल्लं।
अह अनलो विनलाइ हविज्ज जा थंभवेह[12] तं ॥ ७७

हिट्ठिम उवरंमि खणे[13] हीणाहियं पीढ तं तुलावेहं।
पीढं[14] पीढस्स समं हवेइ जइ तत्थ नहु दोसं ॥ ७८

कूव-थंभ दुमं कोणय कीले विद्धे दुवारवेहो य।
गेहुच्चबिउण भूमी तं न विरुद्धं बुहा विंति ॥ ७९

तलवेहि कुट्ठरोया हवंति उव्वेय कोणवेहंमि।
तालुयवेहेसु भयं कुलक्खयं थंभवेहेण ॥ ८०

---

१ सगडमुहा वरगेहा। २ तहय। ३ पुव्वुच्चं। ४ दाहिण उच्चयरं। ५ मयरूव्वं। ६ उव्वसियं उत्तराउच्चं। ७ आरंभा। ८ सव्वं। ९ वेहो। १० वेहो। ११ वेहो अ। १२ वेहो सो। १३ हिट्ठिम उवरि खणाणं। १४ पीढा समसंखाओ हवंति जइ तत्थ नहु दोसा। १५ भूमकुव थंभ। १६ वहेण।

कावालु तुलावेहे घणनासो होई रोरभावो य ।
इय वेहफल नाउ सुद्ध गेहं सुकायव्वं ॥ ८१

वेहेगेण य कलह कमेण हाणि च जत्थ वे हुति ।
तिहुं भूयाण निवासो चहु क्खय पचि सव्वरिय ॥ ८२

॥ इति वेधः ॥

अट्ठुत्तर सउ माया पडिमारूसु व्व करिवि भूमि तओ ।
सिरि हियइ नाहि सिहणे थमं वज्जेह जत्तेण ॥ ८३

वारं वारस्स समं अह वारं वारमज्झि कायव्वं ।
अह वज्जिऊण वारं कीरइ वारं तहाल च ॥ ८४

कूण कूणस्स सम आलइ आल च कीलए कील ।
थंभे थम कुज्जा अह वेह वज्जि कायव्वा ॥ ८५

आलयसिरंमि कीलो थमो वारुवरि वारु थमुवरे ।
वारिंद्दि वारु समखणि विसमा थमा महा असुहा ॥ ८६

थमहीण न कायव्व पासाय मढ-मंदिरं ।
कूण-क्खतरेऽवस्सं वेय थम पयत्तओ ॥ ८७

कुम्भीसिरंमि सिहरं वट्ट अट्ठस भद्दगायारं ।
रूवगपल्लवसहिय थमेरिसगिहि[१४] न कायव्वं ॥ ८८

खणमज्झे कायव्व कीलालय गंठखमुक्ख समसंमुह ।
अंतर छंसी भच करिज्ज खण तह य पीढसम ॥ ८९

गिहमज्झि अंगणे वा तिकोणय पचकोणय जत्थ ।
तत्थ वसंतस्स पुणो न होइ सुह रिद्धि कईयावि ॥ ९०

---

१ हवइ । २ करेमव्वं । ३ इगवेहेण य कलहो । ४ वो । ५ तिहु भूआण निवासो चउहिं लभो पंचहिं मारी । ६ सिहिणो । ७ कीला । ८ द्वि । ९ वाय । १० मठ । ११ पट्टा । १२ भद्दगायारा । १३ सहिआ । १४ गेहे थंमा म कायव्वा । १५ गमोक्ष । १६ मुहं । १७ छत्ता ।

मूलगिहे पच्छिमदिसि[1] जो कीरइ तिन्नि वार ओवरए ।
सो त गिह न भुजइ अह भुजइ दुक्खिओ हवइ ॥ ९१

कमलेगि ज दुवारो अहवा कमलेहिं वज्जिओ होई ।
हिट्ठाउ उवरि पिहुलो न ठाइ थिरु लच्छि तम्मि गिहे ॥ ९२

वल्याकारं कूणेहिं सकुल अहव एग दु ति कूण ।
दाहिण-वामय दीह न वासियव्वेरिसं गेह ॥ ९३

सयमेव जे किवाडा पिहियति य उग्घडंति ते असुहा ।
चित्त-कलसाइ-सोहा-सविसेसा मूलदारि सुहा ॥ ९४

छर्चितरि मिचिंतरि मग्गतरि दोस जे न ते दोसा ।
साल-ओवरय-कुक्खी-पिट्टि-दुवारेहिं बहु दोसा ॥ ९५

जोइणि नट्टारंभ भारह-रामायण च निवजुद्ध ।
रिसिचरिय-देवचरिय इअ चित्त गेहि[2] नहु जुच ॥ ९६

फलिहतरु कुसुमवल्ली सरस्सई नवनिहाणजुअलच्छी ।
कलसं वद्धावणय सुमिणावलियाइ सुहचित्त ॥ ९७

पुरिसु व्व गिहस्संग हीण अहिय न पावए सोह ।
तम्हा सुद्धं कीरइ जेण गिह हवइ रिद्धिकरं ॥ ९८

वज्जिज्जइ जिणपुट्ठी रवि ईसर दिट्ठि विण्हु वामो य ।
सव्वत्थ असुह चडी बम्ही पुण सव्वहा चयह ॥ ९९

अरिहतदिट्ठि दाहिण हर पुट्ठी वामए सुकल्लाण ।
विवरीए बहु दुक्ख पर न मग्गतरे दोस[11] ॥ १००

पढमत जाम वज्जिय धयाइ दु-तिपहरसभवा छाया ।
दुहदायी नायव्वा तओ य जैत्तेण वज्जिज्जा ॥ १०१

---

१ मुदि । २ पाच्छ दुचि वारा ओवरए । ३ हवइ । ४ दाइ । ५ वामइ । ६ दारि । ७ गेहु । ८ पिट्ठी । ९ विण्हु वामभुमा । १० बंभाण चउदिसि चयह । ११ दोसो । १२ हेऊ । १३ पयत्तेण ।

सम कट्ठा विसम खणा सव्वपयारेसु इयं विही कुज्जा ।
पुव्वुत्तरेण पल्लव जमावरा मूल कायव्वा ॥ १०२*

हल-घाणय-सगड-मई-अरहट्ट-जंताणि कट्टई तह य ।
पञ्चुंबरि खीरतरू एयाण य कट्ठ वज्जिज्जा ॥ १०३

बिज्जउरि केलि दाडिम जमीरी दो हलिद्द अंबिलिया ।
बब्बूलि बोरि माई कणयमया तहवि नो कुज्जा ॥ १०४

एयाण जईये जडा पाडवसाओ पविस्सई अहवा ।
छाया वा जम्मि गिहे कुलनासो हवइ तत्थेव ॥ १०५

संमुहे मग्ग धड्ढा मसाण खग निलय खीर चिरदीहा ।
निंब बहेडय रुक्खा नहु कट्टिज्जति गिहहेऊ ॥ १०६

पाहाणमय थंम पीढ पट्ट च बारउत्ताई ।
एए गेहिविरुद्धा सुहावहा धम्मठाणेसु ॥ १०७

पाहाणमए कट्ठ कट्ठमए पाहणस्स थंमाइ ।
पासाए य गिहे वा वज्जियव्वा पयत्तेण ॥ १०८

पासाय-कूव-वावी-मसाण-मठ-रायमंदिराण च ।
पाहाण-इट्ट-कट्ठा सरिसममत्ता वि वज्जिज्जा ॥ १०९

सुगिहजलो उवरिमओ खिविज्ज नियमज्झि नन्नगेहस्स ।
पच्छा कहवि न खिप्पइ इय भणिय पुव्वसत्थंमि ॥ ११०

ईसाणाई कोणे नयरे गामे न कीरए गेहं ।
संतलोयाण असुहं अंतिमजाईण रिद्धिकरं ॥ १११

देव-गुरु-वण्हि-गोधण-संमुहे चरणे न कीरए सयणं ।
उत्तर सिर न कुज्जा न नग्गदेहा न अल्लपया ॥ ११२

---

*मु पु पाठभेदो यथा–'सम्मेपि मारवहा मूलगिहे पणिसुत्ति कीरंति ।
पीढ पुण पगमुत्ते उवरयगुंजारि-मडिरेसु' ॥ १८५ ॥

१ अरपि । २ पाडिपसा, पाडोसा । ३ सुमुख । ४ बारउत्ताणं । ५ विरिकरं ।
६ संमुह ।

धुत्तामच्चासन्ने परवत्थुदले चउप्पहे न गिहं ।
गिह-देवलपुव्विल्लं मूलदुवारं न चालिज्जा ॥ ११३

गो-वसह-सगडठाणं दाहिणए वामए तुरंगाणं ।
गेहस्से वारभूमी संलग्गा साल ऐयाणं ॥ ११४

गेहाउ वाम दाहिण अग्गिम भूमी गहिज्ज जइ कज्जं ।
पच्छा कहव न लिज्जइ इय भणियं परमैनाणीहिं ॥ ११५

॥ इति श्रीचन्द्राङ्गज ठक्कुर-फेरू-विरचिते वास्तुसारे
गृहलक्षणप्रकरणं प्रथमं समाप्तम् ॥



---

१ गिहबाहिरभूमिए। २ साला ठाणं। ३ पुव्वनाणीहिं।

[द्वितीय विम्बपरीक्षाप्रकरणम् ।]

इय गिहलक्खणभाव भणिय भणामित्थ बिंबपरिमाण
गुण-दोसलक्खणाइ सुहासुह जेण नज्जेइ ॥ १

छत्तत्तयउत्तारं भाल-कवोलाउ सवण-नासाओ ।
सुहय जिणचरणग्गे नवग्गहा जक्ख-जक्खिणिया ॥ २

बिंबपरिवारमज्झे सेलस्स य वण्णसंकरं न सुहं ।
समअंगुलप्पमाण न सुंदर हवइ कइयावि ॥ ३

अन्नुन्नजाणु-कंधे तिरिए केसंत अंचलंते य ।
सुत्तेग चउरंसं पज्जंकासण सुह बिंबं ॥ ४

नव ताल हवइ रूवं रूवस्स य बारसंगुलो तालो ।
अंगुल अट्ठहियसय उड्ढ चासीण छप्पन्नं ॥ ५

भाल १ नासा २ वयण ३ गीव ४ हियय ५ नाहि ६ गुज्झ ७ जघाइ ८ ।
जाणु ९ य पिंडि १० य चरणा ११ इक्कारस ठाण नायव्वा† ॥ ६
चउ ४ पंच ५ वेय ४ रामा ३

रवि १२ दिणयर १२ सूर १२ तह य जिण २४ वेया ४ ।
जिण २४ वेय ४ मायसंखा कमेण इय उड्ढरूवेण ॥ ७
भाल १ नासा २ वयण ३ गीव ४ हियय ५ नाहि ६ गुज्झ ७ जाणू य ८ ।
आसीणबिंबमाण पुव्वविही अंक संसाइ ॥ ८

---

१ जाणिज्जा । २ चासीण ।

† मुद्रितपुस्तके पाठान्तररूपेण उद्धृतः पाठः-
भाउं नासावयणं थणसुत्तं नाहि गुज्झ ऊरू य ।
जाणुय जंघा चरणा इय दह ठाणाणि जाणिज्जा ॥ ६ ॥
चउ पंच वेय तेरस चउदस दिणनाह तह य जिण वेया ।
जिण वेया मायसंखा कमेण इय उड्ढरूवेण ॥ ७ ॥

मुहकमलु चउदसंगुल कन्नंतरि वित्थरे दह गीवा ।
छत्तीस उरपएसो सोलह कडि सोल तणुपिंड ॥ ९
कनु दह सोल वित्थरि चउ उयरे तिन्नि हिट्ठि लउलि खण ।
नक्कु ति वित्थरि दुदए सिरिवच्छो दु दह तिय पिहुलो[1] ॥ १०

[पत्रदयन्तरं मुद्रितपुस्तके निम्नलिखिता गाथा अधिका उपलभ्यन्ते–
नकसिहागम्भाओ पगतरि थमसु चउरदीहवे ।
दिपहुदइ इकु डोला दुमाय मउडहु छदीहे ॥ १
नक्कु ति वित्थरि दुदए पिंडे नासग्गि इकु अद्धु सिहा ।
पण माय अहर दीहे वित्थरि एगगुल जाण ॥ २
पण उदइ चउ वित्थरि सिरिवच्छं थमसुथमव्वंमि ।
दिवड्ढंगुलु पणवड्ढ वित्थरं उदयि नाहेग ॥ ३]

सिरिवच्छ सिहिण कक्खतरमि तह मुसल पण सरड्ढ ५।५।८ कंमे ।
मुणि ७ चउ ४ रवि १२ डुे ८ वेया कुंकुणी मणिबधु जघ जाणुपय ॥ ११

[अत्र पुन मु० पु० पत्रद्वापानन्तरं अधोगता अधिका गाथा विद्यन्ते–
थमसुथ अहोमाए मुय बारस अंस उवरि छहि कंध ।
नाहीउ किरइ बड्ढ कमाओ केस अंताओ ॥ १
कर-उयर अंतरेगं चउ वित्थरि नव दीहि उच्छगा ।
कलमडु दुदय ति वित्थरि कडुणी कुच्छिवरे तिन्नि ॥ २
थंमसुथाओ पिंडिय छ नीव दह कमु दु सिहय दु माल ।
इ चिबुक सच सझोवरि समसंधी अद्धु पयसारा ॥ ३
जाणुअ सहसुयाओ चउदस सोलस अद्धार पयसारं ।
समसुथ आम नाही पयकंकम आम छम्माय ॥ ४
पयसार गम्भरेहा पनरसमाएहिं चरण अंगुट्ठ ।
दीहंगुलीय सोलस चउदसि माण कणिट्ठिया ॥ ५

मुद्रितपुस्तके पाठभेदो यथा–
कमु दह तिन्नि वित्थरि अड्ढाई दिट्ठि इकु आयारे ।
केसंत पड्ढ समसिरु सोय पुण नयणराह समं ॥ १०

१ मुसल छ पण अड्ढ कम्म । २ वसुवेया । ३ कुट्टिणी ।

[द्वितीय बिम्बपरीक्षाप्रकरणम् ।]

इय गिहलक्खणभाव भणिय भणामित्थ बिंबपरिमाण ।
गुण-दोसलक्खणाइ सुहासुह जेण नज्जेइ ॥ १

छत्तत्तयउत्तारं भाल-कवोलाउ सवण-नासाओ ।
सुहय जिणचरणग्गे नवग्गहा जक्ख-जक्खिणिया ॥ २

बिंबपरिवारमज्झे सेलस्स य वण्णसंकरं न सुह ।
समअंगुलप्पमाण न सुंदर हवइ कइयावि ॥ ३

अन्नुन्नजाणु-कंधे तिरिए केसंत अंचलंते य ।
सुत्तेग चउरंसं पज्जंकासण सुह बिंब ॥ ४

नव ताल हवइ रूव रूवस्स य बारसंगुलो तालो ।
अंगुल अट्ठहियसय उड्ढ चासीण छप्पन्न ॥ ५

भाल १ नासा २ वयण ३ गीव ४ हियय ५ नाहि ६ गुज्झ ७ जघाइ ८ ।
जाणु ९ य पिंडि १० य चरणा ११ इक्कारस ठाण नायव्वा† ॥ ६

चउ ४ पंच ५ वेय ४ रामा ३

रवि १२ दिणयर १२ सूर १२ तह य जिण २४ वेया ४ ।
जिण २४ वेय ४ भायसंखा कमेण इय उड्ढरूवेण ॥ ७

भालं १ नासा २ वयण ३ गीव ४ हियय ५ नाहि ६ गुज्झ ७ जाणू य ८ ।
आसीणबिंबमाण पुव्वविही अंक संखाइं ॥ ८

---

१ भणिया । २ चासीण ।

† मुद्रितपुस्तके पाठान्तररूपेण प्रस्तुतः पाठः–
भालं नासावयणं थणसुत्तं नाहि गुज्झ ऊरू य ।
जाणुअ जंघा चरणा इय दह ठाणाणि नायव्वा ॥ ६ ॥
चउ पंच वेय तेरस चउदस दिणनाह तह य जिण वेया ।
जिण वेया भायसंखा कमेण इय उड्ढरूवेण ॥ ७ ॥

मुहकमलु चउदसंगुल कन्नतरि वित्थरे दह ग्गीवा ।
छत्तीस उरपएसो सोलह कडि सोल तणुपिंडे ॥ ९
कमु वड सोल वित्थरि चउ उवरे तिन्नि हिट्ठि लउलि खण ।
नक्कु सि वित्थरि दुदए सिरिवच्छो दु वड तिय पिहुलो[1] ॥ १०

[एतदनन्तरं मुद्रितपुस्तके निम्नलिखिता गाथा अधिका उपलभ्यन्ते—

नक्खसिहागम्भाओ एगंतरि चक्खु चउरदीहत्ते ।
तिभठदर इकु सोलह दुभाइ मउहकु छत्तीसे ॥ १
नक्कु ति वित्थरि दुदए पिंडे नासग्गि इकु अद्ध सिहा ।
पण भाय अहर दीहे वित्थरि एगंगुल जाण ॥ २
पण उदइ चउ वित्थरि सिरिवच्छं थणमुहमज्झंमि ।
दिवड्ढंगुल थणवट्टं वित्थरं उदयि नाहेगं ॥ ३]

सिरिवच्छ सिहिण कक्खंतरंमि तह मुसल पण सरङ्क ५।५।८ कमे ।
मुणि ७ चउ ४ रवि १२ ड्डे ८ वेया कुंभुणी मणिबंधु जघ जाणुपय ॥ ११

[अत्र पुन: मु० पु० एतद्गाथानन्तरं अमोगता अधिका गाथा विद्यन्ते—

चणमुच अहोभाए भुय बारस अंस उवरि छहि कंध ।
नाहीउ किरइ वई कंवाओ केस अंताओ ॥ १
कर-उयर अंतरेगं चउ वित्थरि नव दीहि उच्छंग ।
बलवद्ध दुदय ति वित्थरि कुहुणी कुच्छिंतरे तिन्नि ॥ २
थंभसुणाओ पिंडिय छ जीव दह कमु दु सिहय दु भाल ।
दु चिबुक सत्त सहोवरि भुयसंधी अट्ठ पयसारा ॥ ३
जाणुअ मुहसुणाओ चउदस सोलस अढार पासारं ।
समसुत्त आय नाहीं पयकमय आय छब्भाय ॥ ४
पइसार गब्भरेहा पनरसभागहिं चरण अंगुट्ठं ।
दीहंगुलीय सोलस चउदसि भाए कणिट्ठिया ॥ ५

मुद्रितपुस्तके पाठभेदो यथा—

कमु दह तिन्नि वित्थरि अहाई दिट्ठि इकु आधारे ।
केसंत भट्ठ समसिरु सोय पुण नयणरेह समं ॥ १०

१ मुसल छ पण अट्ठ कमे । २ वसुवेया । ३ कुहिणी ।

करयल गम्भाउ कमे दीहंगुलि नेहे पविक्खमिया ।
छच्च कणिट्ठिय मणिया गीवुदए तिन्नि नायव्वा ॥ ६
मज्झि मइस्सयगुलिया पण दीहे पविक्खमिअ चउ चउरो ।
ठहु अंगुलि माय तियं नह इक्किक्क ति अंगुट्ठं ॥ ७]

अंगुट्ठसहियकरयल वट्ट सत्तंगुलस्स वित्थारे ।
चरण सोलस दीहे तयद्धि वित्थिन्न चउ उदए ॥ १२ ॥

[पतद्गाथानन्तरं मुद्रितपुस्तके निम्नगतैका गाथा अधिका लभ्यते–

गीव तह कन्न अंतरि खंधे य वित्थारि दिवड्ढ उदह तिग ।
अंचलिय अट्ठ वित्थरि गहिय मुह जाव दीहेण ॥ १

छब्भाय अहरदीहे चक्खुपण दीह अद्धपिहुलत्ते ।
तिन्नि सिहिण चउ नाही नासा उर नाहि मुक्षेग‡ ॥ १३

केसंत सिहा गहिय पचहु कमेण अंगुल जाण ।
पउमुद्धरेहचक्क करचरण विहूसियं निच्च ॥ १४

[मुद्रितपुस्तके पतद्गाथानन्तरं निम्नोद्धृता गाथा अधिका लभ्यन्ते–

नक सिरिवच्छ नाही समगब्भे बंभसुत्त जाणेह ।
तत्तो य सयलमाणं परिगरबिंबस्स नायव्वं ॥ १
सिंहासणु बिंबाओ दिवड्ढओ दीहि वित्थरे अद्धो ।
पिंडेण पाउ चडिओ रूवग नव अहव सत्त जुओ ॥ २
उभयदिसि जक्ख-जक्खिणि केसरि गय चमर मज्झि चक्कधरी ।
चउदस बारस दस तिय छ भाय कमि इय भवे दीहं ॥ ३
चक्कधरी गरुडंका तस्साहे धम्मचक्क उभयदिसं ।
हरिणजुअं रमणीयं गहियमज्झंमि जिणचिण्हं ॥ ४
चउ कणइ दुन्नि छज्जइ बारस हरिथि दुन्नि अड कणए ।
अड अक्खरवट्टीए एय सीहासणस्सुदयं ॥ ५
गहिय-सम-वसुभाया तत्तो इगतीस चमरधारी य ।
तोरणसिरं दुवालस इय उदयं पक्खवायाण ॥ ६
सोलस भाए रूव थुइतियसमये छहि बराली य ।
इय वित्थरि बावीसं सोलस पिंडेण पक्खवाय ॥ ७

१ वित्थारे । ‡ मु पु भासीयं गाथा ।

छप्पद्दं दसमायं पंकयनालेग तेर मालधरा ।
दो माए थुंमुलिए तद्दहु वसभर-बीणघरा ॥ ८
तिलयमज्झमि घण्टा दुमाय थमुलिय छवि मगरमुहा ।
इम उमयदिसे चुलसी दीह दउलस्स आगेहं ॥ ९
चउवीसि माइ छत्तो बारस तस्सुदइ अट्ठि सखधरो ।
छहि वेणुपत्तवल्ली एव दउलुदए पन्नास ॥ १०
मालधर सोलसंसे गईंद अट्ठारसमि ताणुवरे ।
हरिणिदा उमयदिसिं तत्तो अ दुंदुहिअ संखी य ॥ ११
छत्तत्तय वित्थारं वीसंगुल निग्गमेण दह मायं ।
भामंडल वित्थारं बावीस अट्ठ पइसारं ॥ १२
विंबद्धि दउलपिंड छत्तसम गेहवइ नायव्व ।
थमसुत्तसमा दिट्ठि चामरधारीण कायव्वा ॥ १३
नह हुंति पव तित्था इमेहिं माणेहिं तेवि पुण कुञ्जा ।
उस्सग्गियस्स जुअलं बिंबद्धुग मूल बिंबेग ॥ १४]

वरिससयाओ उड्ढ ज बिंब उत्तमेहिं संठविय ।
विअल्य(यले)गु वि पूइज्जइ त बिंय निष्फल न जओ ॥ १५
मुह-नक्क-नयण-नोहिं कडिभगे मूलनायग चयह ।
आहरण-वत्थ-परिगर-चिन्हाउहमगि पूइज्जा ॥ १६
धाउलेवाइ बिंब विअल्य(यले)ग पुणवि कीरए सज्ज ।
कट्ठ-रयण-सीलमय न पुणो सज्ज च कईयावि ॥ १७
पाहाणलेवकट्ठा दंतमया चित्तलिहिय जा पडिमा ।
अप्परिगर-माणाहिय न सुन्दरा पूयमाण गिहे ॥ १८
इक्कंगुलाइ पडिमा इक्कारस जाम गेहि पूइज्जा ।
उड्ढ पासाइ पुणो इय भणिय पुव्वसूरीहिं ॥ १९
नह-अंगुलीय-बाहा-नासा-पयभगिणुक्कमेण फल ।
सत्तुभय-देसभग बंधण-कुलनास-दव्वखय ॥ २०

---

१ निष्फलं । २ माही । ३ सेस ।

पयपीढ-चिन्ह-परिगरभंगे जण-जाण-भिच्चहाणि कमे ।
छत्त-सिरिवच्छ-सवणे लच्छी-सुह-बंधवाण खय ॥ २१
पडिमा रउद्द जा सा कारावय हंति सिप्पि अहियंगा ।
दुव्वण्णे दव्वविणासा किसोयरा कुणइ दुब्भिक्खं ॥ २२
बहुदुक्ख वक्कनासा हस्संग खयंकरी य नायव्वा ।
नयणनासा कुनयणा अप्पमुहा भोगहाणिकरा ॥ २३
कडिहीणायरियहया सुय-बंधव हणइ हीणजंघा य ।
हीणासण रिद्धिहया धणक्खया हीणकर-चरणा ॥ २४
उत्ताणा अत्थहरा वक्कग्गीवा सदेसभंगकरा ।
अहोमुहा य सचिंता विदेसगा हवइ नीचुच्चा ॥ २५
विसमासण वाहिकरा रोरकराऽनायदव्वनिप्पन्ना ।
हीणाहीयंगपडिमा सपक्ख-परपक्खकट्ठकरा ॥ २६
उड्ढमुही धणनासा अप्पूया तिरियदिट्ठि विन्नेया ।
अइघट्टदिट्ठि असुहा हवइ अहोदिट्ठि विग्घकरा ॥ २७
चउमुह सुराण अस्सुह हवंत केसंत उप्परे जइ ता ।
करण-करावण-थप्पणहाराणप्पाण देसहया ॥ २८
चउवीस जिण नवग्गह जोइणि चउसट्ठि वीर बावन्ना ।
चउवीस जक्ख-जक्खिणि दह दिहवइ सोलै विज्जसुरी ॥ २९
नव नाह सिद्ध चुलसी हरि-हर-बंभिंद-दाणवाईणं ।
वन्नंक-नाम-आयुह वित्थरगंथाउ जाणिज्जा ॥ ३०

॥ इति परमजैन-श्रीचन्द्राङ्गज-ठक्कुर-फेरुविरचिते वास्तुसारे बिम्बपरीक्षाप्रकरणं द्वितीयं समाप्तम् ॥

---

१ दुब्भस । २ बउमय, चउमेम । ३ सोलस ।

[तृतीय प्रासादविधिप्रकरणम् ।]

भणिय गिहलक्खणाइं बिंबपरिक्खाइँ सयलगुणदोसं ।
संपइ पासायविही संखेवेण निसामेह ॥ १

पढम गड्डावरयं जलंतं अह कक्करंतं भरियव्वं ।
कुम्मनिवेसं अट्ठ खुरसिला तयणु सुत्तविही ॥ २

पासायाओ अद्ध तिहायपाय च पीढउदओ य ।
तस्सद्धि निग्गमो हुइ उववीढु जहिच्छ माण तु ॥ ३

अड्डथर १ फुल्लियओ २ जाडमुहो ३ कणउ ४ तह य कयवाली ५ ।
गय १ अस्स २ सीह ३ नर ४ हंस ५ पंच थर हय भवे पीठ ॥ ४

सिरिविजओ १ महापउमो २ नंदावत्तो य ३ लच्छितिलओ ४ य ।
नरवेय ५ कमलहंसो ६ कुंजर ७ पासाय सत्त जिणो ॥ ५

[इतोऽग्रे मुद्रितपुस्तके निम्नोक्ता अधिका गाथा लभ्यन्ते-

बहुभेया पासाया अस्संखा विस्सकम्मणा भणिया ।
तत्तो य केसराई पणवीस भणामि मुल्लिल्ला ॥ १ ॥
केसरिअ सव्वभद्दो सुनंदणो नंदिसालु नंदीसो ।
तह मंदिरु सिरिवच्छो अमिअब्भवु हेमवंतो अ ॥ २ ॥
हिमकूडु कइलासो पुहविजओ इंदनीलु महनीलो ।
भूधरु अ रयणकूडो वइडुज्जो पउमरागो अ ॥ ३ ॥
वज्जंगो मुउडुज्जलु अइरावओ रायहंसु गरुडो अ ।
वसहो अ तह य मेरू एए पणवीस पासाया ॥ ४ ॥
पण अंडयाइ सिहरे कमेण चउवुड्ढि जा हवइ मेरू ।
मेरूपासाय अंडयसंखा इगहिय सयं जाण ॥ ५ ॥
एएहि उवजंती पासाया विविह सिहरमाणाओ ।
नव सहस्स छ सय सत्तर विस्सरगयाओ ते नेया ॥ ६ ॥
चउरंसंमि उ खित्ते अट्ठाइ दु वुड्ढि जाव बावीसा ।
भायविराड एव सव्वेसु वि देवभवणेसु ॥ ७ ॥

---

१ निसा० । २ गड्डाविवरं । ३ अस्संतं । ४ कक्करतं । ५ कुम्मह । ६ होइ ।

चउकूणा चउभद्दा सव्वे पासाय हुंति नियमेण ।
कूणस्सुभयदिसेहिं वलाइ जा हुंति भद्दाइ ॥ ६
पडिरह १ वोलिंजरया २ नदी ३ सुकमेण ति पण सत्त वला ।
पल्लविय करणिक अवरस्स भद्दस्स दुण्ह दिसे ॥ ७
दो भाय कूणओ हुंइ कमेण पाऊण जा भवे नवी ।
पाय०।, एग १, दुसड्ढ २॥, पल्लविय करणिय भद्द ॥ ८
भद्दद्धं दस भाय तस्साओ मूल नासिय एग ।
पउणाति तिय सवातिय २॥।) ३) ३।) वैलेहिं सुकमेण नायव्वं ॥ ९
कूण पडिरह य रह भद्द सुहभद्द मूलसंगाइ ।
नवी करणिक पल्लव तिलय तवंगाइ भूसणय ॥ १०

॥ इति विस्तर ॥

खुर१ कुम्भ२ कलस३ कइवलि४ मची५ जघा य६ छज्जि७ उरजघा ८ ।
भरणि ९ सिरवट्टि १० छज्जय ११ वइराड १२ पहारु १३ तेर थरा ॥ ११

१	३	१॥	१॥
१॥	५॥	१	२
१॥	१॥	२	१॥

१॥

इग तिय दिवड्ढ तिहुँडे
पण सड्ढा इग दु दिवड्ढ दिवड्ढो य ।
दो दिवड्ढ दिवड्ढ भाया
पणवीसं तेर थरमाण ॥ १२
पासायस्स पमाण गणिज्ज सहमित्ति कुम्भगथराओ ।
तस्स य दस भागाओ दो दो भित्तीहिं रस ६ गब्भे ॥ १३
इग दु ति चउ पण हत्थे पासाइ खुराउ जा पहारथरो ।
नव सत्त पण ति एग अंगुलजुत्त कमेणुदय ॥ १४
इच्चाइ सन्नाणते ५० पडिहत्थे चउदसगुल विहीणा ।
इय उदयमाण भणिय अओ य उड्ढ भवे सिहर ॥ १५

---

1 पडिहोंति । २ दुग्नि । ३ दो भाय हवइ कूणो । ३ करणिकं । ४ कमण पयंपि पडिपहाईसु । ५ तिसुकमि । ६ पहारू ।

पाऊणे दूण भूमजु नागरु सतिहाउ दिवडु सप्पाओ ।
दवड सिहरो दिवडो सिरिवच्छो पउणे दूणो य ॥ १६

छज्जउड उवरि तिहु दिसि रहिया जुयबिंब उवरि उरसिहरा ।
कूणेहिं चारि कूडा दाहिण वामग्गि दो तिलया ॥ १७

उरसिहर कूडमज्झे सुमूलरेहाय उवरि चारि ल्या ।
अंतरि कूणेहि रिसी आवलसारो य तस्सुवरे ॥ १८

†पडिरह विक्खमज्झे आमलसारस्स वित्थरद्धुदए ।
गीवडयचंदिकामलसारिय पउणु सवा इगिगो ॥ १९

आमलसारय मज्झे चवणखट्टासु सेयपट्टसुया ।
तस्सुवरि कणयपुरिसो घयपूर तओ य वरकलसो ॥ २०

पाहणकट्ठिट्टमओ जारिसु पासाउ तारिसो कलसो ।
जहसत्ति पइठ पच्छा कणयमओ रयणजडिओ वाँ ॥ २१

[एतद्गाथानन्तरं मुद्रितपुस्तके मिलितं गाथाद्वयमधिकं विद्यते–
छजाओ जाव कप [मायं] इगवीस करिवि वपो अ।
नव अध जाव तेरस दीहुदये हवइ सठपासो ॥ १
उदयद्धि विहियपिंडो पासायनिलाड तिक य तिलउ प ।
तस्सुवरि हवइ सीहो मंडपकलसोदयस्स समा ॥ २]

सुहय इगदारुमय पासाय कलस-दंड-मक्कडिय ।
सुहकट्ठ सुदिढं कीरं सीसम खयरंजण महुव ॥ २२

नीरतरदल विभत्ती भद्द विणा चउरसं च पासाय ।
पसायारं सिहरं करंति जे ते न नदंति ॥ २३

---

१ दूणु पाऊणु । २ दाहिण । ३ पऊण । ४ अंतर । ५ चंदिका । ६ पऊण सपाइगिको । ७ अ । ८ सुदिढ ।

† पडिरह विक्खमज्झे आमलसारस्स वित्थरो होइ ।
तस्सद्धेण य उदओ तं मज्झे ठाण चत्तारि ॥
गीवंडय चंडिका आमलसारीय कमेण तब्भागा ।
पाऊण सपाउ इगेगो आमलसारस्स एम विही ॥
–इति पाठान्तरं मुद्रितपुस्तके ।

अद्धगुलाइ कमसो पायगुल वुड्डि कणयपुरिसो य ।
कीरइ धुव पासाए इग हत्थाई खन्धाण ते (५०) ॥ २४

इगहत्थे पासाए दड पउणगुल भवे पिंड ।
अद्धगुल वुड्डि कमे जा कर पन्नास कमुदए ॥ २५

निप्पन्ने वरसिहरे धयहीणसुरालयंमि असुरठिई ।
तेण धय धुव कीरइ दडसमा मुक्खसुक्खकरा ॥ २६

पासायाओ दुवारं हत्थप्पइ सोलसंगुल उदए ।
नैव पचम वित्थारे अहवा पिहुलाउ दूणुदए ॥ २७

[अत्र मुद्रितपुस्तके एषा गाथा अधिका विद्यते–

उदयद्धि वित्थरे बारे आयदोस विसुद्धए ।
अंगुलं सड्ढमद्धं वा हाणि वुड्ढि न दूसए ॥ १]

निल्लाडि बारउच्चे बिंब साहेहि हिट्ठि पडिहारा ।
कूणेहि अट्ठ दिसिवइ जघा-पडिरहइ पिक्खणय ॥ २८

पासायतुरिय ४ भागप्पमाणबिंब सउत्तम भणियं ।
राउट्टे रयण विद्रुम धाउमय जहिच्छमाण वरं ॥ २९

दस भाय कयदुवार उदुवर उत्तरंग मज्झेण ।
पढमसे सिवदिट्ठी बीए सिवसत्ति जाणेह ॥ ३०

सयणासण सुर तइए लच्छीनारायणं चउत्थे य ।
वाराह पचमए छट्ठंसे लेवचित्तस्स ॥ ३१

सासण सुर सत्तमए सत्तम सेत्तमि वीयरागस्स ।
चडिय भइरव अट्ठमे नवमिंदा छत्त चमरधरा ॥ ३२

दसमे भाए सुन जक्खा गधव्व-रक्खसा जेण ।
हिट्ठाउ कमि ठविज्जइ सयलसुराण च दिट्ठी य ॥ ३३

---

१ पासायस्स । २ हत्थंपइ । ३ आ हत्थ पन्नास इति तिगयुग वुड्ढि कमाउ पन्नासं । ४ रायट्ट । ५ सत्तंसि । ६ अट्ठंसि ।

भागट्ठ भणतेगे सत्तम सत्तमि[1] दिट्ठि अरहंता[2] ।
गिहदेवाले[3] पुणेव कीरइ जह होइ सुहिकर ॥ ३४

गब्भगिहद्धे[4] पणसा जक्खा पढमसि देवया बीए ।
जिण-किन्ह-रवी तइए बमु चउत्थे सिव पणगे ॥ ३५

नहु गब्भे ठाविज्जइ लिंग गब्भे चइज्ज नो कहवि ।
तिलअद्ध तिलमत्त[5] ईसाणे किं पि आसरिउ[6] ॥ ३६

भित्तिसलग्गबिंब उत्तिमपुरिस च सव्वहा असुह ।
चित्तमय नागाइ हवंति एए सहावेण ॥ ३७ ॥

जगई पासायंतरि रस ६ गुणं[8] पच्छा नवग्गुणा पुरओ ।
दाहिण-वामे तिउणा इय भणिय खित्तमज्झाय ॥ ३८

पासायकमलियग्गे गूढक्खयमडव तउ छक्क ।
पुणु[11] रंगमडव तह तोरण सुबलाणमडवय[12] ॥ ३९

दाहिण-वामदिसेहिं सोहामडव गउक्खजुय साला ।
गीय नट्टविणोय गधव्वा जत्थ पकुणंति ॥ ४०

पासायसम विउण दिवड्ढय[13] पउण दूण वित्थारे[14] ।
सोवाण तिन्नि[15] उदए चउकीओ मडवा होंति ॥ ४१

कुम्मी थम भरण सिरपट्ट इग पंच पउण सप्पाय ।
इग इय नव भाग कमे मडव पिहुलाउ[16] अद्धुदए ॥ ४२

पासायअट्ठमसे पिंढ मकडिय-कलस-थभस्स ।
दसमसि बारसाहा सपडिग्घहु कलसु[17] दूणुदए ॥ ४३

पट्टस्स आयहिट्ठ ऊज्जयहिट्ठ च सव्वसुवेग ।
उदुबरसम कुभिय थमसमा थम जाणेह ॥ ४४

---

१ सत्तंसि । २ अरिहंता । ३ देवालु । ४ गिहद्ध । ५ तलमित्तं । ६ आसरिओ । ७ समासेण । ८ गुणा । ९ मज्झाय । १० कमलउ भग्गे । ११ पुण । १२ सबलाण । १३ दिवड्ढयं । १४ वित्थारो । १५ ति उदय चउक्कय पय । १६ पहाउ अद्धुदए । १७ कलसु दियड्ढुदए ।

जलनीलयाउ फरिसं करतरे चउ जवा कमेणुच्च ।
जगईय मिचि उदए छज्जयं सम चउदिसेहिं पि ॥ ४५

अग्गे दाहिण-वामे अट्ठट्ठ जिणिंद-गेह चउवीसं ।
मूल सेलगाउ इम पकीरए जगइ मज्झम्मि ॥ ४६

रिसहाई जिणपती पासायाओ य वामियदिसाओ ।
ठाविज्ज पिट्ठिमग्गे सव्वेहि जिणालए एव ॥ ४७

चउवीसतित्थमज्झे ज एग मूलनायग हवइ ।
पतीइ तस्स ठाणे सरस्सई ठवसु निब्भंत ॥ ४८

चउतीस वाम-दाहिण नव पिट्ठी अट्ठ पुरउ देहुरियं ।
पासाय मूल एग बावन्नजिणालयं एव ॥ ४९

पणवीसं पणवीस दाहिण-वामेसु पिट्ठि इक्कारं ।
दह अग्गे नायव्व इय बाहत्तरि जिणिंदाल ॥ ५०

अंगविभूसणसहिय पासाय सिहरबद्ध-कट्ठमय ।
नहु गेहे पूइज्जइ न धरिज्जइ किंतु जंत्त वरं ॥ ५१

जत्त कए पुणु पच्छा ठविज्ज रहसाल अहव सुरभवणे ।
जेण पुणो तस्सरिसो करेइ जिणजत्त वर संघो ॥ ५२

गिहदेवाल कीरइ दारुमय विमाण पुप्फय नाम ।
उववीढ पीढफरिसं जहुत्त चउरंस तस्सुवरे ॥ ५३

चउ थम चउ दुवारं चउ तोरण चउ दिसेहि छज्जउड ।
पच कणवीर सिहरं इंग ति दुवारेग सिहरं वा ॥ ५४

अह मित्ति-छज्ज ओवम सुरालय आयुसुद्ध कायव्व ।
सम चउरंसं गब्भे तस्साउ सवायओ उदए ॥ ५५

---

१ मासिपाउ । २ छज्जइ । ३ सिलागाउ । ४ सीहदुवारस्स दाहिणदिसाओ । ५ पुट्ठि । ६ देहरयं । ७ मूल पासाय । ८ जत्तु । ९ तस्सुवरिं । १० एग दु ति दारेग । ११ तत्तो अ सवायओ उदयस्स ।

गब्भाउ छज्जओ हुइ सवाउ सतिहाउ दिवड्ढु वित्थारे ।
वित्थाराउ सवाओ उदएण य निग्गमे अद्धो ॥ ५६
छज्ज-उढ-थम-तोरणजुय उवरे मडओवम सिहरं ।
आलयमज्झे पडिमा छज्जयमज्झम्मि जलवट्ट ॥ ५७
गिहदेवालयसिहरे धयवड नो करिज्ज[1] केइयावि[2] ।
आमलसारयं[3] कलस कीरइ इय भणिय सत्येहिं ॥ ५८
सिरिधधकलस-कुलसमवेण चदासुएण फेरेण ।
कन्नाणपुरठिएण य निरक्खिउ पुव्वसत्थाइ ॥ ५९
†सपरोवगारहेऊ नयण-मुणि-राम-चद (१३७२) वरिसम्मि ।
विजयदसमीइ रइय गिहपडिमालक्खणाईण ॥ ६०

इति परमजैनश्रीचन्द्राङ्गजठक्कुरफेरूविरचिते वास्तुसारे प्रसादविधिप्रकरण तृतीय समाप्त ॥

॥ एव वास्तु पयरणं त्रय गाथा २०८ ॥



---

१ इवर छ्त्रु । २ करिजइ कयापि । ३ आमलसार ।

† मुद्रितपुस्तके इयं गाथा पूर्वं लिखिता पश्चाद् उपरितनगाथा लिख्यते ।

ठक्कुर फेरू रचिता

खरतरगच्छयुगप्रधानचतु पदिका।

नमो जिनाय।

सयल सुरासुर वंदिय पाय, वीरनाह पणमवि जगताय।
सुमरेविणु सिरि सरसइ देवि, जुगवरचरिउ भणिसु संखेवि ॥ १
सुहमसामि गणहर पमुह,
सिरि जुगपवर नाम वर मंत, सुमरहु अणुदिणु भत्तिजुय।
लीलइ तरिवि भवोवहि जेम, कमि कमि पावहु सिद्धिसुह॥ धूवक
वद्धमाणजिणपट्टि पसिद्धु, केवलनाणीगुणिहि समिद्धु।
पंचमु गणहरु जुगवरु पढमु, नमहु सुहमसामि गुरु अममु ॥ २
भज्जा अट्ठ पंच सय तेण, इक्कि रयणि पडिबोहिय जेण।
सुगुरुपासि लिउ संजमभारु, सरहु सरहु सो जंबुकुमारु ॥ ३
पभवसूरि सिज्जंभउ सुगुरु, जसोभद्दु सूरीसरु पवरु।
सिरि संभूयविजउ मुणितिलउ, पणमहु भद्दबाहु गुणनिलउ ॥ ४
भद्दबाहु सूरीसरपासि, चउदस पुव्व पढिय गुणरासि।
भंजिउ जेण मयणमडवाउ, जयउ सु थूलिभद्दु मुणिराउ ॥ ५
दूसमकालि वुलिउ जिणकप्पु, अज्ज महागिरि गुरु माहप्पु।
अज्ज सुहत्थि थुणहु धरि भाउ, जिणि पडिबोहिउ संपइ राउ ॥ ६
संतिसूरि कय संघह संति, चउदिसि पसरिय जसु वरकित्ति।
तासु पट्टि हरिभद्दु मुणिंदु, मोहतिमिरभर हरण दिणिंदु ॥ ७
संडिलसूरि तह अज्ज समुदु, अज्ज मगु जणकइरवचंदु।
अज्ज धम्मु धर पयडिय धम्मु, भद्दगुत्तु दंसिय सिवसम्मु ॥ ८
वयरसामि पभाविय तित्थु, अज्ज रक्खिउ बोहिय जणसत्थु।
अज्ज नंदि गुरु थवहु नरहु, अज्ज नागहत्थीसरु सरहु ॥ ९
रेवयसामि सूरि खडिल्ल, जिणि उम्मूलिय भवदुहसल्ल।
हेमवंतु झायहु बहु भत्ति, तरहु जेम भवसायरु झत्ति ॥ १०

नागज्जोयसूरि गोविंद, भूइदिन्न लोहिच्च मुणिंद ।
दुसमसूरि उम्मासय सामि, तह जिणभद्दसूरि पणमामि ॥ ११
सिरि हरिभद्दसूरि मुणिनाहु, देवभद्दसूरि वर जुगवाहु ।
नेमिचंद चउजालकित्ति, उज्जोयणसूरि कंचणदित्ति ॥ १२
पयडिय सूरिमंतमाहप्पु, रूविज्झाणि निज्जियकंदप्पु ।
कुंदुज्जल जस भूसिय भवणु, सलहहु वद्धमाणसूरि रयणु ॥ १३
अणहिलपुरि दुल्लह अत्थाणि, जिणसरसूरि सिद्धतु वखाणि ।
चउरासी आइरिय जिणेवि, लद्ध जसु वसहिमग्गु पयडेवि ॥ १४
जिणि विरईय कहा संवेग रंगसाल तह सत्थ अणेग ।
निमदेसण रंजिय नरराय, तसु जिणचंदसूरि सेवहु पाय ॥ १५
वर नव अंग विवित्ति उद्धरणु, थंभणि पास पयड फुडकरणु ।
अभयदेवसूरि मुणिवरराउ, दिसि दिसि पसरिय जसु जसवाउ ॥ १६

नदि न्हवणु बलि रहु सुपइठ,
तालारासु जुवइ मुणि सिठ ।
निसि जिणहरि जिणि वारिय अविहि,
थुणहु सु जिणवल्लहसूरि सुविहि ॥ १७

जोइणिचक्क उज्जेणिय जेण, बोहिउ जिणि नियझाणबलेण ।
सासणदेवि कहिउ जुगपवरु, सो जिणदत्तु जयउ गुरुपवरु ॥ १८
सहजरूवि निज्जिय अमरिंद, जिणि पडिबोहिय सावयविंद ।
पंच महव्वय दुद्धर धरणु, नंदउ जिणचंद सूरिसुणिरयणु ॥ १९
अजयमेरि नरवइपच्चक्खि, करि विवाउ तिहुयणजणसक्खि ।
जिणि पउमप्पहु लद्ध जयपत्तु, जिणवइसूरि जयउ सुचरित्तु ॥ २०
नयरि नयरि जिणमंदिर ठविय, तोरण दंड कलस धज सहिय ।
तेवीसा सउ दिक्खिय साहु, जिणसरसूरि जयउ गणनाहु ॥ २१

तसु पय पउमजोयणु भाणु, जस निम्मलु गुणगणह निहाणु ।
जुगपवरागम संसयहरणु, जिणपबोह सुरिसुहगुरु सरणु ॥ २२ ॥

तसु पट्टुद्धरु गुरु मुणिरयणु, मयणविणासणु सिवसुहकरणु ।
भवियलोयजण मणआणदु, संपइ जुगपहाणु जिणचंदु ॥ २३

इय इत्तिय सुहगुरु आमनइ, जिणचदसुरि जुगवर जो मनइ ।
सुजि रमइ सासय सियनारि, वलवि न पडइ इत्य ससारि ॥ २४

जक्खिणि जक्ख विउण चउवीस, विज्जादेवि चउगुणी वीस ।
इय चउ(स)ठि मिलि देहि असीस, जिणचदसुरि जिउ कोडि वरीस ॥ २५

संघसहिउ फेरू इम भणइ, इत्तिय जुगपहाण जो थुणइ ।
पढइ गुणइ नियमणि सुमरेइ, सो सिवपुरि वर रज्जु करेइ ॥ २६

तेरह सइताल्इ महमासि, रायसिहर वाणारिय पासि ।
चद तणुब्भवि इय चउपईय, कल्लाणइ गुरुभत्तिहि कहिय ॥ २७

सुरगिरि पच दीव सव्वेवि, चद सूर गह रिक्ख जि केवि ।
रयणायर घर अविचल जाम, संघु चउव्विहु नदउ ताम ॥ २८

॥ इति युगप्रधान चतुष्पदिका समाप्ता ॥ ७ ॥

जिणपबोह गुरराय चलणपकय वर अलिवलु ।
नवविह जिय दयकरणु मयण गय सिंह महाबलु ।
चदुज्जलु गुणनिमलु किंत्ति दस दिसिहि पसिद्धउ ।
दवणु पणदिय चउ कसाय गुणगणिहि समिद्धउ ।
सुरिंदु पणय घण जण सहिउ, वछिउ सुहियण निरु नरहु ।
रिउ अंतरंग मय अवहरणु पय पढमक्खरि गुरु सरहु ॥ १ ॥

॥ स० १४०३ फा० सु० ८ लि० ॥

परिशिष्टम्।

मूलप्रतौ ज्योतिषसारग्रन्थान्ते निम्नलिखितानि ज्योतिषविषयसम्बन्धानि कानिचित् स्फुटपद्यानि प्राप्तानि, तानि परिशिष्टरूपेणात्र मुद्रितानि।

लाभे विक्रमे खे शात्रुषु स्थितः शोभनो निगदितो दिवाकरः खेचरैः।
सुते तपो जलोंत्यगैर्ष्यार्किभिर्यदि न विध्यते तदा ॥ १
द्यूने जन्मे रिपु-लाभे खे त्रिगश्चन्द्रमाः शुभफलप्रदस्तदा।
खोत्स्मजोन्त्ये मृतिबन्धु धर्मगैर्विध्यते न विधुधैर्यदि ग्रहैः ॥ २
विक्रमाये रिपुगः शुभः कुजः स्यात्तदान्त्ये सुते धर्मगैः खगैः।
चेत्र विद्ध इनसूनुरप्यसौ किंतु मर्म घृणिना न विध्यते ॥ ३
खोर्यु शत्रु मृति खी ऽर्थगः शुभो शस्तदा न खलु विध्यते यदा।
आत्मजे त्रि नव आये नैधने प्रांत्यगैर्विधुभिर्न नभश्चरैः ॥ ४
खोर्ये धर्म तनेय द्यूनस्थितो नाकिनायकपुरोहितः शुभः।
रिष्फे रन्ध्र खे जलेत्रिगैर्यदा विध्यते गगनचारिभिर्न हि ॥ ५
आद्युताष्टमसुतो ऽर्थयार्यगो विद्ध आस्फुजिदशोभनः स्मृतः।
नैधनास्ते तनु कर्म धर्मधी लाभे वैरि-सहजैस्तखेचरैः ॥ ६
एवमत्र खचरा व्यधान्विताः सत्फल-नहि दिशन्ति गोचरे।
वामवेधविधिना त्वशोभना अप्यमी शुभफलं दिशन्त्यलम् ॥ ७

॥ इति ग्रहाणा वामवेध दक्षिणवेधयो फलम् ॥

सर्वेषामेव दोषाणां वर्जयेद् घटिकात्रयम्।
उत्पातमृत्युकाणानां सप्त पड् पञ्च नाडिका ॥ १
षड्पोऽप्येव जगदुः सिंहास्थोऽपि कृत्रपातगुरुम्।
समतिक्रान्तमघर्क्षो न विरुद्धः सर्वकार्येषु ॥ २
आत्मोपेक्षक पोषक वधकानिह जन्मराशि चन्द्राभ्याम्।
घटिकास्तिथिरसरुद्रार्द्धसार्द्धद्वयघाकलधरमान्ता ॥ ३

*

योगिनीचक्र प्रवक्ष्यामि दिव्यं परममुत्तमम्।
जयं च विजयं चैव येन जायन्ति भूतले ॥ १
इन्द्राणी पूर्वभागेषु योगिनी नाम नामतः।
प्रतिपदानवम्यां च उदयं कुरुते सदा ॥ २

उत्तरायां महिषीनाम योगिनी योगनामिनी ।
दशम्यां च द्वितीयायां उदय कुरुते सदा ॥ ३

एकादश्यां तृतीयायां मेषरूढा तु योगिनी ।
कुमारी नामविशेषा आग्नेयी दृश्यते यथा ॥ ४

श्वानपृष्ठिगता देवी चतुर्थी द्वादशी तथा ।
नैर्ऋत्यां दिशामाश्रित्य सिंहनारायणी सदा ॥ ५

वाराही योगिनी नाम सिंहारूढा धनुर्धरा ।
पञ्चम्यां त्रयोदश्यां च दक्षिणे उदयं सदा ॥ ६

वारुण्यां दिशामाश्रित्य ब्राह्मणी वृषगामिनी ।
चतुर्दश्यां तु षष्ठ्यां च उदयं कुरुते सदा ॥ ७

चटित्वा तु खरपृष्ठि चामुंडी चण्डरूपिणी ।
सप्तम्यां पूर्णिमायां च वायव्ये उदयं सदा ॥ ८

महालक्ष्मी महादेवी ईशान्यां वृषसंस्थिता ।
काके रूढा सदा देवी अमावास्याष्टमीदिने ॥ ९

एवं तु योगिनीचक्र ज्ञायते यस्तु मानवः ।
विजयं लभेत् संग्रामे युद्धेषु रणसङ्कटे ॥

द्यूते वा विवहारे वा विवादे जायते शुभम् ॥
श्वानकुर्कुटनाळानां मेषेण महिषादिषु ।
विजय जायते तस्य यस्य पृष्ठे तु योगिनी ॥

अथ सन्मुखयोगिन्यां संग्रामेषु रणेषु च ।
गम्यते युध्यते पुंसां न सिद्धिर्जायते क्वचित् ॥

॥ योगिनी चक्रम् ॥

——ı ı——

GOVERNMENT OF RAJASTHAN



RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

JODHPUR (INDIA)

Hon, Director Padmashree Muni Jinvijaya, Puratattvacharya



PUBLICATIONS

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

General Editor

PADMASHREE MUNI JINVIJAYA, PURATATTVACHARYA

DECEMBER 1961

PUBLICATIONS

Up to July 1961



RAJASTHAN PURATAN GRANTHAMALA

(General Editor—Padmashree MUNI JINVIJAYA, Puratattwacharya)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur November 1961

A. SANSKRIT

1 Praman manjari—by Sarvadeva with commentaries by Advayaranya Balbhadra and Vaman Bhatt, ed. by Pattabhiram Shastri, Ex Principal, Maharaja's Sanskrit College, Jaipur *now* Prof. of Darshan University of Calcutta. —Rs. 6 00

2 Yantraraja rachana—An astrological work written under orders of *Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur ed. by Late Pt.* Kedar Nath Jyotirvid, Editor Kavyamala Series. —Rs. 1 75nP

3. Maharshikul-vaibhavam Pt. I—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed. by Mahamahopadhyaya Pt. Giridhar Sharma Chaturvedi. —Rs. 10 75 nP

4 Maharshikul-vaibhavam Pt. II Text.—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed. by Pt. Pradumna Ojha —Rs. 3 50 nP

5 Tarksamgrah—by Annam Bhatt with commentary of Kshmakalyan Gani ed. by Dr Jitendra Jetli, MA., Ph D Prof. Ramananda Arts College, Ahemdabad. —Rs. 3.00

6. Karakasambandhodyota—by Rabhas Nandi, ed. by H P Shastri, M A., Ph D Vice Principal B. J Institute Vidya Bhawan Ahemdabad. —Rs. 1 75 nP

7 Vrittidipika—by Mouni Krishna Bhatt, ed by Purushottam Sharma Chaturvedi formerly Prof Mayo College Ajmer —Rs 2.00

8. Shabdaratnapradipa—by an unknown author ed. by H.P Shastri, M.A., Ph D., Vice Principal B. J Institute Vidya Bhawan, Ahemdabad. —Rs. 2.00

9 Krishnagiti—by Somanatha ed by Dr. Priyabala Shah M.A Ph. D D Litt. Prof Ramananda Arts College, Ahemdabad. —Rs. 1 75 nP

10. Nritt samgrah—a treatise on Indian Dance—by an unknown author ed. by Dr Priyabala Shah MA., Ph.D D Litt. Prof Ramananda Arts College, Ahemdabad. —Rs. 1 75 nP

11 Shringarharavali—by Shri Harsha Kavi ed. by Dr Priyabala Shah M A., Ph. D., D Litt., Prof Ramananda Arts College Ahemdabad. —Rs 2.75 nP

12. Rajvinod Mahakavyam—by Udairaj a medieval Sanskrit poem on the life and achievements of Mahmud Begra, Sultan of Ahemdabad, ed by G N Bahura M. A Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs. 2 25 nP

13 Chakrapanivijaya Mahakavyam—by Lakshmi Dhar Bhatt a romantic Sanskrit poem based on the love story of Usha and Aniruddha ed. by K.K. Shastri Curator and Prof B J Institute, Gujrat Vidya Sabha Ahemdabad. —Rs. 3 50 nP

14 Nrityaratna—Kosha Pt. 1—by Maharana Kumbhakarna Deva of Chittore; a long awaited authentic treatise on Indian Dance, ed. by R. C. Parikh Director B J Institute Gujrat Vidya Sabha Ahemdabad. —Rs 3 75

15 Uktiratnakar—by Sadhu Sunder Gani ed. by Puratattwacharya Muni Jinvijayaji Hon Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs 4 75 nP

16 Durgapushpanjali—by Late Mahamahopadhyaya Pt. Durga Prasad Dwivedi, ed. by G. D Dwivedi Lecturer Maharaja s Sanskrit College, Jaipur —Rs. 4 25 nP

17 Karnakutuhal and Shri Krishnalilamritam —by Mahakavi Bholanath a protege of Sawai Pratap Singh of Jaipur ed. by C N Bahura M.A., Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur —Rs. 1 50 nP

18 **Ishwarvilasa Mahakavyam**—by Kavikalanidhi Shri Krishna Bhatt a work based on the History of Jaipur written under orders and in the time of Maharaja Sawai Ishwari Singh son of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur The work bears an eye witness description of the Ashwamedha yajna performed by Sawai Jai Singh ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya with a foreword by late Dr P.K. Gode M.A. D Litt. Curator B O R. Institute, Poona. —Rs. 11 50 nP

19 **Rasadeerghika**—by Vidyaram Kavi a rare and abridged work on Sanskrit rhetorics, ed. by G.N Bahura, M A Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur. —Rs. 2.00

20 **Padya-muktawali**—A compilation of Literary and Historical poems of Krishna Bhatt a contemporary of Sawai Jai Singh of Jaipur ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya. —Rs. 4 00

21 **Kavyaprakash**—of Mammata with Samketa by Someshwar Bhatt, found in Jaisalmer Grantha Bhandar Edited by R. C Parikh Director B J Institute Gujrat Vidya Sabha Ahemdabad Pt. I Rs. 12 00

22. " Pt. II Rs. 8.25 nP

23 **Vasturatnakosha**—by an unknown author Edited by Dr Priyabala Shah M. A Ph. D., D Litt. Prof Ramanand Arts College, Ahemdabad. —Rs. 4 50 nP

24 **Dashkantha Vadham**—by late Mahamahopadhyaya Durga Prasadji Dwivedi, a poetical work on Ram-Charitra Edited by Shri Gangadhar Dwivedi, Prof Maharaja Sanskrit College Jaipur —Rs 4 00

25 **Bhuwaneshwari Mahastotram**—by Prithwidharacharya with commentry of Padmanabha edited by Shri G.N Bahura M A. Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur. —Rs. 3 75 nP

B. RAJASTHANI AND HINDI

1 **Kanadhade Prabandha**—by Mahakavi Padmanabha a famous

Rajasthani Historic Poem dealing with the chivalry of Kanadhade Choohan at the time of the attack of Alauddin Khilji on the fort of Jalore ed by Prof. K.B Vyas, M A Elphinstone College, Bombay —Rs. 12.25 nP

2. Kyamkhan Rasa—by Alaf Khan Nawab of Fatehpur (Shekhawati) a Poetical History of Kayamkhanis, the Muslim Rajpoots of Rajasthan ed. by Dr Dashrath Sharma, M A D Litt. Professor Hindu College, Delhi and Shri Agar Chand Nahata Bikaner —Rs. 4 75 nP

3 Lava Rasa—by Gopaldan Kaviya a contemporary description of the battle of Madhorajpura between the Chief of Lava and Ameerkhan of Tonk ed. by Mehtab Chand Khared Jaipur —Rs. 3 75 nP

4 Vankidas-ri-Khyat—a History of Rajasthan writen in Rajasthani prose by Vankidas, the famous Historian of Jodhpur ed by Prof Narottamdas Swami, M A Vice Principal Maharana Bhupal College Udaipur —Rs. 5 50 nP

5 Rajasthani Sahitya Sangrah Pt. I—A collection of old Rajasthani literary prose ed by Prof Narottamdas Swami M.A. Vice Principal, Maharana Bhupal College Udaipur —Rs. 2.25

6 Rajasthani Sahitya Sangrah Pt II—Three old Rajasthani stories i.e Bagdawatan Ri Vat, Pratap Singh Mahokam Singh Ri Vat and Veeramde Soneegara Ri Vat edited by P.L. Menaria M A., Sahitya Ratna Offig Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur —Rs. 2.75 nP

7 Kavindra Kalpalata —by Kavindracharya Saraswati a contemporary of Emperor Shahajahan, ed by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat Jaipur —Rs. 2 00.

8. Jugal Vilasa—a poem by Maharaja Prithvi Singh of Kushalgarh ed. by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, Jaipur —Rs. 1 75 nP

9 Bhagat Mala—a poetical work in Rajasthani by Charan

Brahma Dasji Dadupanthi, ed. by Udairaj Ujjwal Jodhpur —Rs. 1 75 nP

10 A Classified List of Manuscripts Pt. I—a list of 4000 manuscripts collected in The Rajasthan Oriental Research Institute upto the year 1955 —Rs. 7 50 nP

11 A Classified List of Manuscripts Pt. II—a list of 3855 Mss. collected in the Rajasthan Oriental Research Institute from Apr 1956 to March 1958 Edited by Shri G N Bahura Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur —Rs. 12 00.

12. A List of Rajasthani Manuscripts Pt. I—Collected in the Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur upto March 1958 Edited by Padmashri Muni Shri Jinvijaiji. —Rs. 4.50 nP

13 A List of Rajasthani Manuscripts—Pt. II—Mss collected during the year 1958 59. Edited by Purushottamlal Menaria M.A. Sahitya Ratna —Rs. 2.75

14 Munhata Nensiri Khyat Pt. 1—by Munhata Nensi of Jodhpur History of Rajasthan in Rajasthani prose edited by Shri Badri Prasad Sakaria. —Rs. 8 50 nP

15 Raghuwar Jas Prakash—by Charan Kishnaji Adha A work on Rajasthani rhetorics, edited by Shri Sitaram Lalas. —Rs. 8.25

16 Veer Van—by Dhadhi Badar a Rajasthani poem relating a few heroic events of Veeramji Rathod of Jodhpur Edited by Smt. Rani Laxmi Kumari Chundawat of Rawatsar —Rs. 4 50 nP

17 A Catalogue of Late Purohit Harinarayanji B. A. Vidyabhooshan Manuscripts Collection—edited by Shri G. N Bahura Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur and *Shri L. N Goswami*, Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs 6 25 nP

18 Sooraj Prakash Pt I—by Charan Karnidan Kaviya History of the Rathods of Jodhpur in Rajasthani Poem edited by Shri Sita Ram Lalas. —Rs. 8 00

19 Nehatarang—by Raoraja Budha Singhji Hada of Bundi A work on rhetorics, edited by Shri Rampratad Dadheech M A Lecturer Hindi Dept. Jaswant College Jodhpur. —Rs 4.00

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

B WORKS IN THE PRESS

	Editor
1. Tripura Bharati Laghustawa by Laghu Pandit	Muni Shri Jinvijayaji
2. Balshiksha Vyakaran by Sangram Singh	
3. Padarth Ratna Manjusha by Krishna Mishra	
4. Karnamritaprapa by Someshwar	"
5. Prakritanand by Raghunath Kavi	
6. Shakun pradeep	"
7 Hameer Mahakavya of Naya Chandra Soori	"
8. Ratna paretekshadi of Thakka Pheru	"
9 Vasant Vilasa Phagu	Shri MC. Modi
10. Chandra Vyakaran by Chandra Gomi	Shri B D Doshi
11. Swayambhoochhanda	Shri H.D Vel nkar
12. Nritya Ratna Kosh Pt. II by Maharana Kumbhakarna	Prof. R.C. Parikh & Dr Priyabala Shah
13. Nandopakhyan	Shri B J Sandesara
14. Vrittajatisamuchchaya by Ka i Vrrahanka	Shri H.D Velankar
15. Kavi Darpan	
16. Ka i Kaustubha by Kavi Raghunath Manohar	Shri M.N Gori
17 Go a Badal Padmini Chaupai by Kavi Hemratan	Shri Udai Singh Bhatnagar
18. Indra Prastha Prarbandh	Dr. Dashratha Sharma
19 Vasavdatta of Subandhu	Dr Jaideva Mohan al Shukla
20 Ghatkharparadi Panchalaghu Kavyani	Pt. Amrit Lal Mohan Lal
21. Bhuvan deepak of Yavnacharya	Pt. Purshottam Bhatt
22. R jasthan Men Sanskirt Sahitya Ki Khoj by Dr Bhandarkar	Translation in Hindi by Shri Brahma Dutt Trivedi
23 Munhata Nensi ri Khyat Pt. II	Shri Badri Prasad Sakaria
24. Rathore Vanshri Vigat	Muni Shri Jinvijayaji
25. Puratattva Samshodhan Ka Itihasa	"

26.	Sooraj Prakash Pt. II	Shri Sitaram Lalas
27	Rathodan Ri Vanshawali	Muni Shri Jinvijayaji
28.	Rajasthani Bhasha Sahitya Grantha Suchi	Muni Shri Jinvijayaji
29	Mira Brihat Padawali, complited by Late Pt Hari Narayanji Purohit Vidya Bhooshan	Padmashri Muni Jinvijayaji
30	Rajasthani Sahitya Samgrah Pt. III	Shri L.N Goswami
31	Sthulibhadra Kakadi	Dr A.R. Jajodia
32.	Matsya Pradesh Ki Hindi Ko Den,	Dr. Moti Lal Gupta, M.A Ph. D
33.	Rukmini Harana by Sayanji Jhoola	P L. Menariya M.A
34	Vrittamuktawali by Shri Krishna Bhatt	Bhatt Shri Mathuranathji
35	Agamrahasya	Shri G. D Dwivedi

SOME COMMENTS

1—Kanadhade Prabandha—by Mahakavi Padmanabha ed. by Prof. K. B. Vyas M. A. Elphinstone College, Bombay

We are indeed grateful to the Rajasthan Puratattva Mandir for giving to the interested world this beautiful edition of a very fine work which should be known all over India.

SUNITI KUMAR CHATTERJI
M. A., D. Litt.
Chairman,
Govt. Hindi Sanskrit Commission.

*

2—Rajavinoda Mahakavyam—by Udairaj ed by Shri Gopalnarayan Bahura M. A. Dy. Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

The series of important rare Sanskrit and Prakrit texts called the Rajasthan Puratan Granthamala started by Muniji under his General-Editorship is doing valuable service to Indology. With his characteristic vision and historical insight Muniji has selected for this series some rare texts of great historical, literary and cultural value. These texts in Sanskrit will facilitate the search for similar texts. The manuscript of the Rajavinoda Kavya in praise of Mahamud Begda was acquired by Dr. Buhler in 1857 for the Govt. of Bombay.

Muni Jinvijayaji was the first to realise the importance of the poem and make arrangements for its editing and publication in the series of the Rajasthan O. R. Institute. Accordingly he entrusted the work of editing this poem to Shri Gopalnarayan and I am happy to find that this learned editor has spared no pains in giving us an edition worthy of the series in which it appears. I have to convey my hearty congratulations to Muni Jinvijayaji upon the wise planning of his scheme of Rajasthan Puratana Granthamala and its successful execution by entrusting different works in it to competent scholars like Shri Gopalnarayan, who also deserves the best thanks of all lovers of Indian

History and Sanskrit by making available to them a new text, hitherto unknown and unpublished.

Annuals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona V I. XXXVII, 1957

P. K. GODE, M. A., D. Litt.

*

3—Ishwarvilasa Mahakavyam—by Kavikalanidhi Krishna Bhatt ed. by Shri Mathuranatha Bhatt, Sahityacharya, Jaipur

The publication of an 18th century poem of Krishna Bhatt a Jaipur-court bard, brings out interesting fact that the Ashvamedha Yajna was organised by rulers to assert their supremacy over neighbouring princes as late as 200 years ago.

Bhatt in his book 'Ishwarvilasa Kavya describes the Ashvamedha Yajna performed by his friend and master Raja Ishwari Singh some time after he ascended the Amber gaddi in 1743 on the death of his father Sawai Jai Singh II who founded Jaipur

Bhatt himself attended the Yajna. Besides describing the 'Yajna in detail, he names the persons who witnessed the cermony

7th November, 1959.

TIMES OF INDIA

*

4—Classified List of Manuscripts Pt II—ed by Shri G N Bahura M.A Dy Director Rajasthan Oriental Research Inst. Jodhpur

A All students in Indology will be glad to consult this excellent catalogue containing many rare and precious Sanskrit works.

Director Indian Institute, Paris 16th, Feb. 1960

LOUIS RENOU

*

B It is evident from the list that the Institute possesses a rich collection of Sanskrit Manuscripts on almost all subjects and branches of learning cultivated in ancient India, and also a large number of Prakrit, Rajasthani, Old Gujarati and Hindi manuscripts, and these lists will undoubtedly prove to be important tools of research to scholars doing textual work in Sanskrit and derived languages.

Journal of The Oriental Institute Baroda. December, 1960

B. J. SANDESARA

C. The catalogue adds to our knowledge of the manuscript material still existing in the Indian libraries

IsMEO
Via Merulana
248 Roma.

Giuseppe Tucci
East and West.
June-September, 1961

*

D Die Rajasthan Puratana Granthamala welche im Auftrag der Regierung von Rajasthan Werke in Sanskrit, Prakrit Alt Rajasthani Gujarati und Hindi herausgibt ist in Europe bisher wenig bekannt. Sie hat jedoch bereits eine große Reihe schoner Veroffentlichungen herausgebracht, darunter manche bisher unbekannte Werke. Der vorliegende Band enthalt ein Handschriftenverzeichnis. Der erste Teil dieses Verzeichnisses behandelte die bis 1956 erworbenen Handschriften. Der vorliegende zweite Teil verzeichnet die Neuerwerbungen von April 1956 bis Marz 1958 zusammen mehr als 4000 Nummern. Angegeben sind in hergebrachter Weise Titel Verfasser Datum und Blattzahl der Handschrift und, wenn notig sind kurze Bemerkungen beigefugt. Im ersten Anhang sind Anfang und Schluß einer Anzahl wichtigerer Handschriften wiedergegeben. Der zweite Anhang enthalt ein alphabetisches Verzeichnis der Verfassernamen. Ein dritter Anhang bringt ein Verzeichnis der ehemaligen Palastbibliothek von Indra-gardh, die nunmehr unter die Obhut des Oriental Research Institute in Jodhpur gestellt ist. Druck und Ausstattung des Bandes sind sehr gut. Von einigen besonders wertvollen Handschriften sind einzelne Blatter abgebildet.

Journal of the Institute of Indology
University of Vienna.

E. FRAUWALLNER

*

" I appreciate them very much for their being a true enrichment to any library specialised in the Orientalistic field.

President IsMEO (Oriental Institute)
Rome (Italy)

Prof. TUCCI

*

" I am very glad to know that the Institute is so actively engaged in editing the unpublished manuscripts of Rajasthan in Sanskrit and other languages. This is a valuable contribution to Sanskrit studies.

Indian Institute University of Oxford
26 July 1961

Prof. T BURROW

5—Dasakanthvadham by M M Pandit Durgaprasad Dwivedi, edited by Shri Gangadhar Dwivedi

"The author of the work under review has depicted the life of Rama from the spiritual point of view in his work called Dasakanthvadham on the lines of Yogavasistha a well-known extensive philosophical treatise on Advaita Vedanta The author is a gifted poet of a very high order The treatment of the theme especially in the first chapter is highly elaborate and the descriptions abound in rich poetical imagery of high aesthetic value."

Journal of the Oriental Institute Baroda — H. C. METHA
V 1 X. No. 3, March 1961

*

६—श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्—पृथ्वीधराचार्यविरचित कविपद्मनाभकृत भाष्यसहित सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा एम ए., उपसञ्चालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर।

क "मूल स्तोत्र की प्रबोधिनी टीका और पाद-टिप्पणियों में जो अनेकानेक पाठान्तर दिये गये हैं उनसे इस प्रकाशन की उपयोगिता तथा महत्व बढ़ गया है।

२६ जून १९६१ — महाराजकुमार डा रघुबीरसिंह
एम ए एल एल बी डी लिट् एम पी
सीतामऊ

ख 'इस स्तोत्र में भुवनेश्वरी के स्वरूप ध्यान और मंत्रों का सम्यक रूप से विवेचन है। साथ ही अन्य १२ स्तोत्रों के द्वारा भुवनेश्वरी के माहात्म्य की पर्याप्त सामग्री एकत्र की गई है। यथास्थान उपासनासम्बन्धी कई ज्ञातव्य विषय दिए गए हैं। प्रारंभ में प्रास्ताविक परिचय' नाम से श्रीगोपालनारायण बहुरा ने विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखी है। उससे इस स्तोत्र तथा इसके विषय को समझने में बड़ी सहायता मिलती है।

ता २ अक्टूबर १९६१ — —दैनिक हिन्दुस्तान नई दिल्ली

७—राजस्थानी साहित्य संग्रह—

भाग १ सम्पादक श्रीनरोत्तमदास स्वामी एम ए

भाग २ सम्पादक श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम ए साहित्य-रत्न।

साहित्य और भाषा की दृष्टि से ही नहीं इतिहास-सम्बन्धी भी बहुत

अधिक सामग्री उक्त वार्ता-साहित्य में प्राप्य है। तत्कालीन आचार-विचार, रहन-सहन धार्मिक भावनाओं और अंध विश्वासों आदि की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिये इस प्रकार के गद्य साहित्य का गहरा अध्ययन सर्वथा अनिवार्य हो जाता है। पाद-टिप्पणियों में दिये गये पाठान्तरों और साथ ही आवश्यक शब्दार्थों से इस संस्करण का विशेष महत्त्व हो गया है। इन दोनों भागों में दी गई भूमिकायें भी उपयोगी और विचार-प्रेरक हैं।

ता २९ जून १९६१

८—स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रन्थसंग्रह-सूची—सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा एम ए और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित।

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी स्वयं ही एक सजीव संस्था थे। उन्होंने एकाकी जो काम किया वह अनेकानेक संस्थाओं के मिल कर काम करने पर भी उतनी पूर्णता और तत्परता से किया जाना कठिन ही होता। अत उनके निजी पुस्तकालय के राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान को सौंपे जाने से वस्तुत एक बड़ी सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा हो गई है जिसके लिये राजस्थान ही नहीं भारत का समूचा शिक्षित समाज पुरोहितजी के सुपुत्र श्रीरामगोपालजी का सदैव अनुगृहीत रहेगा। अत ऐसे महत्त्व के पुस्तक-संग्रह की यह पुस्तक-सूची अवश्य ही विद्वानों सशोधकों आदि सब ही के लिये बहुत ही उपयोगी होने वाली है। प्रतिष्ठान का यह प्रकाशन सराहनीय है।

ता २९ जून १९६१

९—सूरजप्रकास भाग १—कविया करणीदानजीकृत सम्पादक श्रीसीताराम लालस।

साहित्य प्रेमियों के साथ ही इतिहासकारों के लिये कविया करणीदानकृत 'सूरजप्रकास' का विशेष महत्त्व है। मारवाड़ के इतिहास के प्रमुख आधार ग्रंथ के रूप में इस ग्रंथ का अध्ययन किया जाता है। अत उसको प्रकाशित करने का आयोजन कर प्रतिष्ठान ने एक बड़ी कमी को पूरा किया है।

ता २९ जून १९६१

महाराजकुमार डॉ रघुबीरसिंह
एम ए, एल एल बी., डी लिट् एम पी